Archiv der Gossner Mission
im Evangelischen Landeskirchlichen Archiv in Berlin

Signatur **Gossner_G 1_0152**

Aktenzeichen 1/20/10

Titel

Gharbhandhu, Kirchenzeitung der GELC

Band 2

Laufzeit 1973 - 1974

Enthält

diverse Exemlare des Gharbhandhu, Hindi-Druckschriften

Digitalisiert/Verfilmt 2009 von Mikro-Univers GmbH

Gossner Mission

घनबन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन०सी.४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष ६४ रांची, ओक्टोबर १९७४ संख्या नं० —१०

EV.-LUTH. MISSION GANGEN
11. DEZ. 1974
Erledigt .....



देखो—मैं जगत के अन्त लों सब दिन
तुम्हारे संग हूँ। मत्ती २८ : ३० ।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
जो अपने आप को.....		—	६
कलीसियाई समाचार		—	८
आत्मिक भजन		—	९
वचन से प्रश्नोत्तर		—	१०
बाघडेगा मंडली में.....		—	१०
कोचेडेगा पेरिश में.....		—	११
ओटोनोमस दिवस का जलसा		—	११
बुद्धि की आंख		—	१२
मैं स्वयं का बोझ हूँ		—	१३
ग्राहक चन्दा		—	१४
अनमोल रत्न		—	१५
मेरे बदले		—	१५
बाइबिल की प्यासी		—	१६
जलधारा		—	१७
सुरगुजा मिशन क्षेत्र		—	१८

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत : डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

मेरा पड़ोसी कौन ?

यह प्रश्न यीशु से पूछा गया था। इस प्रश्न का उत्तर यीशु लूका १०:२५–३७ में देता है। डाकूओं द्वारा अधमूआ छोड़े हुए मनुष्य का पड़ोसी वही ठहरा जिसने उसपर तरस खाया। आज भारत के लिये यह विशेष प्रश्न है। भारत का पड़ोसी कौन है ? वही जो भारत वर्ष पर तरस खाता है। हम अपने प्रान्त बिहार पर नजर डालें। बिहार का पड़ोसी कौन है ? चारों ओर अकाल एवं नंगाई है। लोग कहीं बाढ़ से पीड़ित और कहीं अनावृष्टि से हाय-हाय करते हैं। आज बिहार की दशा पर कौन तरस खाता है ? आज बिहार को कौन अन्न दे सकता है ? बिहार की दशा पर तरस खानेवाला ही बिहार का पड़ोसी हो सकता है। आइये हम आदिवासियों की दशा पर दृष्टि डालें। आदिवासियों का पड़ोसी कौन है ? आज आदिवासी भाई-बहन भी मतवालपन के शिकार हो गये हैं। झूठ बोलने में अभ्यस्त हो गये हैं। इन पर तरस खानेवाला कौन है ? अकाल और महंगी समस्त छोटानागपुर में है। हमारी सहायता कौन करेगा ? छोटानागपुर पर तरस खानेवाला ही आदिवासियों का पड़ोसी हो सकता है। अब तक तो यीशु नाम में विदेश के मिशनरी हमारे मित्र एवं पड़ोसी ठहरे। हम निरक्षर थे। उन्होंने हमें पढ़ना सिखाया। अक्षरज्ञान दिया। हम अज्ञानता के डाकूओं के बीच घिरे हुए थे। उन्होंने हम पर तरस खाया। क्या आज वे हमारे पड़ोसी हैं। क्या उनकी तरस का मूल्यांकन हम करते हैं ? हमारी कलीसिया अब तक संघ का काम करती है। बहुत से लोग कलीसिया में शरण पाते हैं। कलीसिया द्वारा लोगों को शान्ति मिलती है। बहुत लोगों को कलीसिया ने आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक चंगापन प्रदान किया है। छोटानागपुर के पिछड़े आदिवासियों के पड़ोसी यीशु की कलीसिया हो सकती है। क्या आज मसीह की कलीसिया को हम अपना पड़ोसी मानते हैं ? क्या कलीसिया की सेवा का मूल्यांकन हम करते हैं ? कभी-कभी आदिवासी लोग किसी राजनैतिक दल विशेष को अपना पड़ोसी समझने लगते हैं। क्या राजनैतिक दल हमारे पड़ोसी हो सकते हैं ? हमारे देश में अनेक राजनैतिक दल हैं ? क्या वे हमारे पड़ोसी हो सकते हैं ?

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे १७ वाँ एतवार

इफि० ४:१–६

कलीसिया में पवित्रात्मा की एकता जीवती सत्यता है। हमारा परम कर्त्तव्य है कि जीवती सत्यता की रक्षा प्रेम और दीनताई से करें। पावल प्रेरित कलीसिया के सात जीवित एकता के बिषय बतलाता है जिनमें बिश्वासी बंधा हुआ है।

"कलीसिया की एकता"

१ एक ही देह है—कलीसिया यीशु की आत्मिक देह है। प्रत्येक खिस्त बिश्वासी यीशु के आत्मिक देह का जीवता अंग है।

२ एक ही आत्मा है:—सब खिस्त बिश्वासियों में परमेश्वर का एक हो पवित्रात्मा बास करता है।

३ एक ही आशा है—सब खिस्त बिश्वासी इस आशा में जोते हैं कि यीशु की महिमा का राज्य आनेवाला है।

४ एक ही प्रभु है:—सब खिस्त बिश्वासी एक ही प्रभु यीशु खिस्त की उपासना और सेवा करते हैं।

५ एक ही बिश्वास:—यह वही बिश्वास है जिसकी चर्चा यहुदा ३ में की गई है। मसीहियों के बीच में शिक्षा भिन्न-भिन्न हो सकती है परन्तु बिश्वास एक है।

६ एक ही बपतिस्मा:—यहाँ जल का बपतिस्मा अथवा पवित्रात्मा का बिश्वास हो सकता है जैसा कि १ कुरि० १२:१३ में है।

७ एक ही परमेश्वर पिता मसीहियों का परमेश्वर पिता एक ही है। उसी एक परमेश्वर पिता से मसीहियों की आशीष की वर्षा होती है (१:३)।

बाहरी भेद और भिन्नता होते हुए भी बिश्वासियों की संगति कलीसिया है। बिश्वासी लोग इन सातों एकता से बंधे हुए हैं। प्रत्येक बिश्वासी पवित्रात्मा की सहायता में इस एकता की रक्षा करें।

त्रिनितातिस के पीछे १८ वाँ एतवार

१ कुरि० १:४-९

पावल प्रेरित कुरिन्थुस की कलीसिया के निमित्त ईश्वर को धन्यवाद देता है। कितनी बड़ी और मनोहर बात है कि जोभी कुरिन्थ के लोग अपूर्ण और पापी थे तौभी परमेश्वर की कलीसिया के अंग थे, वे यीशु के द्वारा पवित्र किये गये थे पवित्रता, निजो गुण, धन दौलत और बुद्धि में नहीं परन्तु यीशु में थी। उन्हें यीशु ने पवित्र किया, जिलाया तथा ईश्वर की दृष्टि में ग्रहण योग्य बनाया। यीशु ने उन्हें अपराधों से छुड़ाया, अलग किया और जगत में से चुन लिया। उन्हों ने यीशु को नहीं चुना परन्तु यीशु ने उन्हें चुना और बुलाया।

धन्यवाद—(पावल किस बात के लिये धन्यवाद देता है?)

(क) ईश्वर का अनुग्रह यीशु मसीह में कलीसिया पर हुआ है। यीशु ही ईश्वर के अनुग्रह का द्वारा है।

(ख) ईश्वर ने यीशु ही में उन्हें बचन और ज्ञान में धनी किया है। कोई ऐसा वरदान नहीं रह गया जिसे यीशु ने उन्हें नहीं दिया। आत्मिक वरदानों में धनी होने से वे आत्मिक घमण्ड में प्रवेश किये। आरम्भ में उनका ध्यान वरदान के दाता की ओर था। अनुभव में कच्चा होने पर भी यीशु की गवाही में पक्के हो गये थे। (६+७) मसीह के ज्ञान में भी वे पक्के हो गये थे।

(ग) ईश्वर अन्त के दिन तक यीशु में कुरिन्थुस के लोगों को दृढ़ करता रहेगा। प्रेरित इस बात में भरोसा करता था कि ईश्वर का अनुग्रह अन्त के दिन तक कुरिन्थुस के लोगों पर बना रहेगा। (८) उन्हें ईश्वर यीशु के कारण महा बिचार के दिन निर्दोष ठहरावेगा। पावल मनुष्य की सामर्थ पर नहीं परन्तु ईश्वर पर भरोसा रखता है। क्योंकि ईश्वर अपनी प्रतिज्ञा और बचन में सदा

Gossner Mission

विश्वास योग्य है। प्रभु के आगमन की बातों से कलीसिया दृढ़ायी जाती है।

ईश्वर का धन्यबाद हो। क्योंकि वह सच्चा है। उसी ने मण्डली को यीशु की संगति में बुलाया है।

त्रिनितातिस के पीछे १६ वाँ एतवार

इफि० ४:१७ २८

पावल प्रेरित इन पदों में नवीन आचरण के लिये बिनती करता है। पुराना व्योहार छोड़ दो और व्योहार में नया बन जाओ वह व्यक्तिगत आचरण पर विशेष जोर देता है।

"नवोन आचरण रखो"

१ पुरातन चाल छोड़ दो—

(क) यह तो अन्य जातियों का चाल है, वे तो अनर्थ रोति से चलते हैं। (१७)

(ख) पुरातन चाल में अज्ञानता मन की कठोरता, और बुद्धि अंधेरी होती है। इस प्रकार की चाल के कारण लोग परमेश्वर के जीवन से अलग किये जाते हैं। (१८)

(ग) पुरातन चाल से लुचपन और गन्दे काम होते हैं।

२ नवीन आचरण की विशेषता—

(क) नवीन आचरण में प्रभु यीशु की सत्यता है—क्योंकि यीशु आप ही सत्य है। (२१)

(ख) नवीन आचरण में स्वभाव में नया बनने की बात है (२३+२४)

३ प्रभु यीशु आप ही चाहता है कि हम नवीन आचरण रखें—(२५:३२)

क हम पड़ोसी से सच बोलें (२५) झूठ बोलना छोड़ देवें।

ख—क्रोध की जगह दया का व्योहार करें (२६—२७) खिस्तानों के लिये क्रोध करने की जगह है। वे पाप और बुराई के बिरूद्ध क्रोध करें। परमेश्वर का क्रोध भी पवित्र होता है।

ग—भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करें-(२८)

घ—अशुद्धता को शुद्धता से जीत लेवें (२९-३०) भाषा ईश्वर का बरदान है। भाषा को ईश्वर की महिमा में व्योहार करें।

ङ—कृपाल और करूणामय हो एक दूसरे की अपराध क्षमा करें—(२३-३२) क्योंकि यीशु आप ही हम पर करूणा की दृष्टि कर हमारे पापों को क्षमा करता है।

'हमारा नवोन आचरण कलीसिया की उन्नति का कारण हो और भाईयों के लिये अनुकरणीय हो।"

त्रिनितातिस के पीछे २० वां एतवार

इफि० ५: १५-२१

परमेश्वर के प्रिये बालकों को मण्डली में प्रेम, ज्योति और बुद्धिमानी से चलना है।

"अपने प्रिया बालकों के लिये प्रभु परमेश्वर की पवित्र इच्छा"

क—अवसर को बहुमूल्य समझो:—परमेश्वर का बालक जीवन की प्रत्येक घड़ी में ईश्वर की इच्छा खोजता है। दिन बुरे हैं। इस लिये वह जागता रहता है। ईश्वर की महिमा के निमित्त अवसर बनाता है।

ख—आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ:—प्रत्येक विश्वासी में पवित्रात्मा बास करता है। परन्तु सब विश्वासी लोग पवित्रात्मा से नहीं भर जाते हैं। ईश्वर की इच्छा है कि उसके सब बालक आत्मा से परिपूर्ण हो जावें। (३: १६; ५: १६)।

ग—आपस में भजन गीत गाया करो— २०) बुद्धि से चलने वाला बालक न केवल धन्यबाद करता परन्तु एक दूसरे की अधीनता भी स्वीकार करता है। उसका जीवन गीतों और भजनों के द्वारा हर्षित किया जाता है।

"क्या हम परमेश्वर के बालक के समान चलने के लिये तैयार हैं?

Gossner Mission

"जो अपने आप को समझदार समझता, वह सयाना है नहीं," और जो कर्म से रहता परे, वह विश्वासो है नहीं !!

— सुशील

हे भाइयों हम समझ में बालक न बनें; तौभी बुराई में तो बालक रहें, परन्तु समझ में सियाने बनें (१ को० १४-२०)। हम जानते हैं, कि हम सबको ज्ञान है : ज्ञान घमंड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूँ तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो उसे परमेश्वर पहिचानता है (१ को० ८:१-३)।

हम जानते हैं कि 'मूरत,' जगत में कोई वस्तु नहीं। और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं; तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है अर्थात पिता, जिसकी ओर से सब वस्तुएँ हैं और हम उसी के लिए हैं और एक ही प्रभु है, अर्थात यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएँ हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं। लेकिन सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के साम्हने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझ कर खाते। ऐसा करने से हम एक साथ परमेश्वर के तीन आज्ञाओं का उलंघन करते हैं। (१) परमेश्वर को छोड़ दूसरे को ईश्वर मानते हैं। (२) मूरत को पूजते हैं और उसका गुण-गाण तथा सेवा तन, मन धन, से करते हैं। (३) दूसरे को ईश्वर मानकर हम यहोवा परमेश्वर के सम्मुख व्यभिचार करते हैं। और ऐसा करने से विवेक (Conscience) निर्बल अशुद्ध होता है। (१ को० ८:४-७)।

शास्त्र को पढ़कर हम जानते हैं कि हमारे बाप दादे बादल के नीचे थे और सब के सब समुद्र के बीच से होकर पार हो गए और सबने बादल में और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया। और सबने एक ही आत्मिक भोजन किया। और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था। परन्तु परमेश्वर उन में से बहुतेरों से अप्रसन्न हुआ; इसलिए वे जङ्गल में ढेर हो गए। और न हम मूरत पूजने वाले बनें, जैसे कि उन में से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे। और न व्यभिचार करें जैसा उन में से कितनों ने किया; और एक ही दिन में तेईस हजार मर गये। और न हम प्रभु को परखें जैसे कि उन में से कितनों ने किया और सर्पों के द्वारा नाश किये गये (विशेष विवरण के लिए मूसा के पुस्तकों को पढ़ें)

"इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे, कि कहीं गिर न पड़े (१ को० १०:१२)"

मूरत के सामने का भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता, यदि हम खाएं तो कुछ लाभ नहीं, और यदि हम न खाएँ तो हमारी कुछ हानि नहीं। परन्तु चौकस रहें, ऐसा न हो कि हमारी स्वतंत्रता कहीं निर्बल के लिए ठोकर का कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई हम ज्ञानी को मूरत के मंदिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो तो क्या उसके विवेक में मूरत के साम्हने बलि की हुई वस्तु को खाने का हियाव न हो जायगा। इस रीति से हमारे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिए "मसीह मरा" नाश हो जाएगा। सो भाइयों का अपराध करने से और उन निर्बल विवेक को चोट देने से हम मसीह का अपराध करते हैं। इस कारण, यही मूरत के सामने का भोजन हमारे भाई को ठोकर खिलाए तो हम किसी रीति से उस भोजन को न खाएँ (१ को० ८:८-१३)।

भाईयो यदि हम दास की दशा में बुलाए गये हो तो चिंता न करें, परन्तु यदि हम स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम करें। क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ; और जो वैसे ही

Gossner Mission

जो स्वतंत्र की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है। हम दाम देके मोल लिए गए हैं, दूसरे देवताओं के दास न बनें। हे भाइयो जो कोई जिस दशा में बुलाया गया है वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे (१ को० ७:२१-२४)

जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी हो क्या मुण्डा हो, क्या उरांव हो, क्या खड़िया हो, क्या स्वतंत्र क्या दास एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं। यदि पाँव कहे कि मैं हाथ नहीं, इस कारण देह का नहीं। और यदि कान कहे कि मैं आंख नहीं, इसलिए देह का नहीं। तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है? यदि सारी देह आँख ही होती, तो सुनना कहां होता? यदि सारा देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता?

परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखता है। यदि वे सब एक ही अंग होते तो देह कहां होतो? आँख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं। और न सिर पांवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारा जरुरत नहीं। परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक है।

परमेश्वर ने देह को बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी की और भी बहुत आदर हो। ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिंता करें। इसलिए यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं, और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।

इसी प्रकार हम सब मिल कर मसीह की देह हैं और अलग-अलग उसके अंग हैं। और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्ति किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्य वक्ता, तीसरे उपदेशक, फिर सामर्थ के काम करने वाले, फिर चंगा करने वाले और उपकार करने वाले, और प्रधान और नाना प्रकार की भाषा बोलने वाले। क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यवक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करने वाले हैं? क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? क्या सब अनुवाद करते है?

इसलिए जो खतना किया हुआ बुलाया गया हो, वह खतना रहित न बने और जो खतना रहित हो, वो खतना न कराए। न खतना कुछ है, और न खतना रहित, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है (१ को० ७:१८-१९)। इसलिए यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म नहीं करता हो तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो और तुम में से कोई उनसे कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो, पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? कोई गिर्जा जाए और लौटते वक्त किसी का खस्सी दबोच ले तो क्या लाभ? जो दान करे पर गरीबों का खून दूसरे तरीके से चूसे तो क्या लाभ? जो प्रार्थना करे और वचन सुने और अपने माता पिता, भाई बहनों से घृणा करे तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। वरन कोई कह सकता है कि मुझे विश्वास है। उसे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: वह अच्छा करता है: दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। पर हे निकाम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है (याकुब २: १४-२०)। "राहब वेश्या," जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा, और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या कर्मों से धर्मिक न ठहरा? निदान जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म के बिना मरा हुआ है (याकुब २:२५-२६)

हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वो तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं, जो मुरझाने

Gossner Mission

का नहीं। इसलिए हमें इसी रीति से दौड़ना है, पर बेठिकाने नहीं, हमें इस रीति से मुक्केबाज़ी करने हैं, परन्तु उसकी नाई नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु हमें अपनी देह को मारना है कूटना है और वश में लाना है, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, हम आप ही किसी रीति से निकम्मे ठहरें (१ को० ९:२५-२७)।

कलौसियाई समाचार

सहजबहाल (बामड़ा)—तिथि ५-५-७४ को सहजबहाल नये गिरजा घर का संस्कार बड़े धूम-धाम से किया गया। इस अवसर पर हमारे अंचल अध्यक्ष एवं इलाका चेयरमैन निमंत्रित थे। कारण बस दोनों मेहमान उपस्थित नहीं हो सके। पूरे पेरिश स्टाफ की उपस्थिति में हमारे क्षेत्र सुपरभैजर की अगुवाई में संस्कार कार्य्य सम्पन्न किया गया। पवित्र बियारी का अनुष्ठान किया गया एवं शाम को पूरी मंडली के साथ प्रीति भोज हुआ।

सहजबहाल मंडली का आरंभ तब से हुआ जब कि भिन्न-भिन्न सिनोदों ओ मंडलियों से हमारे मसीही भाई यहां गंगाजाल, बुढ़ीकुटाईन, बीजाडीह और सहजबहाल गांवों में जीविका के लिये आ बसे (१९५१)। उस वक्त मंडली में १२ परिवार ४९ प्राणी थे। प्रथम बार पाद्री जे० तोपनो मधुपूर के द्वारा ता०१९-९-५२ को सक्रामेंट का अनुष्ठान यहां हुआ। १९५३ ई० में सहजबहाल में एक छोटा झोपड़ी का गिरजा घर बनाया गया। परिवार संख्य क्रमश: बढ़ती गई। १९५३—५७ तक में परिवार संख्य १९ और प्राणी संख्य ९७ थी। इस दरमियान में ईश्वर ने पावलामारा के विसनु ही मुन्डा के मन को खोला। उसने अपने पूरे परिवार सहित मसीही होने का वचन दिया। भाषा की कठिनाई के कारण हमारे वर्त्तमान प्रचारक आई० लकड़ा के द्वारा उनको वचन सिखाना अति कठिन हुआ। अत: मंडली ने जे०एम०बी० के प्रचारक अमुस अइंन्द जो सरगीडीह में रहते थे बुलाया, वचन की शिक्षा पा कर उनका बपतिस्मा ता० २७-४-५७ को पाद्री जे० तोपनो द्वारा हुआ।

१९५८—१९६२ तक में नये मसीही को छोड़ पूरी मंडली कथित नोर्थ जोन के फेरे में पड़ कर रटोबिरकेरा पाद्री की सेवकाई में चली गई। इन वर्षों में पाद्री सेवकाई में अत्यन्त घटी रही जिसके कारण मंडली दुखित थी। इसके बाद पूरे मंडली की राय से मंडली ने मिशन क्षेत्र के सुपरभैजर पाद्री एच० टुटी को बुलाया। इसकी सूचना कथित नोर्थ जोन के पाद्री को भी दिया गया। ता० १८-८-६३ में मिशन क्षेत्र पाद्री के द्वारा प्रथम बार सक्रामेंट का अनुष्ठान हुआ। इसके बाद पुन: मंडली दो भाग हो गई २० परिवारों में ११ परिवार मिशन क्षेत्र की सेवकाई में स्थिर रहे।

१९६४ में ईश्वर के निक्तिमाल के सोमारु मुन्डा के मन को खोला। वे परिवार सहित मिशन क्षेत्र के पाद्री से बपतिस्मा पाये। १९६६ में निक्तिमाल में क्षेत्र की ओर से प्रचारक रखे जा कर इस परिवार को उनके जिम्मे दिया गया। १९६७ ई० में कथित नोर्थ जोन से दो परिवार वापस लौटे। १९६८ ई० में बुढ़ी कुटाईन से एक मुन्डा परिवार धर्म्म खोजक हो सपरिवार मंडली में शामिल हुआ।

इस प्रकार मंडली गिरते उठते इस वक्त तक १५ परिवारों एवं ७९ बपतिस्मा संख्या के साथ सब तरह के मुसीबतों के साथ लड़ते हुए जीती है। पाठकों से निवेदन है कि आप इस मंडली को भी अपनी दैनिक प्रार्थनाओं में ईश्वर के समीप लावें।

पाद्री एच० लुगुन
देवगढ़।

मंडली समाचार

बहुत दिनों के प्रसन्न एवं बाट जोहने के पश्चात् आज ता० ११-६-७४ को तालडीही (बामरा) में २८ नये धर्म्मखोजकों का पवित्र बपतिस्मा विभाग के डैरेक्टर द्वारा हुआ। क्षेत्र के कर्म्मचारियों के अलावे मधुपूर इलाका के निकटवर्ती मंडली के भाई-बहनो ने इस कार्यक्रम में काफी भीड़ के साथ सहयोग दिया। लगभग २०० लोगों ने इस बपतिस्मा के अवसर में गीत-भजनों के द्वारा योग दिया।

Gossner Mission

हर्ष का विषय है कि यहां इन भाईयों के बीच राज्यवृद्धि का काम अन्य अन्य मिशनों की ओर से बहुत प्रयास किया गया। मधुपूर इलाका ने भी बीते बहुत सालों से यहां बचन रूपी बीज बो कर उनके मन को परिवर्त्तन करने का प्रयास किया। बीते १९७१ साल से यहां क्षेत्र की ओर एक पूर्ण वेतन योगी प्रचारक रखा गया है। ईश्वर को धन्यवाद हो कि अब हमने पहिले फलों को पाया जो ऊपर वर्णित है।
इस नूतन मंडली के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि यहां अतिशीघ्र एक उपासनालय का निर्माण हो ताकि गवाही देने में सहायक होवे।

पाद्री–एच० लुगुन
देवगढ़।
तालडीही (वामरा)

जर्मन अतिथियों का शुभागमन:—

प्राप्त समाचार के अनुसार मालूम हुआ है, कि ३० जर्मन अतिथि, जिसमें पुरुष व स्त्री दोनों हैं ३१ वीं आक्टोबर को रांची में पदार्पण कर रहें। वे हमारी कलीसिया में लगभग एक सप्ताह तक ठहरेंगे। २ नवम्बर को रांची माता मंडली के साथ मिशन पर्व्व मनाने के उपरान्त जमशेदपुर, गोविन्दपुर, टी० टी० सी० फुदी, टकरमा और हजारीबाग का दौरा करेंगे। इस प्रकार वे शहरी तथा देहात मंडली के भाई-बहनों के साथ मुलाकात करेंगे। आशा है, कथित मंडलियों के भाई-बहन इस अतिथियों का स्वागत करने के लिए तैयार रहेंगे।

आत्मिक भजन

मानव जीवन में गान भजन करना क्या ही प्रिया और उत्तम साधन है। क्योंकि हम परमेश्वर की महिमा के लिये सृजे गये हैं। किन्तु आधुनिक युग के मनुष्य जाति अधिकतर फिल्मी गान भजन को ही उत्तम मानते हैं, और अपने जीवन में उसी को पहला स्थान देते हैं। आज हम मसीहियों के लिये, इनसे अलग रह कर परमेश्वर को ("जो प्रेम है" १ योहन ४.१६), जीवन में पहला स्थान देना है। क्योंकि दूसरे से उद्धार नहीं है। प्रे० क्रिया ४:१२, यशा ४३:११, यीशु नाम, सब नामों से श्रेष्ठ है, फिलिपी २:९, यीशु मसीह आज और कल और युगानुयुग एकसा है, इब्रा १३:८ इसलिये हम उसी की महिमा युगानु-युग "समय और बिषयानुसार करें"। आगे हमारे आत्मिक भजन का विषय परमेश्वर है। इसलिये हम उसकी भलाई, दया, अनुग्रह, न्याय और उसके प्रेम को स्मरण करें और उसी की महिमा का भजन गावें :—

(१) हम परमेश्वर का भजन गावें क्योंकि उसने मेरी भलाई की है, संहिता १३:६

(२) दाऊद कहता है, मैं करुणा और न्याय का भजन गाऊंगा संहिता १०१:१

(३) हम यहोवा के लिये नया गीत गावेंगे क्योंकि उसने आश्चर्यकर्म किए हैं, भजन ९८:१

(४) ईश्वर आत्मा है, और भजन करने हारे आत्मा और सच्चाई से भजन करें. योहन ४:२४,

(५) बीणा बजा कर मैं यहोवा. का जयजयकार करुंगा, भजन ९८:४-६

(६) परमेश्वर के लिये आत्मिक गीत गाओ कुलुस्सी ३:१६

(७) सूर्य' चन्द्रमा, आकाश, दूत, और मनुष्य यहोवा की स्तुति करते हैं। भ: स: १४८:१-४

(८) परमेश्वर के लिये स्तुति करो भ: स: १४६:१-२

(९) धन्यवाद के साथ सामर्थी परमेश्वर का भजन गाओ, भजन १४७:१-७

(१०) नाचते हुए उसकी महिमा गावे भजन १४९:१-३

(११) यहोवा को स्तुति भूमंडल करती है भजन १५०:१-६

(१२) जाति २ और राज्य २ के मनुष्य यहोवा के करुणा और सच्चाई का भजन गाते हैं।
भजन : ११७:१-२

(१३) परमेश्वर का भजन गाओ :— भजन ११३:१-३

(१४) यहोवा का भजन जीवन भर गाऊंगा।
भजन १०४ : ३३-३५

(१५) यहोवा के किये हुए उद्धार का भजन गाऊँगा।
भजन : ९५:१-२

(१६) अपने मनों में प्रभु के सामने कीर्तन करते रहो इफिसी ५:१९।

Gossner Mission

आत्मिक भजन आत्मा की आगुवाई से होता है। आत्मिक भजन से आत्मा के लिये भोजन मिलता है। और वही आत्मा के अगुवाई में हम बढ़ रहे हैं, हमारे कलिशा में आत्मिक भजन की आवश्यकता है। हम जो कुछ भी करें प्रभु के लिये करें कुलुस्सी ३:२३ और प्रेम से करें १ कुरि. १६:१४ क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, इसलिये हम भी प्रेमी बनें, और आत्मिक भजन का आनन्द प्रभु में है। उस आनन्द को प्राप्त करने का प्रयास करें।

धन्यवाद

Mr. P. Minz
G.E.L.C. Chalho

बचन से प्रश्नोत्तर

१. आत्मा की गवाही क्या है। रोमी ८:१
२. मेरी सहायता कहाँ से है। भजन १२:१२
३. यीशु का लोहू क्या करता है। १ यो. १:७
४. यीशु जगत में क्यों आया। लुक १९:१०
५. यीशु हमारे साथ २ क्यों है। यिर्मयाह १५:२०
६. मेरा परमेश्वर कौन है। हिजकेल २०:२९
७. यीशु कैसा बैद्य है। मत्ती : ९:१२
८. यीशु ने अब्राहम से क्या कहा, इब्रा: ६:१४
९. हम क्यों जागते (प्रार्थना) करें, मर्क १४:३८
१०. मनुष्य का न्याय कैसे होगा। याकुब २:१३
११. हम क्यों ढाढ़स बाधें यो० १६:३३
१२. कर्म बिना बिश्वास क्या है। याकुब २:२०
१३. जीवन की रोटी कौन है। यो० ६:४८
१४. बचन पर चलने से क्या होगा यो० ८:५२
१५. संसार के जय पर मनुष्य की क्या व्यवस्था है। प्र० वा: ३:५। समाप्त

P. Minz.
Chalho.

"बाघडेगा मंडली में" ओटोनोमी का उत्सव और युवा संघ का निर्माण

किनकेल इलाका के अन्दर बाघडेगा मंडली है। इसमें १०५ परिवार मसीही हैं। १० वीं जुलाई को बड़ी धूम धाम से उत्सव मनाया गया। गिर्जा आराधना के बाद यहाँ ओटोनोमी के सम्बन्ध में चार माननीय सज्जनों ने ओटोनोमी के इतिहास, आत्मपालन, आत्मशासन और आत्मकर्तव्य के विषय उचित शिक्षा दिये। जिसके कारण मंडली के भाई बहनों के बीच नई आत्मिक उमंग आ गई। प्रत्येक वर्ष ऐसा ही होता है पर अबर १९७४ साल की १० वीं जुलाई हमारी बाघडेगा मंडली के लिए अधिक महत्व की थी। १ बजे दिन से खेल कूद का प्रोग्राम था। इसमें बहुत अधिक संख्या में मसीही भाई-बहनों के साथ गैर मसीही भाई-बहनों ने भी भाग लिया। खेल-कूद के बाद ५ बजे भजन होड़ का प्रोग्राम था। भजन होड़ में ८ टीम के भाई बहनों ने भाग लिया था जिसमें पहला, दूसरा और तीसरा प्राईज रखा गया था। प्राईज में चान्दी के कप और अन्य धर्मपुस्तकें रखी गयी थीं। मैदान के खेल-कूद के लिए अन्य विशेष सामानों का जोगाड़ था। प्राईज वितरण के बाद चाय-नास्ता का भी अच्छा प्रोग्राम था। करीब नौ बजे रात तक प्रोग्राम चलता रहा। इस प्रकार मंडली में नई आत्मिक जोश आ गई।

फिर ता० १४ ७-७४ को मंडली के अर्न्तगत एक सभा हुई। जिसमें मंडली स्तर पर "युवा संघ बैबल क्लास" का निर्माण हुआ। युवा संघ बैबल क्लास चलाने के लिए कमिटि बनायी गयी। इस कमिटि में निम्नलिखित भाई-बहन इस संस्था को चलाने के लिये चुने गये।

सभापति श्री समुएल एक्का
उप ,, ,, प्रसाद कुजूर
सेक्रेटरी ,, मंगलदास टोप्पो
उप ,, ,, मनोहर कुल्लू
खजांची सुश्री अनुग्रहित टोप्पो

Gossner Mission

इसके अलावे फिर १२ सदस्य भाई बहनों में से चुने गये। जो "युवा संघ बैबल क्लास" को उचित रीति से चलावें। सभा द्वारा फिर यह भी फैसला हुआ कि मंडली के अन्तर्गत महीने में दो बार "युवा संघ बैबल क्लास" होवे और इसके लिये इलाका के विशेष धार्मिक उपदेशकों को शिक्षा के लिये बुलाया जाय। ताकि मंडली में आध्यात्मिक उन्नति हो। पाठकों से अनुरोध है कि हमारी मंडली की उत्थान के लिये प्रार्थना करें।

प्रभु में आप सभों का
मनोहर कुल्लू
बाघडेगा मंडली।

कोचेडेगा पेरिश में "पेरिश स्तरीय युवा संघ" की स्थापना

आज के वर्त्तमान युग में धन सूर, मद सूर और जवान सूर लोगों को विनाश की ओर दिन-दिन आगे बढ़ा रहा है। इन तीनों में जवान सूर ही अधिक प्रभावशाली दीख पड़ता है। आज के जवान-युवतियों को काबू में लाना असंभाव सा जान पड़ता है। अर्थात इन्हीं विनाशक वस्तुओं को दूर करने के लिए आज अचंल से लेकर इलाका, पेरिश तथा मण्डलो स्तर पर भी युवा संघ कायम किया जा रहा है।

इसी आधार पर कोचेडेगा पेरिश में भी "पेरिशस्तरीय युवा संघ" की स्थापना १५–६–७४ को बेन्दोजोर मण्डली में हुई। मौसम की गड़बड़ी होते हुए भी भाई-बहनें काफी संख्या में उपस्थित थे। प्रत्येक मण्डली से प्रचारक, पंच, जवान-युवतियां और मण्डली स्तरीय युवा संघ के कार्य कर्त्ता तथा सदस्यगण भी उपस्थित थे। पेरिश चेयरमैन (रेभ० जी० केरकेट्टा) के अगुवाई से सभा का आरम्भ हुआ। इलाका स्तरीय मसीही-सैनिक के भूत-पूर्व सभापति श्री बी०एस० कुजूर भी आमंत्रित किए गए थे। ये दोनों व्यक्ति "पेरिश स्तर पर युवा संघ" का कार्य-क्षेत्र के विषय आकर्षक सुसंवाद सुनाये।

पेरिश स्तरीय युवा-संघ के कार्य-कर्त्ता

१ सभापति —श्री जे०पी० तिर्की प्रचारक
२ सचिव —श्री एस० केरकेट्टा शिक्षक
३ खजाँची —श्री ई० खलखो किनबीरा एल०पी स्कूल हेडमास्टर।

उप सभापति और उप सचिव भी चुने गए। तथा प्रत्येक मण्डली से एक-एक प्रतिनिधि। बीच-बीच में गान-भजन भी चलता ही रहा। अन्त में चाय-नास्ता का भी उचित प्रबन्ध था। आगे घरबन्धु के पाठकों से यह अर्जी है कि अपनी प्रार्थनाओं में हमारी इस संस्था को भी याद करें कि यह संस्था दिनों-दिन आगे बढ़ती जावे।

आप का
एन० बड़ा
किनबोरा सण्डे स्कूल सभापति

ओटोनोमस दिवस का जलसा

एक-एक मसीही यह जानता है कि १९१९ के १०वीं जुलाई में हमारी गोस्सनर कलोशा आत्म-पालन का भार अपने ऊपर ले लिया। उसी के उपलक्ष में आज भी हम ओटोनोमस दिवस मनाते हैं। पेरिश फैसला के अनुसार कोचेडेगा पेरिश इस साल ओटोनोमस दिवस का जलसा किनबीरा मण्डली में मनाया। पेरिश भर के प्रत्येक मण्डली के भाई-बहनों को किनबीरा मण्डली के भाई-बहनों की ओर से न्योता किया गया था। बरसात का समय और लोगों की इतनी बड़ी जमाईस। इस से यह देखा गया कि हमारे मसीही भाई-बहन, जवान-युवतियां जरूर ही धर्म के कामों में जाग उठे हैं।

सब से पहले तो दूर-दूर से आए हुए मेहमानों का उचित सत्कार किया गया। फिर गिर्जे के बगल निश्चित स्थान पर बैठा दिया गया। शिक्षक जोन किण्डो की अगुवाई से सभा आरम्भ हुआ। १२४ साक्षी वाणी को गाकर पथदर्शक बचन यूहन्ना ४ : ४२ को पढ़ा गया।

Gossner Mission

—कार्य-क्रम—

श्री सी०सी० एक्का जो एक भूत-पूर्व सुयोग्य प्रचारक हैं ओटोनोमस दिवस का इतिहास के विषय विस्तार पूर्वक प्रकाश डाले। लोग तन-मन लगाकर सुन रहे थे। उनकी बाणी में मधुरता थी। जिस प्रकार तितली फूलों से रस लेकर मुग्ध हो जाती है उसी प्रकार लोग मधुर-वाणी सुन कर मुग्ध हुए जा रहे थे।

श्री सी०के० लकड़ा भी अपने विषय पर लोगों को उत्साह से भर दिए थे। उनका विषय था वर्त्तमान समय में कलीशा की दशा और समस्या; और उस समस्या को सुलझाने का उपाय। बीच-बीच में भजन चलता रहा। भजन होड़ का भी प्रोग्राम था जिसमें छः प्रतिद्वन्दी दल भाग लिए थे। कोचेडेगा मण्डली और किनबीरा मण्डली क्रमशः पहला और दूसरा स्थान प्राप्त किए। बैबल दौड़ भी रखा गया था। कंडिदत्त एस०सी०एच० नाईक द्वारा बैबल से लिए गए सवाल बैबल दौड़ में भाग लेने वालों के सामने रखा गया जिस में एन० बड़ा, बी० बड़ा और जे० बड़ा क्रमशः १ला, २रा और ३रा स्थान प्राप्त किए।

अन्त में चाय-नास्ता का भी प्रोग्राम था। स्थानीय मण्डली के भाई-बहन चाय नास्ता बाँटने में सहर्ष हाथ बटाये। १२ बजे रात तक गान भजन चलता ही रहा। पाद्री जी० केरकेट्टा के द्वारा बिदाई धन्यवाद हुई। और सभा का विसर्जन हुआ। आगे प्रार्थना है कि परमेश्वर हमें दृढ़ और अटल रखे कि हम आत्म पालन का भार उठाते हुए मण्डली को सेवा कर सकें आमीन !

आप का विश्वस्त,
एन० बड़ा
किनबीरा सण्डे स्कूल सभापति

सूचना

गतांक में नेहेमियाह सन्डी गुड़िया असम अंचल का नाम छूट गया है। वह १९७५ साल में प्रशिक्षण समाप्त करता है।

प्राचार्य
गोस्सनर थियोलोजिकल
कॉलेज रांची।

बुद्धि की आँख

वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है, उसका बचन अति वेग से दौड़ता है भजन संहिता (१४७:१५)।

बात पुरानी है किसी वन में एक सोनैला मृग रहता था। उसी वन के एक फलदार वृक्ष और मृग में गाढ़ी मित्रता थी। वह मृग प्रतिदिन अपने नियत समय पर अपने मित्र के पास फल खाने जाया करता था। उसका मित्र वृक्ष भी अपने मित्र के लिए मीठे मीठे फल गिराया करता था। फल खाकर शाम को अपने निवास स्थान को लौट जाता था। इस प्रकार उन दोनों का जीवन बड़े सुख से बीत रहा था। पश्चात एक दिन किसी बहेलिए का ध्यान उस मृग पर पड़ा। उसकी सुन्दरता देखकर बहेलिया उस मृग को शीघ्र ही प्राप्त करना चाहता था। वह धनुष-बाण लेकर मृग का शिकार के लिए उसी वृक्ष पर चढ़ गया, (जो कि मृग का मित्र था) और अपने को पत्तों से छिपा लिया, ताकि मृग उसे न देख सके और वह आसानी से उसे मार सके। मृग भी प्रतिदिन की तरह नियत समय पर मित्र के यहाँ जाने के लिए निकला। वह चौकन्ना होकर थोड़ी दूर पर रुक-रुक कर जा रहा था। वह दूर ही था कि बहेलिए ने उसे देख कर शीघ्र नजदीक बुलाने के लिए एक फल तोड़कर उसके आगे फेंक दिया। चूँकि मृग जानता था कि उसका मित्र अपने घेरे के बाहर फल नहीं गिराता है, उसका मन सन्देह से भर गया। वह इस पर सोच ही रहा था कि दूसरा फल गिरा, थोड़ी देर में तिसरा फल उसके नजदीक ही गिरा। इस बार मृग का संदेह पुष्ट हो गया, और वह वहीं से लौट गया। उसने शारीरिक आँख द्वारा बहेलिए को नहीं देखा परन्तु बुद्धि की आँख द्वारा आने वाली विपत्ति को देख लिया। कहा भी गया है—

Gossner Mission

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्
सर्वस्यलोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्धएवस ।

मानव इस सृष्टि की मूल रचना है। परमेश्वर ने मनुष्य को सृष्टि की सभी वस्तुओं से बुद्धिमान और श्रेष्ठ बनाया है। परन्तु इस कहानी से स्पष्ट होता है कि मनुष्य व्यवहार और सहानुभूति में पशु से भी कम ज्ञान वाला है। वह आने वाली बिपत्ति के विषय हर समय उस तोते के समान रटता रहता है। शिकारी आयगा, जाल बिछायगा, दाना डालेगा, लोभ से उसमें फंसना नहीं। फिर भी वह निरन्तर उसी मार्ग में बढ़ता जाता है, जो मृत्यु को ओर इंगित करता है और जिसका अन्त बिनाश है। आकाश में लगलग भी अपने नियत समयों को जानता है और पन्डुकी सुपाबेनी और सारस भी आने आने का समय रखते हैं, परन्तु मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानते (यिर्मयाह ८:७)।

इस कलीशा के अगुवे मेरे सेवकों की प्रतीति नहीं करते, वे कहते हैं कि मेरे सेवक उनका शिकायत करते हैं। इस कारण मेरा क्रोध उनपर भड़का है। बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख वारी को बिगाड़ दिया है, उन्होंने मेरे भाग को लताड़ा वरन मेरे मनोहर भाग को सुनसान जंगल बना दिया है (यिर्मयाह १२:१०)।

हे गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया— सुन— मैंने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और उत्तम बीज करके लगाया था, फिर तू क्यों मेरे लिए जंगली दाखलता बन गयी (यिर्मयाह २:२१)। मुझे तुमसे कोई भी उत्तम दिखाई नहीं पड़ता है। कलीसिया के अगुवे और सारी भीड़ ने मुझे त्याग दिया है। वे मुझपर नहीं वरन मेरे द्वारा सिरजी गयी वस्तुओं पर अधिक भरोसा करते हैं। क्या मैंने पृथ्वी की रचना नहीं की है? क्या मनुष्य मुझे धोखा दे सकता है? मेरी प्रजा के अगुवे और सारी भीड़ मेरे भक्तों द्वारा कही गयी वचन के विषय में व्यर्थ बाद-विवाद करते और लड़ते हैं, वरण उसी तरह जिस तरह कुत्ते सूखी हड्डियों के लिए आपस में लड़ते हैं। मैं उनके कामों से तनिक भी प्रसन्न नहीं हूं। जब तक वे पश्चाताप करके पूर्ण मन से मेरी ओर नहीं फिरेंगे मैं कदापि उनकी नहीं सुनूँगा। इसलिए तू इस प्रजा की भलाई के लिए मुझसे प्रार्थना मत कर।

बहुत से अगुवे और प्रजा मेरे वश में होकर नहीं चलना चाहते, वरन मुझको अपने वश में करना चाहते हैं। क्या मनुष्य मुझे ज्ञान दे सकता है? इस कारण ईश्वर का वचन सातवें महीने के एक्कीसवें दिन को प्रबलता के साथ मेरे पास पहुँचा, कि जाकर गोस्सनर कलीसिया में इस अटल आज्ञा का प्रचार कर और अगुवों से कह कि वे अपने और चराई की भेड़ों के लिए पश्चाताप और मनफिराव का तीन महीने तक पेरिश, इलाका, अँचल और माता मण्डली में प्रचार करें, और अपने बुरे कर्मों के लिए जीवित मसीह की दोहाई देवें। क्योंकि परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह में अपने प्रेम को प्रकट किया है। उसने स्वंय कहा— यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो (लूका ९:२८-३६) अवश्य है कि इस आज्ञा का हम गम्भीरता पूर्वक पालन करें और नवम्बर माह के अन्त तक कलीसिया के सभी भागों में यह काम पूर्ण हो जाय। अन्यथा जिस भाग में इस आज्ञा का प्रचार नहीं किया जायगा वहाँ के अगुवों से इसका पलटा लिया जायगा। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, हे गोस्सनर कलीसिया के भटके हुए लोगो लौट आओ क्योंकि मैं तुम्हारा ईश्वर हूं।

सी० आर० होरो (शिक्षक)
लाली

"मैं स्वयं का बोझ हूं"

(डी० पी० इफ्राईम "बेवस")

जब तक सांस रहेगी,
बंधा रहूंगा खूंटे से,
दुख व्यथा चिंता,
सब की सब मेरे सिर,
सींग की तरह बढ़ते,
बोझ से गर्दन दुखती,
रग-रग हीन हो चुका,
हाथ पैर निरुद्देश्य,
यहां-वहां पटकता हूं,
मन विकलता से तड़पता,
गर्दन की रस्सी तोड़ने की,
एक कशीश, कसक,
प्रयत्नों की बाढ़ सी आती,
पर टूट न पाती।
रोज जुतता हूं सुबह शाम,
हर क्षण हर पल से जूझता हूं,
पर कोई निष्कर्ष नहीं,
कमर तोड़ मेहनत,

Gossner Mission

पसीने से लथपथ,
ये सब किसके लिए,
सूखी रोटी का हिस्सा हो,
मेरे भोजन का भाग है,
बहुत चाह है कि,
सब प्रसाधनों को प्राप्त करूं,
सब वस्तुओं का उपयोग करूं,
पर जुटा नहीं पाता
तन का कपड़ा और रोटी,
बहुत मेहनत करने पर भी।
पढ़ा लिखा हूं पर,

एक बैल सा, बंधा हूं,
परिवार के खूंटे से,
प्यार के रिश्ते के द्वारा,
मैं आजाद नहीं,
स्वतंत्र नहीं,
अपनी इच्छाओं से,
यही व्यथा मुझे,
निगल रही है,
यथा शक्ति से,
मैं बोझ हूं स्वयं का,
स्वयं पर बोझ हूं।

धन्यवाद आप का ग्राहक चन्दा [३१ वी अगस्त १९७४ तक] मिला।

1. Mr. C. K. Minz.
2. Mr. Michael Tirkey.
3. Sep. Laurence Kiro.
4. Mr. Nathaniel Topno.
5. Mr. S. Bage.
6. Mr. Junas Purti.
7. Mr Santosh Topno
8. Rev. C. D. L. Kujur.
9. Rev. Ph. Hemrom.
10. Mr. Elias Ekka.
11. Mr. Isahak Kujur.
12. Mr. Mansidh Dungdung
13. Mr. J. S. Horo.
14. Mr Kushal Aind
15. Mr. Keral Kumar.
16. Mr. M. Indwar.
17. Mr. Patras Kandulna.
18. Miss Christ Promila Pyari Lugun.
19. Rev Juel Bage
20. Mr. S ind
21. Cat S. K. Shal,
22. Shri Simon Baa
23. Mr Jusaph Purti
24. Mr. P. D. Kandulna
25. Mr. K. Modi

गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज के नये मकान का शिलान्यास १०-७-७४ को हो गया है। मकान बनना भी आरम्भ हो गया है। प्रार्थना कीजिये कि मकान समय पर मजबूती से बन जावे।

Gossner Mission

"अनमोल साधारण रत्न"

[अ]

१ मारना चाहते हो तो—बुरी इच्छाओं को मारो।
२ जीतना चाहते हो तो—स्वयं के अन्तःकरण को जीतो।
३ देना चाहते हो तो—नीची निगाह में दो और भूल जाओ।
४ आना चाहते हो तो—मुसीबत में पड़े हुओं के काम आओ।
५ तौलना चाहते हो तो—अपनी बात को तौलो।
६ देखना चाहते हो तो—अपने आप को देखो।
७ बोलना चाहते हो तो—मीठी, आदरपाने योग्य बातें बोलो।
८ छोड़ना चाहते हो तो—बुरे काम और बुरी संगत छोड़ो।
९ लेना चाहते हो तो—दुआएं, लो।
१० मांगना चाहते हो तो—अच्छा चरित्र और मीठी जुबान ईश्वर से मांगो।
११ सुनना चाहते हो तो—ईश्वर के भजन और गरीबों की फरियाद सुनो।

'इम्मानुएल पन्चू'
गो० थियॉलोजिकल कॉलेज, राँची

"अनमोल साधारण रत्न"

[ब]

१ पीने के लिए कोई वस्तु है तो — क्रोध
२ खाने के लिए कोई वस्तु है तो — गम
३ लेने के लिए कोई वस्तु है तो — ज्ञान
४ देने के लिए कोई वस्तु है तो — दान
५ बोलने के लिए कोई वस्तु है तो — सत्य
६ दिखाने के लिए कोई वस्तु है तो — दया
७ रखने के लिए कोई वस्तु है तो — ईज्जत
८ हारने के लिए कोई वस्तु है तो — अनीति
९ जीतने के लिए कोई वस्तु है तो — प्रेम
१० छोड़ने के लिए कोई वस्तु है तो — मोह
११ फेंकने के लिए कोई वस्तु है तो — ईर्ष्या

'इम्मानुएल पन्चू'
गो० थियॉलोजिकल कॉलेज, राँची

मेरे बदले

य.कूब पूर्ति - जमशेदपु।

१ अनमोल वस्तुओं से भी प्यारा
इस महान् जग से भी न्यारा
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सब का सहारा

२ देह पर पाप का भार उठाके
हुआ कुर्बान क्रूश का भार उठाके
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा

३ भारा पाप का मोल कोई दे न सके
इसके बदले तू बलि हुआ बन के मेमने
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा

४ हाँथ पांव पर खिलों का मार
सिर पर कांटों का ताज
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा

५ हुआ लुहान अपने तन से
निर्मल सोत बहा मेरे लिए
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा

६ था एक पुकार अन्तिम घड़ी
एली एली लमा शबक तानी
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा

७ सिघर गये इस निमित तू
अनुराग था मानव के प्रति तू
था मेरे आँखों का तारा
है तू कहाँ सबका सहारा।

Gossner Mission

बाइबिल की प्यासी

(अलफ्रेड डांग)
जी टी एच कॉलेज, रांची।

माँ के लाड़ में पली प्यारी
"मेरी जोन्स," शील सलोना
थी गरीब अति गरीब
थी छोटी पर हाँ जिद्दी,
मनस्थल नित प्रज्वलित
देख सकते थे नही कोई
चूँकि थी तो वह बच्ची ॥

मानो—थी वह साहसीनी !
पर गृह आँगन - वर्तन कर
एक-एक पैसे जुटाती।
पर, तीन सौ दाम ! ले कैसे ?
लगाई जिद् पांच वर्ष सों !
पचीस मील बेल्ला पैदल—
मोल आज बाइबिल ले आएगी ॥

थी वह गरीब बेचारी
पर गरीब, चीज किसका ?
खाना कपड़ा दाल भात का;
साथ ही ईश्वर-वचन का !
इस पीर में पड़ी कैसी !
है जीवन जंजीर ऐसी !
पर 'जोन्स' निकलती कैसी !!

रंगविरंगे लहलहाते
फूल पत्तियों से लदे
ओ ! छवि छटा कैसी !
इस कला कलाधरकी
अमर वाणी की प्यासी
"मेरी जोन्स !" ह्वेल्स वासी
जले तेरे दीप जले !!

सोचता हूँ भारी अगाड़ -
हो न हो ऐसी बच्ची
पड़ी हों कितनी प्यासी,
सण्डेस्कूल में बच्चियाँ
क्या तुम प्यासी हो ऐसी ?
सब बच्चे ! वे सब प्यासे !
दिखाओ जल दौड़ते दौड़े ॥

हुई चली अबखिली
युवती वह किशोरी,
जरूरत भी किशोरी
व्याकुलता बड़ी गठरी
उठाए बोझ अब कौन कैसी ?
गरीबी धूर्त पास नाचती ,
छीना झपटी न छोड़ती ॥

उर खिले आज गरीब के
धन सम्पदा घर भरे
जल रहे चिराग घी के
क्यूं ? बाइबिल घर आ गई,
तकदीर चमके आज घर पे
आज्ञानान्धकार दूर हुए
प्यास बूझी इस प्यासी की ॥

Gossner Mission

घटना पर आधारित कहानी !

"जलधारा"

MASKALAN BARLA
(D. U. Mission Boy's Hostel)
HAZARIBAGH

उस समय की बात है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था, होस्टल के अधीक्षक महोदय मुझे फ़ीस लाने के लिए घर जाने को मजबूर कर दिये। मैं मन मसोसकर होस्टल से निकल पड़ा। स्थित होस्टल या स्कूल से मेरे घर की दूरी १६ मील के करीब है। रास्ता जंगल पहाड़ों से होकर गुजरती है। जहां कभी-कभार जंगली वन-पशुओं का भी भय बना रहता है।

बरसात का मौसम था। आकाश काले बादलों से अच्छादित था। बादल को घाटियों से चकाचौंध कर देने वाली बिजली की चमक और गरजन दिल को दहला दे रहा था। मूसलाधार वर्षा होने लगी। बड़ी कठिनाई से कदम रुके बिना आगे बढ़ता ही रहा। सूर्य बादलों से ढँका हुआ था फिर भी अनुमान से यह पता चल रहा था कि सूर्य अस्ताचल की ओर पहुंचकर अपना मुँह छिपाने को बेताब था। मैं गरजती हुई बीहड़ नदी के तट पर पहुंच चुका था। चारों ओर सुनसान की घटा छायी हुई थी। सिर्फ नदी की जलधारा ही उदंडतापूर्ण नीरवता वातावरण को भंग करने में मस्त था। जलधारा पूर्ण जवानी की सीढ़ी पर इठला रहा था। तब तक काफी अंधकार भी छा चुका था। डर और भय से शरीर का अंग-प्रत्यंग सिहर उठता था। अपने आप में बेसहारा और निराशा की अनुभूति होने लगी।

तत्पश्चात् मैं इसी उधेड़-बुन में फँसा हुआ था कि कैसे पार लगाउँ ? — कि मुझे बाईबल की एक पंक्ति का ख्याल हुआ — "प्रभु की याद करो, वह तुझे दु:ख के बेड़ा से पार लगा देगा।" मैं प्रार्थना में लग गया। लेकिन प्रार्थना से क्या जलधारा रूक सकती है ? कभी नहीं, अत: मैं संदेह में था। लेकिन तुरंत ही मुझे बाईबिल की अन्य पंक्ति का भी ख्याल आया — "प्रभु विश्वासी जन को कभी नहीं छोड़ता है, हर हालत में सदा साथ देता है।" तब मैं विश्वास में दृढ़ होकर जलधारा में प्रवेश कर गया। नदी के मध्य पहुंचने के पूर्व ही मैं फिसलकर जलधारा के चपेट में आ गया। कुछ क्षण बाद जैसे ही जल सतह पर सिर निकाला कि एक बहता हुआ लकड़ी का एक बड़ा सा कुण्डा मेरे पास आ चुका था। मैंने उसी का सहारा लिया। कुछ नीचे जल धारा भयंकर चट्टानों से होकर गुजरती है। जैसे ही कुण्डा वहां पहुँचा कि चट्टान से टकराकर मुझ को किनारे फेंक दिया, अन्यथा मेरी जीवन लीला समाप्त हो जाती। हाथ-पैर मारकर किनारे रेत पर आ गया और राहत की साँस ली।

घना अंधकार छाया हुआ था पर भी मुझे दिशा का ज्ञान चल चुका था। अतः ठंढक से ठिठुरते हुए किसी प्रकार अपना घर पहुंच गया। सभी लोग खा-पीकर निद्रा देवी की गोद में निश्चित पड़े थे। मैंने माँ को जोर से आवाज दी। इतनी रात में, ऐसी गंभीर हालत में मुझे देखकर माँ जी की ममता उमड़ पड़ी और मुझे छाती से लगा लिया। माँ जी की ममता एवं प्यार रूपी सागर में मेरे सारे दु:ख-कष्ट घुलकर विलीन हो गये।

प्यारे मसीह भाईयो एवं बहनो, यह तो एक छोटी सी- घटना पर आधारित कहानी रही। लेकिन इस सांसारिक जीवन के पथ पर कई छोटी बड़ी घटनाएँ आती हैं और आयेंगी, जिससे हमको कभी घबराना नहीं है। सदा प्रार्थना में लगे रहकर त्राणदाता यीशु मसीह पर अटल विश्वास रखना है ताकि विश्वास और ढाढ़स को विचलने वाली घटनाएँ एवं परीक्षाएँ हमें मजबूर न कर सकें। हमको सदा यही याद रखना है —" चाहे घोर अन्धकार से भरी तराई में होकर चलूं तौभी हानि से न डरूंगा क्योंकि तू (हे प्रभु) मेरे साथ रहता है "— स्तुति। (भ. स. २३:४)

Gossner Mission

सुरगुजा मिशन क्षेत्र

परमेश्वर ने जगत को ऐसा प्रेम किया कि उसने अपने एकलौटे पुत्र को दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न हो पर अनन्त जीवन पावे यो० ३ : १६ परमेश्वर का प्रेम पुत्र के द्वारा प्रगट है, प्रभु यीशु जब दुनियां में था तो ५ प्रकार सामर्थ के काम प्रगट रुप में लोगों को दिखाये।

१ राज्यवृद्धि—सुसमाचार प्रचार
२ रोगियों के प्रति चंगाई
३ पापियों के प्रति क्षमा
४ भूखों के प्रति तृप्ति
५ मृतकों के प्रति जीवन दान।

अब प्रभु के कितने चेले और नबी लोग सामर्थ के काम प्रभु करते थे पवित्र वपतिस्मा पाने के द्वारा और यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों पर प्रभु की सामर्थ मार्क १६ : १६ से प्रगट है।

फादर गोस्सनर साहब पत्र पाते साथ चार मिशनरियों को सुसमाचार प्रचार के निमित्त छोटानागपुर भेजते हैं। चारों मिशनरी बड़े यतन से आत्मिक जोश के साथ सुसमाचार प्रचार करते हैं। प्रभु की आज्ञा मत्ती २८ : १९ में है आज सारे भूमण्डल के कोने-कोने में शहर और गलियों में नेवते जा रहे हैं। स्वर्ग के नीचे पृथ्वी के ऊपर कोई दूसरा नाम नहीं है, यीशु नाम श्रेष्ठ है, पवित्र है, महान है, यीशु के नाम पर सारी जाति के लोग घुटना टेकेंगे। फिली० २ : १० चैनपुर इलाका में सुरगुजा मिशन फील्ड के सुपरिनटेन्डेन्ट साहब मार्च माह में आये थे इलाका के भाई-बहनों के बीच प्रस्ताव पेश की गयी कि सुरगुजा में मेनोनाईट से, रोमन केथोलिक से और सांसारिक भाई-बहन गोस्सनर लूथेरान कलीशा में ग्रहण किये जा रहें हैं। सो प्रचारकों की मांग हो रही है कई एक जगह घन्टी और वेदी कपड़ा झण्डी का दरकार है। चैनपुर इलाका सहर्ष ग्रहण करती है। पांच घन्टी वेदी कपड़ा दरी दान में दिया। फिर भी आशा है कि और मण्डली दान देने में आनन्दित है। साथ में चार प्रचारक (१)—नैनसुख कुजूर (२)—नवीन एक्का (३)—वेन्जामीन भिक्टर कुजूर (४)—रेजन लकड़ा ता० १६-४-७४ को पाद्रो एस० तिग्गा इलाका चेयरमेन की अगुवाई में विदाई १ यूहन्ना १–२ पर भाषण प्रार्थना हुई। १७-४-७४, १२ बजे लूथूतपाठ मण्डली पहुचे। पूरी मण्डली चारों प्रचारकों को फूल-माला गीत-भजन के साथ स्वागत की एक घन्टी, वेदी कपड़ा के साथ बरवे और सुरगुजा बोर्डर तक पंच भाई पहुंचाये। प्रचारक आनन्द मसीह तिर्की कुसमी तक पहुंचाके गाड़ी में बैठाके वापस लौटे—धन्यवाद। ता० १७-४-७४, १२ बजे अम्बिकापुर पहुँचे। गिरजे में स्वागत हुई अम्बिकापुर के हरएक कोने में मास्टर खाखा घुमाये मसीही परिवारों के घर में प्रार्थना कि गई एक मुसलमान क्रिष्टियान परिवारों के साथ मुलाकात हुई। प्रार्थना की गयी। भगवानपुर नये क्रिष्टियान के घर गये। कवाडांड़ में रोगी लड़की के लिये प्रार्थना कि गयी, आज भी वह शक्ति प्रचारकों को भी मिलती है लड़की चंगी हो गयी। मैलदुड़ी में सुपरिनटेन्डेन्ट के साथ ९ प्रचारक थे, रोमन केथोलिक दो घर २७ लुथेरान कलीशा में मिलाये गये।

बाद में बतौली पेरिश भेजे गये। पेरिश चेयरमेन पाद्री ऐ० तिग्गा दो ग्रुप में भेजे। बतौली पेरिश लम्बी चौड़ी पेरिश है। ५२ मण्डली है। १७ प्रचारक प्रभु के दाखवारी में लगाये गये हैं। दो ग्रुप में ४ दिन १२ बजे दिन तक और रात ११—१२ बजे तक गीत भजन सुसमाचार प्रचार करते घुमते रहे अन्त में बसाझाल में दोनों ग्रुप आ मिले। सुपरिनटेन्डेन्ट पाद्री ओ० टोप्पो साहब को कल ६ बजे सुबह बतौली गाड़ी पकड़ कर सितापुर जाना है। तीन बजे रात ही उठकर गाड़ी पकड़ने चैनपुर इलाका के तीन प्रचारक बेलडांड़ के प्रचारक इलयस कुजूर के साथ ओ प्रचारक जीवन मसीह लकड़ा कुछ रास्ते तक ले गये बाद में लौटे। सितापुर पाद्री ए० कुजूर और प्रचारक हम लोगों के आशे में थे। हलदी गाढ़ टीड़ा गांव में सात जन का पवित्र वपतिस्मा हुआ सितापुर कटनाई परा में ७ जन का वपतिस्मा हुआ।

Gossner Mission

कतकालो पेरिश — जहां पाद्री पी० बेक के यहां आठ जन का पवित्र वपतिस्मा हुआ। चिरा परा मण्डली गये। रोमन कथोलिक गेटस मिशन गोस्सनर लुथेरन मिशन के लोग जमा हुए थे। गीत भजन जोरों से हुई। दो भाई एक बहन एक बालक का वपतिस्मा हुआ। ता: ३०-४-७४ को सलैनगर पहुँचे वहां नये ख्रिष्टयान होने के लिये भाई बहन जमा हुए। पूरा गिरजा घर सुशोभित जगमगा रही थी। गोत भजन से गूंज रही थी १८ जन का पवित्र नहान हुआ। एक बजे तक कार्य-क्रम रहा। कतकलो पेरिश के पाद्री, प्रचारक गीत भजन से मोहित थे। चैनपुर इलाका के तीनों प्रचारक बाद में बांट दिये गये। एक प्रचारक नवीन एक्का बिमारी के कारण अम्बिकापुर ही में ठहर गये। तीनों पेरिश के बाकी मण्डलियों में तीन प्रचारक फिर से काम करने लगे।

बतौली पेरिश के टोपटरा मण्डली में रोगियों की चंगाई प्रार्थना द्वारा कितने रोगी उसी समय चंगे हो गये। अभी भी प्रभु अपने सामर्थ के काम कर दिखाये हैं। लोगों में विश्वास की लहर अधिक बढ़ती गयी। ऐसा ही और और मण्डलियों में कितने रोगी चंगे हो गये हैं।

महेशपुर — १४ जन का पवित्र वपतिस्मा दी गयी पुड़ीझिरोंपरा में मेनोनाईट प्रचारक मण्डली के भाई-बहनों के साथ गोस्सनर कलीशा में मिल गये हैं। दिनों-दिन सुरगुजा में नये ख्रिष्टयानों की बढ़ती होते जा रही है। प्रचारकों की मांग, स्कूल, कहीं गिरजा घर का दरकार है। सुरगुजा मिशन क्षेत्र बहुत ही बड़ा क्षेत्र है, सुसमाचार प्रचार के काम को आगे बढ़ाने के लिए के० एस० एस० अंचल सभा, हरएक इलाका और पेरिश मिले-जूले काम करेगी तो अच्छा होता। ऐसा समय आ गया है कि मसीही होने की खोज हो रहो है। चन्द्रपुर एक मण्डली है जो अम्बिकापुर से ४० मील दूरी है। वहां के लोग धर्म्म के भूखे-प्यासे मसीह को ग्रहण कर लिए हैं। एक तुरी भाई वपतिस्मा लिया।

१४-५-७४ गभ्रा डांड़ में बैबल क्लास हुई सुन्दर रूप से हौस माष्टर की अगुवाई में हुई। एक धार्मिक नाटक दिखाया गया। १७-५-७४ कुसमी पेरिश के ढ़ाडिया मण्डली में पेरिश बैबल क्लास बहुत ही सुन्दर रूप से हुई विषय ज्योति विषय और वपतिस्मा था (नवगाई गांव में जहां साक्षी का प्रोग्राम रखा गया था)। भाई-बहन बड़े चाव से ईश्वर का जीवता वचन सुनते थे, गोत-भजन से जंगल भी गूंज गया था। गोस्सनर कलीसा की ओर से सुरगुजा मिशन फिल्ड के काम और वहां के कर्म्मचारियों के लिये अच्छा प्रबन्ध बनाया जाय ताकि सुसमाचार प्रचार की बढ़ती हो।

प्रचारक—नैनसुख कुजूर
अमगांव
चैनपुर इलाका

Gossner Mission

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—६४ राँची, ओक्टोबर १६७४, संख्या नं.—१०

सूचना

औल विहार क्रिश्यन स्कूलस् असोसिएशन का दूसरा अधिवेशन सेन्ट जेवियर हाई स्कूल हजारीवाग में दिसम्बर २७-३०, १६७४ को होना निश्चित् हुआ है। स्कूल के प्रधानों से निवेदन है कि अपने स्कूलों की सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजें और अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए उक्त दिनों को रिक्त रखें।

निवेदक—

पौल लखन लाल

मंत्री

२७७ अनुग्रहपुरी

गया

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी॰ ४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

वर्ष — ६४ रांची, अगस्त १९७४ संख्या ८

EINGEGANGEN
28 OKT. 1974
Erledigt .....



परमेश्वर का भय मानना
ज्ञान और बुद्धि का
आरम्भ है।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh,
Rev. Dr. N. Minz

Associate Editor

Rev. C. S. R. Topno

Editorial Committee

Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
अतीत की याद		—	५
शुद्ध अशुद्धता की झलक		—	७
एसोसिएट एडीटर की संक्षिप्त चिट्ठी		—	९
चल्हो मंडली में संण्डे स्कूल		—	१०
All India Church Suppliers		—	११
हमारी मंडली की दशा		—	१२
कलीसियाई समाचार		—	१३
सिंघानी मसीही संगठन समारोह		—	१४
मध्य अंचल खूंटीटोली युवा संघ		—	१५
शोक समाचार		—	१७
ग्राहक चन्दा		—	१८
बूढ़े बाबा की राय		—	१९

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप क भेजा जायगा ।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं ।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चच [के० एस० एस० ऑफिस], राँची ।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए ।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी और 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है ।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा ।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा ।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी ।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें ।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें ।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें ।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें

Gossner Mission

सम्पादकीय

अगस्त माह भारत के लिए विशेष घटना को बतलाता है। १५ अगस्त १९४७ में भारत आजाद हुआ। स्वतंत्र भारत के नागरिक होने के कारण अपने अधिकार और जवाबदेही को निबाहना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। मतदान देना अधिकार और जवाबदेही को पूरा करना है। विधान सभा तथा लोक सभा के चुनाव के समय हमने अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने का प्रयास किया है। पर एक नागरिक को स्वतंत्र राष्ट्र में एक मौलिक नैतिक जीवन पर भी ध्यान देना आवश्यक है। मसीहियों को देश भक्ति तथा नागरिकता का अच्छा परिचय देना उचित है। मसीहियों के लिए सत्य, न्याय और धार्मिकता सहित अपना नागरिक जीवन व्यतीत करना है।

भारत में, बिहार प्रदेश तथा छोटानागपुर भूखंड में अनेक समस्याएँ हैं जो देश की प्रगति में अड़चन ला रही हैं। इनमें अन्याय, अनैतिकता और आधार्मिकता ही मूल हैं। समाज तथा परिवार में इन सद्गुणों की कमी के कारण हम उन्नतशील राष्ट्र नहीं हो रहे हैं। मसीहियों को इन समस्याओं पर विचार करना तथा उनके समाधान के लिए देश की सहायता करना अनिवार्य है। गोस्सनर कलीसिया ओटोनमस कलीसिया होकर भारत को स्वतंत्रता की राह में आगे बढ़ने के लिए साथ दे सकेगी। अतः इस कलीसिया के सदस्यों को अपने अधिकार और जवाबदेही का समुचित व्यवहार करना ही है कि समाज और देश का उत्थान हो।

— सम्पादक

घरबन्धु, अगस्त १९७४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे ८ वां एतवार

रोमी ८:१२-१७

बपतिस्मा के द्वारा हम ख्रिस्त यीशु में रोपे गये हैं। हमारे जीवन का मोड़ बदल गया है। हम परमेश्वर के सन्तान हो गये हैं।

"हम परमेश्वर के सन्तान हैं"

क—आत्मा के अनुसार जीवन बितावें:—आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने का अर्थ है शारीरिक इच्छाओं को दबाना। शारीरिक प्रवृत्तियाँ निम्नांकित हैं—व्यभिचार, अशुद्धता इत्यादि देखो गलाति ५:२०+२१।

ख—भयग्रस्त न हो:—शरीर के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाला बराबर भयभीत रहता है। हमारे जीवन में मृत्यु और शैतान का भय लगा रहता है। परन्तु ईश्वर के प्रिय लोगों के लिये भय नहीं है। देखो रोमी ८:३१-३८

परमेश्वर के सन्तान आत्मा की अगुवाई से चलें। किसी बात का भय न रखें। क्योंकि यीशु ने उसकी जगह में मृत्यु और शैतान का दमन किया है।

त्रिनितातिस के पीछे ९वां एतवार

१ कुरि० १०:१-१३

हमारे पूर्वजों का इतिहास हमारे लिये शिक्षाप्रद होता है। पावल प्रेरित इसराएल के इतिहास से आज मंडली को शिक्षा देता है। (गिनती ११:४; १४:२+३७; २१:५+६; २३:१-९) इसराएल को ईश्वर ने बड़ी आशीष दी। परन्तु पाप के कारण उनका बिनाश हुआ।

"इसराएल का इतिहास हमारे लिये चितौनी,,

१ मेघ एवं समुद्र में बपतिस्मा:—इसराएल लाल समुद्र पार करती है। जब तक वह लाल समुद्र पार नहीं करती है तब तक पुराने जीवन में है। लाल समुद्र पार करने के बाद उसका जीवन नया हो गया है। परमेश्वर उस पर अनुग्रह दृष्टि करता है। (निर्गमन १३:२१+२२, १४) इसी प्रकार मसीही लोगों के लिये बपतिस्मा मानों लाल समुद्र के समान है मसीही लोग बपतिस्मा के पहले इसराएल के समान पुराने जीवन में जीते हैं। बपतिस्मा के बाद वे नया जीवन व्यतीत करते हैं।

इसराएल लाल समुद्र पार करने के बाद पाप करती है, और नाश होती है। इसी प्रकार बपतिस्मा पाया हुआ मसीही पाप करने पर नाश होता है।

२ आत्मिक भोजन आत्मिक जल:—ईश्वर आप ही इसराएल के लिये आत्मिक जल और भोजन का प्रबन्ध करता था परन्तु इसराएलियों ने पाप किया और ईश्वर को अप्रसन्न किया। (५-११)

ईश्वर मसीहियों के लिये भी यीशु मसीह में प्रभुभोज का प्रबन्ध करता है। बचन और सक्रामेन्त हमारे लिये अनुग्रह के उपाय हैं। जब हम-बचन और सक्रामेन्त को तुच्छ करते हैं तब ईश्वर का दण्ड हम पर पड़ता है।

"हम सावधान रहें"

त्रिनितातिस के पीछे १० वां एतवार

१ कुरि० ११:१-११

पावल प्रेरित धन्यवाद देता है कि ईश्वर ने कुरिन्थ मण्डली को कई बातों में धनी किया है। (१:४-७) इस वचन में वह भिन्न-भिन्न आत्मिक बरदानों के विषय शिक्षा देता है। (१ कुरि० १४:१; २६; इफि० ४:४-६; १:१७ २३; कुलुसी १:९; रोमी १२:४-८) आत्मिक बरदानों का सदुपयोग और दुरूपयोग दोनों हो सकता है। इसलिये पावल इन बरदानों के विषय साफ-साफ शिक्षा देता है।

Gossner Mission

"आत्मिक बरदानों की भिन्नता में एकता,,

२ आत्मा की सहायता से यीशु को प्रभु कहना-ईश्वर के आत्मा के द्वारा हम बुलाये जाते हैं। यीशु की कलीसिया में रोपे जाते हैं। आत्मा ही हम में विश्वास उत्पन्न करता है। हम उसी की सहायता से यीशु को प्रभु ग्रहण करते हैं। परन्तु आत्मा की अगुवाई प्राप्त करने के पहले हम मूर्तिपूजक थे। (यूहन्ना ६:४४; १ कुरि० २: १०-१६) पद १३ भी ध्यान से पढ़ें। हम ने एक देह होने के लिये बपतिस्मा पाया है।

२ एक ही आत्मा भिन्न-भिन्न बरदान देता है:—

(क) आत्मा—प्रभु परमेश्वर एक ही है—परन्तु सेवा के प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं।

(ख) आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार बरदान देता है।

(ग) बरदान कलीसिया की भलाई के लिए दिये जाते हैं।

"हम आत्मिक बरदानों के विषय अज्ञात न रहें। परन्तु बरदानों को कलीसिया की उन्नति में लगा देवें"।

त्रिनितातिस के पीछे ११ वां एतवार

१ कुरि० १५:१-११

हमारी कलीसिया की उम्र एक सौ साल से ऊपर हो गयी है। आरम्भ में हमारे बाप दादाओं ने सुसमाचार सुना और विश्वास किया। परन्तु वर्त्तमान में सुसमाचार की सत्यता का प्रभाव लोगों के जीवन द्वारा प्रगट नहीं की जा रही है। प्रश्न है—क्या हमारे पूर्व्वजों ने आज के सुसमाचार से किसी प्रकार का दूसरा सुसमाचार सुना? पौलुस का जवाब है-सुसमाचार एक है। (४-८, १०-१२)

सुसमाचार क्या है?

१ हमारे पापों के लिये—

यीशु मर गया। वह पवित्र होते हुए भी मानव जाति की जगह में मर गया। पाप के लिये मानव जाति को मृत्यु में जाना था। परन्तु यीशु ने आप ही मानव जाति की जगह में मृत्यु का दण्ड उठाया।

यीशु ने सबों के लिये उद्धार कमाया है। पाप, मृत्यु और शैतान से सबों को बचाया है। यीशु की मृत्यु तथा गाड़ा जाना ही सुसमाचार है।

२ मेरे पापों के लिये—

मैं दरिद्र हूँ। शिक्षक, प्रचारक, पाद्री, भिखारी, मूर्ख, विद्वान, धनी सभों के पापों के लिये यीशु मर गया।

यीशु के मर जाने, गाड़े जाने और जी उठने से मेरे लिये जय का रास्ता तैयार किया गया। वर्त्तमान में वह एक जीवित और शक्तिमान प्रभु है। वह मुझसे मुलाकात कर मुझ पापी को पवित्र कर सकता है।

यीशु अभी मिल सकता है। विश्वासी के लिये वह प्राप्य है। कारण बस, किसी गुप्त या प्रगट पाप के कारण सुसमाचार हमारे लिये साफ नजर नहीं आता है। सुसमाचार यीशु आप ही है। वह मेरे लिये और आप के पापों के लिये मर गया, गाड़ा गया और जी उठा।

अतीत को याद

अशियन पुर्ती—न्यू गार्डेन सिरोम टोली

मौत की अन्तिम शय्या पर लेटे, फिर भी मौत से जी तोड़ झुजते मुझे तनिक भी यह आशा नहीं कि मैं कुछ दिन और जो सकूँ.....हाँ जीने की ख्वाहिश अब भी है। अब भी मैं जीना चाहता हूं। यह जानते हुए भी कि अगर मैं बचगया तो मेरी जिन्दगी मौत सेक्या बदत्तर होगी! यह जानते हुए भी कि मुझे अगर जीना है तो दूसरों के रहम और सहारा पर हो.....।

जिन्दगी के सत्तर वर्ष कैसे गुजरे.....कैसे गुजारे कुछ याद नहीं पड़ता। इज्जत और पैसे पास थे, तो ऐश और आराम ने जिन्दगी के लम्बे अरसे को छोटा कर दिया।

Gossner Mission

लेकिन अपनी जिन्दगी का दायरा इतना सीमित भी न था। मेरी जिन्दगी में दु:खों का तुफान भी आया..... गम की अंधेरी रातें भी.....ठहाकों से भरी रंगीन और मस्त शाम भी.....दर्द और आंसुओं में डूबी सुबह भी। जिन्दगी के अन्तिम दिनो में.....मौत के बहुत करीब आकर भी जब बहुओं की हिकारत भरी आँखें मेरा पीछा करती—तो मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो जाते.....उनके शब्दबाण अप्रत्यक्ष रूप से जब मुझे भेदती तो मैं उनके शब्द भवरों में खो जाता.....तो लगता है मुझे अब जीने का हक नहीं.....जीना नहीं चाहिये। फिर भी जीना चाहता हूँ अपने लिए नहीं.....रश्मि के लिए..... लेकिन पता नहीं !.....मेरे मन में जिन्दगी की एक धुंधली आशा है, जो कभी मिट जाती है.....कभी प्रज्वलित हो उठती है।

यद्यपि एकान्त चिन्तन से बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ, बहुत से रहस्यों का पता चला.....फिर भी लेटे-लेटे ऊब उठा हूँ.....किन्तु ! उठ भी नहीं सकता, जी चाहता है बात करने को.....लेकिन सुनी और सपाट दीवारें मेरी बातों का मर्म क्या समझती.....पढ़ना चाहता हूँ तो लगता है जिन्दगी का सम्पूर्ण अंधेरापन मेरी आँखों में समा जाना चाहता है। तब लगता है—यही तो मेरी जिन्दगी है.....मेरी जिन्दगी की वास्तविकता.....फिर खो जाता हूँ अपनी उसी पुरानी दुनियां में..... उलझ जाता हूँ जहाँ से मैं हमेशा-हमेशा भागना चाहता हूँ। जितना भागता हूँ.....यादों का घेरा उतना ही मजबूत हो जाता है।.....जाने.....अनजाने.....अनचाहे भी लता की याद आ जाती है, लता, जिसके साथ मेरे माता पिता ने ही नहीं मैं ने भी अन्याय किया था। उसकी सिसकियां अब भी कानों में पड़ती है। इसकी आवाज अब भी दिल को हिला देती है "दीपक, तुम इतना निर्दय कब से हो गये ?" और उसका भागकर किवाड़ बन्द कर लेने का दृश्य बड़ा दर्दनाक था लेकिन उस वक्त मैं ने इसे इतना महत्व नहीं दिया था। मैं अपने पत्नी और बच्चों में खो चुका था.....वक्त ने लता की धुंधली आकृति को भी समेट लिया.....मैं भूल गया.....भूल जाता, अगर पचीस वर्ष बाद ऐसा ही (बल्कि इससे भी भयानक) घटना की पुनरावृति मेरे रश्मि के साथ न हुआ होता। मैं तड़प उठा था—रश्मि को कुवांरी माँ बनते देखकर। तब पहली बार मैं ने महसूस किया था कि मैं ने भी एक मासूम जिन्दगी से खिलवाड़ की थी...किसी के निश्चल विश्वास को चोट पहुंचाया था। मेरा दु:खी और अशान्त मन उस उम्र में भी लता को ढूंढ़ने लगा था.....वह मिली तो नहीं सुना अपने दो योग्य पुत्र और पति के साथ सुखी है। बहुत मुद्दत बाद मेरे चेहरे पर संतोष को एक हल्की लकीर आई भी तो रश्मि के दर्द भरे जीन्दगी में पुनः डूब गई। उसके सुने और रूखे चेहरे पर कभी हँसी की परत आई हो—याद नहीं पड़ता। मैं जो दीपक था मैं अपने ही घर को उजाला न कर सका.....शायद इसलिए कि मैं ने भी किसी के जिन्दगी को अंधकार में ढकेल दिया था। अपराध का एहसास प्रयश्चित न बन सका.....और आज भी मैं तड़प रहा हूँ ...जल रहा हूँ उसी आग में—जिसे मैं ने स्वयं लगाई थी।

आज रश्मि की बेटी जवान हो चुकी है.....साथ ही खूबसूरत भी। इस घटना को हुए बीस बाईस वर्ष हो चुके हैं.....लेकिन अब भी लोगों की विचित्र और हिकारत भरी आँखें उसे घूरती है.....जैसे यह अपराध उसकी माता से नहीं स्वयं उसी से हुई हो। छोटी सी भूल.....छोटी सी गलती थोड़ा असंयम ने एक बेकसूर जिन्दगी को कितना बड़ा भूल बना दिया। क्या समाज की दृष्टि कभी बदल सकती है.....क्या कोई परिवार अनुजा को बेझिझक अपना सकता है.....शायद नहीं। यही दो अक्षरों का शब्द 'नहीं' मेरे अशान्त मन में दु:खों का अम्बार सा लगा देता है। मैं दु:खी हूँ.....मन अशान्त है.....लेकिन दोष किसका.....मेरा ? समाज का ? नहीं मेरा है, मेरा अपना ! ईश्वर ने मेरे साथ कभी कोई अन्याय नहीं किया... मुझे तो अपने कर्मों का फल ही मिल रहा है। आज अगर मैं दु:खी हूं तो इसका कारण सिर्फ यही है कि इस दु:ख की सृष्टि आज से पचपन वर्ष मैं ने स्वयं की थी.....।

—:o:—

घरबन्धु, अगस्त १९७४

Gossner Mission

शुद्ध अशुद्धता की झलक

सारे दुनिया में शुद्ध अशुद्धता की बातें हैं, सारे मनुष्य जाति हरएक अपने खाने पीने, काम धाम, चाल व्यवहार के ऊपर शुद्ध अशुद्ध मानते हैं, जिसके कारण एक दूसरे के संगति से अलग रहते हैं, किन्तु हम मसीही जो भी जाति वर्ग के हों बपतिस्मा के द्वारा एक हैं, गलाति ३, २८। हम शुद्ध पवित्र धोये गये हैं ? को. ६:११। नई सृष्टि हैं २ को.५, १७। पौलुस प्रेरित कहता है कि इस संसार के सदृश न बनो····· ···रोमी १२, २।

इससे हम ईश्वर के सन्तान हैं गलाति ३, २६। ईश्वर चाहता है कि हम शुद्ध पवित्र बनें १ पतः १,१५। इसलिये सब बातें परखना और अच्छा को पकड़ना है, १ थिसः ५, २१। हम केवल दारु हाड़ी शराब को अशुद्ध मानते हैं, जिसके सेवन से मनुष्य अनेक प्रकार के अशुद्धता और पाप में पड़ता है। इसी प्रकार और एक अशुद्धता और पाप में गिराने वाला साथी है, जो सैकड़ा नवे हम मसीही फंसे हुए हैं, अर्थात तम्ब.कू, हुका, बिड़ी, पान, सिगारेट, गुड़ाखू आदि, ये शरीर की कुअभिलाषा और कुसंगतियों से शुरु होता है, इसका सेवन करना मां बाप चाहे किसी गुरु जनों का पाठ नहीं है। ये शरीर को जीवन देने वाले चीजें नहीं, न इनसे पेट भरता या:५५.२। न सभ्य मानव में मान्य चीजें मानी जाती हैं, केवल सेवन करने वाले प्रेम आदर मान्य मानते हैं, सेवन करने वालों का मुंह कितना अशुद्ध खराब बसता, दांत काला होना जिसको सेवन करने वाले आप अनुमान नहीं करते हैं, केवल जो सेवन नहीं करते अशुद्धता का अनुमान है।

जगत इतिहास की बात है कि किसी डाक्टर ने इन अशुद्ध नशीली चीजों का मान्य नहीं दिया है, पश्चिम देशों में हानिकारक बिष माना जाता है। हम आप ही अनुमान करें, शराब पीकर जब मनुष्य मात जाता है तो दुनिया भरका बिना डर भय लाज बकने लगता है, किन्तु तम्बाखू, गुड़ाखू आदि से जब मातता है तो सिर में चक्कर, पांचों इद्रियों में दुर्बलता और निशा रहते भर चैन नहीं लगता है, विशेषज्ञओं का कथा है कि जो बचपन से तम्बाखू, गुड़ाखू आदि सेवन करता है सिखने पढ़ने में भद्दापन रहेगा।

अमेरिका के बड़ी २ पाठशालाओं में जांच की गई, प्रत्येक पाठशाला से २०, २०, लड़के तम्बाखू सेवन करने वाले और ना करने वाले चुने गये, इस जांच का फल यह हुआ कि तम्बाखू सेवन करने वाले २० लड़कों में से १८ मूर्ख और भद्दे पाये गये, और न करने वाले २० लड़कों में से केवल एक ही मूर्ख और भद्दा निकला, फिर थोड़े बर्ष बिते ४१२ युवकों ने सामुद्रिक सेना शिक्षालय में निवेदन पत्र भेजा, जब उनकी परीक्षा हुई तो २९८ निकम्मे पाये गये, क्योंकि तम्बाखू सेवन से उनका हृदय और शरीर की मुख्य इन्द्रियां सदा के लिये बिगड़ चुकी थीं, फिर बुरी बात यह है कि बच्चे तम्बाखू गुड़ाखू आदि सेवन के द्वारा बहुधा झूठ, चोर, दुराचारिता सिखते हैं।

आश्चर्य्य की बात है कि २०, २५ वर्ष के पहले इन नशीली चीजों का इतना प्रसार नहीं था, जैसा अब है, पहले मां बाप बच्चों को धमकाते थे पर अब मां सब ही अपने ३, ४ बर्ष के बच्चों को प्यार से गुड़ाखू सेवन कराना सिखाते हैं, खुद अपने बच्चों का मस्तिष्क और स्नायु आप ही बिगाड़ डालते हैं, यह कहके कि दांत रोग का सर्व श्रेष्ठ दवा है। द्रव्य गुण कल्पद्रूम में उल्लेख है कि दांत समूह दृढ़ता सम्पादक और अरुचि नाशक द्रव्य तैल गण्डूष सर्व श्रेष्ठ है। बुद्धि धृति स्मृति नाशक पदार्थ नशीली चीजें सर्व श्रेष्ठ है, हितकारक द्रव्य हरड़ सर्व श्रेष्ठ माना जाता है आदि किन्तु गुड़ाखू दांत रोग का सर्व श्रेष्ठ दवा नहीं है। हमें चुनना परखना पहिचानना है।

संसार में अशुद्धता मान कर कहीं कहीं थूकदानी का इन्तिजाम है, क्योंकि सेवन करने वाले अपने मुह में तम्बाखू रखकर यहां वहां दिन भर फेच २ थूकते रहते हैं, ये सब हम शुद्ध और पवित्र ही मानते हैं प्रभु मत्ती १५, ११, मार्क ७, १५, में कहता है मुंह से जो निकलता

Gossner Mission

है उसी से मनुष्य अशुद्ध होता है, तो इन नशीली चीजों को सेवन कर यहां वहां थूकना मुंह को दुर्गन्ध करना क्या शुद्धता है ?

इन नशीली चीजों का अभ्यास को छोड़ने के लिये स्वास्थ्य और दीर्घायु नाम पुस्तक में कितने उपाय दिखाये गये हैं, फिर द्रव्य गुण कल्पद्रूम में सब नशीली चीजों का अभ्यास को छोड़ने के लिये हरड़ खाना दिखाया गया है। हरड़ सेवन करना इन नशीली चीजों से हजार गुना शुद्ध श्रेष्ठ मा ना जाता है, कोई भी हरड़ को अशुद्ध नहीं मानते है। वैद्यक में हरड़ का सेवन ऐसा है— वर्षा मौसम में सेंधा नमक के साथ, शरत में चीनी, हेमन्त में सोंठ, शिशिर में पिपली, वसन्त में सहद, गृष्म में गुड़ के साथ, किन्तु बहुधा अपने रुचि के अनुसार गुड़, सोंठ, पिपली के साथ तम्बाखू जैसा दिन भर सेवन करने तम्बाखू का अभ्यास शिघ्र लोप हो जायगा। थूकना बिल्कुल नहीं है, जो सेवन करेगा आप ही इसका फल पावेगा। जंगल एरियाओं के लिये बहुत सहज उपाय है।

सूचना

गोस्सनर कलीसा में काम करने वाली सभी प्रचारिकाओं के लिए १५ से १९ अक्टोबर १९७४ तक एक रिफ्रेशरस कोर्स रांची में होगा। इच्छुक बहनें मिसेस पी० मिंज, सेक्रेटरी महिला संघ से पत्र-व्यवहार करें।

निवेदक

पी० मिंज
सेक्रेटरी
महिला संघ

दुःख की बात है कि इस लेख को कितने सज्जन पढ़कर विरोध करेंगे। १९५५ जनवरी घरबन्धु में बिलकन होरो जमशेदपुर परिवर्त्तन के लिये कलीशिया युवक संघ विशेष ध्यान देकर रोकने के लिये इशारा दिये थे। लेख का विरोध करने वाले वे ही हैं जो इन अशुद्ध नशीली चीजों को मान्य स्थान दिया है, जो कि शरीर की पांचों इन्द्रियों का वास्तविक अशुद्ध और मरान्यक चीजे हैं, और संसार के सभ्य मानव अशुद्ध चोजें ही मानते हैं। खेद की बात है कि इन नशीली चोजें सेवन के कारण हम अन्य प्रोतेस्तान्त सज्जनों से खैनी खाने वाले कहे जाते हैं, जो भी हो अपने २ बच्चों को इन अशुद्ध नशोली चीजों से बचावें, सेवन करने वाले मान्य स्थान न देवें, और जो इन अशुद्ध नशीली चीजों को त्यागने चाहें हियाव और विश्वास के साथ किसी उपाय को अवलम्बन करें, पहाड़ को समुद्र में गिराने से इन अशुद्ध नशीली चीजों को छोड़ना सहज है, मत्ती २१, २१।

आपकी सेवा में
पी. एस लुगुन
मधुपुर इलाका

सूचना

गोस्सनर कलीशा महिला संघ का वार्षिक बेबल शिक्षा शिविर २१ से २३ अक्टोबर १९७४ तक खुंटीटोली जी० ई० एल० चर्च कम्पाऊंड में है। सभी बहनें जरुर भाग लेने की चेष्टा करें। आने वाले महीने के घरबन्धु में पूरा प्रोग्राम छपेगा।

पी० मिंज
सेक्रेटरी
महिला संघ

प्रबंधक समिति जी० ई० एल० चर्च राँची के तत्वाधान में, गोस्सनर कलीसिया की सेवकाई के निमित "खड़िया अलोंग" छप कर तैयार है। आप अपनी आवश्यकता जनाकर हमें आपकी सेवा करने का मौका दें।

दुरंग पुथी की छपाई चल रही है, हमें आशा है कि दुरंग पुथी भी नोवेम्बर १९७४ तक में छप कर तैयार हो जाएगा।

मैनेजर, जी० ई० एल० चर्च प्रेस, राँची।

Gossner Mission

एसोसिएट एडीटर की संक्षिप्त चिट्ठी

प्रिय पाठको,

आप सभों को मेरा यीशु सहाय ।

आज पहली बार मेरा नाम देखकर आप सभों को आश्चर्य हो रहा होगा, कि यह नया व्यक्ति कहाँ से टपक पड़ा ? संभवत: आप में से अनेकों को माननीय डा० सी० के० पौल सिंह की प्रत्यक्ष संगति का अभाव खल रहा होगा। क्योंकि स्वयं मुझे भी, घरबन्धु के साथ उनकी प्रत्यक्ष संगति का अभाव से बड़ा दु:ख है । परन्तु खास कारणों से उन्हें ऐसा करना पड़ा ।

उनके आग्रह के अनुसार अधिकारी वर्ग ने उन्हें छुट्टी दे दी, और एसोसिएट-एडीटर का काम मुझे सौंपा है। इस अवसर के लिए मैं जी० ई० एल० चर्च के अधिकारी वर्ग को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। किन्तु साथ ही मैं यह कह देना उचित समझता हूँ कि मेरे कमजोर कन्धे इस योग्य नहीं हैं, कि इस कठिन भार का वहन कर सकें। परन्तु इस आशा और विश्वास के साथ कि आप हमेशा हमारी मदद करेंगे, तथा परमेश्वर जो सर्वसामर्थी है, हमें सामर्थ, बुद्धि और ज्ञान प्रदान करता रहेगा, मैं इस कठिन भार को अपने कन्धों पर लेता हूँ। आप सभों से मेरी अपील है कि आप हमें अपना पूर्ण सहयोग दें, ताकि हमारी यह पत्रिका जीवन के पथ पर आगे बढ़ती जाए, और इसके द्वारा परमेश्वर की महिमा सब लोगों के बीच प्रकट हो ।

प्रभु में आप सभों का दीन सेवक:

सी० एस० आर० तोपनो ।

घरबन्धु के ग्राहकों से अनुरोध है कि आप अपना ग्राहक चन्दा निम्न पते पर ही भेजें:-

एसोसिएट एडीटर घरबन्धु
जी० ई० एल० चर्च (के० एस० एस०) आफिस
रांची, बिहार ।

मंडली समाचार

१५ जून, १९७४ ई० को राँची में प्रमुख अध्यक्ष के ऑफिस में दो जवानों को कंडीदत्त घोषित किया गया, वे हैं:—

१. कं० सुभाष चन्द्र नायक
२. कं. अधीन समसोन कन्डुलना ।

इसी दिन दस जवानों को पदभिषेक के लिए योग्य उम्मीदवार घोषित किया गया। ३० जून १९७४ ई, को राँची ख्रिस्त में 'वयस्क आराधना' में इनके पदाभिषेक का कार्य सम्पन्न किया गया ।

पदाभिषेक की विधि में विशेष हाथ बटाने वाले थे:—

१. माननीय पाद्री - डा० एन० मिंज
२. ,, ,, एम० टेटे
३. ,, ,, एन० मुइयाँ
४. ,, ,, सी० एस० बी० होरो
५. ,, ,, पी० डी० सोरेंग

इनके अतिरिक्त पाद्री आर० डांग
,, के० डी० सोय
,, जे० एम० मिंज
तथा ,, जे० तिर्की भी उपस्थित थे ।

पदाभिषेक पाने वाले निम्न व्यक्ति थे.—

१. पाद्री–विराज कुजूर,
२. ,, थेओदोर एक्का
३. ,, प्रीतम हंसदा
४. ,, निर्मल तिग्गा
५. ,, नेलशन तोपनो
६. ,, सबन मार्टिन तोपनो
७. ,, पियुस तोपनो
८. ,, आल्बर्ट मिंज
९. ,, सबन रोयन तोपनो
१०. ,, सुशील रोयन जोजो

बारह बजे दिन को कार्यवाहक प्रमुख अध्यक्ष तथा उनकी धर्मपत्नी द्वारा आयोजित सहभोज में नये अभिषिक्त तथा अभिषेक को विधि में भाग लेने वाले पाद्रियों ने भाग लिया। सामान्य तौर पर अभिषेक की विधि का यह अन्तिम कार्यक्रम था। पाठकगण इन नये अभिषिक्त पाद्रियों को अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करेंगे ।

पदाभिषेक

यीशु ने चेलों से कहा पक्के खेत बहुत हैं पर मजदूर थोड़े इसलिये खेत के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे। जाओ देखो मैं तुम्हे भेड़ों की नाई भेड़ियाओं के बीच में भेजता हूँ ।

लूक १०: २ + ३.

बड़े हर्ष के साथ जनाया जाता है, कि इस बार हमारी कलोसिया में सेवकाई कार्य निमित्त दस जवानों का पदाभिषेक राँची ख्रिस्त गिर्जे में ३०.६.७४ को सानन्द सम्पन्न हुआ ।

Gossner Mission

चाल्हो मंडलो में

"सन्डे स्कूल," और "क्रुश सेना" की स्थापना और संक्षेप इतिहास

१ क्रूश सेना :— चाल्हो मंडली, लोहरदगा इलाका में एक पुरानी मंडली है। इस मंडली के माननीय स्वर्गीय प्रचारक श्री प्रभु सेवक टोप्पो के लिखितानुसार, लोहरदगा इलाका में १९४० ई० में "क्रूश सेना" नामक संस्था का स्थापना हुआ। और दो साल के बाद १९४३ ई० में लोहरदगा इलाका की "पहली बैबल क्लास की नेव डाली गयी, और आज १९७४ में ३२ वां साल होने जा रही है। इसो सिलसिले में चाल्हो मंडली में श्री सी. एम. तिग्गा के द्वारा दिनांक १०.७.१९५६ ई. में ओटोनोमस पर्व के सुअवसर पर "क्रूश सेना संस्था का स्थापना हुआ। संस्था के प्रथम अगुवे श्री विलसन मिंज, और श्री सुबोध टोप्पो हुए, कुछ समय तक यह संस्था श्री रूबिन कुजूर के द्वारा चलाया गया। आगे १९६६ के फैसलानुसार श्री पी. मिंज सभापति, और श्री आर. लकड़ा सेक्रेटेरी हुए। आज १९७४ में "चाल्हो मंडली क्रूश सेना की अवस्था १८ बर्ष हो गयो। इतने वर्ष बीत जाने पर भी "मंडली बैबल क्लास" का आयोजन नहीं हो पाया, किन्तु हर्ष का विषय है कि, इस साल १९७४ में दिनांक ८-६-७४ को "चाल्हो मंडली क्रूश सेना" की १ली बैबल क्लास का नेव डाला गया। विषय था, घर्म के लिये जाग उठो। १ कुरिन्थ १५:३४, वर्तमान में क्रूश सेना को जन संख्या ४५ है।

२ सन्डे स्कूल:— यह धार्मिक स्कूल मसीही बच्चे और जवानों के लिये ईश्वर की ओर से श्री रोबर्ट खेस के द्वारा १८८७ ई० सन् में खड़ा किया गया। १९४७–१९५८ के बीच में लोहरदगा में थेओलोजिकल कालेज छात्रों के (अगुवाई) में यह संस्था चलाया गया। इसी आदर्श नमूना को चाल्हो मंडली ने ग्रहण किया, और १९५० ई० में यहां सन्डे स्कूल खड़ा किया। पहले पहल सन्डे स्कूल के संचालक मंडली प्रचारक हुए। बाद में क्रूश सेना के जवान युवतियों के अधीन कर दिया गया। वर्तमान में सन्डे स्कूल के संचालक, सभापति, सेक्रेटेरी, और खजांची है। तथा कार्यकर्ता जवानों की ओर से तीन, और युवतियों की ओर से तीन, कुल ६ हैं। कार्यकर्ताओं का काम घंटी मारना, सिरनी उघाना, गिरजा घर साफ करना और बच्चों को गिरजे में शान्ति से रखना इत्यादि। सन्डे स्कूल एतवार शाम को होती है। क्लास दो समूह में किया जाता है। साल में सन्डे स्कूल की दो बैठकी, तथा दो बार परीक्षा लिया जाता है। वार्षिक परीक्षा में उर्तीण छात्रों के लिये पुरस्कार दिया जाता है। किन्तु १९७४ से पुरस्कार के साथ २ "प्रमाण पत्र' देने की व्यवस्था की गयी। वर्तमान में सन्डे स्कूल की क्रम संख्या ११५ है। क्रूश सेना के जवान युवतियों के सहयोग से चाल्हो ब्रांच मंडली में, तथा टोला २ में, सन्डे स्कूल की स्थापना हुई, और सन्डे स्कूल उन्नतशील क्लास, और सन्डे स्कूल लीडरशीप क्लास की जगह २ आयोजन किया गया। वर्तमान में "सन्डे स्कूल" और क्रुश सेना की उन्नति दिनों दिन बढ़ते ही जा रही है। इससे हमारी आशा ही नहीं किन्तु पूर्ण विश्वास है कि, मंडली की शोभा और परमेश्वर की महिमा होगी। आगे हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर हमे दृढ़ और अटल रखे, और प्रभु के कामों में बढ़ने के लिये हमें आशीष देवे, और जीवन भर अगुवाई करे। १ कुरिन्थ १५:५८। वर्तमान में श्री पी. मिंज दोनों संस्था के सभापति, जोर्ज मिंज सेक्रेटेरी और सुबोध खाखा खजांची हैं। धन्यवाद।

बैबलशास्त्र से प्रश्न और उत्तर

१ परमेश्वर यहोवा किन का नाम है। आमोस ४:१३

२ देह, आत्मा, आशा, विश्वास, बपतिस्मा, और प्रभु, बैबल में कितने २ हैं। इफिसी ४:४-६

३ बचन सिखाने वालों की चमक कैसे होगी
दानियेल १२:३

४ परमेश्वर के सिंहासन का मूल क्या है, भजन ८९:१४

५ धन किस के ओर से मिलती है। नीति: १०:२२

Gossner Mission

६ धर्मी मनुष्य किस से जीवित हैं । इब्रानी १०:३८
गलति ३:११

७ यहोवा परमेश्वर "हाय" क्यों पुकारता है । यशा: १:४

८ कौन सा समाज धन्य है । भजन ८९:१५

९ मनुष्य भलाई को जानते हुए भी नहीं करता क्या है । याकुब ४:१७

१० परमेश्वर की आशा देखने वाले क्या पावेंगे ।
यशा: ४०:३१

११ परमेश्वर क्या कहता है । यशा: ४१:१०

१२ यीशु मसीह क्यों बुलाता है । मती ११:२८

१३ यीशु हमें बुला कर कहाँ भेजता है । मती २८:१९

१४ पाप के कारण आधुनिक मनुष्य की स्थिति कैसी है ।
बिलाप. ५:१४–१८

१५ मनुष्य किस बातों में धनी बने । १ तीमुथि: ६:१८

१६ धन्य मनुष्य कौन है । प्र. वा: २२ १४

१७ परमेश्वर के पुत्र कौन है । रोमी ८:१४

१८ हम कैसी चाल चलें । रोमी १३:१३

१९ सब मनुष्य क्या है । यशा: ४:६-७

२० प्रभु किस योग्य हैं । प्र. वा. ४ ११

P. Minz
G.E.L. Church
Chalho, 24-6-74

All India Church Suppliers

187, Perumal Puram
TIRUNELVELI-7
627007

'Show Room'
153, Trivandrum Road
PALAYAMKOTTAI

Date 7. 5. 74

To

M/s The Gossner Evangelical Lutheran Church; Ranchi.

Re : BELLS

Dear Sirs;

We hereby reminding your goodselves in touch with your letter dated 30th March 74, regarding the bell matter. We are going to prepare a few bells at present, one to M/s Christian fellowship Tuberculosis Centre, Santhipuram, Madura Dist and another one to Tanjore etc at a stretch, which we wish to bring to your kind attention.

So additional one can be produced for you, if you are interested by this time. This is our business policy to remind you again and again & don't take this as a trouble for you, by us.

After hearing your views, we shall proceed further.

Thanking you

Yours faithfully
MANAGER

The cost of bell metal is Rs. 40/- per kilo gram & fittings of iron accessories extra according to the weight of the bell. 65% of the metal cost may kindly be sent as advance.

Gossner Mission

हमारी मंडली की दशा और उसकी सुधार

यह सब किसी को मालूम है कि हमारी कलीशिया की हालत बुरी है। इसके बारे में कलीशिया के जनों में ये तीन प्रश्नें आ पड़ती है।

१ कैसे हमारी कलीशिया की यह बुरी हालत हुई ?
२ कठिन हालत कैसे मालूम होता है ?
३ इस बुरी हालत को सुधारने के कौन उपाय हैं ?

१ ओटोनोमी का भार अपने ऊपर इस कारण लिया गया कि गोस्सनर कलीशिया का स्वपालन और स्वशासन होवे। इसको छोड़ और दूसरा उपाय नहीं था। यदि अगुवे इस उपाय को न करते तो मंडली की अति बुरी होती। गोस्सनर मंडली इस अभिप्राय से ओटोनोमी का भार अपने ऊपर ली कि मिशन फिर आकर मंडली को उसकी उस लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता करे। मंडली की दशा शायद उस समय ऐसा मालूम होता था कि मंडली का अपने को सम्भालना असम्भव बात थी क्योंकि वह एक बालक के समान थी अब भी जौभी मिशन अपने मदद देने के काम को आरम्भ की है तौभी वह कितनी कठिनाईयों के कारण इस मंडली को आवश्यक मदद पहुंचाने को असमर्थ है।

(२। मंडली के कर्मचारियों की आत्मिक और आर्थिक अवस्थ, सुधारना अति आवश्यक है। वे मंडली के अगुवे हैं और मंडली की अवस्था उसकी अच्छी अवस्था पर भी बहुत निर्भर है। नाना प्रकार की बुरी रीतियां और दस्तूर मंडली में रह गई हैं, जैसे कोई धर्म्म प्रदेश करते, कोई नोर्तजोन, कोई विश्वास धर्म्म में घुसते, और फिर मंडली में मतवालपन, मूर्ति पूजा, व्यविचार, मिथ्य विश्वास, और कितने कर्म्मचारी इन परीक्षाओं में गिर गये हैं। क्या ऐसी अंधियाली दशा में भाई बहिन लोग सत्य मार्ग पा सकते हैं ? जहाँ आत्मिक जीवन नहीं है वहाँ से किसी बात की आशा करना कठिन है। खृष्ट और उसके सुसमाचार पर मन न लगाने से पूरा आनन्द नहीं मिल सकता है और दूनों की आशा नहीं की जा सकती है। ऐसे अगुवे आप ही परीक्षाओं में गिर कर मंडली के लोगों के ढीले होने के कारण बने हैं।

(३) सुधारने के उपाय—निश्चय सुधारने का एक उपाय कलीशिया में है, कि मंडली के लोग फिर सीधे धर्म्म खोजक बनने की दृढ़ इच्छा बान्धे। प्रत्येक जन इस बात से दुखी हैं कि मंडली की गिरी अवस्था है। यह अच्छी बात है कि बीमार जन ने अपनी दशा को जान लिया है। क्योंकि वह तब चंगा होने के लिये दवा की खोज करेगा। ईश्वर इस दुःख के द्वारा हमारे मनों में हाथ धर्म्म के लिये भूख और प्यास उत्पन्न करने चाहता है। एक लंगड़ा मनुष्य एक अंधे को बहुत मदद नहीं दे सकता है क्योंकि वह दुर्बल और थकित हो जाएगा। इसी प्रकार हम भी ऐसी ही दशा में हैं। कितनी बातों में लंगड़े हो गये हैं। आर्थिक कठिनाईयों के कारण धर्म्म की बातों के लिये नहीं परन्तु शरीर की आवशयक बस्तुओं के लिये अधिक चिन्ता करते हैं। अर्थात अपनी भलाई मंडली की भलाई से अधिक चाहते हैं। इसको सुधारने को अति आवश्यकता है।

एक सुसमाचार।

एक नटखट लड़का था जिसको उसके पिता ने यह कहा कि तुम्हारा हरएक बार नटखट होने के लिये एक कांटी तुम्हारा कमरे के दरवाजे पर ठोंकी जायगी।

इस प्रकार कितने समय के बाद दरवाजा कांटी से प्रायः भर गया और वह लड़का बहुत लज्जित और दुःखित हुआ। उसके बाद उस लड़के ने अच्छी चाल चलने की चेष्टा की। यह देख उसके पिता ने उससे कहा कि हरएक भले काम के लिये जिसको तुम करेगा, दरवाजे पर से एक कांटी निकाल दी जाएगी। इस पर लड़का अत्यन्त आनन्दित हुआ और प्रति दिन भले कामों को करने के

Gossner Mission

लिये कठिन परिश्रम करने लगा। वह इतना परिश्रम किया कि कितने समय के बाद कुल कांटी निकाल दी गई। "क्य तुम अभी सन्तुष्ट नहीं हो ?" पिता ने लड़के से पूछा। लड़का चिल्ला कर रोने लगा और कहा — "कांटी निकाल दी गई नो हैं पर दरवाजा बिगड़ गया है" कांटियों के निशानें उस लड़के को और उसके परिवार के लोगों को उसके बुराईयों का स्मरण दिलाती हो रही।

इस प्रकार हमारी बुराईयां हमारे हृदय में निशान छोड़ जाती हैं जौभो हम उन्हें १९७४ साल से फिर न करें।

लड़के के पिता ने उसके कमरे के लिये नया दरवाजा बनवाया क्योंकि लड़का अति उदास था और बुराई को छोड़ दिया था। यह ईश्वर के काम का एक परछाई मात्र है। वह एक पश्चातापी पापी के लिये एक नया मन देता है। उसकी प्रतिज्ञाएं हिजकिएल ३६:२६ और इब्री १०:११-१८ में लिखी हैं॥

निरल बुढ़
विरमीत्रापूर पेरिस

कलीसियाई समाचार

श्री वी. तोपनो

हाथी ओड़ा:—कलीसिया की बर्तमान परिस्थिति के दृष्टिकोण से "हाथीओड़ा में ७वीं अप्रेल को स्थानोय भाई-बहनों का सहयोग एवं अवकाश प्राप्त पुराने पाद्री रेभ: कन्डुलना द्वारा "मसीहियों का काम" नामक विचार और उपदेश से हमारी मंडली में एक जागृति आई। उन्होंने लूक २३: २७-३१ को बड़ी ही गहरी अव्ययन और सुझाव से हमारी इस मंडली में "बहिनों की माता समाज" जो बिल्कुल ही गिर गया था जोशीली बातों से बहिनों के अंग अंग में आग सुलगा दिया। तुरन्त दूसरे ही हप्ता से "माता समाज" की एक "भीड़" बन कर चालु हो गया। फिर दिनाँक "५ मई को" यह जोश को जांचने और देखने के लिये पाद्री रेभ: कन्डुलना ने फिर से आकर 'सन्डे स्कूल" को भी, जो कई महिनों से बन्द था एक जोशीला कदम के साथ खड़ा कर दिया। उन्होंने १ पतरस २:११-२० पद के सुन्दर बचनों से "हरेक को एक" मुसाफिर" का तुलनात्मक शिक्षा दिया जिसमें गलाति ५ १६+१७, को साफ-साफ दिखाकर "एक सच्चा मसीही" का रूप कई तरीकों से बताया-समझाया और साथ-साथ ही ठहराये उपदेश बचन १पितर २:१५ पद को सख्त से बन्द करने का "ठोस" बचन रखा जिसमें—उसने मसीहियो के गांव-गांव में जितने ही शराब-परचुनियां दुकान चालु है उसे बन्द करने की उमंग भर दिया। उनका कहना है कि मुझे पाद्रो के काम से अवकाश-प्राप्त का घोषणा सुना फिर भी मैं अपने आखरी बचे हुए बूढ़ा-"समय" को मसीही कामों को ही करते हुए अन्त करना चाहता हूं। उनका कहना और मसीही उपदेश है कि जोड़ा बान्ध पेरिश के अन्दर जहाँ मेरे मसीहीजन रहते हैं वहाँ परचुनीयाँ शराब दूकान नहीं चलानी चाहि० इसके लिये उसने "मसीही नौजवानों" को तमाम पवित्र बचनों से दृढ़ किया।

हम 'हाथी ओड़ा" के सब मसीही उनके इस काम और पेरिश स्तर के "माता समाज–तथा सन्डे स्कूल" को स्थिर रूप से खड़ा रहने तथा चलने का आदेश को स्वीकार करते हुए हृदय से धन्यवाद देते हैं।

समाचार

किनकेल इलाका मसीही सैनिक संस्था का वार्षिक बैबल क्लास दिनांक १९-२०-२१ मई को गड़ियाजोर में सम्पन्न हुआ। मौसम की गड़बड़ी होते हुए भी दूर-दूर से भाई-बहन उपस्थित थे। उपस्थिति लगभग १३०० (तेरह सौ) थी। दूर- दूर से धर्म अगुवे भी पधारे थे। क्लास अनुशासित था।

Gossner Mission

यह क्षेत्र जहाँ बैबल क्लास हुआ धर्म प्रचार के लिए उपयुक्त जगह है, जहाँ कि ५०% [प्रतिशत] लोग गैर मसीही हैं। मसीहियों के अलावे गैर मसीही भाई-बहन भी क्लास में उपस्थित हो कर सुनते थे। हमारी झुण्ड की अनुशासन तथा रहन-सहन को देख कर ये भाई बहन प्रभावित हुए। इस बैबल क्लास से इस क्षेत्र को काफी लाभ पहुंचा।

बैबल क्लास में भिन्न भिन्न मण्डलियों ने अपनी भजन पेश किया जिससे यह और भी रोचक बना। अंतिम दिन में भजन होड़ का भी आयोजन था। तथा आम सभा भी हुआ। इसी सभा में नये कार्य कर्त्ताओं का भी चुनाव हुआ जिनकी कार्य काल तीन वर्ष की है।

निम्नलिखित कार्य कर्त्ता हैं :—

सभापति— श्री पी. एस. कुजूर।
उप ,, — ,, मलाकी बरवा।
सचिव — ,, जोहन कुजूर।
उप ,, — ,, अमरिजुस मिंज।
खजांची — सुश्री प्रमुदित टोप्पो।

यह संस्था अपनी उम्र की २५ वें वर्ष पूरा करने जा रही है। यह संस्था अगले वर्ष १९७५ में रजत-जंयती (जुबली) मनाने जा रही है जो किनकेल हाते में सम्पन्न होगी। भाई-बहनों को विशेष निमंत्रण भेजा जा रहा है कि संस्था की २५ वें वर्ष जुबली में उपस्थित हो करसंस्था को प्रोत्साहित करें कि उन्नति के पथ पर आगे बढ़ें। प्रोग्राम के लिए इंतिजार करें जो घरबन्धु में हो मिलेगा।

पाठकों से परामर्श की आशा यह संस्था करती है।

प्रभु में आप सभों का
पी. एस. कुजूर सभापति
किनकेल इलाका मसीही सैनिक संस्था
किनकेल (रांची)

सिंघानो (हजारीबाग) "मसीही- संगठन समारोह"

दिनांक १५-४ ७४ को युवा-संघ की ओर से मंडली की आत्मिक जागरुकता के निमित्त 'मसीही संगठन समारोह' जो एक दिवसीय थी, का आयोजन किया गया, सुचारु रुप से सम्पन्न हुआ। यहाँ की नवनिर्मित युवा-संघ को स्थापना फरवरी १९७४ के दिन हजारीबाग इलाका बैबल क्लास की एक संयुक्त बैठक में हुई थी। हजारीबाग पेरिश युवा संघ के लिए निम्नलिखित सदस्यों का चयन हुआ है—

अध्यक्ष—श्री एम. डाँग
सचिव—श्री एच. खाखा
सयुंक्त सचिव—श्री. बी. खाखा एवं
सुश्री ए. टोपनो

यहाँ के युवा संघ का मुख्य उद्देश्य ये है:—

(१) ईश्वर का वचन फैलाना
(२) सोये हुवों को जगाना एवं प्रभु में उत्साहित करना
(३) कलीशा की सेवा करना।
(४) मसीहियों में प्रेम, सहयोग एवं भाई-चारे की भावना को बढ़ावा देना।

'मसीही संगठन समारोह' कार्यक्रम दिन के १० बजे से रात्रि ८ बजे तक चलता रहा। मंडली के सभी छोटे-बड़ों ने काफी उत्साह-पूर्वक इसमें हिस्सा लिया। उपस्थिति ८५ के ऊपर रही, जो यहाँ के लिए काफी अधिक मानी जाएगी। जाने-माने कार्यक्रमों के अलावे मुख्य रही-श्रमदान एवं वाद विवाद, वाद-विवाद में दो अलग-अलग विषयें थी।

(१) मसीही-संगठन की आवश्यकता तथा
(२) वर्त्तमान संकट-कालीन स्थिति में एक मसीही का कर्त्तव्य

पहले विषय पर भाषण देने वाले ये वक्ता मुख्य हैं —

(२) मसकलन बरला :—इन्होंने आर्थिक और सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए कहा कि-हमें आपसी प्रेम को पहचानना, जरुरी है। हम सभी इस दुनिया में मसीही योद्धा हैं। हमलोगों का मुख्य कार्य होना चाहिए—प्रभु-यीशु की निरंतर स्तुति करना, इसके

Gossner Mission

लिए मसीह के वचनों को आढ़ और ढाल समझ कर आगे बढ़ते रहना है।

(२) मि॰ तिरकी :—इस तरह के कार्य क्रमों में शामिल होकर मसीह के बारे में ज्यादा से ज्यादा सीखने की जरूरत है। मसीही भाई-बहनों में एक सुसंगठित आपसी प्रेम होनी चाहिए। हमारे बीच किसी प्रकार की भेद- भाव नहीं होवे और हमें एक दूसरे के प्रति क्षमावान होनी चाहिए। आपने सुझाव दिया—मंडली की नींव मजबूती के लिए बच्चों को शुरु से आत्मिक शिक्षा तथा प्रत्येक टोला-टोला में समाज-आराधना।

श्री॰ एम डांग :—प्रत्येक क्षेत्र में एक संगठन की आवश्यकता होती है। हमारे बीच भी होनी चाहिए। नमक तथा दीपक का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इन्होंने कहा कि—दूसरों को स्वादिष्ट बनाने का कारण बने तथा दूसरों को प्रकाश का मार्ग दें। बच्चों की धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

श्री॰ एच खाखा॰ :—आपने अपने भाषण के दौरान निम्नलिखित वचनों मत्ती पढ़े ७:१-५, ७:१२, १०:१६-२०, १८:१-६, १८:१९ तथा इफिसी ५:१४) पर अच्छा वाद-विवाद पेश किये, साथ में बच्चों की धार्मिक शिक्षा की की ओर भी संकेत किये।

वाद-विवाद के दूसरी बिषय पर बोलने वाले वक्ताओं ने जो अपने-अपने विचार प्रकट किए, उनका मूल-सार ये है :—

श्री॰ ए॰ लुगुन—हम सच्चाई को अपनावें तथा अपने घरों में धार्मिक वातावरण लायें।

श्री॰ जुनूल भूईयां—बैबल में भविष्यवाणी की गई है:—"संसार में बहुत तरह के उथल पुथल होंगे, अतः हमें स्थिर रहना चाहिए।"

श्री॰ एन॰ एन॰ कन्डुलना—हमें ऊँच-नीच, तथा जाति-प्रथा से बचना चाहिए तथा सांसारिक कार्यों के साथ -साथ ईश्वर की आज्ञाओं तथा वचनों का पालन एवं अध्ययन करते रहना चाहिए।

रेभ॰ एस॰ कुजूर:—धार्मिक बातों का ज्ञान होना जरुरी है एवं ईश्वर से प्रार्थना और उस पर भरोसा की जानी चाहिए।

मिसेस तिर्की—प्रार्थना के महत्व पर विशेष जोर डाला गया।

श्री॰ डांग—दूसरों के बहकावे में न आकर विश्वास में स्थिर रहना चाहिए।

बीच-बीच में मनोरंजन (भजन तथा चाय-नस्ता का कार्य क्रम चलता रहा। रात्रि में प्रीति भोज का आयोजन रखा गया। समारोह को सफल बनाने में, इन सक्रिय सदस्यों का सहयोग सराहनीय रहा। श्री॰ ए॰ लुगुन, श्री॰ पी॰ गुड़िया, श्री॰ एम॰ तोपनो, श्री॰ आर॰ बैक, श्री॰ एम॰ डांग, श्री॰ एच॰ खाखा एवं सुश्री ए॰ तोपनो। साथ साथ मंडली के सभी भाई-बहनों के अलावे श्री॰ ई॰ टोप्पो (उचित सहायता प्रदान करने हेतु) युवा-संघ धन्यवाद देती है। हम सभी ईश्वर को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस दिन के कार्यक्रम को सकुशल-पूर्वक होने दिया।

युवा-संघ ईश्वर की अगुवाई एवं आशीष चाहती है कि इस तरह की धार्मिक कार्यक्रम बारम्बार होती रहे जिससे हम में आपसी मसीही-प्रेम की सद-भावना एक-दूसररे के प्रति बढ़े, और मसीह की स्तुति और महिमा हो सके।

प्रेषक—बसन्त कुमार सुरीन
डी॰ यू॰ मिशन बोय्ज होस्टल
हजारीबाग

मध्य अंचल खूंटीटोली युवा संघ वार्षिक सम्मेलन

तिथि १६ मई से १८ मई १९७४ तक सम्मेलन खूंटी टोली पेरिस, के सिकरियाटाँड़ मण्डली में सम्पन्न हुआ। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :—

बाइबल अध्ययन:—के अन्तर्गत मत्ती ११:२८-३० "हे सब थके और दबे लोगो मेरे पास आओ,...मेरा बोझ हल्का है, के वचन आधार पर डा॰ निर्मल मिंज एक्टिंग

Gossner Mission

प्रमुख अध्यक्ष हमारे देश तथा कलीसिया की तुलनात्मक समीक्षा की। जिस प्रकार हमारा देश जिन-जिन बोझों से दबा है हमारी कलीसिया भी उन्हीं बोझों से दबा हुआ है-छुटकारा पाने का एक ही रास्ता है कि हम यीशु के सामने आवें। वह हमें वचन के द्वारा नेवता देता है। हम सुनकर एक से दो मिलकर ईश्वर के पास आवें। वह हमारे बोझ को सिर से उत्तार देगा–जैसा यात्रा स्वपन्नोदय में वर्णित क्रिस्तान ज्यों ही क्रूश देश में पहुंचता है उसके पीठ पर से पाप का बोझ गिर पड़ता है।

सम्मेलन का मूल विषय—"परमेश्वर प्रेम है," था। डा० सी० के० पौ० सिंह इस विषय पर मत्ती २२:३७-३९ तथा १ को० १३-१३ के आधार पर बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला। हमारे देश के हिन्दु धर्मावलम्बी भाइयों का कहना है—"प्रेम ही ईश्वर है," परन्तु बाइबल के अनुसार "परमेश्वर ही प्रेम है।" अनेक उदाहरणों के द्वारा उन्होंने इस बात को सिद्ध किया। क्रिस्तीय धर्म में प्रेम बाँधने का काम करता है। ईश्वर और मनुष्य को तथा मनुष्य-मनुष्य को भी बाँधता है। इस तरह से जो प्रेम ईश्वर से मनुष्य को मिला है, उसको मनुष्य अपने पड़ोसियों के बीच प्रगट करे।

१ को० १३:१३ के आधार पर डा० सिंह ने बड़े सरल एवं सुगम शब्दों में आशा, विश्वास और प्रेम में समानता तथा भिन्नता पर प्रकाश डाला। आशा के संबंध में उन्होंने बताया कि हम किसी चीज की आशा तब ही तक देखते हैं जब तक कि हमारा आशा पूरा न हो जाय! विश्वास के संबंध में उन्होंने बताया कि विश्वास आशा की हुई वस्तुओं की निश्चयता और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है! इब्रा० ११ १ यह योंही नहीं उपजता है और न मनुष्य की अपनी बुद्धि या योग्यता से है। उसके निमित्त ईश्वर ही स्वंय अपने बचन एवं पवित्रात्मा से कार्य करता है। इन दोनों में श्रेष्ठ प्रेम है। इसीलिये आत्मिक वरदानों का उपयोग प्रेम को प्रगट करने ही के लिये किया जाना चाहिए। जैसा कि १ को० १२:४-११ में उल्लेख है। अन्यथा ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती झांझ के समान होंगे।

प्रोफेसर रोयन डांग इस्राइली जाति का चुना जाना या बुलाये जाने पर प्रकाश डाला। अब्राहम के द्वारा इस्राइली जाति एक चुनी हुई जाति के रूप में पनपती है। विभिन्न न्यायियों, नबियों एवं राजाओं द्वारा इनको अगुवाई होती रही। हम भी परमेश्वर को चुनी हुई जाति के रूप में उसकी कलीसिया में हैं। आज हमारी स्थिति भी ठीक इस्राइलियों की स्थिति की ही तरह है। ईश्वर ने इस्राइलियों को इसलिये चुना था कि ईश्वर की इच्छानुसार चलें और आदर्श बनें तथा अन्यजातियों का चरवाहा बनें। परन्तु कनान पहुंचने के पहले ही घमण्ड में पड़कर कर्त्तव्य को भूल गये, जिसके कारण कुछ लोग नाश भी हो गये। हम ईश्वर की योजना एवं इच्छा को समझें कि क्यों हम गरीब एवं निर्धन लोगों को कलीसिया में बुलाया है। हम जगत के अन्यजातियों के सामने नमूना एवं उसकी ज्योति फैलाने के लिए चुने गये हैं। इस अभिप्राय को पूरा करें अन्यथा ७० ई० में यीरूशलीम नष्ट हो गया उसी प्रकार हमारी स्थिति भी हो सकती है।

इसी संदर्भ में "पुराने नियम एवं नये नियम से उद्धार" की समीक्षा प्रस्तुत की। पाप से छुटकारा पाने के लिये इस्राइली जाति होम बलि, पाप बलि, मेल बलि इत्यादि-इत्यादि बलिदान चढ़ते थे, नये नियम में प्रभु यीशु मसीह "सबके लिये सभी समय एवं जब जगह के निमित एक ही बार अपना बलिदान करके उद्धार का काम पूरा किया ताकि उसके द्वारा परमेश्वर से संगति रखें।" इसके लिये आवश्यक है कि यीशु मसीह को स्वीकार करें एवं उसकी आज्ञाओं, इच्छानुकूल जीवन निर्वाह करें।

ग्रुप अध्ययन:—बाइबल अध्ययन के पश्चात ग्रुप अध्ययन के लिये विभिन्न समूहों में विषयनुसार बाँटा जाता था। मण्डली की चरवाहों एवं सुधार, सण्डे स्कूल में जागृति, माता समाज द्वारा मण्डली की सेवकाई, कृषि एवं बगवानी द्वारा आर्थिक सुधार, भजन सुधार, शिक्षित युवा वर्ग एवं बेरोजगार की समस्या जैसे विषयों पर बिचार विमर्श, एवं सुझाव सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया जो बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।

बाइबल प्रश्नोत्तर:—चुने हुए प्रश्नों का जवाब डा० सी० के० पौल सिंह, प्रोफेसर रोयन डांग एवं डा० निर्मल मिंज द्वारा दिये गये।

भजन होड़:—भजन होड़ प्रतियोगिता का आयोजन था जिसमें ग्यारह प्रतिद्वन्द्वी दल भाग लिये थे जिसमें—

Gossner Mission

बोम्बोलकेरा क्रूशकेला, केऊन्दडीह मण्डली क्रमशः पहला दूसरा तथा तीसरा स्थान प्राप्त किये ।

पेरिसस्तर पर के युवा-मण्डल कार्यकर्त्ताओं का चुनाव:—

खूंटीटोली पेरिस

सभापति — श्री धर्मदास डुंगडुंग
उप ,, — श्री विमल डुंगडुंग
सचिव — श्री कुनूल हेरेंज
उप ,, — श्री प्रभु ओतोंग एक्का
कोषाध्यक्ष— श्री प्रीतम मसीह लकड़ा
मेंम्बर्स (१) निस्तार बआ
(२) इलियस तिर्की

सिमडेगा पेरिस

सभापति — प्रोफेसर श्री संतोष केरकेटा
उप ,, — श्री मु.रेल कुल्लू
सचिव — श्री धर्मदास एक्का
उप ,, — श्री मनोहर डुंगडुंग
कोषाध्यक्ष— श्री ख्रिस्तोचित बाबा
मेंम्बर्स (१) श्री दाऊद बआ
(२) श्री हरदुगन डांग

जोरबहार पेरिस

सभापति — श्री बेन्यामीन बुढ़
उप ,, — श्री बिलकन जोजो
सचिव — श्री सलमोन केरकेटा
उप ,, — श्री स्तोष केरकेटा
मेंम्बर्स — (१) श्री कोमल डुंगडुंग
— (२) श्री अब्राहम डुंगडुंग

अन्य बातें:— स्थानीय मण्डली तथा अन्य गैरमसीही जवान युवतियों द्वारा मृत्युंजय ख्रीष्ट नामक नाटक प्रस्तुत किया गया जिसका निर्देशक अवधेश कुमार प्रसाद थे ।

रेव्ह डा० सो० के० पौल सिंह की आगमन सुन कर आस पास बहुत से गैर मसीही जवान युवती बूढ़े सभी सम्मेलन में आकर शांतिपूर्वक प्रवचन सूने ।

टिप्पणी:— असामयिक आंधी एवं वर्षा पानी के बावजूद काफी संख्या में भाई बहन सम्मेलन में उपस्थित होकर बाइबल क्लास से लाभ उठाये ।

सचिव
एम० जोजो
मध्य अंचल खूँटीटोली युवासंघ

तिथि २८-५-७४

"शोक समाचार"

शोक की बात है, कतकुवांरी निवासी पाद्री असफ होरो को ईश्वर पिता ने दिनांक २१ मार्च रात्रि लगभग दो बजे सेवकाई की अवधि में कमडरा अस्पताल से अनन्त विश्राम के लिए अपने पास बुला लिया । और उसके मृतक देह को पाद्री पी. एस. तिड़ू द्वारा एंव जन समूह द्वारा अपने ससुराल कोटबो मंडली के अन्तर्गत रायकेरा ग्राम में आदरमय साथ दफन दिया गया ।

संक्षिप्त जीवन:— पाद्री असफ होरो हाई स्कूल का अध्ययन जुबली हाई स्कूल से समाप्त कर प्रभु की दाख बारी में सेवकाई के निमित्त अध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिए रांची चले गये । अध्यात्मिक प्रशिक्षण की अवधि समाप्त कर सर्व प्रथम प्रभु की दाख बारी सेवा के हेतु गोविन्दपूर में अपना सहयोग दिया । वहां पर रह कर पुरोहित की योग्यता प्राप्त कर अभिषिक्त किये गये । और सर्व प्रथम पुरोहित हो कर सरना टोली पेरिस में बचन और सक्रामेन्त की सेवकाई की । प्रभु उनकी सेवा अनेकों पेरिस एंव मंडलियों में करनी चाही । इस रीति से सरना टोली के पश्चात जीलींग केला, अमलेशा, टोकाद, मर्चा एंव अन्तिम घड़ी में कोरोंजो इलाका के लोम्बोई पेरिश में सेवकाई का कार्य किये । आज हर एक पेरिश एंव मंडलियां उसके सेवा कार्य के हेतु धन्यवादी हैं ।

Gossner Mission

उनमें शारीरिक कमजोरी अवश्य थी, फिर भी अपने में प्रभु के द्वारा सामर्थ पा कर जंगल एंव पहाड़ों के बीच में अधिकतर रह कर सेवा का कार्य किये ।

लोम्बोई में सेवा कार्य काल के समय उनकी तबियत बिगड़ने लगी, और काफी जोर बढ़ गया । वहां पर जीने की आशा न देख कर उसे कमडारा अस्पताल दिनांक-१८. ३. ७४ को लाया गया । पर बिमारी के बढ़ जाने से उचित चिकित्सा नहीं हो सका, और अन्त में हिचकी से परेशान होने पर अपने धर्म पत्नी और ७ बच्चों को छोड़ कर सदा के लिए प्रभु के पास चले गये ।

अत: पाठकों से अनुरोध है कि अपने व्यक्तिगत एंव सामुहिक प्रार्थनाओं में शोकित परिवार को स्मरण करें ताकि पिता ईश्वर शोकित परिवार को शान्ति प्रदान करे ।

रेभ-पी.एस. तिड़ु
कोटबो ।

"शोक समाचार"

पतरस मिंज गाँव नरौली, चट्टी पेरिश, राँची, को लगभग ९० वर्ष की उम्र में बुढ़ापे अवस्था के कारण, दिन बृहस्पतिवार ता० ७-३-७४ भोर के समय ईश्वर ने अपने पास अनन्त विश्राम के लिए बुला लिया । मृत्यु के चार दिन पहले ही से उनकी बेटी मेहरानी लकड़ा कलकत्ते से अन्तिम मिलन के लिए उपस्थित थी । मृत्यु शय्या के पास उनके बड़े बेटे थियोदर मिंज, छोटे बेटे इम्मानुवेल मिंज जो घर ही में रहते हैं, तथा उनके नाती और पोते अन्तिम बिदाई के समय उपस्थित थे । मझला बेटा प्रेम मसीह मिंज तथा उनका परिवार जो फिलहाल बंडा-मुंडा में रेलवें कर्मचारी हैं, ठीक समय पर खबर न पहुँचने के कारण अनुपस्थित थे ।

ईश्वर इन शोकित परिवारों को शाँति देवे ।

आमूस लकड़ा
ता० १२-३-७४

मधुपूर झलाका शोक समाचार लबराखमान मंडली।

श्री नथानिएल लुगुन की मृत्यु दिनांक ७-४-७४ ई० को पाटु बिमारी से प्रभु में सदा के लिये सो गये । ये लबराखमान मंडली के मंडली सेक्रेटरी थे, करीब १८ वर्ष तक काम किया । उम्र ४० वर्ष था । गिर्जा आना जाना बिलकुल ठीक था, बिन्ती आराधना में भाग लिया करते थे । ये कोमल भाव के थे । लोगों पर सुव्यवहार था । इनके स्वर्गवासी होने से घर सुना पड़ गया, कोई भाई नहीं हैं, एक भौजी है, सो भी विधवा है । इन के तीन पुत्री हैं । आप पाठकों से निवेदन है, आप उनके शोकित परिवार के लिये प्रार्थना करें ।

प्रचारक – पी० पी० मड़की,
लबराखमान
ता: १-६-७४ ई०

धन्यवाद आपका ग्राहक चन्दा [३० जून १९७४ तक] मिला

1	Mr. Matias Soreng	5	Mr. J. D. Tigga
2	„ S. Herenz	6	„ Shantimay Soy
3	Rev. P. C. Minz	7	„ C. Kalyan Soy
4	Cand. Wilhelm Kandulna	8	„ A. Lakra

Gossner Mission

9 Rev. Lucas Tete
10 Mr. Augustin Toppo
11 ,, Lucas Dangwar
12 ,, Heran Champi
13 ,, Gossner Kerketta
14 ,, C. Kalyan Herenz
15 ,, Nuas Aind
16 Rev. Nelson Topno
17 Mr. Pritammasih Topno
18 Cat. Bimal Lakra
19 Cat. Ohma Minz
20 Mr. C. J. Topno
21 Cat. Harun Samad
22 The Headmaster, Churdag
23 Michael Toppo
24 Marshall Aind
25 Cat. Surjugan Surin
26 Rev. Dr. M. Bage
27 Mr. A. M. Lugun
28 ,, Manohar Kullu
29 Rev. B. S. Bage
30 ,, Nainsukh Tirkey
31 ,, M Barjo
32 Mr. Premmasih Kindo
33 Hony capt. M. Surin
34 Mr. Santiel Bodra
35 Rev. C. P. Kandulna
36 Mr. Bisram Tigga
37 Rev. H. M. Bage
38 Mr. Joseph Kongari
39 Cat. Hardugan Surin.

बुढ़े बाबा की राय

दिन ढल चुका था। सूर्य अस्त हो चला था। पंछी अपने-अपने घोंसलों की ओर चहचहाते वापस हो रहे थे। चरवाहे अपने बैल-बकरी आदि पालतू जानवरों को चराकर वापस घर ला रहे थे। साँझ होते ही 'कोहरा' सारा संसार को जैसे ढाँकने का प्रयास कर रहा था। चहूंओर धुवाँ-धुवाँ नजर आ रहा था। ओस भी गिरने लगा था। जो छोर में धूल उड़ाते चले आ रहे थे वो एक एक गुब्बार नुमा आकार होकर ऊपर उठ रहा था। मगर पुन: नीचे उतर आता था शायद 'कोहरा' उन धूल के गुब्बारों को ऊपर उठने का इजाजत नहीं दे रहा था।

सांझ के होते होते ऐसे ठंड पड़ने लगा था जैसे हिमालय के तराईयों में हुआ करता है। टाँड़ के अरहर के पौधे ऊंचे ऊंचे हो रहे थे। उन अरहर के झाड़ों में आदमी भी बिला जाएंगे। उसके फूल हल्दी रंगे पान-सुपारी लग रहे थे। उन फूलों से एक दम से हलदिया गंध आ रहा था।

आंगन में 'आग' जलाए थोड़ा हाँथ पाँव सेक रहा था। मेरा चहूँ ओर के गेंदे के फूल के पत्ते सोने का इन्तजाम कर रहे थे। गेंदे के फूलों से एक दम से गेंदा जाति का महक आ रहा था। सहसा कोई बिड़ि फूँकते हुए आंगन में घुस आया।

मैं चिहूंक उठा। पूछा— कौन ?' और आँख में चश्मा ठीक करते हुए करीब करीब चीख पड़ा—

अरे' इसाक तुम ! किधर से आ रहे हो ?'

'यीशुसहाय।'

'यीशुसहाय। घर ही से आ रहा हूं।'

''क्यों'' · कैसे; तबियत तो ठीक है न ?''

"हम तो ठीक हैं। मगर आप की बहू परसों से काम करने नहीं सक रही है। आग की तरह बदन तप रहा है।" वो अपनी चिन्ता प्रगट की।

'क्यों क्या हुआ उसको ?' मैंने घबरा कर पूछा बतायी नही 'काका !' वो बोला-'परसों बाजार से लौटी की उल्टी करने लगी। भोक्ता का कहना है समपोड़ पकड़ा है या

Gossner Mission

तो कोई 'बॉन' कर दिया है। इसलिए 'गरहा काटना' होगा। इसलिए एक काला बकरा, एक सफेद कबूतर एक सेर अरवा चावल, एक सेर असली गाय घी मांग रहा है। मगर ये सब देने के लिए मेरा उतना शक्ति कहाँ है? आप तो चलानी दवाओं के बारे जानते हैं। अगर थोड़ा मेरा साथ च.....।'

'क्यों नहीं क्यों नहीं'—मैंने उसका कहने का मतलब को समझते हुए बोला—'चलो अभी देख के आता हूं कि क्या बिमारी है। बेगर देखे कैसे कह सकता हूं कि क्या दवाई लगेगा।' यह कहते हुए मैं उठ पड़ा। इसाक की बात सुन कर मुझ को बहुत दुःख हुआ—इस शताब्दी में और एक मसीही हो कर वही पुराने अंधविश्वासों पर विश्वास करके कोई गिर सकता है; ये मेरी उम्मीद नहीं थी।

इसाक मेरा पीछे-पीछे हाथ को पीछे तरफ किये हुए, सिर झुकाए चुपचाप चला आ रहा था। वो खमोश था। और बार-बार ठिठुर जाता था। क्योंकि उसका बदन में एक गंजी को छोड़ कुछ नहीं था। ठंडी हवा उसकी गंजी को भेदकर उसको ठिठुरा रहा था।

अब हम जंगल रास्ते में चले ज, रहे थे। मैं आप को ये बताना चाहता हूं कि इसाक का घर पहाड़ के उस पार वाले गांव में है जो हमारे घर से दो मील दूर है। रास्ता भर दोनो चुप थे। वातावरण में केवल चलने का खपड़ खपड़ आवाज आ रही था और साथ में हवा का साँयसयाँहट में झिंगुरों का झिनझिनाहट सामिल था। जोर हवा के कारण पत्ते आपस में घिसघिस कर शैतान का मुस्कुराने के जैसी आवाज आ रही थी।

खेत ओगरने वाले लोक गीत का सुर जुमा रहे थे। इस शंत शितल वातावरण में लोक गीत का सूर बड़ा सुहावना लग रहा था। बीच बीच में डरवनी आवाज सुन सुनकर मैं अपने में ही सिरसिरा उठता था और साथ में रोंगटे खड़े हो जा रहे थे। देर-देर में गाँव से एक कुत्ता के भौंकने की आवाज आ रही थी।

मन में तरह-तरह का विचार उभरने लगा अपने बचपनों के दिनों में खो-सा गया। जब मैं बालक था तब मेरी माँ मुझको ऐसे ही जाड़े की रातों में लोरियां गा-गा कर अपनी गोद में सुला लिया करती थी। मेरे बालक बालक होठों को चुम लिया करती थी। तब मेरे हृदय में अजीब प्रकार का आनंद का लहर उठ जाता था। मैं अपनी माँ की गहन छाया रूपी गोद में बेफिकर सो जाता था और सुन्दर-सुन्दर सपने देखा करता था। जब कोई कहानी सुनने का इच्छा जगता था तब मैं जल्दी से हुक्का तैयार कर लेता था और माँ को पीने के लिए आग्रह करता था। क्योंकि मुझको मालुम था जब वो कोई कहानी सुनाया करती थी तब वो जरूर पीती थी। मैं सोचने लगा यदि बचपन के वे दिन फिर से वापस आ जाते तो कितना अच्छा होता। मगर तभी मैं चिहूँक उठा-इसाक अपने हाथेली में खैनी रगड़ते हुए बोला था—'खैनी लिजीए.....।"

मैं खैनी को ओंठ एवं दांत के बीच ठुँसते हुए बोला—'इसाक रे अबर खुब जड़ा होगा प्रतीत होता है।"

'हाँ काका—' वो हाथ झाड़ते हुए बोला—अपन तो ये जिनगी में पहली दफा देख रहा हूँ; इतना जल्दो जड़ा लगने लगा है। अभी पुस और माघ बाको है।"

इतने में हम इसाक के घर पहुँच गये। मैं उसको पत्नी को देखा -,मलेरिया था'। इसाक को मलेरिया टेबलेट खरिदने को कह दिया और बिन्ती करके वापस घर लौट आया। घर में पहुंचते ही अपना थका-मंदा जिस्म को खटिया पर फेंक दिया और सोचने लगा - यदि पाद्री एवं प्रचारकों को ट्रेनिंग पिरियड में देशी दवाओं की शिक्षा दिया जाए तो कैसे रहता। कम से कम नदान मसीही जो अंधविश्वासों में पड़कर ईश्वर के विरुद्ध जो व्यविचार करते हैं वो कुछ कम हो जाता। मगर तभी अपने इस बेतुके पन बिचार पर हँसी आ गयी—'ये जुनस बुढ़ा का कौन सुनता है? फिर ये बड़बड़ाते हुए मौज से सो रहा—जब मैं किसो को यही राय दूंगा तो कोई नहीं सुनेगा। यदि कोई सुनेगा भी तों यह कहकर भूल जाएगा—

Sushil

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ आर॰ एन सी. ४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६४ रांची, जून १९७४ संख्या न० — ६

EINGEGANGEN
21. AUG. 1974
Erledigt .....



गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी रेभ टेटे	—	४
बबुल (गड़बड़) उत्पति ११:६।	—	५
क्रूश गीत	—	७
मसीही घराना और स्वर्गीय घराना	—	८
शांति मिले कैसे ?	—	८
चुनौती	—	९
सिमडेगा गिर्जा संस्कार	—	१०
तबीता बैवल स्कूल के प्रति अपार प्रेम	—	११
साक्षी	—	१२
भजन	—	१२
शिक्षकों का सेमिनार कहुपानी	—	१३
समाचार देश विदेश	—	१४
कुचीन्डा पेरिश	—	१५
आवश्यकता	—	१७
रक्तदान	—	१८

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [कि० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी और 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

कलीसिया जीवन का सम्बन्ध और सम्पर्क देश और समाज के आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और धार्मिक परिस्थिति से संलग्न है। यीशु ख्रुस्त में ईश्वर के उद्धार कार्य के सुसमाचार का वाहक और साक्षी होने के कारण कलीसिया तथा उसके सदस्य देश और समाज में ज्योति और नमक का काम करते हैं। यीशु ख्रुस्त में नई सृष्टि पाने के कारण नवीकरण के हथियार हो सकते हैं।

आज देश में 'नवनिर्माण' के लिए 'संघर्ष" तथा "पुन:निर्माण" के नारे उठ रहे हैं। वर्त्तमान आन्दोलन के संदर्भ में कलीसिया नवीकरण का हथियार होकर किस वातावरण में जीवन व्यतित कर रही है? क्या अपने जीवन से लगे हुए जीवन पहलुओं में देश और समाज के कल्याण के लिए वह जागरूक है? अपने निजी जीवन को टटोलकर तथा अपने पड़ोस के सदस्यों की प्रवृति से परिचित होकर सम्पादक आज इस निर्णय की ओर ध्यानाकर्षित करना चाहते हैं कि कलीसिया के सदस्य चेतना रहित जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं। परिस्थिति को पहचानने की लाचारी कहें कि आलस्यता या लपरवाही कहें; हम लोग ऐसा जीवन व्यतीत करते हुए नजर आ रहे हैं कि मानो हम लोगों में जान ही नहीं रह गई है।

ईश्वर के बचन का श्रवण हमारे बीच जारी है। पवित्रात्मा का काम भी हो ही रहा है। पर वचन पर मनन और ध्यान की कमी के कारण उसकी शक्ति के प्रभाव से चेतनापूर्ण जीवन व्यतीत करने में लाचारी है। अत: आवश्यक है कि वचन को मन तक पहुँचने दें और अपनी मानसिक और शारीरिक आंखों को खोल कर चलें फिरें। इससे चेतनापूर्ण जीवन की बढ़ती होगी, जवाबदेही के जीवन का विकास होगा। कलोसिया के सदस्यों का व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन सार्थक होगा। देश और समाज का कल्याण होगा। यीशु नाम की महिमा होगी और कलीसिया का विस्तार होगा।

और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिए अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है। रोमी १३ : ११।

और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। रोमी १२ : २।

—सम्पादक

घरबन्धु, जून १९७४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

पेन्तिकोष्ट पर्ब्व [५०वां दिन]

प्रेरित क्रिया २ : १—४

स्वर्ग रोहन पर्ब्व की प्रतिज्ञा आज पूरी की जाती है। प्रभु यीशु विश्वासियों को अपना आत्मा देता है। प्रेरित क्रिया वास्तव में पवित्रात्मा ही का काम है। हम आज देखते हैं कि वह विश्वासियों पर उतर आता है और ख्रिस्त की कलीसिया का जन्म होता है (२:४१+४२)।

"पवित्रात्मा प्रतिज्ञा का आत्मा"

१ प्रतिज्ञा के आत्मा की व्यक्तित्व :—वह व्यक्ति है। धर्म्मशास्त्र उसके विषय साक्षी देता है (यूहन्ना १४ : १६+१७, २६; १५ : २६; १६ : ७—१५) वह स्वर्गीय व्यक्ति है (मत्ती २८ : १९; १ कुरि० १२ : ४—६; २ कुरि० १३ : १४; प्रेरित ५ : ३—४) स्वर्गीय व्यक्तित्व की साक्षी निम्न पद देते हैं—सिखायेगा, स्मरण करावेगा (यूहन्ना १४ : २६)। गवाही देगा (यूहन्ना १५ : २६) पाप, धार्म्मिकता और न्याय के विषय निरूत्तर करेगा (यूहन्ना १६ : ८) सत्य का मार्ग इत्यादि बतावेगा (यूहन्ना १६ : १३+१४) लोगों को चुनता और भेजता है। (क्रि० १३ : २—४) रोकता है (क्रिया १६ : ६—७) नया जन्म देता है। (तीतुस ३ : ५) बोलने का सामर्थ देता है।

२ उसके रहने का स्थान :—वह विश्वासियों में बास करता है (४) देखो (यूहन्ना १४ : १७; १ कुरि० ६ : १९; रोमी ८ : ९) वह बराबर हम में बास करने मांगता है। कुरिन्थ के लोग जौभी भयानक भयानक पाप में जीते थे तौभी वे परमेश्वर के मन्दिर थे। (१ कुरि० ६ : १५—१९) क्योंकि पवित्रात्मा उसमें डेरा करता था।

३ प्रतिज्ञा के आत्मा से भर जाने का शर्त :—

क—पश्चाताप करो—विश्वास करो—बपतिस्मा लेओ (क्रिया २ : ३८; १० : ४४; १५ : ८—९; गलाति ३ : २।

ख—आज्ञा पालन करो (क्रि० ५ : ३२;) अर्थात अपने को दे दो।

ग—प्रार्थना करो—क्रिया० ८ : १५—१६; लूक ११ : १३; मरकुस ११ : २४।

आज हम अपने आप को निम्नांकित प्रश्न पूछें। क्या पवित्रात्मा हम में बास करता है? क्या पवित्रात्मा हमारी संगति अथवा मण्डली में है?

त्रिनितातिस पर्व [त्रिएक परमेश्वर का पर्व]

रोमी ११ : ३३—३६

त्रिनितातिस काल में हम त्रिएक परमेश्वर पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के कार्य्यों का वर्णन सुनते हैं। त्रिनितातिस पर्ब्व में त्रिएक परमेश्वर की स्तुति एवं महिमा करते हैं। हम त्रय में एक ईश्वर का और एक में त्रय की आराधना करते हैं। यह भेद और विश्वास की बात है। इसी को पावल प्रेरित आज के वचन में प्रकाश करता है।

"त्रिएक परमेश्वर का महिमा गान"

कोरस—"हमारा परमेश्वर प्रशंसनीय है"

१ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न होता है:—वह सृजनहार है। (उत्पति १ : १; नहेमायाह ९ : ६; अय्यूब २६ : ७; भजन १०२ : २५; क्रिया १४ : १५; इब्रानी ११ : ३।

२ वह पालनहार है। सबों को खिलाता तथा पिलाता है। रक्षा रखवाली भी करता है। संभालता है। इत्यादि।

३ वह महिमा के योग्य है :—(१ इतिहास २९ : ११; यशायाह ६ : ३; मत्ती १५ : ३१; क्रिया ४ : २१; प्रकाशित वाक्य ४ : ११; ७ : १०; १५ : ४; १९ : १;

Gossner Mission

भजन ९ : ११; ३३ : २; ६७ : ३; इब्रानी १३ : १५, १ पतरस २ : ९। सब कुछ उसी को महिमा के लिये है।

४ बदले में उसको कुछ नहीं दिया जा सकता है (३५) वह अपने से जीता है और हमारे लिये सब कुछ कर सकता है !

५ वह रहस्यमय है (३४) (अय्यूब ५ : ९; ११ : ७; सभोपदेशक ३ : १; यशायाह ४० : २८; १ कुरि० २ :१६) ईश्वर का रहस्य यीशु में प्रगट है। यीशु के द्वारा हम उसको जान सकते हैं।

६ अगम्य है परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान (३३)।

बुद्धि गंभीर है (नीति १०४ : २४; नीति ३ : १९, दानिय्येल २ : २०, १ कुरि० २५)।

ज्ञान गंभीर है—ईश्वर का ज्ञान गंभीर है। वह भीतरी बातों को जानता है। (१ सामु० २ : ३; यशायाह ४० : २८; दानिय्येल २ : २२; मत्ती ६ : ८; १ कुरि० ३ : २०)।

७ उसके विचार कैसे अथाह हैं—भजन १८ : ३०; १४५ : १७; यशायाह ५५ : ९; दानिय्येल ४ : ३७, होशे १४ : ९; हबक्कूक ३ : ६, प्रकाशित वाक्य १५ : ३;। उसके विचार पूर्ण हैं। उसके न्याय में पक्षपात नहीं हैं।

त्रिएक परमेश्वर की महिमा यूगानुयुग होवे ॥

त्रिनितातिस के पीछे १ ला एतवार

१ यूहन्ना ४ : १६—२१

१ यूहन्ना ४ : ७—१५ में जीवन की निश्चयता के विषय वर्णन किया गया है। प्रेमी जीवन हो जीवन की निश्चयता है। निश्चयता की नेंव तीन बातों में है। (१) पिता का प्रेम (७—१२)। (२) पुत्र का कार्य्य (१५-१६) (३) पवित्रात्मा की गवाही (१३) जीवन की निश्चयता के कारण हमारे लिये सब कुछ नया हो जाता है।

"देखो—सब नयी हो गयी" (२ कुरि० ५ : १७)

१ डेरा नया हो गया है—जीवन की निश्चयता के कारण विश्वासी नये बास स्थान की ओर बढ़ता है। पहले वह बैरता तथा डाह में था। परन्तु अब उसका रहने का स्थान प्रेम और परमेश्वर है। प्रेम और ईश्वर में उसका नया डेरा है।

२ नया साहस :-विश्वासी का साहस तथा भरोसा नया हो गया है। उसके लिये न्याय के दिन में निर्भयता है।

३ नयी निर्भीकता: — विश्वासी अथवा प्रेम रखनेवाला अभय हो गया है। क्योंकि प्रेम में भय नहीं है। वह बिल्कुल निर्भय है।

४ भाइयों के प्रति नया व्यवहार :—परमेश्वर का प्रेम भाइयों से प्रेम रखने के लिये चलाता है। इस सम्बन्ध में देखिये (मरकुस १२ : ३०—३१) हमारे लिये सब कुछ नया हो गया है। इसलिये हम नया जीवन में रहें ॥

त्रिनितातिस के पीछे २ रा एतवार

१ यूहन्ना ३ : १३—१८

परमेश्वर की सन्तान और इबलीस की सन्तान इस प्रकार जाने जाते हैं—जो धर्माचरण नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता (१ यूहन्ना ६ : १०) भाइयों से प्रेम रखना धर्म्मी ठहरने का कारण नहीं ठहरता परन्तु प्रेम रखना तो धर्म्मी ठहराये हुए जन में तीन प्रकार के लोगों के लिये प्रेम होना आवश्यक है।

"धर्म्मी के जीवन में तीन प्रकार का प्रेम"

१ सामान्य प्रेम :—सामान्य प्रेम सब लोगों के लिये है। मनुष्य सृष्टि का मुकुट है। अत: सब मनुष्यों से प्रेम रखना आवश्यक है। आवश्यकता में पड़े हुओं की सहायता करना है। दूसरों के जीवन की रक्षा करना है। हत्या नहीं करना है (१५)।

२ आत्मा विजयी प्रेम :—धर्म्मी जन प्रेम से अनन्त जीवन के लिये लोगों को जीतता है। वह अपने जीवन को दूसरों के लिये बलिदान करता है। मत्ती १६ : २५; मत्ती १ १९ : २१; रोमी १४ : २१; १ कुरि० १० : २४; फिलिप्पी २ : ४) प्रेम के कारण आत्माओं को जीतने के धुन में लगा रहता है।

Gossner Mission

भ्रात्रीय प्रेम :—मसीही मण्डली में लोगों के लिये प्रेम भ्रात्रीय प्रेम है। जितने लोग मण्डली में हैं वे एक दूसरे से ख्रिस्त में जोड़े गये हैं। उनके बीच में भ्रात्रीय प्रेम आवश्यक है। (इफि० १ : १५; फिलि० ४ : १; कुलुस्सी १ : ४; १ थिस्लो० २ : ८; १ पतरस १ : २२; २ : १७; १ यूहन्ना ५ : २; २ यूहन्ना ५)।

यह बचन हमारे लिये दर्पण के समान है। हम देखें कि हम परमेश्वर के सन्तान हैं अथवा शैतान के ॥

त्रिनितातिस के पीछे ३ रा एतवार

१ पतरस ५ : ६—११

मसीही जीवन को फल फलना है। जीवन के कुछ फल ऐसे हैं जो कलीसिया को उन्नति और बढ़ती के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। उन्हीं आवश्यक फलों के विषय पतरस प्रेरित उपदेश देते हैं।

"कलीसिया के लिये मसीही जीवन का मनोहर फल"

१ कलीसिया के सदस्य दीनता से रहें :—"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती ५ : ३) दीनता आवश्यक है। दीन लोगों के लिये ईश्वरीय प्रतिज्ञा (भजन १३८ : ६; यशायाह ६६ : २; लूक १४ : ११; याकूब ४ : ६)।

२ अपनी चिन्ताओं को प्रभु पर डाल देवें :—(७) मनुष्य को चिन्ता ऐसा ही खा डालती है जैसा मद्यापन। चिन्ता मनुष्य का व्यक्तिगत भूत (शैतान) है जो मनुष्य को यीशु से लूटने में लगी रही है। चिन्ता गरजनेवाले सिंह के समान है।

३ कलीसिया के लोग जागते रहें ८) जागते रहें क्योंकि शैतान परीक्षा में गिराने के लिये लगा रहता है। (उत्पति ३ : ४, ५; अय्यूब १ : ६—११; २ : १; जकर्याह ३ : १; मत्ती ४ : १; मत्ती १३ : १९; १३ : ३८+३९, लूक ९ : ४२; यूहन्ना ८ : ४४; १३ : २; कलीसिया के लोगों को सावधान रहना आवश्यक है। (मत्ती २६ : ४१; क्रिया २० : ३१; १ कुरि० १० : १२; १६ : १३)।

कलीसिया के लोगों को शैतान का सामना करना है। (इफि० ४ : २६+२७; ६ : ११; याकूब ६ : १)।

प्रार्थना और बचन के तलवार से शैतान का सामना करना है।

परमेश्वर सारे अनुग्रह का दाता है। वह आप ही तुम्हें उपर्युक्त फलों के द्वारा धनी बनावेगा। सिद्ध स्थिर और बलवन्त करेगा ॥

बाबुल [गड़बड़] उत्पत्ति ११-९

जलप्रलय के पश्चात पृथ्वी पर मनुष्य बढ़ने लगे उस समय लोग पूर्व कि ओर चलने लगे, चलते चलते सिनार देश में पहुंच एक बड़ा मैदान पर बस गए और होते होते वहां के लोगों में एक चिन्ता उत्पन्न हो गयी कि कहीं और जलप्रलय तो न हो यही चिन्ता में पड़े लोग कहने लगे, आओ हम एक ऐसा नगर ओ गुमठ बनालें कि उसका चोटि आकाश से बातें करें। इस प्रकार से हम अपनी कीर्ति बढ़ाए। ऐसा ही वे बनाने लगे जैसा उन लोगों ने कहा, और पत्थर के बदले इंट ओ चुना के बदले मिट्टी की गरे का प्रयोग किया, और वे अपनी इच्छानुसार काम जारी किया। पर हम देखते क्या पद छः में कि ईश्वर की इच्छा के विरूद्ध है और उन में ऐसा गड़बड़ डाल दिई गई कि वे एक दूसरे की बोलियां समझ नहीं पाया। इस प्रकार उनको इच्छा असफल हो, वे तितर-बितर हो गए। वे गुमठ बनाना छोड़ दिये। यह था ईश्वर इच्छा विरूद्ध शैतान का काम ईश्वर का नाम जगत् से मिटा दे ओ अपनी महिमा जगत् में फैलावे।

आज सिनार देश रूपी मसीही कलीसा छोटानागपुर के चौरस मैदान में बसा है, अब उस मैदान में रहने वाले मसीहियों के मन में भी एक ऐसा बहकाव है, कि वे

Gossner Mission

परमेश्वर के पुत्र जो सच्चो चट्टान है उसो चट्टान पर जो नेव डाला गया जिसमें ईंट के बदले हर मसीही बिश्वासी भाई-बहन और चुना सिमेन्ट के बदले बिश्वास की सगंति से बना और बन रहा है इस प्रकार हर एक का बिश्वास रूपी बहुमूल्य पदार्थ से बनाया जा रहा है। पर देखो उसी नेव में घास-फूस की रदा.....जिससे कि यह गुमठ की चोटी स्वर्ग तक शैतान की इच्छा बिरुद्ध बन रहा है, अब शैतान भी कोशिश में है कि ईश्वर का यह काम रद कर दिया जाय। इसलिए रात को जब लोग सो रहे थे उसो समय हमारे कितने अगुओं के मन में यह डाल दिया ताकि यह काम छिन्न भिन्न हो जाय। अब यह उनके मन में उगी और बढ़ी इस प्रकार सब कोई देख रहे हैं पुरातन काल की बाबुल आ गई और इस जोवते कलीसा में भी गड़बड़ डाली गयी है और एक दूसरे की भाषा अलग सुनाई दे रहा है, जैसा कोई कहा आओ हम उत्तरी जोन खड़ा करें और कितने उसमें बहकाए गए और भोड़ के भीड़ चले गए, फिर भो और दूसरी भाषा सुनाई देती है, आओ हम धर्म प्रदेश को खड़ा कर इस प्रकार उस में कुछ भाई बहन बहकाये गए। अब कलोसिया रूपी सिनार में बसे भाई-बहनों के बीच में कई भाषा सुनाई दे रहा है, इस प्रकार शैतान अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा है फिर भी ईश्वर दूसरी ओर यह अलग भाषा को एक करने जा रहा है और वह करेगा ही क्योंकि आज हमने शैतान के बहकाव में पड़ के जंगलो और पहाड़ों में तितर-बितर किये गये.....२ इतिहास १८-१६ और जैसा मन में आया वैसा ही चलते हैं, आज उन अगुओं पर एक ऐसा आत्मा बैठाई गयी २२-पद इसलिए आज ही हमें एसों से फिर जाना है क्योंकि २ इतिहास की १६ वें कि आखरी में कहता है कि हर एक अपनो-अपनी घर कुशल से लौट आओ। और अहब के बहकाव से बचो और अपना प्राण बचाओ प्रभु हमारे साथ हो।।

प्रचारक प्रभु सहाय मिंज

क्रूस-गीत

मसीही विश्वास को,
हमने अपना बना लिया,
लायें न क्यों ईमान, हम यीशु पे,
जिसने अपना सब कुछ लुटा दिया,
खाली थी जो मकाम वो दिल में बसा लिया।
दुनिया सूनी-सूनी हुई थी, उस दिन,
कुर्बां हुआ था क्रूस पे, जिस दिन,
मेरे सामने तेरा ही जलवा नुमायना हो,
तेरे लिए हमने हर गम भूला लिया।
जैसा कहा था वैसा ही कर के दिखा दिया
मर के भी उसने कब्र से खुद को जिला लिया।
मसीही विश्वास को हमने
अपना बना लिया।।

Basant Kumar Surin
D. U. Mission Boy's Hostel, H. Bagh.

Gossner Mission

मसीही घराना और स्वर्गीय घराना

स्वर्गीय घर और स्वर्गीय घराना वह है जिस में दिन और रात ईश्वर जो सब का प्यारा पिता है उसकी आराधना और स्तुति दिन और रात होते रहती है, स्वर्गीय घर के निवासी अर्थात स्वर्ग दूत्त और सन्त लोग झुक-झुक कर उसको दण्डवन्त करते हैं, और उसकी और मेम्ने की प्रशंसा करने में लीन ओ मस्त रहते हैं। हमारा घर उसी स्वर्गीय घराने की परछाई है। उस स्वर्गीय घर के आनन्द, प्रेम और स्तुतिगाण के अनुभव करने का यह स्कूल है। जो लोग इस पृथ्वी पर अपने घराने में इन अनुभवों को पाने का अवसर नहीं पाते हैं वे उस सनातन के घर में कैसे भाग ले सकेंगे" पाद्री, प्रचारक, पंचों, ओ हम सभों को ईश्वर ने यह आदरवन्त काम दिया है इसी पृथ्वी ही पर घराने में उसके स्वर्गीय घर के प्रेममय जीवन के लिये तैयार करें।

भला तो हम उत्साह और जोश के साथ आज वह संकल्प करें कि इस इलाका के अन्दर जितने ख्रिस्तान घर है उनको हम ऐसा घर बनावें जहां पवित्र प्रेम बास करें। दिन प्रति दिन ईश्वर की आराधना और स्तुतिगाण होवे और सब दुःखों में धीरज और ईश्वर पर भरोसा करने का आदत होवे सब बाल बच्चे धर्म्मज्ञान में मण्डली के प्यार में और ईश्वर की संगति में बढ़ चले ॥

क्या हो सकता है कि हमारा घर जो ईश्वर के घर की परछाई है स्वर्गीय घर की नकल और पार्थिक रूप है। उसमें अशुद्धता, मतवालपन, रगड़े-झगड़े और लुचपन बास करें हरगिज नहीं ईश्वर दया करे कि हम सभों के परिवार उसकी दृष्टि में ग्रहण योग्य होवें ॥

प्रचारक — नैनसुख कुजूर
अमगांव
चैनपुर इलाका

"शांति मिले कैसे ?"

(Maskalan Barla)
D.U. Mission Boy's Hostel
Hazaribagh

उलझनों में फँसा हुआ था मै
चैन की वंशी बजा नहीं पाता था मैं
सोच नहीं पाता था कि क्या करूँ मैं ?
ढल जाता था दिन मुश्किल से
घेर लेती थी डरावनी रात मुझे
सुन्न हो जाता था दिल मेरा बेचैन से।
फूट निकलती जब सूर्य की किरणें सबेरे
फट जाता था अचानक नींद मेरी
छोड़ देता विस्तरा अपना, हड़बड़ाकर।
फिर निकल जाता मेन रोड की ओर
सोचता था महफिल में बहला लूं मन
पर भी बेताब था मोटरकारों को
ध्वनि से।
ख्याल आया एक दिन सिनेमा जाने को
तीन घंटे तो बहला लूँ चित को
परन्तु था मैं असंतुष्ट इससे भी।
निकला सिनेमा से माथा पीटते हुए
पुकारा मुझे एक दोस्त मुस्कुराते हुए
था वह एक पक्का मसीही।
लिया उसने मुझे अपने घर को
नजर पड़ी एक किताब टेबुल पर
था वह मरकुस रचित सुसमाचार
बेधड़क ले आया अपने घर उसको
पढ़ने लगा मन लगाकर किताब को
प्रभावित हुआ यीशु मसीह के जीवन
चरित्र से।
तब समझ गया मैं वास्तविक चीज को
खरीद लिया एक बाईबल दूकान से
आह ! आज मिली मुझको मन में शांति

रख लेना तुम भी एक प्रति बाईबल
मिट जायेगी मन की अथाह क्रांति
मिल जायेगो मन में अनन्त शांति।

Gossner Mission

-:चुनौती:-

'एक लेख युवा-वर्ग के लिए—भेंट स्वारूप।"

प्रभु की वाणी है,—"तुम जाकर तमाम देशों के लोगों को शिष्य करो, और उन्हे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से वप्तिस्मा दो।" मत्ती २८:२९ ॥

खुदावन्त मसीह की यह चुनौती फ़क़ात अपने बारह चेलों को नहीं पर सारे कौम और सारे जाति के लोगों के लिए है। गोस्सनर साहब चार सुसमाचार प्रचारकों को भेजा कि वे छोटानागपुर इलाके के जंगलों में वास करने वालों को प्रभु का जीवता वचन सुनावें। जो अन्धेरे में गर्क हुए हैं, उन पर मसीह के ज्ञान का ज्योति प्रदान करें —ताकि वे अन्धेरे से उजाले में प्रवेश करके अपना जीवन मसीह के लिए समर्पित कर दें। यह चुनौती आज हरएक मसीही जवान और युवतियों के लिए अति लाजिमी है! यदि हम वाकई मसीह के चेले हैं तो निश्चय यह चुनौती स्वीकार करते हैं। हमारे सामने कई बड़े-बड़े उत्तरदायित्व का भार है। उसे हमें समझना निहायत जरूरी है। परमेश्वर की कलीशा जगत में इस तथ्य को लेकर स्थापित हुअ। कि लोग प्रभु का जीवता वचन ग्रहण करके पापों का पश्चाताप करें।

व्यर्थहीन जीवन:— परमेश्वर हर मनुष्य को इस जगत में किसी भले काम की उम्मेद से भेजा है। हम किसी भी कार्य से वंचित नहीं हैं। इस जीवन को व्यर्थ न गवायें,··· आईये, प्रभु के कई चुनौतियों को स्वीकार करे···उसपर गंभीर विचार विमर्श करे ··· अपने को काम में लाने का प्रस्तुत करें। अपने नयनों के सामने वइबल को रख के एक-एक पाठ का अध्ययन करें—और देखें, कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है!

"हमारा विश्वास क्रूशघातिक यीशु मसीह पर केन्द्रित है"—क्योंकि वह महामहीमा परमेश्वर का पुत्र होते हुए भी गौशाले में जन्म लिया! दुःख, दर्द मार सहा और अन्त में अपने को शलीब जैसे कड़ी नीन्दनीय मौत पर सौंप दिया, ताकि हमारा उद्धार हो। गोर को तोड़ कर तीसरे दिन महामहीमा के साथ मुर्दों में से जी उठा—वह पापियों के लिए बलिदान हुआ—जो आज हम सब मसीह के सन्तान कहलाते हैं।

हमारा विश्वास है—"मसीह के द्वारा ही उद्धार होगा।"···यह जानते हुए भी हम केवल विश्वास तक सीमित है। हमें विश्वास के साथ-साथ काम भी करना है। बगैर काम के हमारा विश्वास व्यर्थ है। हमें इस जीवन को प्रभु के कामों के लिए बिताना है: इसलिए आज ही यह व्यर्थ जीवन को प्रभु में समर्पित करके प्रभु के विश्वास योग्य पात्र बनें।

परमेश्वर हमें कैसी चुनौतियाँ देता है:—इस बात पर विचार करना अति आवश्यक है। सुसमाचार जिन क्रान्तिकारी परिवर्तनों की घोषणा करता है···आज हम जवान और युवतियों को जोश के साथ उठना है। जय का गीत और जोश भरे नारे लगाते हुए मसीह के पीछे चलना है।...पर आज हम जवान और युवतियों सिर्फ़ जर्जर और खोखलापन लिए ही एक दूसरे के मुंह को ताके हुए हैं। हम गर्व के साथ मसीह के चेले हैं, लेकिन हमें गर्व करना नहीं पर हमे अपने चाल-चालन, रइमोरिवाज मसीह के सदृश्य भी करना है।

वह नम्र और दीन बन कर पैदा हुआ है, आज हमें भी नम्र और दीन बनना है — वह पापी से घृणा नहीं पर पापों से घृणा किया — वह प्रेम किया — दया किया—वह न किसी से लड़ाई किया न झगड़ा—न हिंसा न डाह—न किसी को दुःख दिया—पर खुद दुःख सहा,— आज हमें भी मसीह के इन गुणों को अपनाना है। जब हम इन गुणों को अपनाते है तब ही कह सकते हैं कि हम मसीही—(Followers of Jesus) हैं · नहीं तो मसीह होना सिर्फ धोखा है। जब हम अपने को मसीही (Christian) कहते हैं तो आज ही यह चुनौतियाँ स्वीकार करें।

Gossner Mission

हमारा जोवन कैसा होना चाहिए ?:— हम इस संसार में जिन्दगी वसर कर रहे हैं सांसारिक रश्मोरिवाज के मुताविक, और हम जानते है; यह जिन्दगी एक धोखा है। हम जिस खाना-पीना, रहना, ओढ़ना-पहनने का जिन्दगी पर मर मिटते हैं, यद्यपि हमे जीवन का पुरा सुख नहीं मिल पाता है फिर भी··! क्योंकि हम धोखेमय जीवन बिता रहे हैं। इस जीवन के पश्चात हमारा और एक जीवन है,—'जो हमें शरीर त्याग करने के बाद प्राप्त होता है!' उस जोवन के लिए ही हमें इसी जीवन में रहके प्रभु के प्रशंसा योग्य काम करना है। हमारा जोवन हमारा नहीं पर प्रभु के लिए होना चाहिए,·· पर हम बादी और झूठी कशमें और पापों के दरमियान गस्त लगा कर अपना गनिमत वक्त को हाथों हाथ खो दे रहे हैं। और यह जीवन को हम स्वंय शैतान के हाथ में सौंप कर अजल हलाकत की दरिया में प्रवेश होने के लिए प्रभु के विमुख में संग्राम कर रहे हैं। ··· वक्त गनिमत है—प्रभु के वचन का अनुशरण करें। वचन फैलाना न केवल पाद्री, प्रचारक का है पर यह काम हर जवान युवतियों के लिए ·· हमारा जीवन का एक बड़ी और जोशपूर्ण चुनौती है।

मसीही विश्वासियों के जीवन का यह पहला कदम है। केवल हमें गिर्जा जाना नहीं है—पर दूसरों को भी लाना है। हमें केवल धर्म पर चलना नहीं—पर दूसरों को भी चलाना है। हमें केवल अपने लिए नहीं — पर दूसरों के लिए प्रेमी बनना है। हमें स्वंय मसीह पास आना नहीं—पर दूसरों को भी लाना है। कलीशा संबन्धी गिर्जा संबन्धी लेन देन हमारे लिए चुनौती है। बिन्ती प्रार्थना में हम मसीह के नाम पर मांगते है पर यह बात पर हम गौर करते हैं कि मसीह के लिए एक मुट्ठी चावल और पांच पैसा ग्रहण योग्य है? नहीं···यह काफी नहीं है। हम कौन सा सकल और अभिप्राय लेकर केवल एक मुट्ठी चावल और पाँच पैसा लेकर जायें। आज हमारा विश्वास लड़खड़ा रहा है—डगमगा रहा है कि ईश्वर को कितना प्यार करते हैं। आज (इसी घड़ी) हमें अपने इच्छा और शरीर के कुआभिलाषाओं को मारना हैं। इन बुरे कर्मों और बुरे विचारों से आत्मा छिछला होता जा रहा है। हमारा जीवन नाश हुआ चाहता है। हमारा पतन निश्चय है; क्योंकि हम मसीह को बगल में रख के शैतान के लिए कार्य कर रहे हैं।

जिस तथ्य को हम ग्रहण करके शरीर जोवन बिता रहे हैं इसको प्रदान करने वाला भी कोई 'महान है' वह हमारा पालन-पोषण करता है—उस पर ध्यान रखना,—उसके आज्ञा पर चलना—महीमा के कार्य करना ही चुनौतियों को स्वीकार करना है!

'जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं तो संसार, शैतान और सब बुराइयों के विमुख लड़ते हैं। पापों से घृणा करते हैं। परमेश्वर का आज्ञा मानते हैं। हृदय बदल जाता है और एक नया जीवन का आरम्भ होता है ···तब हम, निष्कपट, प्रेमी, शहनशीलता, दयालुता, विश्वासी संयमी और अरोग्य एसे गुणों (रत्नों से परिपूर्ण हो जाते हैं। हमारे कलीशा के जवान-युवतियों को प्रभु की यह चुनौती आज ही स्वीकार करना बहुत जरूरी है; हमें प्रभु के गवाह के लिए एक अच्छा नमूना बनना है।···प्रभु आप ही अपनी आत्मा की अगुवाई करे और एसे गुणों को हृदय में भर दे,—'ताकि युवा-वर्ग अपने आप को प्रभु के लिए सिद्ध और तैयार कर सके।"

एच· व्ही· कुजूर
राजगांगपुर

सिमडेगा गिरजा घर का संस्कार

बिलम्बित समाचार

रांची जिले के सिमडेगा अनुमण्डल मुख्यालय में हमारे गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीशा का एक आराधनालय पहले से ही है। उसी के पूरब की ओर आधा किलोमीटर और सिमडेगा बिरसा चौक बस स्टैंड से एक किलोमीटर दक्षिण पूर्वी दिशा में मिट्टी के दीवाल का ४२ हाथ लम्बा और १७ हाथ चौड़ा एक नया आराधना-

Gossner Mission

लय बनाया गया है। यह आराधनालय सिमडेगा मण्डली के बुधरा टोली में अवस्थित है। इस मण्डली के भाई बहनों के सहयोग से यह तैयार हो सका है। इसके निर्माण में बुधरा टोली सिमडेगा के मसीही भाई-बहनों ने विशेष पाठ अदा किया है। इस आराधनालय का संस्कार १०वीं जुलाई १९७२ को ओटोनोमी पर्व के पुनीत अवसर पर हुआ। मध्य अंचल के चारों पेरिश के भाई-बहनों को आमंत्रित किया गया था। आराधनालय बाहर और भीतर नव विवाहित दुल्हिन के समान सुसज्जित था। प्रोशेसन के लिये करीब आठ सौ भाई बहन और बच्चे कतार में खड़े थे। प्रोशेसन की अगुवाई अंचलाध्यक्ष पाद्री जुनस कुल्लू के द्वारा साक्षीवाणी ६ के साथ हुई। अंचलाध्यक्ष ने भजन संहिता १३४ पर रोमंचकारी उपदेश दिया, प्रार्थना हुई और २ कोरिन्थी ५; ९ तथा २ को: ९: १८ पढ़कर त्रिएक परमेश्वर पिता पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से दरवाजा खोला। साक्षी वाणी ७ गाते हुए आराधनालय में प्रवेश किये और अपना स्वेच्छा दान पवित्र वेदी पर अर्पण किये। भाई-बहन अपने अपने स्थान पर बैठ गये। कुछ प्रांगन में भी थे। सिमडेगा न्यायालय के अधिवक्ता (Advocate) माननीय हरदुगन भेंगरा ने आत्मपालन पर गोस्सनर साहब के भेजे हुए मिश्नरियों के कार्यकाल एडभाईजरी बोर्ड का गठन एवं स्व० पीटर हुरद की अध्यक्षता में आत्म पालन की घोषणा पर प्रकाश डाला। ओटोनोमी पर्व के आराधना के आधार पर अंचलाध्यक्ष के आराधनालय में अगुवाई की। पहला वचन योहन ४ : २९-४२ पढ़ा गया। पाद्री प्रभुदयाल सोरेंग ने भजन संहिता ९७ : १ १२ पर प्रभावशाली उपदेश दिया। कलीशा की बढ़ती पर भी प्रकाश डाला। पाद्री सोरेंग ने ही प्रार्थना में अगुवाई की।

पवित्र प्रभुभोज का भी अनुष्ठान किया गया था। बच्चों को पवित्र बप्तिस्मा भी दिया गया। आत्म पालन की घोषणा खड़े होकर तथा दहिना हाथ उठाकर दुहराया गया। प्रभु की प्रार्थना से आराधना समाप्त हुआ।

ओटोनोमी के उपलक्ष्य में एक बजे दिन से खेल कूद प्रतियोगिता हुई। चाय-नाश्ता का आयोजन था। छ बजे शाम को विजेताओं को अंचलाध्यक्ष द्वारा पुरस्कार वितरण हुआ। रात आठ बजे प्रीतिभोज का भी आयोजन था। भोजनोपरान्त प्रार्थना हुई और कार्य-क्रम समाप्त हुआ। यहोवा इस मण्डली को आशीष देवे जिससे उस आराधनालय के आड़ में मण्डली फूले फले और ईश्वर की महिमा होने सके।

आप लोगों का सेवक
पो० डो० कण्डुलना

तबीता बैबल स्कूल के प्रति अपार प्रेम

हम गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोविन्दपुर के शिक्षक तथा छात्रवृन्द श्रीमती थेओदोरा तिर्की के कार्य को कभी नहीं भूल सकते हैं, इसलिये कि उन्होंने तिथि १४ फरवरी १९७४ ई० को १००० रु० नगद तबीता बैबल स्कूल के नाम से भेंट दिया। चूँकि यह स्कूल पूरे गोस्सनर लूथेरान कलीशा का है लेखक की आशा है कि कलीशा के भाई बहन भी स्मरण करेंगे और प्रोत्साहित होंगे। यों तो इस स्कूल के बहुत हित चिन्तक हैं देश तथा विदेश में और हर प्रकार से मदद किया करते हैं कोई प्रार्थना से और कोई पैसों से। हम उन सब के धन्यवादी हैं। परन्तु श्रीमती थेओदोरा तिर्की का यह भेंट अपार प्रेम कहा जा सकता है। उसके निम्न कारण हैं - हम ने कोई पत्र वा अपील द्वारा उन्हें नहीं मांगा पर स्वयं उन्होंने दिया। वे बिहार प्रान्त के सिंहभूम जिला स्थित मूहभंडार मंडली की लूथेरान ख्रिस्तान विधवा और नर्श के काम से अवकाश प्राप्त बहन हैं। उन्होंने ऐसे मौके पर भेंट दिया जब संस्था को पैसे की अति आवश्यकता थी क्योंकि कलीशा के झगड़े के कारण के० एस० एस० का देन बन्द था। फिर इसलिये भी अपार प्रेम कहा जा सकता है क्योंकि यह उनका व्यक्तिगत

Gossner Mission

पैसा था, कोई समाज संगठन का नहीं। इस अपार प्रेम भेंट को प्रधानाध्यापक ने प्रेमपूर्ण गद-गद आवाज और आंसू बहाते तबीता स्कूल के नाम से ग्रहण किया। भेंट करते समय श्रीमती थेओदोरा तिर्की ने यों कहा—"मैं कलीशा की संस्थाओं द्वारा सीख-पढ़ सकी। यीशु मसीह ने ही मेरे लिये नर्श का काम प्रबन्ध किया। वह वर्तमान समय में भी सहायता और अगुवई करता है। मैं ऐसे गोस्सनर लूथेरान कलीशा के एक मात्र बहिनों का बैबल स्कूल को बन्द होने से बचाना चाहती हूँ" आदि। प्रत्योत्तर में भेंट प्राप्त करने वाले ने कहा—"यह तो बैबल की उस विधवा का सा प्रेम है जिसने मंदिर के लिये दो छदाम चढ़ाई (लूक २१ : १—४)। यह तो उस मरियम का सा प्रेम है जिसने यीशु मसीह के गाड़े जाने की तैयारी में उसके सिर पर इत्र डाला (मार्क १४ : ३—९)।

हम श्रीमती थेओदोरा तिर्की बहन के साथ अन्य शुभ चिन्तकों के सदा धन्यवादी हैं और रहेंगे और ईश्वर से चाहते हैं कि वह बचन हर एक मसीह में दिखाई देवे जिसमें लिखा हुआ है "तुम ने मुझे नहीं चुना पर मैं ने तुम्हें चुना और ठहराया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे।" योहन १५ : १६।

रेभ० जे० सोय
गोबिन्दपुर

"साक्षी"

मैं जाति का चोक बड़ाईक; ग्राम बिरकेरा, थाना रायडीह, जिला- रांची का हूं। मुझे अपने जीवन में धर्मशास्त्र पढ़ने का मौका मिला और यूहन्ना १४:६ को ध्यान से पढ़ा—मार्ग, सत्य, और जीवन मैं ही हूँ बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यह बचन मेरे मन में कांटा सा चुभ गया। मैं स्थानीय प्रचारक जुनास खेस से इसके बारे पूछा तब और अधिक दृढ़ हो गया। पर एक दिन मेरा पुराना ख्रिस्तान मित्र मुझ से कहा—तुम को ख्रिस्तान होना व्यर्थ है। नन ख्रिस्तान कुछ नहीं कहे पर ख्रिस्तान भाई ऐसा कहता है। मुझे बहुत दुःख लगा। फिर भी गिर्जा बिल्डी में मेरा अधिक झुकाव रहा।

आप लोग मार्च का घरबन्धु सत्य और न्याय को पढ़े होंगे—प्रभु शैतान को कहता है—क्यों लोगों को बहकाने नहीं गये। शैतान—हे प्रभु आप का सब आदमी तो शैतान हो गया तो मैं किसको बहकाऊं। वैसा ही यहाँ मेरा ख्रिस्तान मित्र बहकाता था कि तुम को ख्रिस्तान होना व्यर्थ है।

पर मैं २२ अगस्त ७१ को बपतिस्मा के द्वारा पॉल बिनोद बड़ाईक नाम पाया। तभी मुझे शान्ति मिली और अभी मैं बिरकेरा मण्डली का लुथरान सदस्य हूँ।

आप का भाई
पॉल बिनोद बड़ाईक
कोन्डरा बिरकेरा।

—:भजन:—

जय जय धन्य प्रभु प्यारा—२
Cho:-सकल जगत् में तू निराला
तू ही जग की उजियाला हो ॥२॥
पिता पुत्र पवित्रात्मा का दान
तू हमें देता, और जीवन की
रोटी भी हमेशा देता रहा है।
अपने निराले बचनों से.
शहस्त्रों पापियों और रोगियों
को किया क्षमा और चंगाई।
सर्वशक्तिमान पिता का पुत्र (पूत)

Gossner Mission

धर्मात्मा हमारे वास्ते दिया
प्राण और किया हमारा उद्धार।
वाँधिकारी पिता का पूत
धन्य तू हमें जीवन देता है
धन्य हो तेरी, धन्य, धन्य.....
जय जय धन्य.....

आई० ई० कुजूर
आकाशवाणी, डिब्रूगढ़
516 (1). OCT. 1973

शिक्षकों का सेमिनार! स्थान कहुपानो पेरिश सेन्टर दिनांक ९-३-७४

गत ९–३–७४ को कहुपानी पेरिश सेन्टर में शिक्षकों का सेमिनार आयोजन किया गया था। स्कूलों के स्थापित होने के बाद कई वर्ष गुजर गये कि ऐसा सेमिनार का आयोजन कभी नहीं किया गया था। इस सेमिनार में मिश्न एवं और मिश्न स्कूलों के सभी मसीही शिक्षकों को निमंत्रण दिया गया था, पर अफशोष की बात है कि अनेक शिक्षक सेमिनार को अनिवार्य नहीं समझा और अनेक बातों से वे अनजान रह जायेंगे।

इस सेमिनार में अध्ययन के लिए तीन विषय रखा गया था।

(१) कलीशा में शिक्षक का स्थान क्या है?
(२) मिश्न स्कूलों में अनुशासन कैसा होना चाहिए?
(३) मिश्न स्कूलों में अर्थ व्यवस्था कैसा होना चाहिये?

पहला विषय के सम्बन्ध में पाद्री एम॰ पी॰ जोजो ने धर्मशास्त्र के निम्न स्थल बचनों का उदहारण देकर बताया कि कलीशा में मसीही शिक्षक बहुत ऊंचा स्थान रखता है, इसका सम्बन्ध सोधे ईश्वर से है वह एक उत्तम गुरू है। (निर्गमन ३:१८ + १९:२० और लूक १८:१८)

धर्मशास्त्र के अनुसार प्रथम शिक्षक मूसा आता है। ईश्वर ने मूसा को चुना, बुलाया और नियुक्त किया और इस्राईलियों को सिखाने के लिए व्यवस्था लिखी हुई पत्थर के दो पटियाएं उस को सौंप दी। उन पटियाओं में सिखाने के लिए दो विषय लिखी हुई थी —

(१) ईश्वर के विषय (२) मनुष्य के विषय।

वर्त्तमान में जो शिक्षक स्कूल में काम कर रहा है वह भी ईश्वर का चुना, बुलाया और नियुक्त किया हुआ जन है इसका सम्बन्ध सीधे ईश्वर से है वह एक उत्तम गुरू है। ईश्वर उसको कलीसिया के मिश्न स्कूलों में सेवा के लिए अपना काम सौंप दी है। सिखाने के लिए जो विषय मूसा को दिया गया था वही विषय को वर्त्तमान शिक्षक को भी सौंप दी गई है अर्थात् (१) ईश्वर के विषय (२) मनुष्य के बिषय। मसीह कलीसिया के सभी मसीही शिक्षकों को इन्हीं दो विषयों को अपने स्कूल के बच्चों को सिखाने, पढ़ाने के लिए ईश्वर ने सौंप दिया है बच्चों को सिखाने में शिक्षक विश्वास योग्य होवे।

दूसरा विषय के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक श्री बी. के. हेमरोम कोरोंजो ने बड़ी रोचक और अकर्षित भाषण दिया। उन्होंने सुसमाचार के १ कोरिन्थ ४:१-२ पद इफिसी ४:१ पद का उदहारण देकर बताया कि हर एक मसीही शिक्षक बुलाये गये हैं औष हरएक को सेवक और भण्डारी का काम सौंपा गया है। सेवक और भण्डारी विश्वास योग्य होवे

Gossner Mission

जैसा— अब्रहाम का दास इलियाजर और मिस्र में पुतिफर के घर में युसफ। स्वामी एक दिन अपने सेवक और भण्डारी से लेखा लेगा। विश्वास योग्य सेवक तब हो सकता है जब कि अपने को अनुशासन के अधीन में रखता है।

अनुशासन के विषय में उन्होंने बताया "संयम" (१ कोरिन्थ ९:२५) जैसा पहलवान सब प्रकार संयम रखता है हर एक मिशन स्कूलों में अनुशासन का यही मूल बात है। हर एक शिक्षक अनुशासन का पालन करते हुए ठीक समय पर स्कूल जाना और ठीक समय पर बच्चों को छुट्टी देकर लौट आना। हर एक बच्चे का ध्यान शिक्षक पर लगा रहता है।

तीसरा विषय के सम्बन्ध में कोरोंजो इलाका चेयरमेन का था, कारणवस इस सेमिनार में उपस्थित नही हो सके।

भाद्री एम० पी० जोजो, पेरिश चेयरमेन

समाचार देश-विदेश

पोर्टब्लेयर मसीही समाचार

अन्डामन एक छोटा द्वीप है जो जल के ऊपर बसा है। जिसमें हर प्रान्त के लोग अपना जीवन व्यतीत करने के लिए अपना मुख्य भूमि छोड़ कर आये हैं। और साथ-साथ अपना धर्म को भी लाये हैं अपना विश्वास के अनुसार भगवान का सेवा और कार्य भी कर रहे हैं।

इसी प्रकार हम मसीहो भी इस द्वीप स्थल आये हैं हमें भी वह अपने परमेश्वर सेवा उपासना के साथ साथ कार्य भी करना है। हमें वह अपने खून से खरीद लिया है। वही हमारा पथ प्रदर्शक है हमारे लिये ज्योति है और हम ज्योति में चलने हारे एक-एक मसीही है। और जो नहीं आये हैं उन्हें लाना है। पर खेद है, हमारे मसीही भाई बहन को देखे तो हमें घोर निराशा आयगी, हम मसीहियों के बीच जहां मेल मिलाप रहना है वहां पक्षपात-कपट है। जहां कहीं भी हम जायं, डाह, विरोध और बखेड़ा ही मिलता है इस कारण हमारे बीच कुरीति और अंधेरा बढ़ते चला जा रहा है। जिसे हम मसीहियों में अशान्ति फैली हुई है।

इसका एक मात्र कारण हमारे अगुवे ही है यहां अपना कर्त्तव्य के विरुध काम कर रहे हैं जहां मेल प्रेम से ईश्वर का वचन रूपी बीज बोना है वहां फूट और बखेड़ा की बाते सिखाते हैं। आज पोर्टब्लेयर में हमारा पादरी बाबू लाल ही हम मसीहियों पर फूट डाल दिये और आज इस छोटे भुन्ड दो भाग हो गया अब यहां के मसीही अपने परमेश्वर के लिए क्या कर सकते। हम मसीही अभो तक अपना विश्वास में स्थिर हैं पर इन्हें आशा-विश्वास देने वाला कोई नहीं इस प्रकार की हालत देख कितने हमारे भाई-बहन दूसरे चर्च पर पांव डाल रहे है, कितने डाल चूके। न यहां मण्डली है पंच प्रचारक और न गिरजा घर है। कितने गिरजा घर किराया न जाने बेचा गया है क्यों? किस कारण? और आज यहां के भाई-बहन भिखारी के सदृश्य, दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं। जहां बाबू लाल १४-१५ वर्ष गुजार दिये ज्यों का त्यों।

पर आनन्द करे पोर्टब्लेयर के भाई-बहन सोये नहीं वरण ईश्वर पर विश्वास और आशा के साथ साथ कार्य भी कर रहो है। ये भूले भटके को ला रहे हैं और यहां अपना मन्डली तथा गिरजा घर खड़ा करने के लिए ठोस संकल्प, दृढ़ निश्चय उचित उद्देश्य ले कर प्रभु के लिए अपना कदम उठाये हैं। हमें धीरज धरना है, हमें वह ताकत है जिसको कोई भी तूफान उड़ा नहीं सकता, कोई भी ताकत हिला नहीं सकती और कोई भी ताकत रोक नहीं सकेगी। हमारे सीने में साहस है मस्तिष्क में दिमाग है और भूजाओं में बल है ताकत है, हमारे काम पर परमेश्वर अपना आशीष दे उन्हें अगुवाई करें कि हमें सफलता ही हाथ लगे।

घरबन्धु, जून १९७४

Gossner Mission

हम न सरकार से जमीन के लिए अपील किये ईश्वर से प्रार्थना किये हमारी प्रार्थना-मांग रजिस्ट्री द्वारा सुनी गयी और जमीन भी मिल गया। पर इस समय अगुवा को आवश्यकता है। हम ने यह काम कर के पादरी के पास प्रस्ताव रखे कि हम यहां गिरजा घर बनायेंगे उसने जवाब दिया गिरजा घर पोर्टब्लेयर में बनाने नहीं सकोगे। और हमारे बीच दो भाग कर दिये आज इस ओर हमारे अंचल अध्यक्ष ध्यान न दे तो हमारा जो अभी जमीन मिला है समुद्र में डूबने वाला है और हम मसीहियों का फूट एक में न मिल पायगा।

अंजोर सोरेंग
एम. ई. एस. स्कूल लाईन
पोटब्लेयर अन्डामन

कुचीन्डा पेरिश

शासन की घटो के कारण मनुष्यों का आत्मिक जोवन पतन की ओर जा रहा है।

मैं कोरोंजों, खुटीटोली, टकरमा इलाके में रहकर अपना जीवन प्रभु में आनन्द के साथ व्यतीत किया हूँ। अभी कुचिन्डा पेरिश में खिष्ट के लिये बहुत शोक के साथ अपना दिन काट रहा हूँ। प्रति दिन और रात धर्म्म के लिये सोच बिचार करते-करते मुझे नींद नहीं आती है। हाय ईश्वर का राज्य शिक्षा नहीं देने के कारण प्रभु का ज्ञान नाश हो रहा है।

गिरजा आने जाने में दान पुन देने में मनुष्यों का जोश क्यों नहीं है ?

१ मण्डली में सन्डे स्कूल नहीं होता है। बच्चों को धर्म्म ज्ञान नहीं सिखाया जाता है। कोई जगह सिखाया जाता है—किन्तु नियम अनुसार नहीं।

मेरी इच्छा है—कटेखिसम अर्थ सहित, स्थल बचन, नया नियम, पुराना नियम, मन दर्पण, मण्डली वृतान्त, यात्रा स्वोपनोदय इनको सिखाने से बच्चों का मन धर्म्म की ओर आकर्षित किये जायेंगे। कोचिन्डा पेरिश में नहीं सिखाया जाता है।

२ दृढ़ीकरण पाने वाले—जवान युवती बचपन ही से धर्म्म ज्ञान नहीं पाये। इस लिये (दृढ़ीकरण) प्रभु भोज खाने के समय का बचन नहीं जानते कुचिन्डा पेरिश दृढ़ीकरण अभिलाषी को पादरी साहब कुछ बचन नहीं सिखाता न पूछता है, जो चाहता है उसको दे देता है। किसी को बचन के ऊपर जारी नहीं करता है। बपतिस्मा का सक्रामेंट और वेदी का सक्रामेंट, पाप स्वीकार इन बचनों को तो लोप कर दिये। दृढ़ीकृत लोगों को धर्म्मिक ज्ञान ही नहीं सिखायी जाती है। नुकसान ये लोग पीछे पंच होंगे प्राचीन होंगे प्रचारक होंगे तो अपने ही धर्म्म का ज्ञान नहीं जानेगा तो दूसरों को सिखायेगा कैसे। क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है ? दोनों गढ़े में गिर जायेंगे।

३ कुचिन्डा पेरिश का प्रचारक और पाद्री अंधों में काना राजा हुए हैं—अपना सारा दिन शारीरिक काम उद्यम में दिन काटते हैं। कलीशा की तो सेवकाई नहीं होती है। कोई जगह कोई घटना होता है बुलाने से कोई जाते नहीं। किन्तु किसी जगह में भोज खाने का समाचार पाया हो तो तुरन्त हाजिर हो जाते हैं।

प्रचार और पादरी दोनों खुशामदी हैं एतवार के दिन में अपना मनमना गिरजा करते हैं। जैसा कैसा आराधना करते हैं। आराधना और धर्म्मशास्त्र का सब नियमों को छोड़ते हैं।

उपदेश—उपदेश का कोई सिर है न पैर है जैसे:—

सारी मध्य नारी। कि नारो मध्य सारी
कि सारी ही कि नारी : नारी ही कि सारी

कोचिन्डा पेरिश के प्रचारक और पाद्री के लिये धर्मशास्त्र व्यर्थ है—मत्ती २५ ४१-४६ के अनुसार है। मत्ती २३ के अनुसार काम करते हैं। याकुब ५-१३-१४ इन बचनों को फेंक देना चाहिये आराधना के सब नियम जो प्रचीनों के लिये है फेंक देना चाहिये। खिष्टीयानी जीवन और सांसारिक जीवन में कुछ भेद नहीं है।

मेरी इच्छा है सब प्रचार और पाद्रियों को ईन्टरवीयू करना चाहिये। प्रचारक के काम में पाद्री कुछ करवाई नहीं करते हैं इसलिए प्रचारक भो पाद्री के कामों के उपर कुछ करवाई नहीं करते हैं। वर्त्तमान में ज्ञान से नौकरी नहीं कर रहे हैं सिर्फ खुशामदो से नौकरी है।

Gossner Mission

मेरी सलाह है कि जैसा जर्मनी शासन था वैसा ही शासन हो। जैसा हजारीबाग में शासन है वैसा ही हो। (उपवास) लेन्ट काल का गिरजा इधर नहीं करते हैं। इसके विषय में कुछ नहीं जानते हैं।

हे प्रभु मैं तुझ से विन्ती करता हूँ कि तेरे राज्य के लिये चुने गये तेरे राज्य के कर्म्मचारियों (पाद्री-प्रचारकों) को प्रेम और दया और विश्वास और सच्चाई में चला ताकि वे प्रेम, दया, विश्वास और सच्चाई में रह कर सारे जगत में जो अब तक अंधियारे में बैठे हैं तेरा बचन प्रचारा जावे ताकि सब मनुष्य जाति तेरी स्तुति और महिमा करते हुए तेरे राज्य में आनन्द जीवन करने पावे। आमीन॥

Christ Martin Tete
Kolapat

गुमला इलाका शोक समाचार

प्रचारक मिहका टोप्पो की मृत्यु दिनांक ६-४-७४ को दमा बिमारी से प्रभु में सदा के लिए सो गये। करीब ६४ वर्ष की उम्र में। वे गुमला इलाका केपीवो मंडली के प्रचारक थे वे जीवन भर माता मंडली की सेवा किये करीब ४० ई० से वे प्रचारक का काम आरम्भ किया तीन-चार साल सेवकाई के उपरान्त सोर्ट कोर्स पादरी ट्रेनिंग किये थे लेकिन उनके छोटे भाई की मृत्यु के बाद घर का काम सम्भालने के कारण प्रोहिताई पद ग्रहण नही किया। इतना होते हुए भी प्रचारक का काम किया। बीच-बीच में दमा बिमारी के बढ़ जाने से काम छोड़ भी दिये लेकिन अच्छा होकर फिर काम आरम्भ किये इस प्रकार हमेशा प्रभु की सेवा के लिए अन्त तक 'कोशिश की' बिमारी बढ़ जाने के कारण अन्त में छोड़ना पड़ा करीब तीन-चार साल से दमा बिमारी के रोगी थे। इनके एक पुत्र और दो पुत्री हैं एक पुत्री नेत्रहीन है जो राँची में नेत्रहीन (St Michel Blind School) में अध्यापिका करके वहीं काम करती है। आप पाठकों से निवेदन है आप उनके शोकित परिवार के लिये प्रार्थना करें।

श्रीमती हन्ना तिग्गा की मृत्यु ७-१-७४ बूढ़िया एवं दमा बिमारी से प्रभु में सो गयी श्रीमती हन्ना तिग्गा भूत पूर्व गुमला प्रचारक श्री पौलूस तिग्गा की धर्म पत्नी थी श्रीमती तिग्गा बहुत वर्षों से दमा रोग की रोगी थी रोगी अवस्था में भी अपने धर्म पति को सेवकाई के काम में काफी सहायता की ऐसी हालत में प्रचारक साहब छोड़ कर चले जाते थे और वह सब कुछ सह लेती थी। इस प्रकार वह मंडली की सेवा में किसी प्रकार की रूकावट नहीं डाली आप पाठकों से निवेदन है कि शोकित परिवार के शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

समाचार

हर्ष की बात है कि टाटीसिलवे स्थित मसीही भाई बहनों का हृदय मसीह की ओर आकृष्ट किया गया है; तथा काफी सोच बिचार कर सर्वसम्मति से एक मसीही मण्डली खड़ा किया गया है। जो ता: २३-६-१९७३ से गोस्सनर कलीशान्तरगत मण्डली के रूप में काम कर रही है। साप्ताहिक आराधना का काम सुविधानुसार एक मसीही भाई के घर पर किया जाता है। अत: कलीसिया के भाई बहनों से नम्र निवेदन है कि इस नये जन्मे मसीही मण्डली की दृढ़ता के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करें ताकि उत्तरोत्तर इसकी वृद्धि हो।

हिजकिएल
टाटीसिलवे

Gossner Mission

आवश्यकता

फुदी टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर, फुदी / रांची में फिटर और करपेन्टरी (बढ़ाई) ट्रेड के लिये उम्मेदवारों की आवश्यक्ता है। बढ़ाई गिरो के लिये दो प्रकार के विद्यार्थी बहाल किये जायेंगे— आई : टी : आई : और ग्रामिण स्तर के बढ़ाई। उम्मेदवार संस्था के फार्म में दरखास्त नीचे दिये पते पर भेजें। फार्म प्राप्ति के स्थान—(१) टी० टी० सी० ऑफिस फुदी / राँची (२) जी : ई : एल : चर्च आफिस राँची, (३) ईन्सपेक्टर आफ स्कूल, केथोलिक चर्च, पुरलिया रोड राँची, और (४) सी : एन : आई : आफिस, हजारीबाग रोड, राँची।

योग्यता (१) आई· टी· आई. स्तर के फिटर और बढ़ाई गिरी कम से कम किसी स्वीकृत हाई स्कूल से ९ वाँ क्लास पास हो।

हिसाब और विज्ञान के विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जायगी।

(२) ग्रामीण स्तर के बढ़ाई गिरी— कम से कम ७ वीं क्लास पास हो।

दरखास्त देने की अन्तिम तिथि— ११ जून १९७४।

उम्मेदवारों की उम्र — १६ से २२ वर्ष

रेभ : सी : बी : आईन्द,
डाईरेक्टर,
फुदी टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर
फुदी (पो. ओ.) / राँची !

धन्यबाद, आप का चन्दा, (३०वीं अप्रेल १९७४ तक) मिला

1 Mr. Thomas Minz
2 Mr. H. Khalkho
3 Miss. M. Horo
4 Miss Mudit Topno
5 Gossner Bible Training School,
6 Mr H. Samad
7 Mr. Eliah Bodra
8 Rev. M. Horo, Borsol
9 Cat. M. M. Topno
10 Mr. Premoday Toppo, Gorbi
11 Cat. Thomas Kerketta, Jambera
12 Mr. Hiranjan Horo Kapa, Raipur
13 Miss Halwanti Horo, Dami
14 Mr. Komal Dungdung, Betapur
15 Rev. C.S. Lakra, Birmitrapur
16 Mr Manohar Kujur, Sitonga
17 Mr. M. Indwar. Jamshedpur
18 Cat. Nainsukh Kujur' Amgaon
19 Cand. P. Hansdak
20 Rev. M. Jojo, Rajgangpur
21 Rev. J. Kullu, Simdega
22 Mr. Immanuel Kandulna, Dhurwa
23 Mr. Daniel Ekka, Kharsidag
24 Mr. Christochit Toppo, Saraswatipur
25 Mrs. M. Ekka, Lohardaga
26 Mr. Nathaniel Ekka
27 Mrs. P. Soy. Sirumtoli
28 N/Sub. O. S. Guria, Punjab
29 Shri Dhankunwar Khess, Lanjiberna
30 Mr. Gossner Kandulna, Tonea
31 Mr. Laurentius Bage, Binjikhol
32 Mr. Mansukh Topno, Khunti
33 Mr. Barnabas Minz, Barkadand
34 Shri Samuel Mundu, Sundargarh.

Gossner Mission

रक्तदान

[गतांक से आगे]

जाये तो कहाँ ? बेबसी के कारण उसकी भींगी पलकों पर मोती के कण झिलमिला आये। लेकिन लकी की माँ भी उसे नहीं देख सकी। उसके दिल में उठते-दर्द को वह नहीं समझ सकी।

मुस्करा कर उसने पूछा

"आप का शुभ नाम जान सकती हूँ ?"

"जी, मेरा शुभ नहीं अशुभ नाम है रोश्नी।" खिन्न मन से रोश्नी ने अपना नाम बताया।

"अति सुन्दर रोश्नी !..... सचमुच आप रोश्नी हैं। लकी आपके पास यूँ मौन रहेगी मैं सोच भी नहीं सकती। मेरा नाम बहालेन है.....।

"जी.....! अच्छा तो मैं चली।" रोश्नी ने लकी को माँ की ओर बढ़ाते हुये कहा। वह अपनी घबराहट छिपाना चाह रही थी, लेकिन बहालेन को शायद उसकी आंखों में छिपी पीड़ा का अनुभव हो गया था। दर्दीले-स्वर में वह पूछ बैठी—

"आप एकाएक ऐसी उदास क्यों हो गईं ?"

"काश ! कि आपको बता सकती.....।"

"क्यों नहीं बता सकतीं हैं .....? अच्छा तो घर जा रहीं हैं न ! कहां है आपका घर ?"

"मैं घर नहीं जा रही हूं। रोश्नी हूं न ! अब अंधेरे में जा रही हूं। रंजन जब आ जाये तो कह दीजियेगा कि रविवार को कबर पर एक फूल की माला लेकर जाये।"

'लेकिन मैं आपका घर जानना चाहती हूं ?"

"क्या कीजियेगा जान कर.....। आप जरूर जान लीजियेगा। दुनिया जानेगी। मेरे बारे जान कर कल अगर कोई दो बूँद भी आंसू बहा दे तो मैं अपनी जिंदगी को सार्थक समझ लूँगी।"

और रोश्नी चली गई। बहालेन आंगन पर आकर उसे दूर तक देखती रही। उस अनोखी-लड़की के वहां आने का मतलब अब वह कुछ-कुछ समझ रही थी। देर तक खड़ी-खड़ी वह रोश्नी के दिल में उठे तूफान की थाह लेती रही, परन्तु वह कुछ भी समझ नहीं पाई।

रोश्नी खोई-खोई-सी आगे बढ़ती रही। कभी उलटकर भी पीछे की ओर न देखा। उसके दिल की धड़कनें और भी तेज हो रही थीं। उसे अपनी मजबूरियों पर रोना आ रहा था, लेकिन उसके आंसू भी उसके इस कलंक को मिटा नहीं सकते थे। नारी के नाम वह जो कलंकिनी बनने वाली थी, क्या मसीह का रक्त उसे धो सकता था ? उसके दिल ने उसे गवारा नहीं। ईश्वर भी क्या उसके पाप को क्षमा कर सकता है ? उसके विवेक ने कहा—नहीं.....कभी नहीं !! ऐसा कभी संभव नहीं !!! आज तक तो उसने इस रहस्य को छिपा रखा था, पर कल समाज उसे टेढ़ी आंखों से भी देखना पसन्द न करेगा। वह खुद किसी को अपना मुंह नहीं दिखा सकेगी। नहीं .....वह भी अपने आप को क्षमा नहीं करेगी। उसकी आंखों पर अब एक भयानक इरादा नाच रहा था। वह अपने आप को मिटा डालेगी आत्म हत्या कर लेगी।

वह अब अपने कूँए पर आ गई थी। उसे फिर से प्यास की याद हो आई। परन्तु अब उसे इसकी परवाह नहीं थी। उसने कूँए के अन्दर झांका। नीचे उसकी परछाईं मानो उसे बुला रही थी। उसका हृदय जोर से कांप गया। उसने हिम्मत की और दूसरे ही क्षण पानी की सतह पर जा गिरी। छपक की आवाज के साथ कूँए का भीतरी वातावरण गूँज उठा। रोश्नी पानी के अन्दर तक डूबती चली गई। उसे अपनी सांस घुटती जान पड़ी। माथे पर एक असहनीय पीड़ा की अनुभूति ने तड़पा दिया। शायद किसी पत्थर पर उसे चोट लग गई थी। पर उसे तो सिर्फ मौत का इंतजार था। कुछ देर वह जीवन-मृत्यु के बारे में समझने को मजबूर हो गई। जान कुछ प्यारी-सी भी लग रही थी, लेकिन उसने हाथ-पांव बिलकुल ही ढीले कर दिये।.....और कुछ देर बाद वह बेसुध हो गई।

Gossner Mission

आहिस्ते, किन्तु बहुत मुश्किल के बाद अनूप ने रोश्नी को कूंए के बाहर निकाला। किशोर भी रस्से के सहारे कूंए से बाहर आया। रोश्नी को उन दोनों ने कूंआ के पक्के फर्श पर पेट के बल लिटा दिया। उसके मुंह से ढेर सारा पानी बह निकला। किशोर ने उसके माथे पर लगे चोट को निहारा—रक्त निकलना कुछ-कुछ बन्द हो गया था। उसने उसके बायें हाथ को अपने हाथ में लेकर नाड़ी टटोली। कुछ क्षण तक वह उसी मुद्रा में बैठा रहा, और इसके बाद एक हल्की मधुर मुस्कान उसके अधरों पर खेल गई। नाड़ी धीरे-धीरे गति कर रही थी। भींगे वस्त्रों के कारण रोश्नी की स्थिति सोचनीय जरूर थी, किन्तु सब कुछ भूल कर वे दोनों उसके प्राथमिक उपचार में लग गये। अनूप ने रोश्नी के हाथ से घड़ी खोलकर पॉकिट में रख लिया, क्योंकि किशोर भी भींगे वस्त्रों में बुरा हाल हो रहा था।

बहुत कोशिश के बाद रोश्नी की सांस फिर से लौट आई, तब तक कुछ स्त्री-पुरूषों की टोली वहां आकर जमने लगी थी। उसे होश में लाने को सब अपने-अपने तरीके बखान रहे थे, फिर भी सबकी आखों में एक एक प्रश्न थ — ··· वह क्यों आत्म हत्या कर रही थी ?

चाचा-चाची दोनों के आने पर रोश्नी के बेसुध तन को घर लाया गया। चाची ने ही उसके भींगें वस्त्रों को बदल डाला। इसके बाद आंगन में बिस्तरा सजाकर वह लिटा दी गई।

अनूप साइकिल दबाकर डॉक्टर की तलाश में निकल पड़ा। जब वह लौटा तो संध्या के साढ़े-पाँच होने वाले थे। उसके लौटने तक रोश्नी अपनी आंखे खोल चुकी थी, मगर उसे पूरी तरह होश नहीं आ रहा था।

कुछ देर बाद डॉक्टर भी आ पहुंचा। कुछ यांत्रिक परीक्षणों के बाद उसने बताया कि उसकी हालत उतनी सोचनीय नहीं, जितनी कि सोची जा रही थी।

कुछ देर के बाद डॉक्टर ने फिर कहा—

"माथे पर चोट लगने के कारण इसका रक्त बहुत बह चुका है। कोई है जो रक्तदान के लिये तैयार हो सके ? अस्पताल में भी वैसे तो मिल सकता है, लेकिन उसकी कीमत कुछ अधिक पड़ेगी। हाँ, लेकिन जिंदगी से बढ़कर कोई चीज बड़ी तो नहीं होती... फिर भी अगर आप लोगों में से.....।

अनूप ने डॉक्टर के वाक्यों को पूरा होने न दिया। सामने आकर उसने कहा —"सर ! इसके लिये मैं तैयार हूं।"

"क्या यह आपकी पत्नी है ? क्या नाम है इसका ? डाक्टर ने पहले अनूप को देखा, फिर रोश्नी पर दृष्टि डाल कर कहा।

"सर·····! रोश्नी है इसका नाम। लेकिन न यह मेरी पत्नी है और न इसकी शादी हुई है !" अनूप के कहने के ढंग से मालूम पड़ रहा था कि वह रक्तदान के लिये बेताब-सा हो रहा था।

"सर ! मैं भी अपना खून दे सकता हूं। यह मेरी अपनी बहन है।" किशोर ने भी डॉक्टर के समीप आकर कहा।

"ठीक है ·····ठीक है लेकिन यह माँ भी बनने वाली है।"

डॉक्टर के कहने पर सब के कान खड़े हो गये। अनूप की माँ ने उसे पैनी निगाह से देखकर कहा—"नादान लड़की !·····इसीलिये आत्महत्या कर रही थी। कितनी भोली-सी सूरत है ! जिसके पीछे ऐसी भी इसकी नीयत होगी, मैं कभी सोची भी न थी····· ।"

"बस, माँ ! अभी इसको जरूरत नहीं। डॉक्टर ! लीजिये·····मेरा हाथ तैयार है।" अनूप ने अपना बायां हाथ बढ़ा दिया।

डॉक्टर ने सीरिंज अनूप की बांह में घुसेड़ दिया। धीरे से कुछ खून निकाल कर उसने रोश्नी को बांह में दे दिया। अपनी चीजों को रखकर रोश्नी के लिये उसने कुछ टेबलेट्स अनूप के हाथों में देकर कहा—"अभी तो इसे आराम करने दिया जाये·····जब सोकर उठे तो खाना खा लेगा। यह पट्टी इसके माथे पर बांध दिया जाये और ये गोलियां·····एक कल बिहान के लिये, दूसरी दोपहर के लिये और तीसरी शाम के लिये है·····।"

डॉक्टर चला गया। रोश्नी को चुपचाप लिटा दिया गया। गहरी नींद ने उसे सपनों की दुनिया में ले जाकर छोड़ दिया। बहुत रात तक उसकी चाची उसके संग

Gossner Mission

रही। जब एक बार रोश्नी ने करवट बदली उस समय भी उसकी चाची जाग रही थी। रोश्नी को नींद से जगाकर वह उसे खाने को बोली। पर रोश्नी ने 'न' में सर हिला दिया। इसके बाद वह फिर नींद में खो गई।

दूसरे दिन जब वह बिस्तरे से उठी तो उसे विशेष कमजोरी महसूस हो रही थी। माथे पर का वह जख्म अब भी दर्द कर रहा था। हाथ मुँह धोने के बाद उसे खाना दिया गया, लेकिन अनूप ने उसे पहले टेबलेट खाने के लिये कहा।

दोपहर तक वह आराम ही करती रही। उसे किसी से बातें करने की इच्छा नहीं हो रही थी। उससे भी किसी ने कोई विशेष बात न की। उसे जो नई जिंदगी मिली थी उससे घर वालों को कितनी खुशी हो रही थी! आज अगर उसकी माँ होती, उसका पिता होता! तो वे भी इसी तरह खुशी होते, पर वे अब इस दुनिया में न थे। सिर्फ उनकी याद थी। और थे किशोर और रोश्नी। बस ये ही दोनों भाई बहन बचे रह गये थे। किशोर भी आज खुश होता पर एक चिंता उसे सताये जा रही थी। वह अपनी दीदी के लिये। उसकी जान तो बच गई, लेकिन उसने घराने पर नया कलंक लगा दिया था। किशोर के मानस-पटल पर एक चित्र उभर आया-उस शैतान रंजन का! वह रंजन से कुछ-कुछ परिचित था। किशोर ने निर्णय किया, वह रंजन को दीदी की जिन्दगी और इज्जत को अपनाने के लिये मजबूर कर देगा—कानून का सहारा लेकर! पर उसे क्या पता था कि यह सब असम्भव था।

आज शनिवार था, कल के इस्टर के लिये बहुत-सी तैयारियां करनी थीं तैयारियां हो रही थीं। रोशनी के घरवाले भी कबरों पर चले गये। घर पर सिर्फ रोश्नी थी। वह घर से निकलकर कहीं जाना नहीं चाहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि आज की चर्चा का विषय वह पूरी टोली ही में नहीं बल्कि आधे शहर तक में बनी हुई थी।

वह बचा ली गयी थी यह उसे अच्छी नहीं लग रही थी। अब भी वह जीना नहीं चाह रही थी, पर फिर से कुँए में कूदने का साहस भी नहीं हो रहा था।

अचानक उसे क्या सूझी, उसने अपनी साड़ी ठीक की और नजदीक के एक दुकान पर चली गई। दुकानदार से माँगकर एक डाल्फ की शीशी उसने खरीद ली। घर आकर उसने उसे बिस्तारे के नीचे रख दिया। अब वह रात का इन्तजार करने लगी।

रात का खाना खा चुकने के बाद वह अपने बिस्तरे पर आयी। उसने चुपचाप से वह शीशी निकाल ली। दांतों तले दबाकर उसने उसकी सील तोड़ डाली। खुली शीशी को उसने एक बार ऊपर उठा कर देखा, उसका हाथ कांप रहा था। फिर आंखें मूंदकर उसने उसे अपने गले के नीचे उतार दिया। और एक पतली सी चादर ओढ़कर वह हमेशा–हमेशा की नींद में सो गयी।

पुनरूत्थान की उस सुन्दर भोर को जब घंटी बज रही थी, उस समय एक करूण क्रन्दन भी वातावरण में गूंज रहा था। रोश्नी के घरवाले उसके लिए विलाप कर रहे थे।

रोश्नी की जिन्दगी के लिए क्या नहीं किया गया था? 'गुड फ्राइडे' को उसके चचेरे भाई ने अपना खून भी बहाया, जैसा कि यीशु मसीह ने हमारे पापों के कारण अपना खून बहाया था। ताकि हम उसपर विश्वास करने के द्वारा नव–जीवन प्राप्त कर सकें। परन्तु जिसे जिंदगी की लालसा ही नहीं, उसके लिए उसका अनमोल रक्तदान भी क्या कर सकता है?

वर्ष—९४ राँची, जून १९७४, संख्या ५ — रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४



Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं० आर० एन सी. ४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६४ रांची, जून १९७४ संख्या नं० — ६



गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी रेभ टेटे	—	४
बबुल (गड़बड़) उत्पति ११:६।	—	५
क्रूश गीत	—	७
मसीही घराना और स्वर्गीय घराना	—	८
शांति मिले कैसे ?	—	८
चुनौती	—	९
सिमडेगा गिर्जा संस्कार	—	१०
तबीता बैवल स्कूल के प्रति अपार प्रेम	—	११
साक्षी	—	१२
भजन	—	१२
शिक्षकों का सेमिनार कहुपानी	—	१३
समाचार देश विदेश	—	१४
कुचीन्डा पेरिश	—	१५
आवश्यकता	—	१७
रक्तदान	—	१८

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी और 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नही रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

कलीसिया जीवन का सम्बन्ध और सम्पर्क देश और समाज के आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और धार्मिक परिस्थिति से संलग्न है। यीशु खृस्त में ईश्वर के उद्धार कार्य के सुसमाचार का वाहक और साक्षी होने के कारण कलीसिया तथा उसके सदस्य देश और समाज में ज्योति और नमक का काम करते हैं। यीशु खृस्त में नई सृष्टि पाने के कारण नवीकरण के हथियार हो सकते हैं।

आज देश में 'नवनिर्माण' के लिए 'संघर्ष" तथा "पुन:निर्माण" के नारे उठ रहे हैं। वर्त्तमान आन्दोलन के संदर्भ में कलीसिया नवीकरण का हथियार होकर किस वातावरण में जीवन व्यतित कर रही है? क्या अपने जीवन से लगे हुए जीवन पहलूओं में देश और समाज के कल्याण के लिए वह जागरूक है? अपने निजी जीवन को टटोलकर तथा अपने पड़ोस के सदस्यों की प्रवृति से परिचित होकर सम्पादक आज इस निर्णय की ओर ध्यानाकर्षित करना चाहते हैं कि कलीसिया के सदस्य चेतना रहित जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं। परिस्थिति को पहचानने की लाचारी कहें कि आलस्यता या लपरवाही कहें; हम लोग ऐसा जीवन व्यतीत करते हुए नजर आ रहे हैं कि मानो हम लोगों में जान ही नहीं रह गई है।

ईश्वर के वचन का श्रवण हमारे बीच जारी है। पवित्रात्मा का काम भी हो ही रहा है। पर वचन पर मनन और ध्यान की कमी के कारण उसकी शक्ति के प्रभाव से चेतनापूर्ण जीवन व्यतीत करने में लाचारी है। अत: आवश्यक है कि वचन को मन तक पहुँचने दें और अपनी मानसिक और शारीरिक आंखों को खोल कर चलें फिरें। इससे चेतनापूर्ण जीवन की बढ़ती होगी जवाबदेही के जीवन का विकास होगा। कलीसिया के सदस्यों का व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन सार्थक होगा। देश और समाज का कल्याण होगा। यीशु नाम की महिमा होगी और कलीसिया का विस्तार होगा।

और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिए अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है। रोमी १३ : ११।

और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। रोमी १२ : २।

—सम्पादक

घरबन्धु, जून १९७४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

पेन्तिकोष्ट पर्ब्व [५०वां दिन]

प्रेरित क्रिया २ : १—४

स्वर्ग रोहन पर्ब्व की प्रतिज्ञा आज पूरी की जाती है। प्रभु यीशु विश्वासियों को अपना आत्मा देता है। प्रेरित क्रिया वास्तव में पवित्रात्मा ही का काम है। हम आज देखते हैं कि वह विश्वासियों पर उतर आता है और ख्रिस्त की कलीसिया का जन्म होता है (२:४१+४२)।

"पवित्रात्मा प्रतिज्ञा का आत्मा"

१ प्रतिज्ञा के आत्मा की व्यक्तित्व :— वह व्यक्ति है। धर्म्मशास्त्र उसके विषय साक्षी देता है (यूहन्ना १४ : १६+१७, २६; १५ : २६; १६ : ७—१५) वह स्वर्गीय व्यक्ति है (मत्ती २८ : १९; १ कुरि० १२ : ४—६; २ कुरि० १३ : १४; प्रेरित ५ : ३—४) स्वर्गीय व्यक्तित्व की साक्षी निम्न पद देते हैं—सिखायेगा, स्मरण करावेगा (यूहन्ना १४ : २६)। गवाही देगा (यूहन्ना १५ : २६) पाप, धार्म्मिकता और न्याय के विषय निरूत्तर करेगा (यूहन्ना १६ : ८) सत्य का मार्ग इत्यादि बतावेगा (यूहन्ना १६ : १३+१४) लोगों को चुनता और भेजता है। (क्रि० १३ : २—४) रोकता है (क्रिया १६ : ६—७) नया जन्म देता है। (तीतुस ३ : ५) बोलने का सामर्थ देता है।

२ उसके रहने का स्थान :—वह विश्वासियों में बास करता है (४) देखो (यूहन्ना १४ : १७; १ कुरि० ६ : १९; रोमी ८ : ९) वह बराबर हम में बास करने मांगता है। कुरिन्थ के लोग जोभी भयानक भयानक पाप में जीते थे तोभी वे परमेश्वर के मन्दिर थे। (१ कुरि० ६ : १५—१९) क्योंकि पवित्रात्मा उसमें डेरा करता था।

३ प्रतिज्ञा के आत्मा से भर जाने का शर्त्त :—

क—पश्चाताप करो—विश्वास करो—बपतिस्मा लेओ (क्रिया २ : ३८; १० : ४४; १५ : ८—९; गलाति ३ : २।

ख—आज्ञा पालन करो (क्रि० ५ : ३२;) अर्थात अपने को दे दो।

ग—प्रार्थना करो—क्रिया० ८ : १५—१६; लूक ११ : १३; मरकुस ११ : २४।

आज हम अपने आप को निम्नांकित प्रश्न पूछें। क्या पवित्रात्मा हम में बास करता है? क्या पवित्रात्मा हमारी संगति अथवा मण्डली में है?

त्रिनितातिस पर्व [त्रिएक परमेश्वर का पर्व]

रोमी ११ : ३३—३६

त्रिनितातिस काल में हम त्रिएक परमेश्वर पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के कार्य्यों का वर्णन सुनते हैं। त्रिनितातिस पर्ब्व में त्रिएक परमेश्वर की स्तुति एवं महिमा करते हैं। हम त्रय में एक ईश्वर का और एक में त्रय की आराधना करते हैं। यह भेद और विश्वास की बात है। इसी को पावल प्रेरित आज के वचन में प्रकाश करता है।

"त्रिएक परमेश्वर का महिमा गान"

कोरस—"हमारा परमेश्वर प्रशंसनीय है"

१ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न होता है: - वह सृजनहार है। (उत्पति १ : १; नहेमायाह ९ : ६; अय्यूब २६ : ७; भजन १०२ : २५; क्रिया १४ : १५; इब्रानी ११ : ३।

२ वह पालनहार है। सबों को खिलाता तथा पिलाता है। रक्षा रखवाली भी करता है। संभालता है। इत्यादि।

३ वह महिमा के योग्य है :—(१ इतिहास २९ : ११; यशायाह ६ : ३; मत्ती १५ : ३१; क्रिया ४ : २१; प्रकाशित वाक्य ४ : ११; ७ : १०; १५ : ४; १९ : १;

Gossner Mission

भजन ९ : ११; ३३ : २; ६७ : ३; इब्रानी १३ : १५, १ पतरस २ : ९। सब कुछ उसी को महिमा के लिये है।

४ बदले में उसको कुछ नहीं दिया जा सकता है (३५) वह अपने से जीता है और हमारे लिये सब कुछ कर सकता है।

५ वह रहस्यमय है (३४) (अय्यूब ५ : ९; ११ : ७; सभोपदेशक ३ : १; यशायाह ४० : २८; १ कुरि० २ : १६) ईश्वर का रहस्य यीशु में प्रगट है। यीशु के द्वारा हम उसको जान सकते हैं।

६ अगम्य है परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान (३३।

बुद्धि गंभीर है (नीति १०४ : २४; नीति ३ : १९, दानिय्येल २ : २०, १ कुरि० २५)।

ज्ञान गंभीर है—ईश्वर का ज्ञान गंभीर है। वह भीतरी बातों को जानता है। (१ सामु० २ : ३; यशायाह ४० : २८; दानिय्येल २ : २२; मत्ती ६ : ८; १ कुरि० ३ : २०)।

७ उसके विचार कैसे अथाह हैं—भजन १८ : ३०; १४५ : १७; यशायाह ५५ : ९; दानिय्येल ४ : ३७, होशे १४ : ९; हबक्कूक ३ : ६, प्रकाशित वाक्य १५ : ३;। उसके विचार पूर्ण हैं। उसके न्याय में पक्षपात नहीं हैं।

त्रिएक परमेश्वर की महिमा यूगानुयुग होवे ॥

त्रिनितातिस के पीछे १ ला एतवार

१ यूहन्ना ४ : १६—२१

१ यूहन्ना ४ : ७—१५ में जीवन की निश्चयता के विषय वर्णन किया गया है। प्रेमी जीवन ही जीवन की निश्चयता है। निश्चयता की नेंव तीन बातों में है। (१) पिता का प्रेम (७—१२)। (२) पुत्र का कार्य्य (१५—१६' (३) पवित्रात्मा की गवाही (१३) जीवन की निश्चयता के कारण हमारे लिये सब कुछ नया हो जाता है।

"देखो—सब नयी हो गयी" (२ कुरि० ५ : १७)

१ डेरा नया हो गया है—जीवन की निश्चयता के कारण विश्वासी नये बास स्थान की ओर बढ़ता है। पहले वह बैरता तथा डाह में था। परन्तु अब उसका रहने का स्थान प्रेम और परमेश्वर है। प्रेम और ईश्वर में उसका नया डेरा है।

२ नया साहस :—विश्वासी का साहस तथा भरोसा नया हो गया है। उसके लिये न्याय के दिन में निर्भयता है।

३ नयी निर्भीकता: — विश्वासी अथवा प्रेम रखनेवाला अभय हो गया है। क्योंकि प्रेम में भय नहीं है। वह बिल्कुल निर्भय है।

४ भाइयों के प्रति नया व्यवहार :—परमेश्वर का प्रेम भाइयों से प्रेम रखने के लिये चलाता है। इस सम्बन्ध में देखिये (मरकुस १२ : ३०—३१) हमारे लिये सब कुछ नया हो गया है। इसलिये हम नया जीवन में रहें ॥

त्रिनितातिस के पीछे २ रा एतवार

१ यूहन्ना ३ : १३—१८

परमेश्वर की सन्तान और इबलीस की सन्तान इस प्रकार जाने जाते हैं—जो धर्माचरण नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता (१ यूहन्ना ६ : १०) भाइयों से प्रेम रखना धर्म्मी ठहरने का कारण नहीं ठहरता परन्तु प्रेम रखना तो धर्म्मी ठहराये हुए जन में तीन प्रकार के लोगों के लिये प्रेम होना आवश्यक है।

"धर्म्मी के जीवन में तीन प्रकार का प्रेम"

१ सामान्य प्रेम :—सामान्य प्रेम सब लोगों के लिये है। मनुष्य सृष्टि का मुकुट है। अतः सब मनुष्यों से प्रेम रखना आवश्यक है। आवश्यकता में पड़े हुओं की सहायता करना है। दूसरों के जीवन की रक्षा करना है। हत्या नहीं करना है (१५)।

२ आत्मा विजयी प्रेम :—धर्म्मी जन प्रेम से अनन्त जीवन के लिये लोगों को जीतता है। वह अपने जीवन को दूसरों के लिये बलिदान करता है। मत्ती १६ : २५; मत्ती १ १६ : २१; रोमी १४ : २१; १ कुरि० १० : २४; फिलिप्पी २ : ४) प्रेम के कारण आत्माओं को जीतने के धुन में लगा रहता है।

Gossner Mission

भ्रात्रीय प्रेम :—मसीही मण्डली में लोगों के लिये प्रेम भ्रात्रीय प्रेम है। जितने लोग मण्डली में हैं वे एक दूसरे से क्रिस्त में जोड़े गये हैं। उनके बीच में भ्रात्रीय प्रेम आवश्यक है। (इफि० १ : १५; फिलि० ४ : १; कुलुस्सी १ : ४; १ थिस्लो० २ : ८; १ पतरस १ : २२; २ : १७; १ यूहन्ना ५ : २; २ यूहन्ना ५)।

यह बचन हमारे लिये दर्पण के समान है। हम देखें कि हम परमेश्वर के सन्तान हैं अथवा शैतान के ॥

त्रिनितातिस के पीछे ३ रा एतवार

१ पतरस ५ : ६—११

मसीही जीवन को फल फलना है। जीवन के कुछ फल ऐसे हैं जो कलीसिया को उन्नति और बढ़ती के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। उन्हीं आवश्यक फलों के विषय पतरस प्रेरित उपदेश देते हैं।

"कलीसिया के लिये मसीही जीवन का मनोहर फल"

१ कलीसिया के सदस्य दीनता से रहें :—"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती ५ : ३) दीनता आवश्यक है। दीन लोगों के लिये ईश्वरीय प्रतिज्ञा (भजन १३८ : ६; यशायाह ६६ : २; लूक १४ : ११; याकूब ४ : ६)।

२ अपनी चिन्ताओं को प्रभु पर डाल देवें :—(७) मनुष्य को चिन्ता ऐसा ही खा डालती है जैसा मद्यापन। चिन्ता मनुष्य का व्यक्तिगत भूत (शैतान) है जो मनुष्य को यीशु से लूटने में लगी रही है। चिन्ता गरजनेवाले सिंह के समान है।

३ कलीसिया के लोग जागते रहें ८) जागते रहें क्योंकि शैतान परीक्षा में गिराने के लिये लगा रहता है। (उत्पति ३ : ४, ५; अय्यूब १ : ९—११; २ : १; जकर्याह ३ : १; मत्ती ४ : १; मत्ती १३ : १९; १३ : ३८+३९, लूक ९ : ४२; यूहन्ना ८ : ४४; १३ : २; कलीसिया के लोगों को सावधान रहना आवश्यक है। (मत्ती २६ : ४१; क्रिया २० : ३१; १ कुरि० १० : १२; १६ : १३)।

कलीसिया के लोगों को शैतान का सामना करना है। (इफि० ४ : २६+२७; ६ : ११; याकूब ६ : १)।

प्रार्थना और वचन के तलवार से शैतान का सामना करना है।

परमेश्वर सारे अनुग्रह का दाता है। वह आप ही तुम्हें उपर्युक्त फलों के द्वारा धनी बनावेगा। सिद्ध स्थिर और बलवन्त करेगा ॥

बाबुल [गड़बड़] उत्पत्ति ११-९

जलप्रलय के पश्चात पृथ्वी पर मनुष्य बढ़ने लगे उस समय लोग पूर्व कि ओर चलने लगे, चलते चलते सिनार देश में पहुंच एक बड़ा मैदान पर बस गए और होते होते वहां के लोगों में एक चिन्ता उत्पन्न हो गयी कि कहीं और जलप्रलय तो न हो यही चिन्ता में पड़े लोग कहने लगे, आओ हम एक ऐसा नगर ओ गुमठ बनालें कि उसका चोटि आकाश से बातें करें। इस प्रकार से हम अपनी कीर्ति बढ़ाए। ऐसा ही वे बनाने लगे जैसा उन लोगों ने कहा, और पत्थर के बदले इंट ओ चुना के बदले मिट्टी की गरे का प्रयोग किया, और वे अपनी इच्छानुसार काम जारी किया। पर हम देखते क्या पद छः में कि ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध है और उन में ऐसा गड़बड़ डाल दिई गई कि वे एक दूसरे की बोलियां समझ नहीं पाया। इस प्रकार उनकी इच्छा असफल हो, वे तितर-बितर हो गए। वे गुमठ बनाना छोड़ दिये। यह था ईश्वर इच्छा विरुद्ध शैतान का काम ईश्वर का नाम जगत् से मिटा दे ओ अपनी महिमा जगत् में फैलावे।

आज सिनार देश रूपी मसीही कलीसा छोटानागपुर के चौरस मैदान में बसा है, अब उस मैदान में रहने वाले मसीहियों के मन में भी एक ऐसा बहकाव है, कि वे

Gossner Mission

परमेश्वर के पुत्र जो सच्चो चट्टान है उसो चट्टान पर जो नेव डाला गया जिसमें ईंट के बदले हर मसीही विश्वासी भाई-वहन और चुना सिमेन्ट के बदले बिश्वास की सगंति से बना और बन रहा है इस प्रकार हर एक का बिश्वास रूपी बहुमूल्य पदार्थ से बनाया जा रहा है। पर देखो उसी नेव में घास-फूस की रदा.....जिससे कि यह गुमठ की चोटी स्वर्ग तक शैतान की इच्छा बिरूद्ध बन रहा है, अब शैतान भी कोशिश में है कि ईश्वर का यह काम रद कर दिया जाय। इसलिए रात को जब लोग सो रहे थे उसो समय हमारे कितने अगुओं के मन में यह डाल दिया ताकि यह काम छिन्न-भिन्न हो जाय। अब यह उनके मन में उगी और बढ़ी इस प्रकार सब कोई देख रहे हैं पुरातन काल की बाबुल आ गई और इस जोवते कलीसा में भी गड़बड़ डाली गयी है और एक दूसरे की भाषा अलग सुनाई दे रहा है, जैसा कोई कहा आओ हम उत्तरी जोन खड़ा करें और कितने उसमें बहकाए गए और भोड़ के भीड़ चले गए, फिर भो और दूसरी भाषा सुनाई देतो है, आओ हम धर्म प्रदेश को खड़ा कर इस प्रकार उस में कुछ भाई बहनें बहकाये गए। अब कलीसिया रूपी सिनार में बसे भाई-वहनों के बीच में कई भाषा सुनाई दे रहा है, इस प्रकार शैतान अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा है फिर भी ईश्वर दूसरी ओर यह अलग भाषा को एक करने जा रहा है और वह करेगा ही क्योंकि आज हमने शैतान के बहकाव में पड़ के जंगलो और पहाड़ों में तितर-बितर किये गये.....२ इतिहास १८-१६ और जैसा मन में आया वैसा ही चलते हैं, आज उन अगुओं पर एक ऐसा आत्मा बैठाई गयी २२-पद इस-लिए आज हो हमें एसों से फिर जाना है क्योंकि २ इतिहास की १६ वें कि आखरी में कहता है कि हर एक अपनी-अपनी घर कुशल से लौट आओ। और अहब के बहकाव से बचो और अपना प्राण बचाओ प्रभु हमारे साथ हो ।।

प्रचारक प्रभु सहाय मिंज

क्रूस-गीत

मसीही विश्वास को,
हमने अपना बना लिया,
लायें न क्यों ईमान, हम यीशु पे,
जिसने अपना सब कुछ लुटा दिया,
खाली थी जो मकाम वो दिल में बसा लिया।
दुनिया सूनी-सूनी हुई थी, उस दिन,
कुर्बां हुआ था क्रूस पे, जिस दिन,
मेरे सामने तेरा ही जलवा नुमायना हो,
तेरे लिए हमने हर गम भूला लिया।
जैसा कहा था वैसा ही कर के दिखा दिया
मर के भी उसने कब्र से खुद को जिला लिया।
मसीही विश्वास को हमने
अपना बना लिया ।।

Basant Kumar Surin
D. U. Mission Boy's Hostel, H. Bagh.

Gossner Mission

मसीही घराना और स्वर्गीय घराना

स्वर्गीय घर और स्वर्गीय घराना वह है जिस में दिन और रात ईश्वर जो सब का प्यारा पिता है उसकी आराधना और स्तुति दिन और रात होते रहती है, स्वर्गीय घर के निवासी अर्थात स्वर्ग दूत्त और सन्त लोग झुक-झुक कर उसको दण्डवन्त करते हैं, और उसकी और मेम्ने की प्रशंसा करने में लीन ओ मस्त रहते हैं। हमारा घर उसी स्वर्गीय घराने की परछाई है। उस स्वर्गीय घर के आनन्द, प्रेम और स्तुतिगाण के अनुभव करने का यह स्कूल है। जो लोग इस पृथ्वी पर अपने घराने में इन अनुभवों को पाने का अवसर नहीं पाते हैं वे उस सनातन के घर में कैसे भाग ले सकेंगे" पाद्री, प्रचारक, पंचों, ओ हम सभों को ईश्वर ने यह आदरवन्त काम दिया है इसी पृथ्वी ही पर घराने में उसके स्वर्गीय घर के प्रेममय जीवन के लिये तैयार करें।

भला तो हम उत्साह और जोश के साथ आज वह संकल्प करें कि इस इलाका के अन्दर जितने क्रिस्तान घर है उनको हम ऐसा घर बनावें जहां पवित्र प्रेम बास करें। दिन प्रति दिन ईश्वर की आराधना और स्तुतिगाण होवे और सब दु:खों में धीरज और ईश्वर पर भरोसा करने का आदत होवे सब बाल बच्चे धर्म्मज्ञान में मण्डली के प्यार में और ईश्वर की संगति में बढ़ चले ॥

क्या हो सकता है कि हमारा घर जो ईश्वर के घर की परछाई है स्वर्गीय घर की नकल और पार्थिक रूप है। उसमें अशुद्धता, मतवालपन, रगड़े-झगड़े और लुचपन बास करें हरगिज नहीं ईश्वर दया करे कि हम सभों के परिवार उसकी दृष्टि में ग्रहण योग्य होवें ॥

प्रचारक — नैनसुख कुजूर
अमगांव
चैनपुर इलाका

"शांति मिले कैसे ?"

(Maskalan Barla)
D.U. Mission Boy's Hostel
Hazaribagh

उलझनों में फँसा हुआ था मै
चैन की वंशी बजा नहीं पाता था मैं
सोच नहीं पाता था कि क्या करूँ मैं ?
ढल जाता था दिन मुश्किल से
घेर लेती थी डरावनी रात मुझे
सुन्न हो जाता था दिल मेरा बेचैन से।
फूट निकलती जब सूर्य की किरणें सबेरे
फट जाता था अचानक नींद मेरी
छोड़ देता विस्तरा अपना, हड़बड़ाकर।
फिर निकल जाता मेन रोड को ओर
सोचता था महफिल में बहला लूं मन
पर भी बेताब था मोटरकारों की
ध्वनि से।
ख्याल आया एक दिन सिनेमा जाने को
तीन घंटे तो बहला लूँ चित को
परन्तु था मैं असंतुष्ट इससे भी।
निकला सिनेमा से माथा पीटते हुए
पुकारा मुझे एक दोस्त मुस्कुराते हुए
था वह एक पक्का मसीही।
लिया उसने मुझे अपने घर को
नजर पड़ी एक किताब टेबुल पर
था वह मरकुस रचित सुसमाचार
बेधड़क ले आया अपने घर उसको
पढ़ने लगा मन लगाकर किताब को
प्रभावित हुआ यीशु मसीह के जीवन
चरित्र से।
तब समझ गया मैं वास्तविक चीज को
खरीद लिया एक बाईबल दूकान से
आह ! आज मिली मुझको मन में शांति
रख लेना तुम भी एक प्रति बाईबल
मिट जायेगी मन की अथाह क्रांति
मिल जायेगो मन में अनन्त शांति।

Gossner Mission

-:चुनौती:-

'एक लेख युवा-वर्ग के लिए—भेंट स्वारूप।"

प्रभु की वाणी है,—"तुम जाकर तमाम देशों के लोगों को शिष्य करो, और उन्हे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बप्तिस्मा दो।" मत्ती २८:२९ ॥

खुदावन्त मसीह की यह चुनौती फ़क़त अपने बारह चेलों को नहीं पर सारे कौम और सारे जाति के लोगों के लिए है। गोस्सनर साहब चार सुसमाचार प्रचारकों को भेजा कि वे छोटानागपुर इलाके के जंगलों में वास करने वालों को प्रभु का जीवता वचन सुनावें। जो अन्धेरे में गर्क हुए हैं, उन पर मसीह के ज्ञान का ज्योति प्रदान करें —ताकि वे अन्धेरे से उजाले में प्रवेश करके अपना जीवन मसीह के लिए समर्पित कर दें। यह चुनौती आज हरएक मसीही जवान और युवतियों के लिए अति लाजिमी है! यदि हम वाकई मसीह के चेले हैं तो निश्चय यह चुनौती स्वीकार करते हैं। हमारे सामने कई बड़े-बड़े उत्तरदायित्व का भार है। उसे हमें समझना निहायत जरूरी है। परमेश्वर की कलीशा जगत में इस तथ्य को लेकर स्थापित हुआ कि लोग प्रभु का जीवता वचन ग्रहण करके पापों का पश्चाताप करें।

व्यर्थहीन जीवन:— परमेश्वर हर मनुष्य को इस जगत में किसी भले काम की उम्मेद से भेजा है। हम किसी भी कार्य से वंचित नहीं हैं। इस जीवन को व्यर्थ न गवायें,... आईये, प्रभु के कई चुनौतियों को स्वीकार करे...उसपर गंभीर विचार विमर्श करे ... अपने को काम में लाने का प्रस्तुत करें। अपने नयनों के सामने बइबल को रख के एक-एक पाठ का अध्ययन करें—और देखें, कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है!

"हमारा विश्वास क्रूशघातिक यीशु मसीह पर केन्द्रित है"—क्योंकि वह महामहीमा परमेश्वर का पुत्र होते हुए भी गौशाले में जन्म लिया! दुःख, दर्द मार सहा और अन्त में अपने को शलीब जैसे कड़ी नीन्दनीय मौत पर सौंप दिया, ताकि हमारा उद्धार हो। गोर को तोड़ कर तीसरे दिन महामहीमा के साथ मुर्दों में से जी उठा—वह पापियों के लिए बलिदान हुआ—जो आज हम सब मसीह के सन्तान कहलाते हैं।

हमारा विश्वास है—"मसीह के द्वारा ही उद्धार होगा।"...यह जानते हुए भी हम केवल विश्वास तक सीमित है। हमें विश्वास के साथ-साथ काम भी करना है। बगैर काम के हमारा विश्वास व्यर्थ है। हमें इस जीवन को प्रभु के कामों के लिए बिताना है: इसलिए आज ही यह व्यर्थ जीवन को प्रभु में समर्पित करके प्रभु के विश्वास योग्य पात्र बनें।

परमेश्वर हमें कैसी चुनौतियाँ देता है:—इस बात पर विचार करना अति आवश्यक है। सुसमाचार जिन क्रान्तिकारी परिवर्तनों की घोषणा करता है...आज हम जवान और युवतियों को जोश के साथ उठना है। जय का गीत और जोश भरे नारे लगाते हुए मसीह के पीछे चलना है।...पर आज हम जवान और युवतियों सिर्फ जर्जर और खोखलापन लिए ही एक दूसरे के मुंह को ताके हुए हैं। हम गर्व के साथ मसीह के चेले हैं, लेकिन हमें गर्व करना नहीं पर हमे अपने चाल-चालन, रुझोरिवाज मसीह के सदृश्य भी करना है।

वह नम्र और दीन बन कर पैदा हुआ है, आज हमें भी नम्र और दीन बनना है — वह पापी से घृणा नहीं पर पापों से घृणा किया — वह प्रेम किया — दया किया—वह न किसी से लड़ाई किया न झगड़ा—न हिंसा न डाह—न किसी को दुःख दिया—पर खुद दुःख सहा,— आज हमें भी मसीह के इन गुणों को अपनाना है। जब हम इन गुणों को अपनाते है तब ही कह सकते हैं कि हम मसीही—(Followers of Jesus) हैं · नहीं तो मसीह होना सिर्फ धोखा है। जब हम अपने को मसीही (Christian) कहते हैं तो आज ही यह चुनौतियाँ स्वीकार करें।

Gossner Mission

हमारा जोवन कैसा होना चाहिए ?:— हम इस संसार में जिन्दगी बसर कर रहे हैं सांसारिक रश्मोरिवाज के मुताविक, और हम जानते है; यह जिन्दगी - एक धोखा है। हम जिस खाना-पीना, रहना, ओढ़ना-पहनने का जिन्दगी पर मर मिटते हैं, यद्यपि हमे जीवन का पुरा सुख नहीं मिल पाता है फिर भी··! क्योंकि हम धोखेमय जीवन विता रहे हैं। इस जोवन के पश्चात हमारा और एक जीवन है,—'जो हमें शरीर त्याग करने के बाद प्राप्त होता है !' उस जीवन के लिए ही हमें इसो जीवन में रहके प्रभु के प्रशंसा योग्य काम करना है। हमारा जीवन हमारा नहीं पर प्रभु के लिए होना चाहिए,··पर हम वादी और झूठी कशमें और पापों के दरमियान गस्त लगा कर अपना गनिमत वक्त को हाथों हाथ खो दे रहे हैं। और यह जीवन को हम स्वंय शैतान के हाथ में सौंप कर अजल हलाकत की दरिया में प्रवेश होने के लिए प्रभु के विमुख में संग्राम कर रहे हैं। ··· वक्त गनिमत है—प्रभु के वचन का अनुशरण करें। वचन फैलाना न केवल पाद्री, प्रचारक का है पर यह काम हर जवान युवतियों के लिए ··हमारा जीवन का एक बड़ी और जोशपूर्ण चुनौती है।

मसीही विश्वासियों के जीवन का यह पहला कदम है। केवल हमें गिर्जा जाना नहीं है—पर दूसरों को भी लाना है। हमें केवल धर्म पर चलना नहीं—पर दूसरों को भो चलाना है। हमें केवल अपने लिए नहीं — पर दूसरों के लिए प्रेमो बनना है। हमें स्वंय मसीह पास आना नहीं—पर दूसरों को भी लाना है। कलीशा संबन्धी गिर्जा संवन्धी लेन देन हमारे लिए चुनौती है। बिन्ती प्रार्थना में हम मसोह के नाम पर मांगते है पर यह बात पर हम गौर करते हैं कि मसीह के लिए एक मुट्ठो चावल और पांच पैसा ग्रहण योग्य है ? नहीं···यह काफी नहीं है। हम कौन सा सकल और अभिप्राय लेकर केवल एक मुट्ठी चावल और पाँच पैसा लेकर जायें। आज हमारा विश्वास लड़खड़ा रहा है—डगमगा रहा है कि ईश्वर को कितना प्यार करते हैं। आज (इसी घड़ी) हमें अपने इच्छा और शरीर के कुआभिलाषाओं को मारना हैं। इन बुरे कर्मों और बुरे विचारों से आत्मा छिछला होता जा रहा है। हमारा जीवन नाश हुआ चाहता है। हमारा पतन निश्चय है; क्योंकि हम मसीह को बगल में रख के शैतान के लिए कार्य कर रहे हैं।

जिस तथ्य को हम ग्रहण करके शरीर जोवन बिता रहे हैं इसको प्रदान करने वाला भी कोई 'महान है' वह हमारा पालन-पोषण करता है—उस पर ध्यान रखना,—उसके आज्ञा पर चलना—महीमा के कार्य करना हो चुनौतियों को स्वीकार करना है !

'जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं तो संसार, शैतान और सब बुराइयों के विमुख लड़ते हैं। पापों से घृणा करते हैं। परमेश्वर का आज्ञा मानते हैं। हृदय बदल जाता है और एक नया जीवन का आरम्भ होता है ···तब हम, निष्कपट, प्रेमी, शहनशीलता, दयालुता, विश्वासी संयमी और अरोग्य एसे गुणों (रत्नों से परिपूर्ण हो जाते हैं। हमारे कलीशा के जवान-युवतियों को प्रभु की यह चुनौती आज ही स्वीकार करना बहुत जरूरी है; हमें प्रभु के गवाह के लिए एक अच्छा नमूना बनना है।··प्रभु आप ही अपनी आत्मा की अगुवाई करे और एसे गुणों को हृदय में भर दे,—'ताकि युवा-वर्ग अपने आप को प्रभु के लिए सिद्ध और तैयार कर सके।"

एच व्ही· कुजूर
राजगांगपुर

सिमडेगा गिरजा घर का संस्कार

बिलम्बित समाचार

रांची जिले के सिमडेगा अनुमण्डल मुख्यालय में हमारे गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीशा का एक आराधनालय पहले से ही है। उसी के पूरब की ओर आधा किलोमीटर और सिमडेगा बिरसा चौक बस स्टैंड से एक किलोमीटर दक्षिण पूर्वी दिशा में मिट्टी के दीवाल का ४२ हाथ लम्बा और १७ हाथ चौड़ा एक नया आराधना-

Gossner Mission

लय बनाया गया है। यह आराधनालय सिमडेगा मण्डली के बुधरा टोली में अवस्थित है। इस मण्डली के भाई बहनों के सहयोग से यह तैयार हो सका है। इसके निर्माण में बुधरा टोली सिमडेगा के मसीही भाई-बहनों ने विशेष पाठ अदा किया है। इस आराधनालय का संस्कार १०वीं जुलाई १९७२ को ओटोनोमी पर्व के पुनीत अवसर पर हुआ। मध्य अंचल के चारों पेरिश के भाई-बहनों को आमंत्रित किया गया था। आराधनालय बाहर और भीतर नव विवाहित दुल्हिन के समान सुसज्जित था। प्रोशेसन के लिये करीब आठ सौ भाई बहन और बच्चे कतार में खड़े थे। प्रोशेसन की अगुवाई अंचलाध्यक्ष पाद्री जुनस कुल्लू के द्वारा साक्षीवाणी ६ के साथ हुई। अंचलाध्यक्ष ने भजन संहिता १३४ पर रोमंचकारी उपदेश दिया, प्रार्थना हुई और २ कोरिन्थी ५; ९ तथा २ को: ९: १८ पढ़कर त्रिएक परमेश्वर पिता पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से दरवाजा खोला। साक्षी वाणी ७ गाते हुए आराधनालय में प्रवेश किये और अपना स्वेच्छा दान पवित्र वेदी पर अर्पण किये। भाई-बहन अपने अपने स्थान पर बैठ गये। कुछ प्रांगन में भी थे। सिमडेगा न्यायालय के अधिवक्ता (Advocate) माननीय हरदुगन भेंगरा ने आत्मपालन पर गोस्सनर साहब के भेजे हुए मिश्नरियों के कार्यकाल एडभाईजरी बोर्ड का गठन एवं स्व० पीटर हुरद की अध्यक्षता में आत्म पालन की घोषणा पर प्रकाश डाला। ओटोनोमी पर्व के आराधना के आधार पर अंचलाध्यक्ष के आराधनालय में अगुवाई की। पहला वचन योहन ४ : २९-४२ पढ़ा गया। पाद्री प्रभुदयाल सोरेंग ने भजन संहिता ९७ : १ १२ पर प्रभावशालो उपदेश दिया। कलीशा की बढ़ती पर भी प्रकाश डाला। पाद्री सोरेंग ने ही प्रार्थना में अगुवाई की।

पवित्र प्रभुभोज का भी अनुष्ठान किया गया था। बच्चों को पवित्र बप्तिस्मा भी दिया गया। आत्म पालन की घोषणा खड़े होकर तथा दहिना हाथ उठाकर दुहराया गया। प्रभु की प्रार्थना से आराधना समाप्त हुआ।

ओटोनोमी के उपलक्ष्य में एक बजे दिन से खेल कूद प्रतियोगिता हुई। चाय-नाश्ता का आयोजन था। छ बजे शाम को विजेताओं को अंचलाध्यक्ष द्वारा पुरस्कार वितरण हुआ। रात आठ बजे प्रीतिभोज का भी आयोजन था। भोजनोपरान्त प्रार्थना हुई और कार्य-क्रम समाप्त हुआ। यहोवा इस मण्डलो को आशीष देवे जिससे उस आराधनालय के आड़ में मण्डली फूले फले और ईश्वर की महिमा होने सके।

आप लोगों का सेवक

पो० डो० कण्डुलना

तबीता बैबल स्कूल के प्रति अपार प्रेम

हम गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोविन्दपुर के शिक्षक तथा छात्रवृन्द श्रीमतो थेओदोरा तिर्की के कार्य को कभी नहीं भूल सकते हैं, इसलिये कि उन्होंने तिथि १४ फरवरी १९७४ ई० को १००० रु० नगद तबीता बैबल स्कूल के नाम से भेंट दिया। चूँकि यह स्कूल पूरे गोस्सनर लूथेरान कलीशा का है लेखक की आशा है कि कलीशा के भाई बहन भी स्मरण करेंगे और प्रोत्साहित होंगे। यों तो इस स्कूल के बहुत हित चिन्तक हैं देश तथा विदेश में और हर प्रकार से मदद किया करते हैं कोई प्रार्थना से और कोई पैसों से। हम उन सब के धन्यवादी हैं। परन्तु श्रीमती थेओदोरा तिर्की का यह भेंट अपार प्रेम कहा जा सकता है। उसके निम्न कारण हैं – हम ने कोई पत्र वा अपील द्वारा उन्हें नहीं मांगा पर स्वयं उन्होंने दिया। वे बिहार प्रान्त के सिंहभूम जिला स्थित मूहभंडार मंडली की लूथेरान ख्रिस्तान विधवा और नर्श के काम से अवकाश प्राप्त बहन हैं। उन्होंने ऐसे मौके पर भेंट दिया जब संस्था को पैसे की अति आवश्यकता थी क्योंकि कलीशा के झगड़े के कारण के० एस० एस० का देन बन्द था। फिर इसलिये भी अपार प्रेम कहा जा सकता है क्योंकि यह उनका व्यक्तिगत

Gossner Mission

पैसा था, कोई समाज संगठन का नहीं। इस अपार प्रेम भेंट को प्रधानाध्यापक ने प्रेमपूर्ण गद-गद आवाज और आंसू बहाते तबीता स्कूल के नाम से ग्रहण किया। भेंट करते समय श्रीमती थेओदोरा तिर्की ने यों कहा—"मैं कलीशा को संस्थाओं द्वारा सीख-पढ़ सकी। यीशु मसीह ने ही मेरे लिये नर्श का काम प्रबन्ध किया। वह वर्तमान समय में भी सहायता और अगुवई करता है। मैं ऐसे गोस्सनर लूथेरान कलीशा के एक मात्र बहिनों का बैबल स्कूल को बन्द होने से बचाना चाहती हूँ" आदि। प्रत्योत्तर में भेंट प्राप्त करने वाले ने कहा—"यह तो बैबल की उस विधवा का सा प्रेम है जिसने मंदिर के लिये दो छदाम चढ़ाई (लूक २१ : १—४)। यह तो उस मरियम का सा प्रेम है जिसने यीशु मसीह के गाड़े जाने की तैयारी में उसके सिर पर इत्र डाला (मार्क १४ : ३—९)।

हम श्रीमती थेओदोरा तिर्की बहन के साथ अन्य शुभ चिन्तकों के सदा धन्यवादी हैं और रहेंगे और ईश्वर से चाहते हैं कि वह बचन हर एक मसीह में दिखाई देवे जिसमें लिखा हुआ है "तुम ने मुझे नहीं चुना पर मैं ने तुम्हें चुना और ठहराया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे।" योहन १५ : १६।

रेभ० जे० सोय
गोबिन्दपुर

"साक्षी"

मैं जाति का चोक बड़ाईक; ग्राम बिरकेरा, थाना रायडीह, जिला- रांची का हूं। मुझे अपने जीवन में धर्मशास्त्र पढ़ने का मौका मिला और यूहन्ना १४:६ को ध्यान से पढ़ा—मार्ग, सत्य, और जीवन मैं ही हूँ बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यह बचन मेरे मन में कांटा सा चुभ गया। मैं स्थानीय प्रचारक जुनास खेस से इसके बारे पूछा तब और अधिक दृढ़ हो गया। पर एक दिन मेरा पुराना क्रिस्तान मित्र मुझ से कहा—तुम को क्रिस्तान होना व्यर्थ है। नन क्रिस्तान कुछ नहीं कहे पर क्रिस्तान भाई ऐसा कहता है। मुझे बहुत दुःख लगा। फिर भी गिर्जा विन्ती में मेरा अधिक झुकाव रहा।

आप लोग मार्च का घरबन्धु सत्य और न्याय को पढ़े होंगे—प्रभु शैतान को कहता है—क्यों लोगों को बहकाने नहीं गये। शैतान—हे प्रभु आप का सब आदमी तो शैतान हो गया तो मैं किसको बहकाऊं। वैसा ही यहाँ मेरा क्रिस्तान मित्र बहकाता था कि तुम को क्रिस्तान होना व्यर्थ है।

पर मैं २२ अगस्त ७१ को बपतिस्मा के द्वारा पॉल बिनोद बड़ाईक नाम पाया। तभी मुझे शान्ति मिली और अभी मैं बिरकेरा मण्डली का लुथरान सदस्य हूँ।

आप का भाई
पॉल बिनोद बड़ाईक
कोन्डरा बिरकेरा।

—:भजन:—

जय जय धन्य प्रभु प्यारा–२
Cho:-सकल जगत् में तू निराला
तू ही जग की उजियाला हो ॥२॥
पिता पुत्र पवित्रात्मा का दान
तू हमें देता, और जीवन की
रोटी भी हमेशा देता रहा है।
अपने निराले बचनों से.
शहस्त्रों पापियों और रोगियों
को किया क्षमा और चंगाई।
सर्वशक्तिमान पिता का पुत्र (पूत)

Gossner Mission

धर्मात्मा हमारे वास्ते दिया
प्राण और किया हमारा उद्धार ।
वाधिकारी पिता का पूत
धन्य तू हमें जीवन देता है
धन्य हो तेरी, धन्य, धन्य.....
जय जय धन्य.....

आई० ई० कुजूर
आकाशवाणी, डिब्रूगढ़
516 (1). OCT. 1973

शिक्षकों का सेमिनार ! स्थान कहुपानो पेरिश सेन्टर दिनांक ६-३-७४

गत ६–३–७४ को कहुपानी पेरिश सेन्टर में शिक्षकों का सेमिनार आयोजन किया गया था । स्कूलों के स्थापित होने के बाद कई वर्ष गुजर गये कि ऐसा सेमिनार का आयोजन कभी नहीं किया गया था । इस सेमिनार में मिश्न एवं और मिश्न स्कूलों के सभी मसीही शिक्षकों को निमंत्रण दिया गया था, पर अफशोष की बात है कि अनेक शिक्षक सेमिनार को अनिवार्य नहीं समझा और अनेक बातों से वे अनजान रह जायेंगे ।

इस सेमिनार में अध्ययन के लिए तीन विषय रखा गया था ।

(१) कलीशा में शिक्षक का स्थान क्या है ?
(२) मिश्न स्कूलों में अनुशासन कैसा होना चाहिए ?
(३) मिश्न स्कूलों में अर्थ व्यवस्था कैसा होना चाहिये ?

पहला विषय के सम्बन्ध में पाद्री एम· पी· जोजो ने धर्मशास्त्र के निम्न स्थल बचनों का उदहारण देकर बताया कि कलीशा में मसीही शिक्षक बहुत ऊंचा स्थान रखता है, इसका सम्बन्ध सोधे ईश्वर से है वह एक उत्तम गुरू है । (निर्गमन ३:१८ + १९:२० और लूक १८:१८)

धर्मशास्त्र के अनुसार प्रथम शिक्षक मूसा आता है । ईश्वर ने मूसा को चुना, बुलाया और नियुक्त किया और इस्राईलियों को सिखाने के लिए व्यवस्था लिखी हुई पत्थर के दो पटियाएं उस को सौंप दी । उन पटियाओं में सिखाने के लिए दो विषय लिखी हुई थी –

(१) ईश्वर के विषय (२) मनुष्य के विषय ।

वर्त्मान में जो शिक्षक स्कूल में काम कर रहा है वह भी ईश्वर का चुना, बुलाया और नियुक्त किया हुआ जन है इसका सम्बन्ध सीधे ईश्वर से है वह एक उत्तम गुरू है । ईश्वर उसको कलीसिया के मिश्न स्कूलों में सेवा के लिए अपना काम सौंप दी है । सिखाने के लिए जो विषय मूसा को दिया गया था वही विषय को वर्त्तमान शिक्षक को भी सौंप दी गई है अर्थात् (१) ईश्वर के विषय (२) मनुष्य के बिषय । मसीह कलीसिया के सभी मसीही शिक्षकों को इन्हीं दो विषयों को अपने स्कूल के बच्चों को सिखाने, पढ़ाने के लिए ईश्वर ने सौंप दिया है बच्चों को सिखाने में शिक्षक विश्वास योग्य होवे ।

दूसरा विषय के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक श्री बी. के. हेमरोम कोरोंजो ने बड़ी रोचक और अकर्षित भाषण दिया । उन्होंने सुसमाचार के १ कोरिन्थ ४:१-२ पद इफिसी ४:१ पद का उदहारण देकर बताया कि हर एक मसीही शिक्षक बुलाये गये हैं और हरएक को सेवक और भण्डारी का काम सौंपा गया है । सेवक और भण्डारी विश्वास योग्य होवे

Gossner Mission

जैसा— अब्रहाम का दास इलियाजर और मिस्र में पुतिफर के घर में युसफ। स्वामी एक दिन अपने सेवक और भण्डारी से लेखा लेगा। विश्वास योग्य सेवक तब हो सकता है जब कि अपने को अनुशासन के अधीन में रखता है।

अनुशासन के विषय में उन्होंने बताया "संयम" (१ कोरिन्थ ९:२५) जैसा पहलवान सब प्रकार संयम रखता है हर एक मिशन स्कूलों में अनुशासन का यही मूल बात है। हर एक शिक्षक अनुशासन का पालन करते हुए ठीक समय पर स्कूल जाना और ठीक समय पर बच्चों को छुट्टी देकर लौट आना। हर एक बच्चे का ध्यान शिक्षक पर लगा रहता है।

तीसरा विषय के सम्बन्ध में कोरोंजो इलाका चेयरमेन का था, कारणवस इस सेमिनार में उपस्थित नही हो सके।

भाद्रो एम० पी० जोन्नो, पेरिश चेयरमेन

समाचार देश-विदेश

पोर्टब्लेयर मसीही समाचार

अन्डामन एक छोटा द्वीप है जो जल के ऊपर बसा है। जिसमें हर प्रान्त के लोग अपना जीवन व्यतीत करने के लिए अपना मुख्य भूमि छोड़ कर आये हैं। और साथ-साथ अपना धर्म को भी लाये हैं अपना विश्वास के अनुसार भगवान का सेवा और कार्य भी कर रहे हैं।

इसी प्रकार हम मसीही भी इस द्वीप स्थल आये हैं हमें भी वह अपने परमेश्वर सेवा उपासना के साथ साथ कार्य भी करना है। हमें वह अपने खून से खरीद लिया है। वही हमारा पथ प्रदर्शक है हमारे लिये ज्योति है और हम ज्योति में चलने हारे एक-एक मसीही है। और जो नहीं आये हैं उन्हें लाना है। पर खेद है, हमारे मसीही भाई बहन को देखे तो हमें घोर निराशा आयगी, हम मसीहियों के बीच जहां मेल मिलाप रहना है वहां पक्षपात-कपट है। जहां कहीं भी हम जायं, डाह, विरोध और बखेड़ा ही मिलता है इस कारण हमारे बीच कुरीति और अंधेरा बढ़ते चला जा रहा है। जिसे हम मसीहियों में अशान्ति फैली हुई है।

इसका एक मात्र कारण हमारे अगुवे ही है यहां अपना कर्त्तव्य के विरूध काम कर रहे हैं जहां मेल प्रेम से ईश्वर का वचन रूपी बीज बोना है वहां फूट और बखेड़ा की बाते सिखाते हैं। आज पोर्टब्लेयर में हमारा पादरी बाबू लाल ही हम मसीहियों पर फूट डाल दिये और आज इस छोटे भुन्ड दो भाग हो गया अब यहां के मसीही अपने परमेश्वर के लिए क्या कर सकते। हम मसीही अभी तक अपना विश्वास में स्थिर हैं पर इन्हें आशा-विश्वास देने वाला कोई नहीं इस प्रकार की हालत देख कितने हमारे भाई-बहन दूसरे चर्च पर पांव डाल रहे है, कितने डाल चूके। न यहां मण्डली है पंच प्रचारक और न गिरजा घर है। कितने गिरजा घर किराया न जाने बेचा गया है क्यों? किस कारण? और आज यहां के भाई-बहन भिखारी के सदृश्य, दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं। जहां बाबू लाल १४-१५ वर्ष गुजार दिये ज्यों का त्यों।

पर आनन्द करे पोर्टब्लेयर के भाई-बहन सोये नहीं वरण ईश्वर पर विश्वास और आशा के साथ साथ कार्य भी कर रही है। ये भूले भटके को ला रहे हैं और यहां अपना मन्डली तथा गिरजा घर खड़ा करने के लिए ठोस संकल्प, दृढ़ निश्चय उचित उद्देश्य ले कर प्रभु के लिए अपना कदम उठाये हैं। हमें धीरज धरना है, हमें वह ताकत है जिसको कोई भी तूफान उड़ा नहीं सकता, कोई भी ताकत हिला नहीं सकती और कोई भी ताकत रोक नहीं सकेगी। हमारे सीने में साहस है मस्तिष्क में दिमाग है और भूजाओं में बल है ताकत है, हमारे काम पर परमेश्वर अपना आशीष दे उन्हें अगुवाई करें कि हमें सफलता ही हाथ लगे।

Gossner Mission

हम ने सरकार से जमीन के लिए अपील किये ईश्वर से प्रार्थना किये हमारी प्रार्थना-मांग रजिस्ट्री द्वारा सुनी गयी और जमीन भी मिल गया। पर इस समय अगुवा को आवश्यकता है। हम ने यह काम कर के पादरी के पास प्रस्ताव रखे कि हम यहां गिरजा घर बनायेंगे उसने जवाब दिया गिरजा घर पोर्टब्लेयर में बनाने नहीं सकोगे। और हमारे बीच दो भाग कर दिये आज इस ओर हमारे अंचल अध्यक्ष ध्यान न दे तो हमारा जो अभी जमीन मिला है समुद्र में डूबने वाला है और हम मसीहियों का फूट एक में न मिल पायगा।

अंजोर सोरेंग
एम. ई. एस. स्कूल लाईन
पोटब्लेयर अन्डामन

कुचीन्डा पेरिश

शासन की घटो के कारण मनुष्यों का आत्मिक जोवन पतन की ओर जा रहा है।

मैं कोरोंजों, खुटोटोली, टकरमा इलाके में रहकर अपना जीवन प्रभु में आनन्द के साथ व्यतीत किया हूँ। अभी कुचिन्डा पेरिश में ख्रिष्ट के लिये बहुत शोक के साथ अपना दिन काट रहा हूँ। प्रति दिन और रात धर्म्म के लिये सोच बिचार करते-करते मुझे नींद नहीं आती है। हाय ईश्वर का राज्य शिक्षा नहीं देने के कारण प्रभु का ज्ञान नाश हो रहा है।

गिरजा आने जाने में दान पुन देने में मनुष्यों का जोश क्यों नहीं है ?

१ मण्डली में सन्डे स्कूल नहीं होता है। बच्चों को धर्म्म ज्ञान नहीं सिखाया जाता है। कोई जगह सिखाया जाता है—किन्तु नियम अनुसार नहीं।

मेरी इच्छा है—कटेखिसम अर्थ सहित, स्थल बचन, नया नियम, पुराना नियम, मन दर्पण, मण्डली वृतान्त, यात्रा स्वोपनोदय इनको सिखाने से बच्चों का मन धर्म्म की ओर आकर्षित किये जायेंगे। कोचिन्डा पेरिश में नहीं सिखाया जाता है।

२ दृढ़ीकरण पाने वाले—जवान युवती बचपन ही से धर्म्म ज्ञान नहीं पाये। इस लिये (दृढ़ीकरण) प्रभु भोज खाने के समय का बचन नहीं जानते कुचिन्डा पेरिश दृढ़ीकरण अभिलाषी को पादरी साहब कुछ बचन नहीं सिखाता न पूछता है, जो चाहता है उसको दे देता है। किसी को बचन के ऊपर जारी नहीं करता है। बपतिस्मा का सक्रामेंट और वेदी का सक्रामेंट, पाप स्वीकार इन बचनों को तो लोप कर दिये। दृढ़ीकृत लोगों को धर्म्मिक ज्ञान ही नहीं सिखायी जाती है। नुकसान ये लोग पीछे पंच होंगे प्राचीन होंगे प्रचारक होंगे तो अपने ही धर्म्म का ज्ञान नहीं जानेगा तो दूसरों को सिखायेगा कैसे। क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है ? दोनों गढ़े में गिर जायेंगे।

३ कुचिन्डा पेरिश का प्रचारक और पाद्री अंधों में काना राजा हुए हैं—अपना सारा दिन शारीरिक काम उद्यम में दिन काटते हैं। कलीशा की तो सेवकाई नहीं होती है। कोई जगह कोई घटना होता है बुलाने से कोई जाते नहीं। किन्तु किसी जगह में भोज खाने का समाचार पाया हो तो तुरन्त हाजिर हो जाते हैं।

प्रचार और पादरी दोनों खुशामदी हैं एतवार के दिन में अपना मनमना गिरजा करते हैं। जैसा कैसा आराधना करते हैं। आराधना और धर्म्मशास्त्र का सब नियमों को छोड़ते हैं।

उपदेश—उपदेश का कोई सिर है न पैर है जैसे:—

सारी मध्य नारी। कि नारो मध्य सारी
कि सारी ही कि नारी : नारी ही कि सारी

कोचिन्डा पेरिश के प्रचारक और पाद्री के लिये धर्मशास्त्र व्यर्थ है—मत्ती २५ ४१-४६ के अनुसार है। मत्ती २३ के अनुसार काम करते हैं। याकुब ५-१३-१४ इन बचनों को फेंक देना चाहिये आराधना के सब नियम जो प्रचीनों के लिये है फेंक देना चाहिये। ख्रिष्टीयानी जीवन और सांसारिक जीवन में कुछ भेद नहीं है।

मेरी इच्छा है सब प्रचार और पाद्रियों को ईन्टरवीयू करना चाहिये। प्रचारक के काम में पाद्री कुछ करवाई नहीं करते हैं इसलिए प्रचारक भी पाद्री के कामों के उपर कुछ करवाई नहीं करते हैं। वर्त्तमान में ज्ञान से नौकरी नहीं कर रहे हैं सिर्फ खुशामदी से नौकरी है।

Gossner Mission

मेरी सलाह है कि जैसा जर्मनी शासन था वैसा ही शासन हो। जैसा हजारीबाग में शासन है वैसा ही हो। (उपवास) लेन्ट काल का गिरजा इधर नहीं करते हैं। इसके विषय में कुछ नहीं जानते हैं।

हे प्रभु मैं तुझ से विन्ती करता हूँ कि तेरे राज्य के लिये चुने गये तेरे राज्य के कर्म्मचारियों (पाद्री-प्रचारकों) को प्रेम और दया और विश्वास और सच्चाई में चला ताकि वे प्रेम, दया, विश्वास और सच्चाई में रह कर सारे जगत में जो अब तक अंधियारे में बैठे हैं तेरा वचन प्रचारा जावे ताकि सब मनुष्य जाति तेरी स्तुति और महिमा करते हुए तेरे राज्य में आनन्द जीवन करने पावे। आमीन॥

Christ Martin Tete
Kolapat

गुमला इलाका शोक समाचार

प्रचारक मिहका टोप्पो की मृत्यु दिनांक ६-४-७४ को दमा बिमारी से प्रभु में सदा के लिए सो गये। करीब ६४ वर्ष की उम्र में। वे गुमला इलाका केपीवो मंडली के प्रचारक थे वे जीवन भर माता मंडली की सेवा-किये करीब ४० ई० से वे प्रचारक का काम आरम्भ किया तीन-चार साल सेवकाई के उपरान्त सोर्ट कोर्स पादरी ट्रेनिंग किये थे लेकिन उनके छोटे भाई की मृत्यु के बाद घर का काम सम्भालने के कारण प्रोहिताई पद ग्रहण नही किया। इतना होते हुए भी प्रचारक का काम किया। बीच-बीच में दमा बिमारी के बढ़ जाने से काम छोड़ भी दिये लेकिन अच्छा होकर फिर काम आरम्भ किये इस प्रकार हमेशा प्रभु की सेवा के लिए अन्त तक 'कोशिश की' बिमारी बढ़ जाने के कारण अन्त में छोड़ना पड़ा करीब तीन-चार साल से दमा बिमारी के रोगी थे। इनके एक पुत्र और दो पुत्री हैं एक पुत्री नेत्रहीन है जो राँची में नेत्रहीन (St Michel Blind School) में अध्यापिका करके वहीं काम करती है। आप पाठकों से निवेदन है आप उनके शोकित परिवार के लिये प्रार्थना करें।

श्रीमती हन्ना तिग्गा की मृत्यु ७-१-७४ बूढ़िया एवं दमा बिमारी से प्रभु में सो गयी श्रीमती हन्ना तिग्गा भूत पूर्व गुमला प्रचारक श्री पौलूस तिग्गा की धर्म पत्नी थी श्रीमती तिग्गा बहुत वर्षों से दमा रोग की रोगी थी रोगी अवस्था में भी अपने धर्म पति को सेवकाई के काम में काफी सहायता की ऐसी हालत में प्रचारक साहब छोड़ कर चले जाते थे और वह सब कुछ सह लेती थी। इस प्रकार वह मंडली की सेवा में किसी प्रकार की रूकावट नहीं डाली आप पाठकों से निवेदन है कि शोकित परिवार के शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

समाचार

हर्ष की बात है कि टाटीसिलवे स्थित मसीही भाई बहनों का हृदय मसीह की ओर आकृष्ट किया गया है; तथा काफी सोच विचार कर सर्वसम्मति से एक मसीही मण्डली खड़ा किया गया है। जो ता: २३-६-१९७३ से गोस्सनर कलीशान्तरगत मण्डली के रूप में काम कर रही है। साप्ताहिक आराधना का काम सुविधानुसार एक मसीही भाई के घर पर किया जाता है। अत: कलीसिया के भाई बहनों से नम्र निवेदन है कि इस नये जन्मे मसीही मण्डली की दृढ़ता के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करें ताकि उत्तरोत्तर इसकी वृद्धि हो।

हिजकिएल
टाटीसिलवे

Gossner Mission

आवश्यकता

फुदी टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर, फुदी / रांची में फिटर और करपेन्टरी (बढ़ाई) ट्रेड के लिये उम्मेदवारों की आवश्यक्ता है। बढ़ाई गिरो के लिये दो प्रकार के विद्यार्थी बहाल किये जायेंगे— आई : टी : आई : और ग्रामिण स्तर के बढ़ाई। उम्मेदवार संस्था के फार्म में दरखास्त नीचे दिये पते पर भेजें। फार्म प्राप्ति के स्थान—(१) टी० टी० सी० ऑफिस फुदी / राँची (२) जी : ई : एल : चर्च आफिस राँची, (३) ईन्सपेक्टर आफ स्कूल, केथोलिक चर्च, पुरलिया रोड राँची, और (४) सी : एन : आई : आफिस, हजारीबाग रोड, राँची।

योग्यता (१) आई· टी· आई. स्तर के फिटर और बढ़ाई गिरी कम से कम किसी स्वीकृत हाई स्कूल से ९ वाँ क्लास पास हो।

हिसाब और विज्ञान के विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जायगी।

(२) ग्रामीण स्तर के बढ़ाई गिरी— कम से कम ७ वीं क्लास पास हो।

दरखास्त देने की अन्तिम तिथि— ११ जून १९७४।

उम्मेदवारों की उम्र — १६ से २२ वर्ष

रेभ : सी : बी : आईन्द,
डाईरेक्टर,
फुदी टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर
फुदी (पो. ओ.) / राँची।

धन्यबाद, आप का चन्दा, (३०वीं अप्रेल १९७४ तक) मिला

1 Mr. Thomas Minz
2 Mr. H. Khalkho
3 Miss. M. Horo
4 Miss Mudit Topno
5 Gossner Bible Training School.
6 Mr H. Samad
7 Mr. Eliah Bodra
8 Rev. M. Horo, Borsol
9 Cat. M. M. Topno
10 Mr. Premoday Toppo, Gorbi
11 Cat. Thomas Kerketta, Jambera
12 Mr. Hiranjan Horo Kapa, Raipur
13 Miss Halwanti Horo, Dami
14 Mr. Komal Dungdung, Betapur
15 Rev. C.S. Lakra, Birmitrapur
16 Mr Manohar Kujur, Sitonga
17 Mr. M. Indwar, Jamshedpur
18 Cat. Nainsukh Kujur' Amgaon
19 Cand. P. Hansdak
20 Rev. M. Jojo, Rajgangpur
21 Rev. J. Kullu, Simdega
22 Mr. Immanuel Kandulna, Dhurwa
23 Mr. Daniel Ekka, Kharsidag
24 Mr. Christochit Toppo, Saraswatipur
25 Mrs. M. Ekka, Lohardaga
26 Mr. Nathaniel Ekka
27 Mrs P. Soy, Sirumtoli
28 N/Sub. O. S. Guria, Punjab
29 Shri Dhankunwar Khess, Lanjiberna
30 Mr. Gossner Kandulna, Tonea
31 Mr. Laurentius Bage, Binjikhol
32 Mr. Mansukh Topno, Khunti
33 Mr. Barnabas Minz, Barkadand
34 Shri Samuel Mundu, Sundargarh.

Gossner Mission

रक्तदान

[गतांक से आगे]

जाये तो कहाँ ? बेबसी के कारण उसकी भींगी पलकों पर मोती के कण झिलमिला आये। लेकिन लकी की माँ भी उसे नहीं देख सकी। उसके दिल में उठते-दर्द को वह नहीं समझ सकी।

मुस्करा कर उसने पूछा

"आप का शुभ नाम जान सकती हूँ ?"

"जी, मेरा शुभ नहीं अशुभ नाम है रोश्नी।" खिन्न मन से रोश्नी ने अपना नाम बताया।

"अति सुन्दर रोश्नी !.....सचमुच आप रोश्नी हैं। लकी आपके पास यूँ मौन रहेगी मैं सोच भी नहीं सकती। मेरा नाम बहालेन है.....।

"जी.....! अच्छा तो मैं चली।" रोश्नी ने लकी को माँ की ओर बढ़ाते हुये कहा। वह अपनी घबराहट छिपाना चाह रही थी, लेकिन बहालेन को शायद उसकी आंखों में छिपी पीड़ा का अनुभव हो गया था। दर्दीले-स्वर में वह पूछ बैठी—

"आप एकाएक ऐसी उदास क्यों हो गईं ?"

"काश ! कि आपको बता सकती.....।"

"क्यों नहीं बता सकतीं हैं ....? अच्छा तो घर जा रहीं हैं न ! कहां है आपका घर ?"

"मैं घर नहीं जा रही हूं। रोश्नी हूं न ! अब अंधेरे में जा रही हूं। रंजन जब आ जाये तो कह दीजियेगा कि रविवार को कबर पर एक फूल की माला लेकर जाये।"

"लेकिन मैं आपका घर जानना चाहतो हूं ?"

"क्या कीजियेगा जान कर.....। आप जरूर जान लीजियेगा। दुनिया जानेगी। मेरे बारे जान कर कल अगर कोई दो बूंद भी आंसू बहा दे तो मैं अपनी जिंदगी को सार्थक समझ लूँगी।"

और रोश्नी चली गई। बहालेन आंगन पर आकर उसे दूर तक देखती रही। उस अनोखी-लड़की के वहां आने का मतलब अब वह कुछ-कुछ समझ रही थी। देर तक खड़ी-खड़ी वह रोश्नी के दिल में उठे तूफान की थाह लेती रही, परन्तु वह कुछ भी समझ नहीं पाई।

रोश्नी खोई-खोई-सी आगे बढ़ती रही। कभी उलटकर भी पीछे की ओर न देखा। उसके दिल की धड़कनें और भी तेज हो रही थीं। उसे अपनी मजबूरियों पर रोना आ रहा था, लेकिन उसके आसूं भी उसके इस कलंक को मिटा नहीं सकते थे। नारी के नाम वह जो कलंकिनी बनने वाली थी, क्या मसीह का रक्त उसे धो सकता था ? उसके दिल ने उसे गवारा नहीं। ईश्वर भी क्या उसके पाप को क्षमा कर सकता है ? उसके विवेक ने कहा—नहीं.....कभी नहीं !! ऐसा कभी संभव नहीं !!! आज तक तो उसने इस रहस्य को छिपा रखा था, पर कल समाज उसे टेढ़ी आंखों से भी देखना पसन्द न करेगा। वह खुद किसी को अपना मुंह नहीं दिखा सकेगी। नहीं .....वह भी अपने आप को क्षमा नहीं करेगी। उसकी आंखों पर अब एक भयानक इरादा नाच रहा था। वह अपने आप को मिटा डालेगी आत्म हत्या कर लेगी।

वह अब अपने कूँए पर आ गई थी। उसे फिर से प्यास की याद हो आई। परन्तु अब उसे इसकी परवाह नहीं थी। उसने कूँए के अन्दर झांका। नीचे उसकी परछाईं मानो उसे बुला रही थी। उसका हृदय जोर से कांप गया। उसने हिम्मत की और दूसरे ही क्षण पानी की सतह पर जा गिरी। छपक की आवाज के साथ कूँए का भीतरी वातावरण गूंज उठा। रोश्नी पानी के अन्दर तक डूबती चली गई। उसे अपनी सांस घुटती जान पड़ी। माथे पर एक असहनीय पीड़ा की अनुभूति ने तड़पा दिया। शायद किसी पत्थर पर उसे चोट लग गई थी। पर उसे तो सिर्फ मौत का इंतजार था। कुछ देर वह जीवन-मृत्यु के बारे में समझने को मजबूर हो गई। जान कुछ प्यारी-सी भी लग रही थी, लेकिन उसने हाथ-पांव बिल्कुल ही ढीले कर दिये।.....और कुछ देर बाद वह बेसुध हो गई।

Gossner Mission

आहिस्ते, किन्तु बहुत मुश्किल के बाद अनूप ने रोश्नी को कूंए के बाहर निकाला। किशोर भी रस्से के सहारे कूंए से बाहर आया। रोश्नी को उन दोनों ने कूंआ के पक्के फर्श पर पेट के बल लिटा दिया। उसके मुंह से ढेर सारा पानी बह निकला। किशोर ने उसके माथे पर लगे चोट को निहारा—रक्त निकलना कुछ-कुछ बन्द हो गया था। उसने उसके बायें हाथ को अपने हाथ में लेकर नाड़ी टटोली। कुछ क्षण तक वह उसी मुद्रा में बैठा रहा, और इसके बाद एक हल्की मधुर मुस्कान उसके अधरों पर खेल गई। नाड़ी धीरे-धीरे गति कर रही थी। भींगे वस्त्रों के कारण रोश्नी की स्थिति सोचनीय जरूर थी, किन्तु सब कुछ भूल कर वे दोनों उसके प्राथमिक उपचार में लग गये। अनूप ने रोश्नी के हाथ से घड़ी खोलकर पॉकिट में रख लिया, क्योंकि किशोर भी भींगे वस्त्रों में बुरा हाल हो रहा था।

बहुत कोशिश के बाद रोश्नी की सांस फिर से लौट आई, तब तक कुछ स्त्री-पुरूषों की टोली वहां आकर जमने लगी थी। उसे होश में लाने को सब अपने-अपने तरीके बखान रहे थे, फिर भी सबकी आखों में एक एक प्रश्न थ —··· वह क्यों आतम हत्या कर रही थी ?

चाचा-चाची दोनों के आने पर रोश्नी के बेसुध तन को घर लाया गया। चाची ने ही उसके भींगें वस्त्रों को बदल डाला। इसके बाद आंगन में बिस्तरा सजाकर वह लिटा दी गई।

अनूप साइकिल दबाकर डॉक्टर की तलाश में निकल पड़ा। जब वह लौटा तो संध्या के साढ़े-पाँच होने वाले थे। उसके लौटने तक रोश्नी अपनी आंखे खोल चुकी थी, मगर उसे पूरी तरह होश नहीं आ रहा था।

कुछ देर बाद डॉक्टर भी आ पहुंचा। कुछ यांत्रिक परीक्षणों के बाद उसने बताया कि उसकी हालत उतनी सोचनीय नहीं, जितनी कि सोची जा रही थी।

कुछ देर के बाद डॉक्टर ने फिर कहा—

"माथे पर चोट लगने के कारण इसका रक्त बहुत बह चुका है। कोई है जो रक्तदान के लिये तैयार हो सके ? अस्पताल में भी वैसे तो मिल सकता है, लेकिन उसकी कीमत कुछ अधिक पड़ेगी। हाँ, लेकिन जिंदगी से बढ़कर कोई चीज बड़ी तो नहीं होती... फिर भी अगर आप लोगों में से.....।

अनूप ने डॉक्टर के वाक्यों को पूरा होने न दिया। सामने आकर उसने कहा—"सर ! इसके लिये मैं तैयार हूं।"

"क्या यह आपकी पत्नी है ? क्या नाम है इसका ? डाक्टर ने पहले अनूप को देखा, फिर रोश्नी पर दृष्टि डाल कर कहा।

"सर·····! रोश्नी है इसका नाम। लेकिन न यह मेरी पत्नी है और न इसकी शादी हुई है !" अनूप के कहने के ढ़ंग से मालूम पड़ रहा था कि वह रक्तदान के लिये बेताब-सा हो रहा था।

"सर ! मैं भी अपना खून दे सकता हूं। यह मेरी अपनी बहन है।" किशोर ने भी डॉक्टर के समीप आकर कहा।

"ठीक है·····ठीक है लेकिन यह माँ भी बनने वाली है।"

डॉक्टर के कहने पर सब के कान खड़े हो गये। अनूप की माँ ने उसे पैनी निगाह से देखकर कहा—"नादान लड़की !·····इसीलिये आत्महत्या कर रही थी। कितनी भोली-सी सूरत है ! जिसके पीछे ऐसी भी इसकी नीयत होगी, मैं कभी सोची भी न थी·····।"

"बस, माँ ! अभी इसको जरूरत नहीं। डॉक्टर ! लीजिये·····मेरा हाथ तैयार है।" अनूप ने अपना बायां हाथ बढ़ा दिया।

डॉक्टर ने सीरिंज अनूप की बांह में घुसेड़ दिया। धीरे से कुछ खून निकाल कर उसने रोश्नी को बांह में दे दिया। अपनी चीजों को रखकर रोश्नी के लिये उसने कुछ टेबलेट्स अनूप के हाथों में देकर कहा—"अभी तो इसे आराम करने दिया जाये·····जब सोकर उठे तो खाना खा लेगा। यह पट्टी इसके माथे पर बांध दिया जाये और ये गोलियां·····एक कल बिहान के लिये, दूसरी दोपहर के लिये और तीसरी शाम के लिये है·····।"

डॉक्टर चला गया। रोश्नी को चुपचाप लिटा दिया गया। गहरी नींद ने उसे सपनों की दुनिया में ले जाकर छोड़ दिया। बहुत रात तक उसकी चाची उसके संग

Gossner Mission

रही। जब एक बार रोश्नी ने करवट बदली उस समय भी उसकी चाची जाग रही थी। रोश्नी को नींद से जगाकर वह उसे खाने को बोली। पर रोश्नी ने 'न' में सर हिला दिया। इसके बाद वह फिर नींद में खो गई।

दूसरे दिन जब वह बिस्तरे से उठी तो उसे बिशेष कमजोरी महसूस हो रही थी। माथे पर का वह जख्म अब भी दर्द कर रहा था। हाथ मुँह धोने के बाद उसे खाना दिया गया, लेकिन अनूप ने उसे पहले टेबलेट खाने के लिये कहा।

दोपहर तक वह आराम ही करती रही। उसे किसी से बातें करने की इच्छा नहीं हो रही थी। उससे भी किसी ने कोई विशेष बात न की। उसे जो नई जिंदगी मिली थी उससे घर वालों को कितनी खुशी हो रही थी! आज अगर उसकी माँ होती, उसका पिता होता! तो वे भी इसी तरह खुशी होते, पर वे अब इस दुनिया में न थे। सिर्फ उनकी याद थी। और थे किशोर और रोश्नी। बस ये ही दोनों भाई बहन बचे रह गये थे। किशोर भी आज खुश होता पर एक चिंता उसे सताये जा रही थी। वह अपनी दीदी के लिये। उसकी जान तो बच गई, लेकिन उसने घराने पर नया कलंक लगा दिया था। किशोर के मानस-पटल पर एक चित्र उभर आया-उस शैतान रंजन का! वह रंजन से कुछ-कुछ परिचित था। किशोर ने निर्णय किया, वह रंजन को दीदी की जिन्दगी और इज्जत को अपनाने के लिये मजबूर कर देगा—कानून का सहारा लेकर! पर उसे क्या पता था कि यह सब असम्भव था।

आज शनिवार था, कल के इस्टर के लिये बहुत-सी तैयारियां करनी थीं, तैयारियां हो रही थीं। रोशनी के घरवाले भी कबरों पर चले गये। घर पर सिर्फ रोश्नी थी। वह घर से निकलकर कहीं जाना नहीं चाहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि आज की चर्चा का विषय वह पूरी टोली ही में नहीं बल्कि आधे शहर तक में बनी हुई थी।

वह बचा ली गयी थी यह उसे अच्छी नहीं लग रही थी। अब भी वह जीना नहीं चाह रही थी, पर फिर से कुँए में कूदने का साहस भी नहीं हो रहा था।

अचानक उसे क्या सूझी, उसने अपनी साड़ी ठीक की और नजदीक के एक दुकान पर चली गई। दुकानदार से माँगकर एक डाल्फ की शीशी उसने खरीद ली। घर आकर उसने उसे बिस्तारे के नीचे रख दिया। अब वह रात का इन्तजार करने लगी।

रात का खाना खा चुकने के बाद वह अपने बिस्तरे पर आयी। उसने चुपचाप से वह शीशी निकाल ली। दांतों तले दबाकर उसने उसकी सील तोड़ डाली। खुली शीशी को उसने एक बार ऊपर उठा कर देखा, उसका हाथ कांप रहा था। फिर आंखें मूंदकर उसने उसे अपने गले के नीचे उतार दिया। और एक पतली सी चादर ओढ़कर वह हमेशा–हमेशा की नींद में सो गयी।

पुनरूत्थान की उस सुन्दर भोर को जब घंटी बज रही थी, उस समय एक करूण क्रन्दन भी वातावरण में गूंज रहा था। रोश्नी के घरवाले उसके लिए बिलाप कर रहे थे।

रोश्नी की जिन्दगी के लिए क्या नहीं किया गया था? 'गुड फ्राइडे' को उसके चचेरे भाई ने अपना खून भी बहाया, जैसा कि यीशु मसीह ने हमारे पापों के कारण अपना खून बहाया था। ताकि हम उसपर बिश्वास करने के द्वारा नव–जीवन प्राप्त कर सकें। परन्तु जिसे जिंदगी की लालसा ही नहीं, उसके लिए उसका अनमोल रक्तदान भी क्या कर सकता है?

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४ — ६४ राँची, जून १९७४, संख्या नं. — ६



Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं. आर. एन-सी. ४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

EINGEGANGEN
10. SEP. 1974
Erledigt o. ...v. .....

वर्ष — ६४ रांची, जुलाई १९७४



तुम्हारे बहुत फल फलने में मेरे पिता की महिमा
प्रगट होती है और तुम मेरे शिष्य
होओगे। (योहन १५:८)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी रेभ टेटे	—	४
इन्टरव्यू	—	६
कोरोवोरेटिभ वोट	—	७
धर्मशास्त्र के प्रश्न-उत्तर	—	६
गोस्सनर कलीशिया को आत्मा की पुकार	—	६
जीवन साथी एक समस्या	—	११
चिकित्सा समाचार	—	१२
Names of the Twelve Disciples	—	१३
निश्चय	—	१४
गढ़ खटंगा धर्म मेला	—	१६
ओटोनोमी	—	१७
ग्राहक चन्दा	—	१६
चाल्हो मंडली	—	१६
शोक समाचार	—	२०
जीवन रेखा	—	००

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी और 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

'घरबन्धु' के जुलाई अंक में हमारी कलीसिया को वर्त्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास हुआ है। परिस्थिति का विश्लेषण करना आवश्यक है। पर इसमें भी सावधानी करनी है कि विश्लेषण एकांगी और संकीर्ण न हो। कुछ लेखों में संकीर्णता का आभाश मिलता है। कलीसिया के मदस्यों को आत्मालोचना का पूर्ण अधिकार है; पर यह आलोचना रचनात्मक- क्रियात्मक भी होना अनिवार्य है।

कलीसिया का नवनिर्माण भी अत्यावश्यक है। हमारी गोस्सनर एवंजेलिकल लुथरान कलीसिया का नवीकरण अति आवश्यक है। इसके लिए सदस्यों को चिन्ता और तरस है। यह सराहनीय बात है। सम्पादक ऐसे सदस्यों की आलोचना स्वागत करते हैं। कलीसिया का निर्माण परमेश्वर के जीवते वचन को सुन कर पवित्रात्मा की अगुवाई और सहायता से यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने से होता है। पवित्रात्मा के आगमन से एक आत्मिक संगति का गठन हुआ जिसे आरम्भिक खृस्तीय कलीसिया को बुनियादी मानते हैं। इसी मौलिक बात को हम स्मरण करें और कलीसिया के नवनिर्माण के लिए प्रयास करें। कलीसिया का नवीकरण प्राथमिक रूप से परमेश्वर के जीवते वचन और पवित्रात्मा की सामर्थ और उनके काम से होता है। अत: सदस्यों को स्मरण दिलाना है कि अपनी बुद्धि और युक्ति ही पर टेक लागू कर कलीसिया के नवनिर्माण के लिए काम न करें। ईश्वर को प्रथम स्थान देकर, उसी को कर्त्ता मान कर इस शुभ कार्य में आगे बढ़ें।

इस क्रम के कार्य में आशीष है।

—सम्पादक

सम्पादक समिति

.... सूचना ....

कुचिन्डा पेरिश शीर्षक लेख की बातें सत्य नहीं हैं। गलती से यह लेख जून १९७४ संख्या न० ६ में छप गया है।

पाद्री डा० एन० मिंज

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे ४ था एतवार

रोमी ८:१८-२३

रोमी ८:१८-२५ में निकट भविष्य में प्रगट होनेवाली महिमा की निश्चयता दी गयी है। ईश्वर चाहता है कि जितनों का उद्धार हो गया है वे अनुशासन तथा गवाही के लिए थोड़े समय के लिये जीवित रहें। आनेवाली महिमा की तुलना में वर्त्तमान का दु:ख कुछ नहीं है।

"प्रगट होनेवाली महिमा की आशा देखें"

१ क्योंकि हमारा छुटकारा उसी में है (२३) : हम यीशु की आशा देखते हैं। हमारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। वर्त्तमान दु:ख के मध्य भी हमारा जीवन यीशु के कारण सुरक्षित है। "क्योंकि तुम तो मर गये; और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे (कुलु ३:३+४)

२ क्योंकि सृष्टि हमारे छुटकारा में भाग लेनेवाली है :—सृष्टि मनुष्य के पाप के शाप में भागी हुई (उत्पति ३:१७-१६) जब मनुष्य का छुटकारा हो जायगा तब पृथ्वी को भी महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त होगी (२१+२२)।

३ क्योंकि इसी आशा में हमारा उद्धार हुआ है (२४) : हम उसी दिन बदल जाएंगे जब हमारा प्रभु यीशु का पुनरागमन होगा (फिलि. ३:२०+२१) जब ईश्वर ने छुड़ाया तब हम में पूर्ण महिमा की आशा को भी भर दिया। पद २५ में इसका कारण दिया गया है कि क्यों ईश्वर ने हमें विश्वास करते ही पूर्ण आत्मिक और शारीरिक महिमा न दी। "पूर्ण महिमा के लिये धीरज आवश्यक है"।

हम यीशु के प्रगट होने की बाट जोहें और एक दूसरे को सम्भालें।

त्रिनितातिस के पीछे ५ वां एतवार

१ पतरस ३:८-१५

यीशु मसीह में मसीहियों के लिये जीवती आशा है। जिनके पास जीवती आशा है वे एक मत, सहानुभूति, प्रेमी, नम्र, तथा धीरजवन्त होते हैं। आशा उन्हें बुराई से फेर कर भलाई की ओर ले जाती है। पतरस इन पदों में ख्रिस्त विश्वासियों के सहानुभूति तथा कष्ट सहन के विषय उपदेश देता है।

"ख्रिस्तीय सहानुभूति एवं कष्ट सहन"

१ ख्रिस्तीय सहानुभूति :—

(क) प्रेम से शुभचिन्तक बनो— यशायाह ५८:७; क्रिया २०.३५; रोमी १५:१; इब्रानी १३:३; याकूब १:२७; निर्गमन २:६; २ इति २८:१५; अय्यूब २९:१३; लूक १०: ३३-३४; क्रिया १६:३३; २८:२।

(ख) एक मन और मत के बनो :—१ कुरि० १:१०; २ कुरि. १३:११; इफि० ४:३; फिलि० १:२७;

(ग) बुराई और गाली के बदले आशीष दो :— निर्गमन २३:५; नीति २५:२१; मत्ती ५:४४; लूक ६ २७+ ३५; रोमी १२.२०; १ थिस्लो. ५:१५; लैव्यवस्था १९:१८; नीति २०:२२; २४:२९; मत्ती ५:३९; रोमी १२:१७)

२ धर्म्म के कारण दु:ख सहो :—

(क) धर्म्म के कारण दु:ख उठाना यीशु के लिये दु.ख उठाना है। प्रेरितों ने यीशु के लिये दु.ख उठाया। उनके दु.ख उठाने से मण्डली की बढ़ती हुई। (क्रिया ५:४१; रोमी ८:१७; इब्रानी ११:२५; याकूब ५:१०; १ पतरस ६:२०; १ पतरस ५:१०;

(ख) यीशु की गवाही के लिये तैयार रहो :— (१५) कहाँ और कैसे गवाही देना है ?— देखो — यशायाह ६२:६; मार्क ५:१८+१९; क्रिया १:८; इफि० ५:१९; २ तिमु. १:८।

Gossner Mission

मसीह योशु को प्रभु जान कर अपने अपने मन में पवित्र समझो — तब वह सब बातों में तुम्हारी अगुवाई करेगा ॥

ओटोनोमी पर्ब्ब

गलाति ६:२-१०

१९६९ साल हमारे लिये स्वर्ण जयन्ती का वर्ष है। आज हम कलीसिया के प्रत्येक प्रचारकपन में स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। अक्तूबर १०–१२, हम पूर्ण कलीसिया होकर ओटोनोमी स्वर्ण जयन्ती राँची में मनावेंगे। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हम स्मरण करेंगे कि किस प्रकार कठिन परिस्थिति में हमारे पूर्वजों ने कलीसिया के स्वशासन और स्वपालन का कठिन भार अपने ऊपर लिया। साथ ही साथ ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि वह अपनी दया से स्वपालन और स्वशासन के लिये हमें आशीष देवे। आज बचन में स्वपालन और स्वशासन के फल के विषय बतलाया गया है।

"स्वतंत्रता (स्वशासन+स्वपालन) का व्योहारिक फल"

(क) भार उठाना—

१ अपना भार उठाओ :— (३-५) अपना हो बोझ उठाओ। अपनी कलीसिया का बोझ उठाओ। स्वशासित और स्वपालित हो जाओ। गोस्सनर कलीसिया को स्वशासित और स्वपालित बनाओ। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अपने काम का जांच करो (४) कि ओटोनोमी का घमण्ड कहाँ तक सत्य है।

२ दूसरों का भार उठाओ (१-२) एक दूसरे का भार उठाओ। अपराधियों को सम्भालो। दुर्बलों को सम्भालो। सुसमाचार प्रचार और शान्ति देने के कार्य को संभालो। इत्यादि

(ख) दान देओ (६-१०)

१ शिक्षक को दान दो। बचन सिखानेवालों का पालन करो। ओटोनोमी कलोसिया में शिक्षकों और उपदेशकों को आप ही संभालो।

बचन सिखाने वाला शिक्षाक के साथ अच्छी वस्तुओं का आदान प्रदान करें (रोमी १५:२७; १ कुरि० ९:११; २ कुरि० ८:१४)

१ नियम के अनुसार दान दो :— (७–८) शिक्षकों और पुरोहितों को नियमानुसार दान दो (१ कुरि० ९:१३) ईश्वर नहीं चाहता है कि उसके सेवक भूखे रहें और उनके जीवन के द्वारा ईश्वर ठट्ठों में उड़ाया जाय। वचन के शिक्षक तथा उपदेशकों को तुच्छ करने वाले ईश्वर को तुच्छ करते हैं। अत: वचन के शिक्षाकों को हम तुच्छ न करें।

३ दान देने में बराबर उत्साहित रहें :— (९) अर्थात भले कार्यों को करने में निराश न होवें। कलीसिया का काम दान द्वारा अथवा भले कार्यों द्वारा किया जाता है। हमें भला काम करना ही है। स्वपालन तथा स्वशासन के लिये दान देना ही है।

४ दान देने का अवसर भलाई करने का अवसर है। भलाई करने के अवसर को हम हाथ से जाने न देवें। न केवल वचन के शिक्षकों का भार उठावें परन्तु पूरी मण्डली को संभालें। शिक्षक तथा मंडली दोनों को संभालना है।

ईश्वर दया देवे कि हम कलीसिया के सेवकों तथा विश्वासियों का भार सहर्ष उठा सकें।

त्रिनितातिस के पीछे ६ वां एतवार

रोमी ६:३–११

प्रभु यीशु की मृत्यु का बपतिस्मा लेने के द्वारा हम उसके संग गाड़े गये। अर्थात हम अपने पापों के लिये मर गये। अब हम पुरानी सृष्टि और पाप के राज्य में नहीं हैं। अत: हमें इस विषय की बातों को जानना और समझना है।

१ हम को क्या जानना है ? (२–४)।

क – हम पुरानी सृष्टि में नहीं हैं। हम पाप की सृष्टि में नहीं हैं। क्योंकि हम ने यीशु की मृत्यु का बपतिस्मा लिया है।

ख – हम पाप के राज्य में नहीं हैं। अनुग्रह ने हमें ऐसे राज्य में लाया है जहां पाप के लिये जगह नहीं है। अर्थात यीशु के संग हम हैं। जहाँ यीशु है वहाँ पाप नहीं है। जहाँ यीशु है वहीं अनुग्रह है। क्योंकि अनुग्रह हमें धर्मी ठहराते हुए राज्य करता है। (५:२१)।

Gossner Mission

ग—मृत्यु के द्वारा हम पाप के राज्य से अलग हो गये। (५–१०) बपतिस्मा लेने के द्वारा हम ने अपने पापों को यीशु के संग गाड़ दिया। (४) हमारा पुराना आदम (पुराना स्वभाव) प्रतिदिन के पश्चाताप और मन फिराव से डुबाया जाकर सब पाप और कुअभिलाषों सहित मर जाता है। यह सब यीशु पर विश्वास करने के द्वारा होता है। विश्वास के द्वारा यीशु के संग उसकी मृत्यु में एक होते हैं।

घ—पुनरुत्थान के द्वारा पाप के राज्य से अलग हो जाते हैं। (५–१०) यीशु का जो उठना हमारा जी उठना है। यीशु पर विश्वास करने के कारण यीशु के पुनरुत्थान में भागी होते हैं।

विश्वास के द्वारा विश्वासी यीशु के संग एक है। अत: यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में बिश्वासी भागी होता है।

२ हम को क्या समझना है?

हमें स्वीकार करना है कि (क) से (घ) तक की बातें सत्य हैं। हम सत्य को बातों को मानें और उसके अनुसार काम करें। जब पाप फुसलाता है तब उसकी हम न सुनें। क्योंकि पाप के लिये हम मर गये हैं। परन्तु जब ईश्वर पुकारता है तब सुनें मानों कि हम जीवित हैं। पाप के लिये हम मर गये हैं। ईश्वर के लिये यीशु मसीह में जी गये हैं। अत: जीवन की सी नई चाल चलें।

त्रिनितातिस के पीछे ७ वां एतवार

रोमी ६:१९-२३

क्रिस्तीय जोवन के लिये हम बपतिस्मा के द्वारा बुलाये गये हैं। बपतिस्मा के द्वारा हमारा जोवन का मोड़ बदल गया है। बपतिस्मा के पहले हम पाप के दास थे। बपतिस्मा के उपरान्त धर्म्म के दास हैं।

"हम परमेश्वर के दास बन गये हैं"

क–पवित्र बनें:—ईश्वर पवित्र है। वह चाहता है कि हम पवित्र बन जावें। हम ने क्रिस्त यीशु में बपतिस्मा लिया है। उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने के द्वारा उसके साथ गाड़े गये। यीशु के साथ हमारा पुनरूत्थान हुआ। इसलिये हम पवित्रता के पथ पर चल। (६:४)

ख—हम पाप के दास न बनें:-हम यीशु के द्वारा छुड़ाये गये हैं। यीशु ने आप ही हमारी जगह में दु:ख उठाया। उसने दु:ख के द्वारा हमें छुड़ाया है। पाप का वेतन है-मृत्यु। जितने लोग पाप करते हैं उनकी मृत्यु अवश्य होगी। पाप में पड़ना तो मृत्यु में पड़ना है।

पवित्रता में बढ़ने तथा पाप से अलग रहने के लिये अपने आप को ईश्वर को समर्पित करें:(६:१४)

इन्टरव्यू

ए. डी. तोपनों

इन्टरव्यू कई प्रकार के हो सकते हैं पर हम सिर्फ तीन किस्म पर थोड़ा गौर करेंगे।

फौज का—फौज का इन्टरव्यू बहुत मतलब रखता है। हरएक मूवमेन्ट के शुरू और आखिर में जैसे वार्षिक छुट्टी जाते समय और वापसी में, किसी ड्यूटी पर जाते समय और वापस आने पर, किसी जगह बदली जाने और किसी जगह से आने पर, हरएक प्रोमोशन और डिमोशन में इन्टरव्यू लिया जाता है। इन्टरव्यू में जवान अपने दिल की बातों को खोल कर अपने अफसर के सामने रख सकता है लेकिन इन्टरव्यू से पहले की तैयारी जवान को नाक में दम कर देता है। वह अपना नख से सिख तक सफाई करता है याने स्नान करता है, बाल कटाता है, नखुन काटना। कटाता है' कपड़ों को विशेष तौर से प्रेस कराता है। बूट, बेल्ट और तमाम पहने की चोजों को अप-टू-डेट बनाता है। फौज की भाषा में कहा जाता है कि उसको "नम्बर वन" ड्रेस पहनना पड़ता है।

सिविल का—यह आम रिवाज है कि नौकरी देने से पहले सबों का इन्टरव्यू लिया जाता है। इन्टरव्यू में

Gossner Mission

जवान अपने तमाम सर्टोफिकेट और टेम्टीमोनियल्स अपनी कविलियन का रूप रेखा देने के लिए ले जाता है। सर्टोफिकेट सही हो या पैसे से मोल लिए गये हों। इन्टरव्यू में जाने से पहले अपनी ड्रेस को "Fit for interview", बनाता है। नहाना-धोवाना और तमाम मुमकिन सवालों के जवाब से परिचित होना चाहता है। सब प्रकार का discipline जो वहां लागू हो जानने का प्रयास करता है। सब का ध्यान रहता है कि इन्टरव्यू में अगर निकल जांए तो नौकरी मिल जाएगी और परिवार का पालन पोषण अच्छी तरह हो सकेगा।

मसीहियों का जोवन इन्टरव्यू से भरा हुआ है। सुबह-शाम हम लोगों का अपने परमेश्वर पिता से, प्रभु यीशु को मध्यस्थ मान कर इन्टरव्यू होते रहते हैं और सप्ताह में एक बार रविवार को सम्मिलित इन्टरव्यू गिर्जा घर में कराते हैं। परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा मिलना व्यक्ति-गत इन्टरव्यू है। गिर्जा घर के सम्मिलित इन्टरव्यू के लिए हम क्या तैयारी करते हैं ?

अ) इन्टरव्यू से पहले स्नान करना (खास कर शार्दियों में) भी नहीं चाहते।

ब) बिना सर्टीफिकेट और टेस्टीमोनियल्स के साथ हाजिर होने को तैयार हो जाते हैं।

स) मुमकिन सवाल-जवाबों से परिचित होना नहीं चाहते हैं।

द) पाठ-वचन पढ़ने और अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं समझते।

परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोग इस्राएलियों का सब से पहला इन्टरव्यू सीनै पर्वत पर लिया और अपने दास मुसा के जरिये इन्टरव्यू से पहले विशेष आदेश उनको सुनाता है कि:—

i) पहले अपने अपने वस्त्र धोओ;

ii) तीसरे दिन तक तैयार हो रहो;

iii) स्त्री के पास मत जाओ (यह आदेश शादी-सुदा लोगों के लिए था) निर्ग १९:१४-१५

यह आश्चर्य की बात है कि जिस परमेश्वर ने हम लोगों को बनाया, पालता पोषता और हमारे जीवन की रक्षा करता है उससे हम बिना तैयारी के इन्टरव्यू होते हैं लेकिन इन्सान के सामने जब जाते तो कई सवालों के उत्तर ठीक कर लेते हैं।

एक बार जब हम किसी समस्या का समाधान परमेश्वर से करा लेते हैं उसको बदलने का प्रयास न करें क्योंकि परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता (गलतियों ६:७। और परमेश्वर से कभी ऐसी प्रार्थना नहीं करते कि 'हे पिता बीते साल की प्रार्थना को अब केन्सेल समझें क्योंकि अब हम वैसा नहीं करने चाहते"।

परमेश्वर के साथ का इन्टरव्यू को हम ज्यादा महत्व दें जिस्ते इन्टरव्यू से जो लाभ हम उठाना चाहते वह हमें सेंत मेंत मिल सके।

> Calvary is the proof that sin troubled God; has it troubled you ?

कोरोवोरेटिभ भोट

मई महीने के घरबन्धु के कलीसिया समाचार शीर्षक में बतलाया गया है कि अंचल समितियों की सभा १४—१५ मार्च को बुलाई गई जिसमें समर्थक (कोरोबोरेटिभ) वोट पर विचार किया गया पर सब एक मत नहीं हो सके। उड़िसा और आसाम अंचलों ने नाकार्मक वोट दिया जिस कारण कोई समाधान नहीं होने पाया। मेरा विश्वास है कि कलीशा के ९९% भाई बहन नहीं जानते हैं कि यह कोरोबोरेटिभ वोट किस चिड़ियां का नाम है। यह अधिकार कलीसिया की नियमावली के आर्टिकल ४, भाग २ के सबक्लॉज ६ (d) तथा आर्टिकल १७ के दूसरे परिच्छेद में पाई जाती है। आर्टिकल १७ अंग्रेजी में इस प्रकार हैं :—

Gossner Mission

An Anchal being a self-contained and in all internal matters a self governing organisational unit of the church, will enjoy independence. Only when it gives its corroborative vote of acceptance of any legislation proposed by the Kendriye Salahkari Sabha will such a proposal become effective in the Anchal. In this way the communities represented in the Anchal will be protected from any action of the K. S. S. which might adversely affect their interest.

यह साफ है कि यह नियम इस लिये बनाया गया है कि कलीशा में रहने वाले भिन्न २ जातियों को इन्टरेस्ट की रक्षा हो सके। इसके सिवाय इस नियम का और कोई उद्देश्य नहीं है। इस नियम को कोई अंचल तभी लागू कर सकतो है जब उस अंचल के रहने वाले किसी जाति के इन्टरेस्ट पर कोई बाधा हो।

यह कोरोबोरेटिभ भोट क्या है? यह अंचलों को दिया गया एक तरह का वीटो पावर है। यू० एन० ओ० के सिक्युरिटी कौन्सिल के सदस्यों को यह पावर दिया गया है। यह अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट मि० आइसेनहवर का देन है। यह अच्छा भो है। यदि यह पावर सिक्युरिटी के सदस्यों को हासिल न होती तो यह वर्ल्ड ऑरगेनिजेशन कब का छिन्न भिन्न होकर खतम हो गई होती। इस ऑरगेनिजेशन में दुनिया के भिन्न २ स्वतंत्र सोभरेन स्टेटस सामिल हैं। बहुत से देश तो बिलकुल नये हैं, बहुत छोटे २ देश हैं। दूसरे तरफ दुनिया में केवल पांच छ. ही ऐसे देश हैं जो विग पावरस में गिने जाते हैं। वर्ल्ड ऑरगेनिजेशन में इस तरह के नये, छोटे और अनडेभेलोपड देशों की संख्या बहुत है। यदि वीटो पावर अमेरिका तथा रूस ऐसे शक्तिशाली देशों को न रहती तो इन छोटे छोटे देशों के सामुहिक विचार को इन बड़े देशों को माननी पड़ती जो इन बडे देशों के लिये बहुधा बिलकुल अव्यवहारिक होती। उस विचार से यह वीटो पावर अच्छी है।

हमारी गोस्सनर कलीसिया एक संगठित कलिशा है और अंचल कलीशा का एक इकाई है न कि कोई स्वतंत्र कलीशा। यदि अंचल स्वतंत्र कलोशा होती तब अंचल का यह कोरोबोरेटिभ भोट का अधिकार न्याय संगत होता। उड़िसा और आसाम अंचलों का कौन सा ऐसा सिविल राईटस व बपौनी अधिकार खतरे में पड़ गया जो इस विशेष अधिकार को उन्होंने प्रयोग में लाया। कलीशा एक धार्मिक संस्था है न कि कोई राज्यनैतिक संस्था। इस बात को मानना चाहिये कि १९६० की नियमावली एक्सपेरिमेन्टल वेसिस में दिया गया है, १९६० से आज तक को अवधि में कलीसिया को प्रयास अनुभव हो गया है कि नियामवली के कौन २ नियम मण्डली के लाभ के लिए है और कौन गलत या अव्यवहारिक है। जो २ गलत है उसको हमको हटा देना है। हमारे भारत का संविधान इने गिने बुद्धिमान राज्यनैतिकों ने बनाया। क्या आप जानते हैं इसमें आज तक कितने संशोधन हो चुके हैं?

धार्मिक समस्याओं के शासन के लि कोई लम्बा चौड़ा तथा जटिल नियमावली नहीं चाहिये हमारी नियमावली नेचरल लॉ या कहिये डिभाइन लॉ' पर आधारित एक साधारण नियमावली होनी चाहिए जिस्ते कलीशा के अनेक भिन्न २ जातियां जिनकी संख्या और संस्कृति एक दूसरे से भिन्न है' कलीशा की तमाम बातों में बराबर का हकदार हो सकें।

उसी घरबन्धु में बताई गई है कि पांच महोने के अन्दर कलीशा में शान्ति एवं एकत लाने के लिये एक नया संविधान बनाया जायगा। मैं नहीं समझ सकता हूं कि अचंलों के इस विशेष अधिकार को बिना हटाये, एक संविधान कैसे बनायी ज सकतो है। इसके पहिले भी नियमावली बनाये गये जिसमें सुना जाता है कि कई हजार रुपैया खर्च किया गया परन्तु अंचलों के इसी विशेष अधिकार के कारण सब व्यर्थ हो गया। क्या इस बार भी वही गलती नहीं हो रहो है?

सी. आर. एस. लकड़ा
ग्राम-चेटेर
पो. गुमला
जि. रांची।

घरबन्धु, जुलाई १९७४

Gossner Mission

धर्मशास्त्र से प्रश्न और उत्तर

P. Minz·
G. E. L. C. CHALHO.
P. O. KAIRO.
RANCHI

१ बैबल की रचना क्यों हुई। २ तिमोथी ३:१६
२ मनुष्य का स्वभाव कैसी है। रोमी ३:२३, ५:१२
३ परमेश्वर किनको बुलाता है। मत्ती ११:२८, निग. ३:५
४ पाप की मजूरी क्या है। रोमी ६:२३
५ शरीर के कौन कौन काम हैं। गलाती ५:१९-२१
६ आत्मा का क्या क्या फल है। गलाती ५:२२-२३
७ परमेश्वर ने किनको प्रेम किया — योहन ३:१६
८ यीशु किसके लिये जगत में आया — लूक १९:१०
९ जगत में आने के पहले यीशु क्या था, योहन १:१
१० परमेश्वर कैसा था और मनुष्य के लिये क्या बना, कोरिन्थ ८:९
११ आत्मा क्या कहता है — रोमी ८:१६
१२ पवित्रात्मा क्या सिखलाता है। योहन १६:१३-१५
१३ परमेश्वर ने अंधकार से क्या कहा — उत्पति १:३
१४ यीशु ने क्या कहा — योहन १४:६
१५ आत्मा किसका है। प्रे० क्रि० १६:७
१६ यीशु काल में परिवर्तनशील है या नहीं, इब्रानी १३:८
१७ परमेश्वर अलफा और ओमिगा कैसे हैं। प्र० वा. १:८
१८ आशा विश्वास किसके आधार पर है १ कोरिन्थ १३:१३
१९ हम परमेश्वर को किस रूप में देखेंगे, १ यो० ३:२
२० परमेश्वर का मुंह कौन कौन देखेंगे, प्र० वा० २२:३-४
२१ प्रभु क्या है। २ कोरिन्थ ३:१७,
२२ मृतकों में पहला पुनरुत्थान कौन हुए १ कोरि. १५:२०
२३ मृतक किसकी शक्ति से जिलाये जाते हैं १ पि. ३:१८
२४ मनुष्य किसके द्वारा जीवित हैं। रोमी १:४
२५ आत्मा और शरीर किसके विरोध में है। गलाति ५:१७
२६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण के लिये हानि उठाए तो क्या लाभ' मत्ती १६:२६
उत्तर — धनवान + लाजर की जीवनी,
२७ मसीह कब और किसके लिये मरा, रोमी ५:८
२८ दया क्या है। विलाप ३:३३
२९ मसीही लड़ाई किस विषय पर आधारित है। १ तिमोथी ६:१२
३० मेरा चरवाहा कौन है। भजन २३:१ –

गोस्सनर कलीसिया को आत्मा की पुकार

(आवाज)

सर्व विदित है कि हमारी गोस्सनर कलीसिया आत्म-शासित कलीसिया है। इसकी घोषणा यह है कि हम अपनी मण्डली की कार्यनिर्वाह के लिए आत्मशासन का कठिन भार अपने उपर लेने को तैयार हैं। इस घोषणा में गोस्सनर कलीसिया के बच्चे से लेकर बुढ़ों तक का आवाज सम्मिलित है। कलीसिया प्रेम की बारी है। इसमें हम सभी रोपे गये हैं। इस प्रेम की बारी को हरा-भरा रखने इसकी शोभा को बढ़ाने तथा फलवन्त वृक्ष तैयार करने के लिये कलीसिया के एक एक भाई-बहन बच्चे और बुढ़ों का सहयोग आवश्यक है। हर एक मसीही भाई बहन बच्चे और बूढ़े स्वंय ही बाइबल हैं। इस बाइबल को अनपढ़ लोग भी पढ़ सकते हैं। ईश्वर ने जगत के

Gossner Mission

पापी मनुष्यों को इतना प्यार किया कि उसने अपना एकलौटा पुत्र को हम पापी मनुष्यों के पाप क्षमा जीवन और त्राण के निमित भेजा प्रभु ने जगत के एक। एक पापी मनुष्य के उद्धार का काम क्रूस पर पुरा किया है। उद्धार पाने के लिए जीवित मसीह पर विश्वास करना आवश्यक है। जो इस उद्धार को ग्रहण करना नहीं चाहते और कलीसिया को छिन्न-भिन्न करने में मन लगाते हैं, यदि वे मन न फिराएँ तो उनके लिए दण्ड की आज्ञा हो चुकी है। क्योंकि निसन्देह परमेश्वर प्रेम है साथ ही हमारा परमेश्वर भष्म करने वाली आग है इब्रानी १२:२९। पाप क्षमा के लिए किसी संस्था में अंश दान देना, या बहुत बड़ा कार्य करना अथवा पाद्री प्रचारक बनकर ही सेवा कार्य में लग जाना मुक्ति पाए हुए लोगों का निशान कदापि नहीं हो सकता है। यह मनुष्य की इच्छा नहीं पर ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। धोखा न खाएँ परमेश्वर हमको किसी बड़ा पद, नाम धन-दौलत, ज्ञान, डिग्री एवं अधिकार के द्वारा स्वर्ग राज्य में नहीं बुलाता है। वह नया मन चाहता है। बहुधा मनुष्य अपने कामों को दो भागों में बांटता है। वह कहता है यह काम परमेश्वर की महिमा के लिए है, और वह काम मेरा अपना है, मैं इसे अपने लाभ के लिए करता हूँ। वे धन जो धर्मप्रचार का काम करते हैं, वे परमेश्वर के सेवक कहलाते हैं। परन्तु वे जो संसार में नाना प्रकार की सेवाओं में लगे हैं; समय था संसार के काम में लगे हुए समझे जाते हैं। पौलुस प्रेरित कहता है पृथ्वी पर सब काम परमेश्वर की महिमा के लिये है। परन्तु यदि हम सेवा का उद्देश्य यह रखें कि यह मेरे ही लाभ के लिए हो तो हम सेवा का महत्व खो देते हैं, और हमारा पेट हमारा ईश्वर बन जाता है फिलिपी ३:१९। परमेश्वर सत्य है उसकी सत्यता प्रकट है। उचित नहीं कि हम सत्य के विषय बाद विवाद करें और अपनी बुद्धि तथा ज्ञान के द्वारा सत्य को असत्य ठहराने का यत्न करें। जैसा कि बहुत लोग करते आये हैं और स्वतंत्रता के मार्ग से भटक कर दूर चले गये हैं। वह सत्य का विरोध कर सकता है और करता भी है। परन्तु वह सत्य को असत्य ठहरा नहीं सकता। वह यदि हम पर यह सिद्ध कर दे कि सूर्य में बड़े-बड़े गढ्ढे बन गये हैं और वह एक दिन प्रकाश न देगा। फिर भी वह सूर्य के प्रकाश में न तो कुछ बढ़ा सकता है और न कुछ घटा सकता है। वर्त्तमान काल में मनुष्य शिक्षा की खोज में तो हैं परन्तु उनकी खोज जीवन के विषय में नहीं है। आज संसार में भय अशांति और अविश्वास बढ़ता जा रहा है। इसका कारण मसीही लोग ही हैं, जो मसीही कहलाते हुए भी मसीह की शिक्षानुसार नहीं चलते। कितने लोग यह कहते हैं कि प्रभु यीशु की शिक्षा उतम तो है, पर उसके अनुसार चलना कठिन है। यह उनलोगों का कहना है जो प्रभु की शिक्षा अनुसार चलना नहीं चाहते। प्रेम-प्रेम कहना प्रेम का प्रचार करना हर एतवार गिरजा में शामिल होना प्रेम का भजन गाना किसी को प्रेमी नही बनाता है। पृथ्वी पर की मंडली नही पर स्वर्गीय मंडली में प्रवेश करना हमारे लिए मुख्य बात है। आज कल मसीही मंडलियाँ प्रेम से खाली है कलीसिया में मसीहियत की घटी दिखती है। कलीसिया में फूट होने का सम्भावना है मुन्ड़ा ऊरांव का भेद-भाव जो अगुओं में भी है। इस सम्बन्ध में मुझे इतना ही कहना है कि कलीसिया का सिर प्रभु यीशु मसीह आप ही है। वह सारे जात के लोगों को अपने पास बुलाता है। कलीसिया मुन्डा ऊरांव में से किसी का नही है और न हो सकता है। यह मेरा विचार है कि कलीसिया के अगुवों को कहना है कि वे आत्मा की आवाज (पुकार) को जानें और उसके अनुसार कदम बढ़ाएँ ताकि हमारे द्वारा और हमारी हर संस्था द्वारा ईश्वर की महिमा प्रगट हो सके। अन्यथा ईश्वर का बचन यों कहता है। सो मन फिरा नही तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा प्रकाशित वाक्य २:१६ प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे।

॥ क्रोध से बढ़कर पाप नही ॥
॥ क्षमा से बढ़ कर तप नही ॥

सी॰ आर॰ होरो (शिक्षक)
लाली

—:०:—

Gossner Mission

जीवन साथी-एक समस्या ?

सुशील कुमार बरला

मेरे मन में कई बार ये प्रश्न उठते हैं क्या जीवन साथी ढूँढ़ना एक समस्या है? आज के युवा वर्ग में यह सारे प्रश्न बहुधा कई मोड़ ले चुका है। कई तो तलाश में निराश होकर शादी की बात तक करना पसन्द नहीं करते। क्या सचमुच हमारे ख्रीस्तीय परिवार में भी ये समस्यायें हैं? फिर शुरू होती है नारी-पुरूष संबंधों की एक अटूट श्रृंखला और अधिकारों के उछाड़ पछाड़ की लम्बी कहानी। इस कहानी ने समय-समय पर अनेक मोड़ लिये हैं। मैं कई ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनको लड़के और लड़की दोनों की तलाश है। बहुधा मैंने देखा है हमारे ख्रीस्तीय परिवार में लड़के जितने सजग नहीं हैं उतनी ही लड़कियां ज्यादे समझदार और दूरदर्शी हो गयी हैं। जहाँ एक ओर हमारे युवक अपने जीवन का लक्ष्य एक सीमित साधन पर ही निर्वाह करना समझते हैं वहां हमारी युवातियां तीव्र बुद्धि का उपयोग करती हैं। मुझे रांची शहर में ऐसे कई युवा युवातियों से मिलने का मौका मिला है। जब कभी भी मैंने शादी के सिलसिले में प्रश्न किया है. बहुत संक्षिप्त सा उत्तर मिलता है—अबतक कोई लड़की ही नहीं देखी है। यही बात युवक वर्ग से होता है—रिजेक्ट होता जा रहा हूं। यह सचमुच कभी कभी हास्यस्पद लगता है लेकिन इसे गम्भीर रूप से विचार किया जाय तो बहुत बड़ी समस्या है। मैं उन कई लोगों को जानता हूं विशेषत: लड़कियों को जो गैर ख्रीस्तीय लड़कों के साथ ही मित्रता रखना पसन्द करती हैं। कई तो शादी तक कर लेती हैं फिर कितनों को वैवाहिक सुख मिल पाता है या मित्रता बढ़ाने का अच्छा प्रतिफल मिलता है यह कहना बहुत कठिन है बल्कि ख्रीस्तीय समाज से दूर जाकर सब कुछ खो देती हैं। आये दिन इस तरह की घटनाओं का सिलसिला चलता आ रहा है। हमारे युवकों में क्या खामियां हैं,क्या कठिनाईयां हैं, सचमुच इसका अध्ययन आवश्यक है।

मुझे एक ख्रीस्तीय परिवार में सम्पर्क स्थापित करने का मौका मिला। मैंने बातों के सिलसिले में अभिभावक से पूछा—आपके बेटे—बेटियों को शादी कब करा रहे हैं? उत्तर मिला—बेटों को कोई लड़की देना नहीं चाहता चूंकि ये अच्छे काम नहीं कर रहें हैं इनकी तनखाह भी कम मिलती है। फिर बेटियाँ ग्रेजुएट हैं इनके लिए गजेटेड आफिसर चाहिये या अच्छा कमाने वाला हो। मुझे इनका उत्तर संतुष्टजनक नहीं मिला, फिर भी मैंने सोचा क्या सचमुच ये सभी गुण लड़के या लड़कियों में होना ही चाहिए?

आखिर क्या कारण हो सकते हैं? हमारे युवक युवतियां किस ओर जा रहे हैं, क्या इसका सही अन्दाजा लगाने का हमने कोशिश किया है। सच तो यह है कि आज के आधुनिक युग में हमारे युवक युवतियां कई अन्य चीजों से प्रभावित हैं और इसका सबसे ज्यादा असर सिनेमा का प्रभाव है। सिनेमा से आज का युवा वर्ग प्रभावित होकर नकल की चरम सीमा भी पार कर चुके है। घर की आर्थिक स्थिति चाहे जैसी है परिवार में सुख चैन हो या न हो लेकिन युवा वर्ग बाहरी वातावरण से प्रभावित होकर आज अपने समाज, अपनी आर्थिक स्थिति यहां तक कि धार्मिक आस्था को भी अपने से अलग बनाये रखे हैं। लड़कों में विशेषता स्कूल के जीवन से लेकर कालेज तक के अनुभव तक पारिवारिक जिम्मेदारी कम महसूस करते पाये गये हैं। फलत: उन्हें आधुनिकीकरण की लपेट में आकर जीवन साथी की तलाश करने लगते हैं।

आज क युवा वर्ग जीवन साथी का सही चुनाव नहीं कर पाता है इसके अनेक कारण हो सकते हैं। हर लड़का या लड़की अपने लायक जीवन साथी उसे ही समझता है जो आज के आधुनिकरण में रंगा हो। इसके अलावे हर योग्यता से दक्ष हो।

मेरी मुलाकात एक युवक से होती है मैंने उससे कुछ सवाल पूछा —शादी के लिए आपको कैसी लड़की चाहिए? युवक कुछ झेंप सा गया लेकिन कहने लगा —

Gossner Mission

देखिये न ए० जी० ऑफिस में साधारण क्लर्क हूं तनखाह भी इतनी सीमित कि आज की लड़कियों के लिये शायद मैं शादी के काबिल नहीं हूं। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि युवक काफी निराश हो चुका है। फिर मैं सोचने लगता हूं युवक अच्छा पढ़ा लिखा है, नौकरी भी जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त है फिर क्या कारण है ? मेरे मन में तरह तरह के प्रश्न उठते हैं — क्या हमारे समाज की युवतियां युवकों से कुछ अधिक आकांक्षा रखती है ? प्राय: हमारे समाज में उन युवकों की संख्या कहीं अधिक है जिनकी आर्थिक स्थिति सामान्य है, इसके अलावे उनपर कई जिम्मेवारियां अनायास आ जाती हैं। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त नौकरी की तलाश करता है — लेकिन कितने लोगों को अच्छी नौकरी मिल जाती है ? शायद नहीं के बराबर ही कहा जाना चाहिए। यदि मिलती भी है तो साधारण क्लर्की की संख्या ही अधिकांशत: देखी जाती है। गजेटेड आफिसर कुछ तो अवश्य हैं लेकिन नगन्य। इसी मध्यम वर्गीय समाज के युवकों को शायद कहीं अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अन्तत: अपने लायक जीवन साथी समझने वे किसी भी लड़की से शादी करने पर मजबूर हो जाते हैं मुझे ऐसा लगता है यह न्याय संगत नहीं है। और फिर हमारी युवतियां भी अपने लायक जीवन साथी नहीं ढूंढ़ पातीं। हमारे समाज की युवतियों से अक्सर मुझे मिलने और विचार जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मैंने एक लड़की से पूछा जो दिखने में काफी सुन्दर है अच्छी पढ़ी-लिखी है किसी कार्यालय में कार्यरत है। मैंने अपने पुराने प्रश्न को फिर ज्यों का त्यों रख दिया युवती कुछ शर्मायी लेकिन निर्भीक होकर कहने लगी — मैंने इसलिये अबतक शादी नहीं की चूंकि मुझे मेरी पसन्द के लायक योग्य वर नहीं मिल सका। मैं जिसे पसन्द करती हूं उसमें कुछ खराबियां अवश्य मिलती हैं। देखिये न, अक्सर हमारे समाज में युवक शराब पीते हैं। चाहे वह इन्जिनीयर हो, डाक्टर हो या गजेटेड आफिसर हो, लेकिन शराब अवश्य पीता है। मैंने हंसते हुए कहा — देवी जी फिर आप लोगों की पसन्द ही तो उंचे पद पर काम करने वाले युवक ही हैं। फिर यह दलील देना कि हर युवक पीता है शायद गलत होगा। हाँ, मैंने भी अक्सर पाया है अधिकांश युवक इसके शिकार हैं। जो युवक पीता नहीं है कुछ आदर्श रखता है तो उसके पास आर्थिक संकट है जो आज की आधुनिक लड़की ये शायद शादी नहीं कर पाता है।

क्या हमारे समाज में, हमारे कलोसिया में युवा वर्गों के लिए सचमुच यह समस्या है ? यदि है, तो इसका समाधान क्या होना चाहिये ? हमारे कलीसियाई स्तर पर। भी हमारे बुजुर्ग वर्गों को इस पर ध्यान देना जरूरी है हमारे युवा-युवतियों आज हमारे समाज से अलग से प्रतीत होते हैं इसका नतीजा यह होता है कि समय रहते वे अपने में जीवन साथी का चयन करते करते मानसिक संतुलन खो बैठते हैं फलत. कितनों का जीवन नष्ट होता जा रहा है।

क्या यह अच्छा नहीं होता कि युवा वर्ग एक दूसरे के विचार को खूब सोच विचार कर उसे दौलत या शान शौकत की कौसटी में न तौलकर जीवन भर एक अच्छा मित्र अथवा एक आदर्श साथी का चयन कर जीवन बितायें ? जीवन के आदर्श कहीं ऊँचे हैं जो आज के आधुनिक युवा युवतियां सोचते हैं। उन आदर्शों को अपनाया जाना चाहिए जो सचमुच जीवन के अन्त तक एक दूसरे को समझने का अवसर दे।

मुझे ऐसा लगता है, यह कोई समस्या नहीं है फिर आज यह समस्या का विषय क्यों है।

"चिकित्सा समाचार"

पुरनापानी डिस्पेन्सरी का जन्म २ नो० १९७० ई० में हुआ था। उद्घाटन समारोह तत्कालीन उड़ीसा अंचल अध्यक्ष रेभ डा० एम० बागे के कर कमलों सुशोभित हुआ था। एक छोटे से कमरे में अनेक असुविधाओं के होते हुए भी सेवा कार्य सिस्टर मिस मर्टिन की अगुवाई में सफलता पूर्वक होते आ रही थी। इसकी सारी

Gossner Mission

जिम्मेदारी एक दक्ष्य नर्स सुश्री एलिजवेथ प्रधान पर है। असुविधाओं को देखकर हलन गुड़िया के परिवारों के हृदय को ईश्वर ने चलाया और गृह निर्माण निमित इन्होंने सहर्ष एक जमीन दान में दिया। इनके पिता नुवास एक प्रचारक थे। वे दवा और प्रार्थना द्वारा रोगियों की सेवा करते थे। ईश्वर के प्रबन्ध अगम्य हैं। कौन जानता था कि उसके जमीन में एक दिन उसकी चिकित्सालय का रूप लेगा।

आनन्द और धन्यवाद का विषय है कि अब नौ कमरे वाला एक सुन्दर मकान बन कर तैयार हो गया। १० मार्च १९७४ ई० वह महान दिवस कलीसा के इतिहास में चिरस्मरणीय होगा जिस पुण्य तिथि को पूज्य अतिथि मिशन डाईरेक्टर रेभ पास्टर सीवर्ग ने इस नवनिर्मित मकान को हजारों लोगों के भीड़ में प्रभु के काम के लिये खोला। श्रीमती फ्रिढेरेचो वेलिन की उपस्थिति से भाई वहनों को अपार हर्ष हुआ जिनके कठिन परिश्रम स्वरुप यह घर बन सका। ये अपनी मडलियों और समाजों से धन राशि इकट्ठा करती थी निश्चय ही धन्यवाद के पात्री हैं। ईश्वर की दया और अनुग्रह बना रहे कि इस सेवा केन्द्र द्वारा लाखों को जान और आत्मा बचायी जावे। इस शुभ अवसर पर उड़ीसा अंचल अध्यक्ष रेभ मर्टिन जोजोवार सपत्नी, इलाका चेयरमेन पाद्रो थेयोदोर डुंगडुंग और पाद्री सेम लकड़ा उपस्थित थे। श्रीमती सेतेंग जोजोवार दो भाषाओ के बीच आदान प्रदान कर विचारों को समझने में मदद की। हम उनके हार्दिक अभारी हैं। इस खुशी में रात को एक फ्री शो सिनेमा "राजाओं का राजा" भी दिखाया गया।

फिलहाल इसमें आठ आठ रोगी शय्या है। रविवार को चिकित्सालय बन्द रहता है। अन्यदिन ७ बजे सुबह से १२ बजे और अपराह्न ४ बजे से ६ बजे संध्या तक खुला रहता है। प्रति मंगलवार को सिस्टर मिस् मार्टिन चिकित्सा सलाह के लिए आती हैं। प्रति सप्ताह सैकड़ों चिकित्सा पाकर राहत पाते हैं।

(एन० हेमरोम)
प्रबन्धक

NAMES OF THE TWELVE DISCIPLES

The names of the disciples of our Lord Jesus Christ can be easily remembered by the following rhyme:—

This is the way disciples run;
PETER and ANDREW, JAMES and JOHN
PHILIP and BARTHOLOMEW;
THOMAS next and MATTHEW too,
JAMES "the less" and JUDAS "the greater"
SIMON the Zealot and JUDAS the traitor.

8 May 74

Gossner Mission

निश्चय

(क० सबन मार्टिन तोपनो "प्रशान्त" रांचो।)

"यदि हम जातिवाद को कलीसिया से खत्म न करें तो जातिवाद हमारे आत्मिक जीवन को निश्चय खत्म करेगा।"

यह कथन निश्चय सत्य है। सर्वव्यापी सत्य है। सत्य कभी भो नहीं छिपती। किसी ने कहा है–

'सुगन्ध नहीं निकल सकती बनावटी कागजों के फूल से, सच्चाई नहीं छिप सकती इन्सानियत के जबान से।" इस युग में आह्वान प्रत्येक क्षेत्र में भरे पड़े हैं। कौन किसकी सुनता ? अपने लिए, गैरों के लिए, या यों कहें राज्य, समाज संस्था एवं कलीसिया के लिए आह्वान मौके वे मौके पर आती रहती है। किन्तु कौन किसकी सुनता ?

अधिकार क्यों ? कर्त्तव्य कहाँ ? तो न्याय कैसा ? इन सवालों में मानवता की आवाज उठती है उठती है और विकराल रूप धारण कर धरती की धरा को फाड़ कर निश्चय अन्दर प्रवेश करती है। अगर यह नहीं तो निश्चय समुद्र की लहरों में या तो अग्नि कोण से आती हुई बावनडर में निश्चय आह्वान विलीन हो जाती क्यों कौन किसकी सुनता ?

किन्तु आह्वान का उठना अनिवार्य है। क्योंकि परमेश्वर पिता ने मानव को आत्मा दिया है। अत: आत्मा अपनी शांति चाहती है। परमेश्वर प्रेम है। अतएव आत्मा का संबध प्रेम से है। प्रेम की अभाव में आत्मा को शांति नहीं मिलती। वस्तुत: परमेश्वर से दूर भटकने में निश्चय हमें अशांति मिलती है। जब अशांति कलीसिया में मौजूद है तो निश्चय प्रेम की अभावता हममें है, फलस्वरूप पाप का या शैतान का दास हम बनते जाते। क्योंकि शैतान की खास मनसा है हमारे मध्य जातिवाद की जड़ को मजबूत बनाए रखना। ताकि इसके द्वारा गुटबन्दी एवं अशांति का राज प्रबल रहे।

किसी न कहा है—"नींद न जाने टूटी खाट, भूख न जाने बासी भात, प्रेम न जाने जात-पात।" यह कथन निश्चय सत्य है। क्योंकि हमारे इस भौतिक देह के लिए भोजन, नींद एवं प्रेम आवश्यक है इन विषयों के अउपलब्धि में देह को वृति या प्यास इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उक्त कथन को समर्थन करने में निश्चय सत्यता है।

मसीही प्रेम में भी किसी के जात पात से तालुक नहीं रहता है। चूँकि मसीह ने सब जात के लोगों के एवज अपने को बलिदान कर दिया। सभी जात में मसीही प्रेम निश्चय हप पा सकते हैं। सभों से प्रेम करने के हेतु मसीह ने अपने लोहू से हमें सींचा है। वस्तुत: मसीह का लोहू हमारे सब पापों को धोता है। मसीह का प्रेम ही परमेश्वर पिता के प्रेम में निश्चय हमें बांधता है।

यदि कोई भो भले मानव जातीय प्रेम को श्रेष्ठ मान कर उस आधार से मसीही प्रेम को कलोसिया में स्थापित करें तो ऐसे स्थापक ने मसीह के प्रेम को अभो तक निश्चय नहीं पहचाना है।

मसीह किसी खास जाति का राजा नहीं है पर सारे जगत के सभी जातियों के राजाओं का राजा है। निश्चय पिलातुस ने क्रूस पर लिखा—"यीशु नासरी यहुदियों का राजा।" उसने मसीह को नहीं पहचाना। फलत: क्रूस पर उसे लटकाया। अगर मुंडा जात के लोग यह कहें कि गोस्सनर कलीसिया में मुंडाओं का अंचल है तथा मुंडा जाति बहुमत के अंचल का कलीसिया मानते तो क्रूस पर यह लिखने में निश्चय हिम्मत करते— योशु मसीह मुंडाओं के अंचल का राजा।"

इसी तरह ही उरांव जात के लोग गोस्सनर कलीसिया को उरांवों के अंचल का कलीसिया तथा खड़िया जात के लोग भी खड़ियाओं के अंचल का समझते तो क्रूस पर लिखने से निश्चय भूल नहीं करते कि—'यीशु मसीह उराँवों या खड़ियाओं के अंचल का राजा।"

अत: यहाँ पर निश्चय यह सवाल उठता है कि-खास जातियों के अंचल का कलीसिया है या कि गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान कलीसिया का अंचल है ? (जिस

Gossner Mission

अंचल में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं) अंचल का शासन कलीसिया पर है या कि कलोसिया का शासन अंचल पर है ? जी० ई० एल० कलोसिया अंचलों में विभक्त है । जिसमें मुंडा कन्डीदत्त या पाद्री तथा उराँव कन्डीदत्त या पाद्रो चाहे खड़िया पाद्री या कन्डीदत्त एक अंचल से दूसरे अंचल में कार्य करने से यदि असमर्थ है तो निश्चय जातीयता की सांकल से वह जकड़ा हुआ है ।

"यदि ईश्वरीय दान या भक्ति का धन को कलीसिया के प्रति सदुपयोग में न लावें तो अभक्ति के धन से निश्चय हमें अभिशाप मिलेगी ।" अभक्ति का धन प्राप्त करके ही यहुदा ईस्करीयोती ने आत्महत्या कर लिया । अभक्ति के धन से हो निश्चय हनन्याह और सफीरा दोनों मर मिट गये । अत: रूपये की लोभ पाप की जड़ है ।

जी० ई० एल० कलीसिया को ओटोनोमी (आत्मशासन) के लिए परमेश्वर पिता की ओर से ही दान दिया गया है। अत: यह आत्मपोषण भी है । आत्मपोषण की पुष्टि के लिये कलीसिया में बारह प्रकार के दान, गिर्जादान, धन्यवाद, मंड़ली पैसा, प्रभुप्रीत' स्नान, प्रभुभोज, शादी, धानबुनी, नयाखानी, कटनी' घड़ा तथा राज्यवृद्धि दान दिए जाते है। इसके अलावे कलीसिया में कई जगह जायदाद हैं, जो प्रभु का राज्य प्रसार तथा महिमा के निमित्त उस वक्त दिये गये जिस समय हम गरीब, अनपढ़ तथा जंगली थे ।

ईश्वर की दया असीम है। अब हम मसीह के ज्योति में आकर अपने जीवन को ज्योतिर्मय बना रहे हैं । यदि अंचलों में अभक्ति के राज्य का प्रकटीकरण मौजूद हों तो ईश्वरीय आराधना धन तथा जायदाद दुरूपयोग के कारण ही निश्चय कलीसिया अशांति में डूबती है । अत: ईश्वर के नाम पर दिया हुआ धन तथा जायदाद जो कि ईश्वर के वचन प्रचार एवं सेवकाई कार्य के लिये आना चाहिए, अगर उसका दुरूपयोग किया जा रहा हो तो निश्चय जानिये कि अभिशाप के हम भागी होंगे। किन्तु परमेश्वर पिता का प्रेम तथा अनुग्रह प्रभु यीशु मसीह में होकर असीम है " उड़ाऊ पुत्र" के दृष्टान्त पर उसने यह दया और प्रेम प्रगट किया है । परमेश्वर पिता दया में बड़ा और क्रोध में धीमा है । अत: परमेश्वर पिता की महिमा के निमित्त जो धन हमें दान स्वरूप मिली है उसे सदुपयोग में लाते हुए कलीसिया में शांति एवं प्रेम का राज फैलावें ।

' यदि पद के कारण कलीसिया में भेदभाव पनपे तो उसके द्वारा ही निश्चय हमारी एकता खत्म हो जाएगी ।"

एसौ तथा याकूब दोनों भाइयों के बीच पद के लूटने तथा छल पर ही भेदभाव पनप गया तथा उनके बीच भ्रातृत्व की भावना एवं एकता खत्म हो गयी ।

कोई भी पाद्री या बुजुर्ग या लेमैन व्यक्ति धार्मिक क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करने के हेतु कई तरह की गन्दी शिकायतें एवं पम्पलेट तथा एक दूसरे की व्यक्तिगत बेइज्जति के लिए प्रचार करते हों या तो कई दलबन्दी कायम करते हों तो जानिये कि ऐसे मंडलियों एवं अंचलों में निश्चय अंधकार-मय जीवन मौजूद होंगे ।

अत: हमारी मसीही जीवन में उज्जवलता लाने के लिए अशांति, निराशा, बैरभाव, गुटबन्दी, अनुशासनहीनता, विधर्म, अभक्ति ऐसे दुर्गुण निश्चय यदि कलोसिया में हों तो हमें उन्हें निश्चय हटाना होगा । यही पुकार है । ताकि प्रभु यीशु मसीह की ओर से हमारे पिता परमेश्वर का प्रेम, अनुग्रह एवं आशीर्वाद सदा सर्वदा हम सभों पर बनी रहे ।

WANTED

Wanted a male christian graduate with good knowledge of English preferably B. Com., for a post of Business Manager. Applicant should have some experience in accountancy and other office works. He should also know typing. Pay according to experience. Apply to the Medical Superintendent, G. E. L. Church Hospital, P. O. Amgaon via : Barkot Dt. Sambalpur, Orissa, with all certificates and testimonials.

M. S. WALTER HORO
G. E. L. church. Hospital. Amgaon

Gossner Mission

गढ़ खटँगा धर्म्म मेला

T. J. Barla.

हटिया पेरिस के लिये गौरव की बात यह है कि यह पेरिस स्तर में ही "मिशन फिल्ड" खोल रखा है तथा कर्मचारी का वेतन यहाँ की महिला समिति देती है। इसका पहला मिशन फिल्ड "सुन्डिर मिशन फिल्ड" था। जब यह एक मण्डली के रूप में आया तब इसे पत्थलखुदवा पेरिस के सुपुर्द कर दिया गया, पर कर्मचारी का वेतन हटिया पेरिस ने ही दिसम्बर १९७३ तक दिया। पेरिस चेयर मैन पाद्री ओबेद टोप्पो ने गढ़ खटँगा के पाँच परिवार को १९६९ में ही बपतिस्मा दे रखा था। ये भाई-बहन आराधना के लिये इधर-उधर जाया करते थे। याने ये बिन रखवाले की भेड़ों की तरह ही रहे। अत: जब सुन्डिर मिशन फिल्ड विकसित होकर अन्य पेरिस के सेवकाई में दिया गया, तो हटिया पेरिस ने यह निर्णय किया कि इन्हीं भाई-बहनों की यथोचित सेवा की जावे। सिर्फ पाँच ही परिवार होने के कारण मण्डली रूप देनेमें कई कठिनाईयाँ थीं अत: इसे ही मिशन फिल्ड के लिये चुना गया और इसे १ली जनवरी १९७४ को पूरे हटिया पेरिस के सदस्यों तथा कई भाई-बहनों की उपस्थिति में उसी जगह जहाँ धर्म्म मेला हुआ, "मिशन फिल्ड" घोषित किया गया। एक प्रचारक को नियुक्ति भी हुई तथा प्रचारक के वेतन का भार फिर हटिया पेरिस के महिला समिति को दिया गया और अब तक समिति देती ही है। तब ही से हटिया पेरिस ने तय कर लिया था कि एक धर्म्म मेला का आयोजन होवे सिर्फ समय का ही इन्तजार था और वह समय आ ही गया— मई ५, १९७४ को बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर कई धर्म्म अगुवों को निमन्त्रित किया गया पर दु:ख है कई कारणों से निम्नलिखित सज्जन उपस्थित नहीं हो सके—डा० नि० मिंज और डा० सी० के० पॉल सिंह जो विशेष बैठकी में शामिल होने के लिये जर्मनी चले गये, तथा श्री मिरचु लाल भी नहीं आ सके। फिर भी धर्म्म मेला धूम–धाम ही के साथ मनाया गया जिसमें उपस्थित सज्जनों ने ये शुभ सन्देश दिया:—

(१) पाद्री पी० डी० सोरेंग–अपने अध्यक्षीय भाषण में प्र० व। २२:२० के आधार पर इस बात पर प्रकाश डाला कि प्रत्येक मसीही सही माने में सुसमाचार प्राप्त करे, उसके अनुसार आचरण कर सुसमाचार का प्रचार भी करे।

(२) पाद्री मार्टिन टेटे— १ पितर २:९-१० पढ़ कर इन्होंने बताया कि पहले हम भूले भटके थे पर अब मसीह में होकर हम (१) चुने हुए लोग पुरोहित और याजकीय समाज तथा (२) पवित्र राष्ट्र है। इस उद्धार की घोषणा अपने कामों के द्वारा करें। स्वपालित की भावना लेकर दान देने में आगे बढ़ें, दूसरों से प्राप्ति की आशा न करें तथा मण्डली के सब कामों में विश्वस्त होवें। स्वशासित की भावना से अब दूसरे के लगाम और चाबुक की प्रतिक्षा न करें।

(३) पाद्री सी० के० डी० कुजूर–(मार्क ८:२७-२९) अपने सन्देश में इन्होंने समझाते हुए कहा कि वास्तव में यीशु मसीह कौन है। हम अपने सुबचन तथा कामों के द्वारा अपने अगल-बगल के गैरमसीहियों को उपरोक्त सवाल का जवाब देवें।

बाईबल सोसाईटी के विषय बताते हुए उन्होंने इस सोसाईटी के जन्म तथा विकास पर तथा उद्देश्य और कार्य्यक्रम के लक्ष्य पर भी प्रकाश डाला।

(४) पाद्री ओबेद टोप्पो (यशायाह-३५-१-६) अपने सन्देश के शुरू में हटिया पेरिश तथा पेरिश के अन्दर के मिशन फिल्ड कार्य्य पर प्रकाश डाला। इस बात पर भी बल दिये कि सुसमाचार प्रचार किस तरह प्रभाव-शाली बनाया जा सकता है, तथा किस लगन से काम करना चाहिये। उन्होंने सुझाव दिया कि मिशन फिल्ड के उन्नति तथा विकास के लिये निम्नलिखित का होना आवश्यक है:–सुन्दर गिरजा घर, प्रचारक डेरा, तथा स्कूल।

(५) श्रीमती पी० मिंज (लूक ८:१-३) महिलाओं को विशेष रीति से सम्बोधित करते हुए उन्होंने बताया कि

Gossner Mission

महिलाओं का क्या स्थान है तथा किस तरह वे मसीहियों और कलीशा में काम कर सकती हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि बहने एक आदर्श परिवार तथा समाज में आपसी प्रेम का नमूना बनें। घड़ा दान देने के विषय भी प्रकाश डाली तथा उचित रीति से देने पर जोर दिया गया।

(६) श्री ई० बाड़ा—उपस्थित सभों को धन्यवाद देते हुए इस मिशन फिल्ड के विकाश के लिये शुभ कामना प्रगट किये। साथ ही यह बिचार भी व्यक्त किये कि इस तरह के शुभ कार्य्य भिन्न-भिन्न स्तरों में औरों को भी करना चाहिये।

इनके अलावे गान और भजन के द्वारा भी इस धर्म्म मेले का शोभा बढ़ाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री जस्टिन एक्का विशेष रीति से निमन्त्रित थे। सन्ध्या ६½ बजे से सु० स० प्रचार की ओर से 'राजाओं का राजा" नामक एक चलचित्र भी दिखाया गया। तदुपरान्त भजन होड़ का कार्य्य क्रम भी रखा गया तथा प्रार्थना के साथ विसर्जन किया गया।

घरबन्धु के लिए चन्द बातें

१ लेख, साफ एवं स्पष्ट लिखने की कृपा करें। हिज्जे पर विशेष ध्यान देते हुए; कामा, विराम आदि चिन्हों पर भी अवश्य ध्यान रखें।

२ आधुनिक हिन्दी पत्रिकाओं के समानान्तर शैली, रचना तथा शब्दों का उपयोग हो ताकि घरबन्धु के पाठकगण भी भाषा ज्ञान से लाभ उठावें।

उत्पादन विभाग
G. E. L. Church Press,
Ranchi.

ओटोनोमो

पाद्री० डा० एन० मिंज

"हम अपनी मंडली कार्य निर्वाह के लिए आत्म शासन का कठिन भार अपने उपर लेने को तैयार हैं।" उद्धृत वाक्य हमारी कलीसिया के विश्वासी पुरखों के ओटोनोमी घोषणा पत्र से लिया गया है। इस वाक्य के पहले उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि आत्म शासन के कठिन भार को "ईश्वर के महान अनुग्रह से" अपने उपर लिया। फिर उन्होंने यह भी विचार प्रकट किया कि "हमारी दयालू सरकार को पैतृक चिन्ता पर हमारा विश्वास है।" इससे साफ है कि पुरखों ने ओटोनोमी का कार्य ईश्वर के अनुग्रह की निश्चयता पाकर तथा उस समय की सरकार की सहानुभूति तथा कृपा दृष्टि पर भरोसा करके लिया।

१९७४ साल में ओटोनोमो के उपर्युक्त अर्थ में बदलाहट आयी है। अतः हमारी ओटोनोमी के घोषणा करने में भी संशोधन की आवश्यकता है। एक मौलिक बदलाहट यह है कि वर्त्तमान की हमारी सरकार के विषय सैकड़ों-सैकड़ा वही आशा की बात नहीं कह सकते हैं जो उस समय की सरकार के विषय पुरखों ने कहा। इसके साथ ही साथ हमें यह भी जानने की आवश्यकता है कि आज हमारे बीच में क्या ईश्वर के अनुग्रह पर हम उतना ही

Gossner Mission

टेक लगाते हैं जितना हमारे पुरखों का विश्वास था इन बातों को समक्ष रखते हुए हमारी ओटोनोमी की समीक्षा आवश्यक है।

हम इस बात के लिए ईश्वर के धन्यवादी हैं कि हमारी गोस्सनर कलीसिया में आत्म शासन का अर्थ सही रूप में समझा गया है। अभी यही एक कलीसिया है जिसने आत्म शासन का कठिन भार ले चुका है। कलीसिया के हर पहलू के शासन कार्य में इन पुरखों के पुस्त ही सक्रिय हैं। इतना मान लेना अच्छा ही होगा कि उनके शासन काय में कुछ कमजोरियाँ अवश्य हैं पर यह तो स्वाभाविक बात है। शासन कार्य में चुस्ती, सुधार और विकास के लिए बहुत अधिक जगह रह गई है। हमारी कलीसिया का नवनिर्माण इस पहलू के नवीकरण से भी होगा।

कलोसिया की ओटोनोमी में आत्म शासन प्रथम बात जरूर है। पर स्वपालन और स्वत: साक्षी कार्य भी इस ओटोनोमी के विशेष पहलू हैं। इन पर गौर करने से मेरी दृष्टि में निम्न बातें दिखाई देती हैं।

(क) आत्म शासन में स्वदेशिय व्यक्ति होने से आत्म शासित हो गये। इसको स्वयंसिद्ध मानना गलत होगा। स्वदेशी व्यक्ति में परदेशी विचार और भावना कार्य कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति तो परदेशी शासक से भी अधिक कमजोर हो सकते हैं।

स्वपालन के क्षेत्र में कुछ काल तक हमारी चिन्ता हुई। इसके प्रतिफल भी अच्छे ही मिले पर स्वपालन तो खुद ही करना अनिवार्य है। इस जीवन क्षेत्र में भारतीय अर्थ व्यवस्था तथा साधारण अर्थ स्थिति का गहरा प्रभाव हमारी कलीसिया पर पड़ा है। आर्थिक जीवन स्तर तो नीचे ही हैं, पर अर्थ व्यवस्था में अविश्वस्तता के काम ने हमारे स्वपालन पर आगे बढ़ने में बहुत अधिक बाधक ठहरा है। इसलिए स्वपालन की बुनियादी भी मन में यीशु मसीह पर विश्वास करने पर निर्भर करती है। हम खृस्तोय विचार, भावना, व्यवहार और काम में कमजोर पाये गये हैं। अत: स्वपालन में विकास नहीं होने पा रहा है। अपनी सामग्री और धनश्रोत का समूचित व्यवहार नहीं करके हमारा ध्यान दूसरों की आर्थिक सहायता की की ओर है। हम स्वपालित जीवन में विकास करने के बदले भीखारी बनते दिखाई दे रहे हैं। ईश्वर के अनुग्रह और अपने बल और बुद्धि पर टेक लगाने में असमर्थता हमने प्रकट की है। इस स्थितिसे निकलने का प्रयास अच्छी अर्थ-व्यवस्था और विश्वस्तता से आर्थिक क्षेत्र में काम करने ही से सम्भव है।

स्वत: साक्षी ओटोनोमी का तीसरा पहलू है। यह सराहनीय और अच्छी बात है कि गोस्सनर कलीसिया के भाई बहनों, प्रचारकों और पाद्रियों में सुसमाचार प्रचार करने की लगन है, उत्साह और साहस भी है। पर गोस्सनर कलीसिया के लिए इस काम को आगे बढ़ाने की आर्थिक शक्ति नहीं है। सम्पूर्ण भरोसा हमारे विदेशी मित्रों पर कर के यह खर्च उठाया जा रहा है। इस कमी की पूर्ति के लिए कलीसिया सजग हो जायगी और भाई बहिन सुसमाचार के लिए मन, मुंह और मुट्ठी खोलेंगे। भाई-बहिन स्वत: यह कदम तभी उठायेंगे जब उनको पवित्रात्मा की प्रेरणा वचन और सक्रामेन्त की सेवकाई के मध्य में मिलेगी। वे एक दूसरे को सलाह सम्मति देकर बढ़ावा देंगे और सम्भालेंगे। यीशु मसीह के नाम में व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से अपनी सारी सामग्रियां अर्पण करना ही स्वत: साक्षी देने का चिन्ह है। अन्त में एक मूल बात पर ध्यानाकर्षित कर लेख अन्त करूँगा।

खृस्तीय कलीसिया सैद्धान्तिक रूप में ओटोनोमी अवस्था में नहीं जी सकती है। ओटोनोमो में 'आत्म' 'स्व' प्रमुख है जो खृस्तीय जीवन का शत्रु है। कलीसिया की बुनियादी तो खृस्टोनोमी में है। वह अपने नियम पर नहीं पर खृस्त के नियम पर नींव पायी है। सांसारिक जन समूह या संस्था तथा संगठन ओटोनोमी पर अपनी टेक ले सकती है जो पूर्ण रूप से 'स्व' या 'आत्म' केन्द्रित है। पर मसोही कलीसिया—हाँ गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया तो खृस्त या जीवते वचन यीशु मसीह पर केन्द्रित है। अत: हम ओटोनोमी के सीमित मूल्य को समझकर उसका सदुपयोग करें जो खृस्त के नियमानुकूल हो। इसी दृष्टिकोण;

Gossner Mission

समझ, भावना, और विचार पर आधारित काम और सेवा हमारी कलीसिया के लिए हितकर होंगे।

परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्रात्मा का आशीर्वाद ओटोनोमी दिवस में एक-एक भाई-बहिन, परिवार, मंडली और समस्त कलीसिया, में आवे और बसे।

'इति'

धन्यवाद आपका ग्राहक चन्दा [मई ३१ १९७४ तक] मिला

1 Cat. J. Sanga Nowapali,
2 Rev. R. Sinha Kanpur
3 Cat. Hardugan Topno Manikdanga
4 Youth Felloship Centre, Ranchi
5 Cat. M. Kerketta Jhurmul
6 Cat. Hanukh Minz Chengmari
7 Mr. Prabhusahay Purti Sinduribera
8 Mr. B. Kandulna Barkibura
9 Cat, Israel Lugun Jagnathpur,
10 Cat. Daniel Sinku Champua
11 Rev. Hemant Hansda Jagnathpur
12 Rev. S. Bakhla Ranchi.
13 Mr. S. P. Topno Jashpurnagar
14 Mr. Tairas Lakra
15 Mr. N. Tiga Tatanagar
16 Mr. J. W. Topno Hurhuru-Patratu
17 Mr. B. Lakra Hirakud
18 Rev. Lucas Topno Govindpur
19 Cat Prabhudan Barla Govindpur
20 Mr. A. Guria Itki,
21 Mr. A. Soy Itki.
22 Mr. B. Topno Jamshedpur
23 Rev. S. Kujur Singhani
24 Isahak Tete Mayabandar.
25 Mr. C. J. Dahanga Berengajuli
26 Mr. B. Kujur Banda Munda.
27 Mr. Mansukh Surin H.S.L Ltd. Rourkela
28 Mr. Pritammasih Lakra Sikriaddaur–Lalatoli
29 Mrs. E. Ekka Farm area, Kadma-Jamshedpur
30 Mr. T. J. Barla Railway Colony Hatia.
31 Mr. A. Kullu K. C. Kendtoli
32 Mr. Manohar Burh Kentai Jarakel
33 Mr. Mansukh Purti. Kundru gutu
34 Mr· A.D. Minz Basartoli.

चाल्हो मंडली को नेव और संक्षेप इतिहास

पी. मिंज

चाल्हो मंडली, लोहरदगा इलाका, के चट्टी पेरिश में पड़ता है। इस मंडली की नेव कब हुई, इनका सही सही ज्ञात नहीं मिलत है। फिर भी सरकारो कागजाद से अनुमान होता है कि सन् १८५० से १८६५ के मध्य ही यहाँ मंडली स्थापित हुई, मंडली के पहला सदस्य मिंज वंश और खाखा वंश के लोग ही हुवे, मिश्नरियों में बेकमन साहब उल्लेखनीय हैं, वे बराबर यहाँ आया करते थे, और गाँव के उत्तर "मुन्डा बगीचा" में तम्बु खड़ा करते थे, और उन्ही के कठिन परिश्रम से यहाँ मसीह को ग्रहण किये, और यहाँ का पहला प्रचारक पतरस नामक एक भाई हुए। सातवां प्रचारक स्वर्गीय प्रभुसेवक टोप्पो थे जो लगभग ४० वर्ष लों यहां प्रचारक का काम किये इसके बाद चार कंडिदत्त तथा पाँच प्रचारक हुए, १९७३ से प्रचारक इम्मानुएल टोप्पो के द्वारा मंडली चलायी जा रही है। वर्त्तमान

Gossner Mission

में चाल्हो मंडली की पारिवारिक संख्या पचास है। यह मंडली चट्टी पेरिश में प्रथम स्थान रखता है। यहां का गिर्जा घंटी जर्मन मिश्नरियों का दिया हुआ दान है। जिसमें ये लिखे गये हैं।

STETTIN NAGAR KE MITR CHALHO EV. LUTH MANDLI KE LIYE GEGOSSEN, VON, C. VOSS & SOHN INSTETTIN 1895 NO 1429.

अब चाल्हो मंडली की बढ़ती दिन दुना रात चौगुणा होते ही जा रही है। परमेश्वर को धन्यवाद हो कि मंडली की रक्षा करे और हमें आशीष देवे।

शोक समाचार

जो प्रभु में मरते हैं सो मृतक धन्य हैं आत्मा कहता है कि हां वे अपने परिश्रम से बिश्राम करें हल्लेलूयाह।

प्रचारक मसीहदास आईन्द लोवारोम पेरिश, हरता मंडली चुरिन कोचा ग्राम के निवासो थे। उनका जन्म १५ जुलाई १८९९ में हिडुंग गांव में हुआ था। उनका नया जन्म एस. पी. जी. कलोशा में हुआ। ये नये क्रीस्तान थे। अपने शारीरिक जीवन की चिन्ता से चुरिन कोचा में बसे थे। करीमट्टी इलाका ने उनको कुर्थाबेड़ा मंडली में प्रचारक करके भेजा। वहाँ इन्होंने १७ वर्ष विश्वसता से काम किया। स्थानान्तर में खटंगबेड़ा मंडली में चले गये वहां ७ बर्ष रहे फिर वहां से हेडक्वटर लोवारोम में १३ वर्ष काम किये फिर चार बरस टेन्ड्राउली मंडली में प्रभु के दाखबारी में काम किये। ७१ साल में ओड़िसा अंचल के आदेश से करीमटी इलाका ने उनको बुढ़ापे के कारण अवकाश दे दी। अवकाश अवधि में भो एक साल के लिये स्थानोय हरता मंडली का भार पेरिस सभा के द्वारा दी गई, इन्होंने इस भार को सहर्ष ग्रहण किया, १९७२ साल में उनको पूर्ण अवकाश दिया गया। अपने कार्य क्षेत्र में इन्होंने धीरज और नम्रता से मंडलियों की सेवा की, वे एक साधारण वैद्य भी थे।

मृत्यु के एक बरस पहले उन्होंने कहा कि मंगल दिन मेरी मृत्यु होगी। ७३ ई. के जन्म पर्व मानने के एक सप्ताह पहले इन्होंने कहा कि २६ दिसम्बर को बड़ी खुशो मनायी जायगी पर पीछे बड़ा शोक होगा। उनके कहे अनुसार २६ दिसम्बर की रोटी तरकारी को खुशी से खाये तद्पश्चात रात को अंगन में वे प्रभु में सो गये। बुढ़ापे तक उनके देह में कोई प्रकार की कमजोरी नहीं थो। अपने पीछे तीन पुत्र और दो बेटियों को छोड़ दिये और बुढ़ी प्रचारिन को भी छोड़ दिये। उनका मृत देह प्रचारक एम. जोजो के द्वारा समाधि में उतारा गया। प्रभु शोकित परिवार को शांति देवे।

आप के दास
पाद्री एस. बागे

जीवन रेखा

ख्रिस्त सबन पुर्त्ती, जमशेदपुर

भूरा रंग है भू का
स्याह रंग है अम्बर का
बन कर रह गये इतिहास
हमारे इस लौकिक जोवन का।

जन्म लेते हैं हम
जीनें के लिये इस जोवन में
फंस कर रह जाते हैं
लोभ पाप के दल दल में।

फिर असहाय पाकर अपने को
देखते हैं तारों से भरा अम्बर को
दुःख भरा मन से आह भर कर
कोसते हैं इस जीवन को।

भर कर आंसु आंखों में
भटक जाते हैं इस जग में
कह कर कोई नहीं मेरे लिये
साथी इस दुनियां में।

आगे क्या लिखूं हे-प्रभु
गये हम तुझ को भूल
समझ न सके हम
तेरे रक्त का मोल।

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४ वर्ष — ७ अं. नं. — ६ रांची, जुलाई १९७४

Edited and published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E L. Church Press, Main Road, Ranchi / Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰ सी॰ ४

वार्षिक मूल्य ५ रु॰

वर्ष — ६४ रांची, मई १९७४ संख्या नं॰ — ५

EINGEGANGEN
19. JUNI 1974
Erledigt .....



मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ वैसा मैं अपनी भेड़ों को जनता हूं और अपनी भेड़ों से जाना जाता हूँ (यूहन्ना १०:१४)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय		—	२
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
सूचना/आवश्यक सूचना		—	७
पाप और जीवन		—	८
लूथेरान जगत और गोस्नर कलोसिया		—	९
शोक समाचार		—	१०
सूचना—बेथेसदा ट्रेनिंग स्कूल		—	११
कलीसियाई समाचार/विविध समाचार		—१२-१३	
गोस्नर कलीसा की स्थिति		—	१४
जीवन के तीर		—	१७
रक्तदान		—	१८
धन्यवाद आप का चन्दा ३१ मार्च १९७४ तक मिला		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी और 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"प्रेम के पात्र"

परमेश्वर का प्रेम दूसरों की योग्यता या गुण के कारण नहीं अपने ही भला और प्रेमी होने के कारण है। उसकी भलाई एवं उसका प्रेम असीम है। देखें इसी माह के पथ प्रदर्शक पद रोमी ५:८) विश्वासी के जीवन की सफलता व सामर्थ उसी की योग्यता के कारण नहीं, परन्तु परमेश्वर के प्रेम के कारण ही सम्भव है। यह तथ्य यीशु मसीह की क्रूश-मृत्यु में प्रमाणित है : यीशु मसीह पापियों के लिये मरा, उनके लिये जो पाप के कारण परमेश्वर के बैरी ही थे वह भले व धर्मी मनुष्य के लिये नहीं मरा !

मनुष्य अपने सफल जीवन के लिये— मजबुत व दृढ़ अस्तित्व के लिये अपनी सारी योग्यता का प्रमाण देता है, हमारे देश में प्रमाण पत्र तो हर दशा में वांछनीय है पर आज प्रमाण पत्र भी उतना ही सस्ता हो गया है : इसके लिये कुछ दौड़-धूप और उच्छल-कूद तो करना पड़ता है, पर प्रमाण पत्र तो मिल ही जाता है; ऐसे प्रमाण पत्र प्रत्याशी की योग्यता को भले ही न बढ़ा दे पर उसके अस्तित्व को दृढ़ करने का सहारा तो अवश्य ही होता है। कलीसियाई क्षेत्र में भी ऐसी कोशिशें कम नहीं है; कलीसिया और परमेश्वर की दया का पात्र होने के लिये किस्म-किस्म ढोंग अपनाये जाते हैं— और यही प्रमाण पत्र बनते हैं—पर उनमें तथ्य कम रहता है। यहाँ भी धोखाधड़ी है। लोग अपने चेहरे और गाल ऐसी दिखाते हैं कि वे ही परमेश्वर के प्रेम व भलाई के पात्र हो सकते हैं; गिर्जा, बिन्ती, चन्दा, दान संस्था सदस्यता आदि में आगे रहते हैं। पर वे अपने को पापी स्वीकार करने के लिये हरगिज तैयार नहीं होते हैं—यहूदियों की भी यही स्थिति थी जिसको संकेत करते हुए रोमियों के पत्री में उपरोक्त बचन ५:८ कहा गया है लोग बहुधा दूसरों को ही पापी और परमेश्वर के बैरी कहा करते हैं—पर ऐसों को परमेश्वर के प्रेम व भलाई का हकदार या पात्र समझना अपनी भूल समझते हैं। पर ऐसे भूल विचार से तो दूसरों को परमेश्वर के प्रेम के पात्र होने से रोक नहीं सकते हैं।

आज हमारे लिये आत्म परीक्षण की आवश्यकता है यह सहज नहीं है, पर जरूरी है। परमेश्वर के प्रेम पात्र बन गये हैं; पर फिर भी हमारे जीवन नाना प्रकार के पाप से खोखला हुआ जा रहा है और सम्भवत: हमारी कठोरता के कारण यहूदियों की नाई उद्धार के मार्ग से और परमेश्वर के प्रेम के पात्र बने रहने से अलग तो नहीं हो गये हैं। हम दूसरों को ही प्रेम के पात्र होने से अलग समझते हैं और यही हमारे हृदय की कठोरता है।

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

युबिलाते (ललकारो-भजन ६६:१)

१ पतरस २:११:२०

पतरस प्रेरित मसीही जीवन व्यतीत करने के निमित आदेश देते हैं। हम इस पृथ्वी पर परदेशी हैं। हमारा चाल अन्यजातियों के बीच गवाही का कारण ठहरे(१२+१८)

"मसीहीयों के लिये पथदर्शन"

क. नागरिक जीवन में (१३-१७)

१ मनुष्य के ठहराये हुए प्रबन्ध के अधीन रहो (१३):— राज्य पाल तथा अन्य सरकारी अधिकारियों को मानो (रोमि १३:१)

जब सरकार हमारे विवेक के विरूद्ध पाप के लिये आदेश देती है तब हम विरोध कर सकते हैं। (क्रिया-५:२६) राजा और हाकिम ईश्वर की ओर से ठहराये गये हैं। इसलिये यीशु के कारण उनको मानना है।

२ स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ (१६):—बहाना न बनाओ (यूहन्ना १५:२२; १ थिस्लो २:५) पाप के लिये पर्दा न बनाओ (भजन ७३:६) ! १०९:१८; जकर्याह ३:३ ; यहुदा २३)

३. सभों का आदर करो (१७) :—भाइयों से प्रेम रखो। परमेश्वर से डरो। राजा का सम्मान करो-इत्यादि

ख. नौकरी में (१८-८०) :—

१ स्वामियों के अधीन रहो। यीशु मसीह के कारण कुटिल स्वामी की अधीनता स्वीकार करो (३फि ६:५; कुलु ३;२२; १तिमो ६:५; तीतूस २:९)

२. यीशु की महिमा के लिये दु:ख उठाओ (२०) यीशु नाम में दु:ख उठाना ईश्वर को भावता है। हमारे दु:ख उठाने के द्वारा भी ईश्वर की महिमा होती है।

यीशु के लिए दु:ख उठाना

क्रिया ५:४१; रोमी ८:१७; इब्रानि· ११:२५; याकूब ५:१०; १ पतरस ५:१०)·

प्रभु यीशु आप ही हमारा पथदर्शक है। इसलिये उसी के नाम में दुनियादारी सरकार के अधीन रहें और ईश्वर की महिमा करें ॥

कन्ताते (गात गाओ भजन ९८:१)

याकूब १:१३—८१)

मनुष्य के जीवन में परीक्षा आती है। कभी कभी हम परीक्षा के समय ईश्वर को दोष देते हैं। परन्तु याकूब ईश्वर को दोष नहीं देते हैं (१७) वे परीक्षा की उत्पत्ति तथा उससे विजय पाने का रास्ता बतलाते हैं।

"परीक्षा (प्रलोभन) और उस पर विजय"

१ परीक्षा (प्रलोभन) कहां से आती है ?

(क) ईश्वर की ओर से परीक्षा नहीं आती है। परमेश्वर किसी को पाप करने के लिये नहीं चलाता है। क्योंकि वह तो सब प्रकार के उत्तम दानों का दावा है (१७) सत्य के वचन के द्वारा हमें उत्पन्न किया (१८)·

(ख) मनुष्य की अभिलाषा से परीक्षा (प्रलोभन) उत्पन्न होती है (१४+१५)·

मनुष्य आप ही अभिलाषा से खींचकर परीक्षा में पड़ता है। गिन्ती ११:४; नीति २१:१०; ३०:१५, हबककूक २:५, मार्क ४:१९; १ कुरि० १०:६ इफि० २:३; याकूब ४:२; १ यूहन्ना २:१६) प्रलोभन:— (उत्पत्ति ६:३; यहोशु ७:२१; नीति ९:१७; १४:१२; याकूब १:१४; २ पतरस २: ८)

मनुष्य अपनी अभिलाषा के द्वारा खींचा और फसाया जाता है। अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनता है और पाप के बढ़ जाने पर मृत्यु होती है।

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

२ परीक्षा पर विजय कैसे प्राप्त हो सकता है ?

(क) ईश्वर की आशीष से :— उसने हमें उत्पन्न किया है। अत: परीक्षा के समय हमारी सहायता करता है। (१७+१८)

(ख) ईश्वर के अनुग्रह से :— ईश्वर चाहता है कि हम उसके अनुग्रह का सदुपयोग करें। परीक्षा के समय सुनने के लिये तैयार रहें। बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा होवें। हम ईश्वर की सुनें कि वह हमें ऐसे समय में क्या रास्ता बतलाता है। (१९)—हम ईश्वर को दोष न देवें।

(ग) मलिनता और वैर भाव को दूर करने में (अय्यूब ११:१४; यशायाह ५५:७; इफि० ४:२२; इब्रानि १२:१; १ पतरस २:११)

(घ) बचन से (२१) :—बचन हमारे आत्मा को बचा सकता है :—जीवतेबचन को हम दैनिक जीवन में काम में लावें और ईश्वर के अनुग्रह में बढ़ें तब विजयी होवेंगे।

ईश्वर ने प्रलोभन की उत्पत्ति तथा उसे दूर करने का उपाय बतला दिया है। हम ईश्वर के उपाय को काम में लावें।

रोगाते (विन्ती करो भजन ६६:२)

याकूब १:२२:२७

आज के बचन में बचन को सुनने और उसके अनुसार चलने पर विशेष जोर दिया गया है। याकूब व्यवहारिक धर्म्म पर विशेष जोर देता है। याकूब का कहना है कि हमारा विश्वास दैनिक जीवन के कार्य में प्रगट हो। यही याकूब के अनुसार सच्चा धर्म्म है।

"सच्चा धर्म"

१ बचन सुनना और उसके अनुसार चलना (२५):— बचन को सुनकर मानने वाला धन्य है। बचन हमें पाप से बचाता है। हमें पाप और भय से छुड़ाता है। हमारे विश्वास को बढ़ाता है। हम स्वतंत्र किये जाते हैं। (यूहन्ना ८:३१+३२)

२ जीभ को वश में रखना (२६) :— हम बचन के द्वारा चलाये जावें। सुबाणी बोलें। जीभ को वश में रखना (भजन ३४:१३; नीति १३:३; २१:२३; १ पतरस ३:१०)

व्यर्थ बकवाद न करना (अय्यूब ११:२; १५:३; नीति १०:१९, १४:२३; २९:११; सभोपदेशक ५:३; १०:१३; यहेज ३६:३; तीतूस १:१०).

३ अनाथों और विधवाओं की सुधि लेना :— (२७) बचन को सुनने और मानने वाला अनाथों और विधवाओं की सुधि लेता है। इस कार्य को करने के द्वारा विश्वासी प्रेम और पवित्रता में बढ़ते जाता है।

हमारा विश्वास हमारे दैनिक कार्य में दिखायी देवे। हम बचन सुनकर उसके अनुसार चलें।

स्वर्ग रोहन पर्व

प्रेरित १:१-११

स्वर्ग में हमारे लिये आज्ञा और प्रतिज्ञा दोनों है।

क:—पवित्रात्मा तुम पर आवेगा अथवा तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पावोगे। (क्रिया २)।

ख:— यीशु फिर आवेगा। (११)–आज्ञाएं दो हैं :—

क. प्रतिज्ञा कि प्रतीक्षा करना (४) ख. मेरी गवाही देना (८) हम यीशु के पुनरागमन पर ध्यान करें।

"यीशु का पुनरागमन"

यीशु का पुनरागमन नये नियम के २६० अध्यायों में ३१८ बार चर्चा किया गया है। मत्ती के सुसमाचार से प्रकाशित वाक्य के प्रत्येक २५ पदों में एक बार चर्चा किया गया है। पावल ने इस विषय पर बड़े जोरों से प्रचार किया। अपने पत्रियों में बारम्बार इस विषय की चर्चा करता है (१ थिस्लो १: १०; २:१९; ३:१३; ४:१६+१७; ५: १ (४; ५:२३) हम पुनरागमन की शिक्षा से एक दूसरे को शान्ति देवें। (१ थिस्लो ४: (१८) · आज इस विषय पर उतना जोर नहीं दिया जाता है जितना की यीशु और प्रेरितों के दिनों में दिया गया। पावल ने यीशु के विषय तीन बड़ी सच्चाइयों का प्रचार किया (१) मृत्यु

घरबन्धु, मई १९७४।

Gossner Mission

(२) पुनरूत्थान (३) पुनरागमन अर्थात-यीशु ने क्या किया ? यीशु क्या करता है और क्या करेगा ? बहुत से उपदेशक आज पुनरागमन के विषय उपदेश नहीं देते हैं और कितने इस विषय पर कुछ नहीं जानते हैं ।

यीशु के फिर आने का अभिप्राय :—

१. यीशु ने आप ही कहा कि वह फिर आवेगा (यूहन्ना १४:३)

२. स्वर्गदूतों ने कहा है कि वह फिर आवेगा (क्रिया १:११; लूका १:३०-३३; मत्ती १: २०-२२.

३. पवित्रात्मा की साक्षी है कि वह फिर आवेगा (१ थिस्लो ४:१६;इब्रानी ९:२२; १०:३७)

४ ईश्वर की साक्षी है कि वह फिर आवेगा (जकर्य्याह १४:१+३+४) मलाकी ४: १+२)

यीशु के पुनरागमन की रीति:-

१ वह व्यक्ति होकर आवेगा । यीशु आप ही आवेगा (१ थिस्लो ४:१६).

२ वह वैसा ही दिखायी देगा जैसा इस दुनिया में दिखायी दिया था (क्रिया १: ११ । यीशु जैसा गया वैसा ही आवेगा ।

३ वह दृष्य रूप से आवेगा । प्रत्येक आंख उसको देखेगी (प्रकाशित वाक्य १: ७; १ यूहन्ना ३: २).

४ वह अचानक आवेगा । उसका आना बिजली के समान होगा । (मती २४: २७).

५ वह चोर के समान आवेगा (मती २४: ४४; ३७, ३९).

यीशु के पुनरागमन का अभिप्राय

१ अपने लोगों को अपनी संगति में मिला लेने के लिये आवेगा (१थि ४: १६+१७;१ कुरि १५: ५१-५३)

२ अपने दोसों को मजदूरी देने के लिए आवेगा (मती १६: १७).

३ यीशु न्याय और राज करने आवेगा (२थिस्लो १: ७-१०; यहुदा १४+१५; जकर्य्याह १४).

यीशु के आने का समय

यीशु के आने का दिन और तिथि प्रकाश नहीं किये गये हैं । (मती २४: ३६+४२; मरकुस १३ : ३२; १ थिस्लो ५: १+२)ईश्वर की इच्छा है कि यीशु के आने के दिन और तिथि को अपने हाथ में रखें । ईश्वर चाहता है कि हम सदा तैयार रहें (मत्ती २४:२८). वह नहीं चाहता है कि हम कालों को गिने (क्रिया १: ७). हमारा समय और काल गिनना घड़ी के टिक टिक आवाज के अनुसार होता है । घड़ी के टिक टिक आवाज के अनुसार हमारे वर्ष और मास होते हैं । युनानी भाषा में इस प्रकार के समय के हिसाब को खोनोस (Xronos) कहते हैं । ईश्वर का समय अपने हाथ में है । ईश्वर के समय को प्रकाश करने के निमित्त युनानी भाषा का शब्द कैरोस है । यीशु का आगमन ईश्वर के कैरोस (Kairos) में होगा । हमारे खोनोस (Xronos) में नहीं ।

एकसौदी—मेरी सुन भजन २७:७१

१ पतरस ४:७-११

हम लोग ख्रिस्त की कलीसिया के अंग हैं । इसलिए आवश्यक है कि हमारे बीच में मसीही कलीसिया के अंग हैं । इसलिए आवश्यक कि हमारे बीच में मसीही संगति व्यवहारिक हो । पतरस प्रेरित इन पदों में मसीही संगति के लिए आदेश देते हैं ।

"मसीही संगति को आदेश"

१. प्रार्थना के लिये सचेत रहो (७): जागते रहो । प्रभु के आगमन के लिये तैयार रहो । (मत्ती २५; १३; लूका १२; ३७; १थि. ५;५; प्रकाशित वाक्य ३;११; १६;१५) जीवन में परीक्षा आती है । इसलिये सचेत रहो (मत्ती २६;४१; क्रिया २०;३१; १कुरि १०:१२; १३;१३; कुलु ४;२ १ पतरस ५;८)

२ एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो;

(८) :— (व्यवस्था विवरण १०:१९; मत्ति २२: ३९; यूहन्ना १३:३५; १५.१२; रोमि १३.; ९; १ थिस्लो ३;१२; १ पतरस १:२२;) प्रेम पापों को ढांपता है । प्रेम हमारे हृदयों को दूसरों के लिये खोलता है । (नीति १०:९; मत्ति ७: ३; रोमि १५: १; गलति ६: १)

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

३ एक दूसरे की पाहुनाई करो :—

(९) :— प्रेम हमारे हृदय और घर दोनों को दूसरों के लिये खोलता है। पाहुनाई करने वाला कुढ़कुढ़ाता नहीं, न वह खिलाने पिलाने का हिसाब करता है। पाहुनाई करने वालों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पाहुनाई की है (इब्रानि १३:१)।

४ विश्वस्त भंडारी बनो (१०):—

क· बोली बचन में भी भंडारीपन है। अत: ऐसा बोलो कि तुम परमेश्वर का बचन बोल रहे हो। (यिर्म १:७-१७; ११:२; यहेज २:५; ३:१७; क्रिया ५:२०; तीतुस २:५)

ख· परमेश्वर की शक्ति से सेवा करो :—परमेश्वर ने शक्ति प्रदान किया है। तुम दी हुई शक्ति का भंडारी हो। दी हुई शक्ति को ईश्वर की महिमा में लगाओ। हमारे कर्य्यों एंव गवाही के द्वारा ईश्वर की महिमा (११) स्वार्थ सेवा में कलंक लगा देता है। परन्तु परमेश्वर की गवाही और महिमा को सामने रख कर कार्य्य करने से छोटा कार्य्य भी उत्तम है।

हम पतरस प्रेरित के आदर्श को व्यवहार में लावें। क्योंकि महिमा और सम्राज्य युगानुयुग ईश्वर ही का है।

सूचना

कागज एवं छपाई की महंगी को मद्दे नजर रखते हुए घरबन्धु की सम्पादकीय-मंडल को विवश होकर सूचना देना पड़ रहा है कि घरबन्धु के सभी इश्तिहार एवं सूचना अब से विज्ञापन समझे जायेंगे। विज्ञापन शुल्क ऐसा होगा; आवरण (कभर) ३ रा या ४ था पूर्ण पन्ना २५ रू०; आधा या उससे कम १२ रू० प्रति छपाई; अन्दर पन्ने पूर्ण २० रू० आधा या कम १०) रू० प्रति छपाई। अधिक बार छापने में रियायत है। सभी विज्ञापन अगोतर अदायगी पर ही छापे जायेंगे। (स० स०)।

आवश्यक सूचना

पाठकों को मालूम ही है, कि घरबन्धु अंक कुछ देरी से मिलने लगे हैं। यह हमारे वश से बाहर की बात हो गयी है। जिस प्रकार देश में महंगी और चीजों का अकाल बढ़ती में ही है, वैसा ही कागज की महंगी और अकाल भी है, अत: हमें विवश होकर घरबन्धु का वार्षिक मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है। पहली मार्च १९७४ से वार्षिक मूल्य ५ रू०, एक प्रति माह ४५ पैसे, १०-१९ प्रति एक पता में मंगाने पर ४·७५ पैसे और २०-३० प्रति एक पता पर मंगाने से ४.५० पैसे एक प्रति सालाना के दर से लिया जायगा। ग्राहकों से आशा है कि आगे भी 'घरबन्धु' हमारी एकलाही मासिक पत्रिका को चलाने के लिए सहायता व योगदान देंगे।

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

पाप और जीवन

ए० पी० बरला

ईश्वर ने अदन बारी में ही आदम और हवा के द्वारा पाप और जीवन का पहचान करा दिया है। अच्छा और भला को उसने जीवन कहा और उसकी आज्ञा न मानना को पाप कहा। यहां ईश्वर ने केवल एक ही आज्ञा दी थी अर्थात "मत खाना"। इसके बाद सिनाई पर्व्वत से दस आज्ञा दी। ईश्वर की आज्ञा न मानना और पवित्रता के विरुध चलना ही पाप है। दस आज्ञा में चोरी करना, मूर्तिपूजा करना, मनुष्य हत्या करना, व्यभिचार करना, लालच करना, झूठ बोलना, इन सबों पर मनाही है। कौन इन पापों को करता है और कौन कराता है ?

चूंकि हम आदम के समय से ही जन्म से पापी हैं इसलिए हरएक मनुष्य किसी न किसी पाप को करता है। चोर चोरी करता है, हत्यारा हत्या करता है, डाकू डकैत करता है, स्वार्थी स्वार्थ को अपनाता है, इत्यादि। परन्तु एक ऐसा आदमी है जो अपने जीवन में अनेक पाप करता है और वह है शराब पीने वाला। नशे के झोंक में आकर वह गन्दी बातें बोलता है, झूठ बोलता है, मनुष्य हत्या करता है, चोरी करता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, लालच करता है, माता पिताओं का निरादर करता है और पवित्रता से दूर रहता है। इस प्रकार शराब एक ही आदमी को कई पाप कराता है।

दस आज्ञा के द्वारा शराब मत पीओ ऐसी आज्ञा नहीं है परन्तु शराब दसों आज्ञाओं को भंग करता है। मानव समाज में भी शराब पर रोक नहीं है यद्यपि कि यह समाज को दूषित कर देता है। मनुष्य का जीवन को भी बर्बाद कर देता है। ईश्वर की आज्ञाओं को तो उल्लंघन कराता ही है, साथ में पवित्रता को भी नष्ट कर देता है। मनुष्य का सामाजिक जीवन को दुःखमय बना देता है क्योंकि शराबी अपना खेत बारी बेच डालता, धन का सर्वनाश करता, पारिवारिक जीवन अशांतिपूर्ण बना देता और भले लोगों की संगति से दूर कर देता है।

शराब को लोग 'नेशनल ड्रिंक' कह कर इस्तेमाल करते ही हैं परन्तु वासी उनके लिए जहर बन जाता है। अनेक बहाना बना कर शराब पीया जाता है परन्तु शराब आखिर शराब ही नहीं बरन खराब ही है। मनुष्य इसे आराम पाने के मतलब से पीता है पर यह क्षणिक आराम हराम बन जाता है और मनुष्य को पाप में ढकेल देता है। अतः शराब पाप का मूल ही नहीं पर भण्डार भी है जहां से हम एक से अधिक पापों को अपना लेते हैं। इसलिए ईश्वर की आज्ञा मानना जीवन और नहीं मनाना पाप हुआ। यह गरीब, अमीर, शरीफ, बदमाश, धर्म्मी अधर्म्मी, ज्ञानी मूर्ख सब के लिए बराबर है। यदि मनुष्य अपने जीवन में केवल पाप कर्म ही करता है पर किसी कारण से उसे त्याग देता है तो वह नये जीवन (Restoration) में प्रवेश करता है और उसके सब पुराने पाप ईश्वर क्षमा कर देता है। हम में से भी कई ऐसे व्यक्ति हैं।

सूचना

प्रस्तावित Foreign Contribution Regulation bill के कारण आवश्यक दीखता है रेभ॰ डा॰ सी॰ के॰ पॉल सिंह अब एसोसीएट एडीटर एवं सम्पादक मंडल के सदस्य नहीं रहेंगे उन्होंने इस हेतु त्याग पत्र लिख दिया है, यह १ ली अप्रील १९७४ से ही लागू समझा जायगा।

Gossner Mission

लूथेरान जगत और गोस्सनर कलीसिया

श्रीमती दुलारी तिर्की, बान्डेल

Lutheran World Federation के 1973 की जन गणना अनुसार सारे जगत् में लूथेरान मसीहियों की संख्या 73316258 हैं जो Continental आधार पर इस प्रकार है :—

Europe	—	58073378
U. S. A. and Canada	—	9056702
Africa and Madagascar	—	2288602
Asia	—	2384107
Latin America	—	985048
Australia	—	528421
Tatal	—	73316258

एशिया महादेश में सबसे अधिक Indonesia की है जहां 1445753 लूथेरान मसीही हैं। उसके बाद भारत में 9 लूथेरान चर्च है जिसकी जनसंख्या 793693 है जो इस प्रकार हैं :—

1	Andhra Evangelical Lutheran Church	— 281005
2	Evangilical Lutheran Church in M. P.	— 7447
3	Arcot Evangelical Lutheran Church	— 18994
4	G. E. L. Church	— 258259
5	India Evangelical Lutheran Church	— 40000
6	Jeypore Evangelical Lutheran Church	— 60000
7	South Andhra Evangelical Lutheran Church	— 15000
8	Tamil Evangelical Lutheran Church	— 73257
9	Northern Evangelical Lutheran Church	— 39731
	Total	— 793693

यों भारत में Andhra Lutheran Church प्रथम है। Gossner Church का स्थान दूसरा है। 1974 पंजिका के आधार पर इसकी संख्या 274653 है।

गोस्सनर कलीसिया का इतिहास २ नोवेम्बर 1845 से आरम्भ होता है जब प्रथम चार मिशनरी रांची पहुँचे और मसीह का वचन अंधकार में पड़े आदिवासियों को सुनाये।

मिशनरियों के कठिन परिश्रम, त्याग और सेवा से छोटानागपुर में ज्योति का कार्य जगमगा उठा। यहां के निवासी जमीन्दारों के गुलामी से छुटे। भूत-पूजा, मिथ्या-विश्वास से अलग किए गये और सभ्यता की झलक में आगे बढ़े।

वर्तमान कलीसिया को स्थिति देखने से पता लगता है, क्या गोस्सनर कलीसिया सच्ची फादर गोस्सनर की बेटी है? बाप-बेटी का संबन्ध तो ओटोनोमी लेने से अवश्य बाह्य रूप से टूट गया पर आत्मिक संबन्ध आज भी है। पर हाय! बेटी बाप की शिक्षा और अपने अगुओं को शिक्षा क्यों माने, बेटी जवान है। आज हमारी कलीशिया की, जिसको परमेश्वर ने आमोस ५:२ में कुमारी कन्या कहा है। उसकी सुन्दरता कहां गयी? किसने उसको महीमा और सुन्दरता को बिगाड़ा? हाय! उसके अपने ही याजकों ने सिंगारने-संवारने के बदले नोच खसोट कर, इतना कुरूप बना दिया है कि "पृथ्वी के वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता" (प्र: व: १७:५) बन कर रह गयी है : रो रही है ; तड़प रही; सिसक रही है। परमेश्वर चिल्ल-चिल्ला कर पुकार रहा हैं : 'हे गोस्सनर की बेटी तू कहां है? अपनी जवानी को देख।"

आज विचारशील व्यक्तियों के मन में पहले से कहीं अधिक प्रश्न है। हमारे चर्च में ऐसे लोग हैं जो नाम के लिए मसीही हैं और ईश्वर के विरुद्ध, चर्च के कामों में

Gossner Mission

रुकावटें डालने में लगे हुए हैं। शान्ति के जगह अशान्ति स्थापित कर रहे हैं। आज गम्भीर और चेतनशील व्यक्तियों को भी संदेह में डाल रहे हैं, कि क्या छुटकारा तो असम्भव नहीं? उनकी समझ से यह बात बाहर है कि आज इस युग में विद्या बढ़ गयी धन बढ़ गया और सभ्यता चरमोत्कर्ष पर है तो हमारे चर्च में परस्पर संघर्ष क्यों जारी है। इतने सम्मेलनों, विदेशी साहबों की पिता तुल्य शिक्षा देने एवं शान्ति-वार्ताओं के होने पर भी हिंसा का सहारा लेने के सिवाय हमारी समस्याओं का अन्य समाधान दृष्टिगत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि हम स्वार्थी और उन्मत संसार में रहते हैं। स्वार्थ और विद्रोह में बहुत दूर जा भटके हैं। हमें ऐसा आज पड़ता है कि कहीं विनाश की कगार पर तो हम नहीं खड़े हैं?

हमारी चर्च की समस्याएं जो सोचनीय दशा है, कंगारूओं, बिल्लियों, कुत्तों, बन्दरों अथवा पक्षियों के कारण उत्पन्न नहीं है। चर्च के नियमावली पलटने, ईश्वर के नियमों का उल्लंघन करने का प्रयास पशु नहीं करते। समस्या तो "मानव" है वही द्रोही, लड़ाकू और आत्माभिमानी है जो पाप करने से नहीं लजाता। वही मंडली के पैसा खाने, चर्च सजाने से अपने परिवार की पूजा करता है। वही परमेश्वर के विधानों को तोड़ता और चर्च में फूट डालने का प्रयास करता है।

आज कितने अभिमानी हैं, जो जात के नाम, अल्प संख्यक—बहू संख्यक दिखा कर अपने को चर्च से अलग कर रहे हैं। चर्च के अगुओं को डरा-धमका रहे हैं मानों सिंह हैं।

हाँ, अवश्य गोस्सनर पार्क में देशी काला भेड़िया घुसा है और उसके बच्चे अनेक हैं। जो शान्ति को भंग कर रहे हैं। गोस्सनर उद्यान में जो काला भेड़िया घुसा हुआ है उसकी पहचान है :—(१) अभिमानी (२) उपद्रवी (३) भ्रष्ट (४) छली (५) परमेश्वर से अलग (६) पेटू और कठोर हृदय।

अतः कलीसिया के सभी भाई-बहन उस भेड़िये और उसके बच्चों के भड़काने से न डरें, वरन साहसी को पकड़ें जो परमेश्वर से नहीं डरता। जगत के अन्त में उस भेड़िया और उसके बच्चों को गोस्सनर साहब को दिखाया जायगा।

Mrs. Dulari Tirkey
G. E. L. church
BANDEL
W. Bengal

—०:०—

शोक समाचार

टोकाद पेरिस कोचा मण्डली के प्रचीन अब्रहाम सोय को ईश्वर ने तिथि २२-१२-७३ दिन शनिवार को करीब ७५ वर्ष की आयु में गले की बीमारी से अपने पास बुला लिया। मृत अब्रहाम सोय की जीवनी अनुसरणीय थी। उन्होंने जीवन भर मण्डली की अच्छी सेवा की। प्रचारक का घर जब नहीं था तब उन्होंने अपने घर में डेरा दिया करता था। उनकी संगति में बराबर रहने के कारण धर्म्म कर्म्म में दिलचस्पी बढ़ा। जब कभी पाद्री महोदय आते थे तब भी वे उनकी संगति में रहते थे। वे बहुत ही प्रेमी मन के थे। वे सभों से प्रेम का व्योहार करते थे। उनके धर्मी कर्मों में दिलचस्प रखने का एक बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने अपने एकलाही बेटे पाद्री जुनास सोय को पाद्री काम के लिए सौंप दिया। वे मण्डली का बिस्तार चाहते थे। जितने भी अखुस्तान उनके घरधंगर रहे, उन्होंने बहुतों को मसीह के पास लाया। वर्तमान गिरजा घर जो पथरों से सुन्दर रूप से बना है उनके निर्माण कार्य में उनका बड़ा हाथ था। वे बहुत परिश्रमी, समाज सेवक तथा अच्छे खेतीहार थे। अपने बिमार होने के पूर्व उनकी धर्म्म पत्नी श्रीमती मरियम सोय

Gossner Mission

गल्ले की बिमारी से बहुत पीड़ित थी। उनकी सेवा डेढ़ सहप्ताह तक दिन रात करने के पश्चात अपने को खुद यह बिमारी पकड़ लिया। उनकी धर्म्म पत्नी बिमारी से चंगी हुई। पर आप ने डेढ़ सप्ताह के बाद इस दुनिया से चल पड़े। मृत्यु के एक दिन पूर्व उन्होंने मण्डली को सम्बोधित करते हुए दिन भर प्रेम से रहने का उपदेश दिया। रात होने पर उनके कान, आंख, मूंह आदि बन्द हुए। वे अपनी मृत्यु का खबर अपना हाथ उठा–उठा कर देते रहे। तिथि २२–१२–७३ सुबह को वे ९ बजे प्रसन्न चित इस दुनिया से सदा के लिए बिदा हुए। बिदा होने के समय उनका बेटा पाद्री जुनस सोय तथा अन्य शुभ: चिंतक मौजूद थे। स्थानीय प्रचारक की आस्वास्थता पर मास्टर अब्रहाम सोय द्वारा स्थानीय कब्र के नये प्लोट में मिट्टी दी गयी। मृत अब्रहाम सोय अपने पीछे छोटे परिवार अर्थात धर्म्म पत्नी, एक बेटा, बहू, और नतनी को छोड़ गये हैं। पाठक गण शोकित परिवार को अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करें।

प्रचारक ऐनेम तोपनो
कोचा मण्डली
१-३-७४

• • •

सूचना

बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय, राँची में १९७४-१९७६ के लिए प्रशिक्षणार्थियों की बहाली के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। उम्मीदवार की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिए। स्थान रहने पर मैट्रिक फेल उम्मीदवार भी लिए जाएंगे। आवेदन पत्र दाखिल करने की अन्तिम तिथि १५ जून १९७४ है।

प्रधानाध्यापिका
बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय
राँची।

Gossner Mission

कलोसियाई समाचार

गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर पास्टर सेबर्ग ५ फरवरी को रांची पहुंचे। उनकी इच्छा थी कि कलीसिया की अशांति को दूर करने के लिये कलीसिया की महासभा बुलायी जाय। परन्तु यह सम्भव नहीं हुआ। इसके बदले पांचों अंचलों के अध्यक्षों की सभा बुलायी गयी। इस सभा में आसाम अंचल अध्यक्ष उपस्थित नहीं हो सके इसलिये बाकी चार अध्यक्षों ने पूरी जानकारी के लिये फैसला किया कि ५ अंचलों की समितियां और अध्यक्षों की सम्मिलित सभा बुलायी जाय। फैसला के अनुसार अंचल समितियों की सभा १४-१५ मार्च को बुलायी गयी। उक्त तिथि पर सभी अंचलों की समितियां उपस्थित समर्थक मतदान(कोरोबोरेटिव वोट) पर बिचार किया गया परन्तु सब एक मत नहीं हो सके। उड़ीसा और आसाम अंचल जिन्होंने पहले निगेटिव (अस्वीकारसूचक) वोट दिया था उसी पर डटे रहे और कोई समाधान नहीं होने पाया। इस पर १५-३-७४ अध्यक्षों को सभा हुई जिसमें पाद्री डा० निर्मल मिंज कार्यवाहक(एक्टिंग) प्रमुख अध्यक्ष चुने गये जिस पद पर तब तक पाद्री डा० सी० के० पौल सिंह थे। इसी अध्यक्ष कौंसिल ने तोड़ा हुआ के० एस० एस० को पुनर्जीवित कर दिया जिसकी आकस्मिक सभा १५-१६ मार्च को हुई आकस्मिक सभा के फैसलानुसार फुल के० एस० एस० की सभा १६ अप्रेल को ठहरायी गयी है।

कार्यवाहक प्रमुख अध्यक्ष की अवधि ५ महीनों के लिए १५ मार्च से ही रखी गयी है। इन्हीं पांच महीनों के अन्दर कलीसिया में शांति और एकता लाने के लिए नया संविधान बनाया जायगा। संविधान बनाने के लिए रेभ० सी० बी० आईन्द के नेतृत्व में ७ सदस्यों की एक कमिटि बनाई गई है। इस प्रकार कलीसिया का आंतरिक काम चालू कर दिया है। कचहरी में जो कार्य निषेध (इंजंकशन) का मुकदमा चल रहा है उसका फैसला अब तक नहीं हुआ है। कलीसिया का पैसा जो बैंकों में है उसको निकालना अब तक बन्द ही है जिससे कलीसिया के कामों में अब तक रोक टोक हो रहा है। पैसा ही कलोसिया के कामों का आधार है उसके बिना सब काम ठप पड़ जा सकता है।

उपरोक्त कामों के होने तक पास्टर सेबर्ग रांची में ही रहे। उनकी विदाई का प्रबंध सात संस्थाओं ने प्रमुख अध्यक्ष की नेतृत्व में किया। एतवार २४-३-७४ को रांची क्रिस्त गिर्जे में ४ बजे उनको विदाई देने का प्रबन्ध किया गया। सातो संस्थाओं के सदस्यों को छोड़ कलीसिया के अन्य भाई बहन भी इस विदाई सभा में उपस्थित होने के लिए निमंत्रित किये गये।

रांची में रहते पास्टर सेबर्ग ने कलीसिया की अशांति को दूर करने के उपाय- अन्तरों को ढूढ़ निकालने का ही प्रयास करते रहे। देशी या विदेशियों से भी सलाह मुशबिरा कर अपना बिचार प्रगट किये परन्तु अन्त में उन्हें भी निराश ही होना पड़ा। विदाई सभा के समक्ष ही उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "लड़ाई का अन्त नही हुआ हैं, अभी तो केवल युद्ध विराम हुआ है" कहने का मतलब कि गोस्सनर कलीसिया की अशांति का अन्त नहीं हुआ है केवल थोड़े दिनों के लिये स्थागित कर दी गयी है। इसी परिस्थिति में वे गोस्सनर कलीसिया को छोड़ कर मंगलवार २६-३-७४ को जर्मनी वापस चले गये। उनकी विदाई में सातो संस्थाओं ने कुछ बातें कह कर फूलों की मालाएं पहना दी। उनको और उपस्थित जनता को सम्बोधन कर पास्टर सेबर्ग ने कहा कि जिस परिस्थिति को मैं गोस्सनर कलीसिया में देखा, सुना और अनुभव किया उसी को मैं जर्मनी के भाई बहनों तथा क्यूरेटोरियम के सम्मुख रिपोर्ट के तौर पर बतलाउंगा। इसी सिलसिले में उन्होंने कहा कि जब मैं दूसरी बार फिर रांची आऊंगा तब तक आप लोगों मे से बहुत कोई नहीं रहेंगे। इस कथन से दो अर्थ निकाले जा सकते हैं। पहला कि उस की दूसरी आगमन तक बहुत से वृद्ध मर मिट जांयगे। दूसरा कि उस समय तक बहुत से कलीसियाई पदधारी लोग अपने पदों पर नहीं रहेंगे।

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

२६-३-७४ को हवाई अड्डे पर अस्थायी प्रमुख अध्यक्ष डाइरेक्टर बी॰ई॰एल॰ और अन्य कई लोग विदाई के लिये उपस्थित थे। गड़बड़ी के कारण वायुयान दो घण्टों का लेट कर दिया था फिर भी १२ बजे वे रवाना हो गये। वे तो चले गये पर अब हमें देखना है कि हम कहां तक गोस्सनर कलीसिया की अशांति को दूर करने में सफलवन्त होते हैं। यदि कलीसिया के सभी सदस्यों में प्रेमभाव उत्पन्न हो और हरएक निस्वार्थ होकर काम करे तो यह अशांति कुछ ही दिनों में दूर हो जायगी। द्वेष, पदलोलूप, स्वार्थ और लोभ ही अशांति का मूल है।

ए० पी० बरला।

विविध समाचार

१ हिन्देशिया के पेमन्तांग नगर में ग्रेजुवेटों क एक थेओलोजिकल कॉलेज खुल गया है। इसमें सभी प्रोटेस्टान्ट कलीसिया के लोग लिये जाते हैं और उन्हें "मास्टर डिग्री" दिया जाता है। ग्रेजुवेट प्रोग्राम के अगोत्तर अध्ययन के लिये सिंगापुर, ताइवान, फिलिपाइन और थाईलैन्ड के शेमिनरियों के द्वारा भी दिये जाते हैं।

२ न्यूयोर्क का खबर है कि जिस पोपीय कलीसिया ने ५ शताब्दी पहले प्रोटेस्टान्टों के सुधार को जला दी या आग लगा दी वह अब समाधान के परिस्थिति पर आ गई है। अब लूथेरान और कथोलिकों के बीच समाधान होने पर कोई रुकावट नहीं है इस विषय पर तीन वर्षों तक लूथेरान और कथोलिक धर्मतत्वज्ञों ने विचार विमर्श किया। ५००० शब्दों के वर्णन में उन्होंने इसका प्रकाश किया और कलीसियओं के द्वारा समाधान की ओर अग्रसर होने की इच्छा प्रकट की है। केवल कथोलिक और लूथेरानों के बीच ही एकता की बात नहीं चल रही है परन्तु सारे जगत के खिस्तानों को ही एक हो जाने पर विचार किया जा रहा है। यदि यह खिस्तीय एकता का समाधान किया जाय तो संसार के लिए महत्व की बात होगी।

३ प्राप्त समाचारों से विदित होता है कि आगे को विदेशी रकम धार्मिक संस्थाओं के कामों के लिए भारतवर्ष में आने से बन्द किया जायगा। लोक सभा में बिल पेश किया हुआ है पर पास नहीं हुआ है। इस बार को बैठकी में ही उस पर विचार करना है। यदि यह कानून बन जाय तो हमारी कलीसिया को केवल नहीं पर अन्य कलीसियाओं पर भी धक्का लगेगा। गोस्सनर कलीसिया में विशेष कर प्रचार के काम क्षेत्र, प्रचारक ट्रेनिंग, थेयोलोजिकल कालेज और विकास के कामों पर अघात पहुंचेगा क्योंकि इन सब कामों के लिए अब तक विदेशी पैसा ही काम में लाया जाता है।

४ इस बार विद्यार्थियों के अन्दोलन ने बिहार में काफी प्रभाव डाल दिया बहुतों का जान चला गया, बहुतों का धन लूट गया और स्कूल कालेज आदि बन्द कर दिये गये जिससे छात्रों की पढ़ाई की भारी क्षति हुई। १५ दिन से अधिक स्कूल-कालेज बन्द रहे। करफ्यू और गोली कान्डों से लोगों में अशांति रही। अन्दोलन का कारण चीजों का दाम बढ़ना, बेकारी, भ्रष्टाचारी आदि बताया गया। अन्दोलन को विद्यार्थियों की अशांति का संज्ञा दिया परन्तु इसमें कई राजनैतिक दलों ने भी भाग लिया बताया जाता है इसी से उग्ररूप धारण किया।

५ वेटिकान सिटी का खबर है कि पोप पौल ६वां इस महीना दूसरी बार बीमार पड़ गये हैं। अभी उनकी उम्र ७६ साल की है। संसार में अभी ६ करोड़ कथोलिकों का वे धर्माध्यक्ष हैं।

६ समाचार पत्रों से मालूम होता है कि सरकार फिर से ५० प्रतिशत कन्ट्रोल उठा दे रही है। खुले बाजार में ५० प्रतिशत खाद्य सामग्री बेचने के लिये व्यापारियों को छूट दे दी गई है। आशा है कि अब खाद्य सामग्री पाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

Gossner Mission

७ जेनेवा का समाचार है कि १९७३ साल में लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन को ओर से १० करोड़ रुपैया का माल रिलीफ काम के लिये विभिन्न देशों में भेजा गया जिनमें हिन्दुस्तान भी एक है। यह दान जर्मनी, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, नोरवे, स्वीडेन, फिनलैन्ड और कनाडा से दिया गया था।

८ पहले का खबर था कि अफ्रीका सरकार ने प्रचारक बुथेलेसी को अपने काम से मनाही कर दी थी। यह कर्रवाई टू-दा-पोइन्ट नामक समाचार मैगेजिन के द्वारा कराया गया था पर मुकदमे में डा० बुथेलेसी की जीत हुई। इसी पर डा० बुथेलेसी ने मैगेनिज के सम्पादक के विरुध ३०००० रैन्ड याने साढ़े तीन लाख रुपैया का कानूनी दावा कर दिया है। सम्पादक ने डा० बुथेलेसी पर यही आरोप लगाया था कि वह शांतिपूर्ण मेल के बदले उपद्रव का समर्थन करते हैं।

९ फ्रांस का स्ट्रासवूर्ग का खबर है कि यहां अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सेमिनार की ८ वीं बैठकी जून २४ से जुलाई ३ तक होगी। इसमें १६ प्रतिनिधि उपस्थित होंगे जिसमें अंगलिकन, रोमन कथोलिक और लूथेरान थेओलोजियन रहेंगे। इसमें धर्म सम्बन्धी बात विचार ही होगा।

१० साइबेरिया में रहने वाले प्राय: ४० जर्मनों ने संयुक्त-राष्ट्र संघ के महा सचिव के पास आवेदन पत्र भेजा है कि उनको सोवियत रूस से निकालने में सहायता दें। वे वहां रहने नहीं चाहते इसलिए कि उन्हें वहां राजनैतिक या सामाजिक किसी की सुविधा नहीं दी जा रही है।

११ पोलैन्ड की सरकार ने १४४ कलीसियाओं को गिरजा घर सहित अपने पुराने स्वामियों को दे दिया इनमें से १३८ रोम कथोलिक चर्च ने पाया।

१२ अप्रेल मास के घरबन्धु में कासा (CASA) रिलीफ संस्था के विषय लेख लिखा गया था परन्तु उसमें पूरा विवरण नहीं दिया गया था। रिलीफ योजनाएं कूवां, बान्ध और तालाब हैं छोटानागपुर के लिए। आवेदन के लिए आप को एक छपा फार्म सेन्ट्राल रिलोफ कमिटी, रांची से मंगाने से मिलेगा। इस आवेदन फार्म को आवेदक भरेगा और इलाका या पेरिश चेयर मैन के सिफारिश के साथ भेजना होगा। आवेदन पत्र के साथ प्लान (नक्शा) एस्टीमेट (खर्च का ब्योरा) नथ्थी रहेगा जो किसी इन्जीनियर या श्री प्रभूसहाय तोपनो साउथइस्ट अन्चल या श्री विनकस एक्का नोर्थवेस्ट अंचल, सिरोमटोली से १०) रू० देने पर बना बनाया हुआ मिलेगा। आवेदन सेक्रेटेरी से० रि० क० पास भेजना चाहिए।

लेखक।

गोस्सनर कलोशा को स्थिति

निकोदीम केरकेटा, चैनपुर

गोस्सनर एवंजेलिकल लूथेरान कलीसिया का इतिहास छोटानागपुर के इस पर्वतीय क्षेत्र में सबसे पुराना है। हमें गौरव है कि हम इतनी पुरानी कलीसिया के अंग हैं।

इस कलीशिया को नेव आज से १२८ वर्ष पूर्व मिशनरियों के कठिन परिश्रम के बाद हुई है। हमारे उद्धार के इस कार्य के लिए फादर गोस्सनर तथा वे चार मिशनरी विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने कलीशिया की नेव हमारे बीच डाली है। संकटपूर्ण स्थितियों के बीच स्थापित की गयी यह कलीसिया आज विस्तृत क्षेत्रों में फैली हुई है, जिसकी जनसंख्या आज करीब दो लाख पचहत्तर हजार से भी कहीं अधिक है।

गोस्सनर कलीसिया का इतिहास वास्तव में अत्यन्त दुखद है। कलीसिया प्रारम्भ से ही नाजुक परिस्थितियों से होकर गुजर रही है। कहना न होगा कि कलीसिया

Gossner Mission

ने आरम्भ काल में कौन-कौन सी मुसिबतों को झेला है। ऐसी ही नाजुक स्थिति में हमारे पुरखों ने कलीसिया के आत्मपालन का कठिन भार अपने ऊपर १९१९ ई॰ में लिया, इस आशा से कि ईश्वर कलीसिया के पालन में हमारी सहायता करेगा। इस महत्वपूर्ण घटना के बाद कलीसिया ५४ वर्ष की भी हो चुकी है, याने कलीसिया वालिग अवस्था को प्राप्त कर चुकी है। आईए, अब देखें कि इतने लम्बे आर्से के बाद स्वावलम्बी तथा सुदृढ़ बना पाये हैं या नहीं ? यही सोचने की बात है।

कलीसिया के वर्त्तमान स्थिति को देखकर सहज ही कहा जा सकता है कि हम अपनी लक्ष्य से कितना पीछे पड़े हुए हैं। सौ वर्षों के बाद भी कलीसिया वे किसी भी कार्यक्षेत्र में संतोषजनक प्रगति नहीं कर पाये हैं; बल्कि हमारा स्तर दिन-प्रतिदिन नीचे गिरता जा रहा है। विश्वास में कमी, संस्थाओं की दुर्दशा तथा आर्थिक कठिनाईयाँ नित हमें घेरती जा रही है। सही माने में कलीसिया का यही बर्त्तमान इतिहास है। ऐसी परिस्थिति में पड़ने का दो ही मुख्य कारण मेरी नजर में पड़ रही है। वे हैं सुस्त प्रशासन प्रणाली तथा कलीशिया की आर्थिक समस्या।

कलीसिया की वर्त्तमान शासन प्रणाली में कोई विशेषता मेरी नजर में नहीं आती है, न तो कलीशिया के संविधान के ही महत्त्व रखा जाता है। कभी एवं किसी भी परिस्थिति में जब-तब संविधान को गलत बतला कर बदल दिया गया यद्यपि किसी संविधान में संशोधन का विशेष प्रबन्ध रहता है। लेकिन, यह हमारे प्रशासकों के बुद्धि की ही बलिहारी है। शासन कार्य का व्यवहारिक रुप तो संविधान से कोसों दूर होगा। नियम का पालन विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। इसी कमजोरी के कारण कलीसिया में असंतोष फैलतो जा रहो है।

दूसरा, किन्तु प्रमुख समस्या है—आर्थिक कठिनाईयाँ। कलीसिया की हमारी यह आर्थिक कठिनाईयाँ स्वाभाविक नहीं किन्तु कृत्रिम हैं। ऐसो परिस्थिति हमें घेरी नहीं है किन्तु परिस्थिति को हमने स्वयं अमंत्रित किया है। क्योंकि हमारे पास आय के बहुत सारे साधन हैं जिनके सदोपयोग से यथेष्ट मात्रा में रकम प्राप्त हो सकती है, जो हमारे सम्पूर्ण व्यय की रकम से भी अधिक हो सकती हैं। कलीसिया के आय के स्रोत हैं— खेतीयोग भूमी, प्रेस, प्रकाशनगृह, तलाब कृषि फार्म, किराये के मकान, शहरी क्षेत्रों में दिये गये लीज का किराया तथा बेकार पड़े हुए भूमी का सदोपयोग। इसके अलावे मंडली चंदा, प्रभुप्रीत, स्वेछा चन्दा, रविवार का दान, घड़ा सिरनी, नया खानी तथा कटनी पर्व का दान आदि है।

किन्तु वास्तव में देखा जाय तो उक्त स्रोतों से आप की रकम उचित मात्रा में नहीं पा रहे हैं, सिर्फ सदस्यों से प्राप्त होनेवाले दान को रकम हो कलीसिया की आय मानी गयी है। कलीसिया भी अब तक इसी दान की रकम के बल पर ही चल रही है। अन्य मदों से होनेवाले आय का दुरोपयोग अधिकारीगणों तक ही सीमित है, उनका पालन-पोषण हो जाय, यही काफी है। जैसे प्रेस से कलीसिया को कोई लाभ नहीं किन्तु कई वर्षों से घाटे में ही चलाई जा रही है, फिर भी उच्च अधिकारियों को ध्यान देने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। इसी तरह विभिन्न शहरी क्षेत्रों में दिये गये लीज किराया, मकान किराया की वासुली का भी अधिकारियों को फिक्र नहीं है। खेती से होने वाले आय का कोई हिसाब नहीं है। इसके अलावा भी प्रशासकों के व्यय का कोई लेखा-जोखा नहीं होता है। सम्बन्धित मंडली सदस्य इस तरह के कुव्यवस्था को देखने के लिए अब भी सजग नहीं है। आय का एक बड़ी रकम प्रति वर्ष मंड़ली के कोष में जमा नहीं किया जाता है। रकम के लेन देन में भी गलत तरीका अपनाया गया है। बहुत सारे लेन देन तो मौखिक रूप से भी किये जाते हैं। इस तरह का लेन-देन कर्मचारी एवं अधिकारी और पाद्री एवं कोषाध्यक्ष के बीच होते हैं, जो अत्यन्त ही गलत तरीका है। इस तरह की अनियमित व्यवहार के कारण ही कलीसिया में दिनों दिन असंतोष तथा झगड़े बढ़ते जा रहें हैं। इस तरह अर्थ व्यवस्था तथा शासन पद्धति में भी बुराईयाँ फैली हुई हैं।

अतः इस क्षेत्र में प्रगति लाना है तो इन बुराईयों को सर्वप्रथम दूर करना होगा। सबसे पहले तो कलीसिया के आय-व्ययों का तरीका एक इकाई से दूसरे इकाई के साथ संबंध स्थापित किया जाना चाहिये। हमें युग के साथ

Gossner Mission

शासन प्रणाली तथा आर्थिक नियंत्रण की ओर विशेष ध्यान देना होगा। साफ शब्दों में यह कहा जाय कि शासन प्रणाली में सिर्फ संविधान तक ही यथेष्ट नहीं समझना चाहिये बल्कि, इसके व्यावहारिक रुप को ही प्राथमिकरुप दिया जाना चाहिए। मंडली तथा प्रत्येक इकाईयों को उचित रुप से नियंत्रण में लाया जा सके। वर्त्तमान केन्द्रीय सलाहकार समिति का सम्बन्ध एक मंडली तथा किसी भी संस्था (इकाई) से भी हो ताकि केन्द्र को कलीसिया के किसी भी क्षेत्र के स्थिति का ज्ञान हो सके। अत: उक्त समस्याओं को हल करने के लिये मैं कुछ मौलिक बातों का सुझाव दे रहा हूँ जिस पर समिति को गौर करना चाहिये।

आर्थिक नियंत्रण—

१ प्रत्येक मंडली तथा इकाईयों (स्कूल, फ र्म; प्रेस, अस्पाताल आदि) में होनेवाले आय-व्यय का मासिक हिसाब नियमित रुप से दो कॉपी वाली चालन रसीद बुक में लिखा जाय, जिसका एक कॉपी अंचल या के. एस. एस. को दिया जाय।

२ प्रत्येक मंडली तथा इकाईयों में अनिवार्य रुप से सिद्धान्त के अनुसार आय-व्यय का खाता रखा जाय तथा उसका वार्षिक जांच उच्च अधिकारियों द्वारा किया जाना चाहिये।

३ मंडली तथा इकाई के व्यय का अधिकतम राशि-केन्द्र या अंचल द्वारा निश्चित कर दिया जाना चाहिये। आक्समिक व्यय के लिये समिति का अनुमोदन आवश्यक समझा जाना चाहिये।

४· मंडली या ईकाई का मासिक आय का ७५% केन्द्र या अंचल में जमा किया जाय। आय का २५% ईकाई के कार्य व्यवस्था के लिये रखा जाय। तथा कर्मचारियों का वेतन अंचल या केन्द्र से ही हो।

५· आय की वृद्धि के लिये मंडली चंदा, घर किराया, प्रभु प्रीत, लीज किराया, प्रेस, फार्म तथा अन्य मदों से होने वाली आय को नियमित रुप से केन्द्र या अंचल वसूल करे।

उक्त व्यवस्था इसलिये जरुरी समझा जाता है कि केन्द्र या अंचल को अपने क्षेत्र से होने वाली आय का प्रत्यक्ष ज्ञान हो सकेगा। ईकाई या मंडली से सीधा सम्बन्ध होने के कारण उन क्षेत्रों में होने वाले अनियमित व्यय तथा अर्थकुव्यवस्था को दूर करने में उच्च अधिकारियों को सुविधा होगी तथा उसका उचित नियंत्रण किया जा सकता है।

इसी तरह अंचल के आय-व्यय के सम्बन्ध में भी केन्द्र को यही नीति अपनानी चाहिये।

प्रशासन प्रणाली—

१· कलीसिया के प्रशासन से स्कूल, प्रेस, फार्म दुकान आदि को भी मंडली के स्तर पर ही एक ईकाई माना जाये तथा उनकी उन्नति के लिये भी केन्द्र या अंचल हो उत्तर-दायी हो।

२· कलीसिया के प्रशासन के लिये मंडली क्षेत्रों का विभाजन मंडली, पेरिस, अंचल तथा केन्द्र में हो। जिस्ते आर्थिक मामलों में अंचल का मंडली से तथा अंचल का केन्द्र से सीधा सम्बन्ध हो। पेरिस को कोष रखने के अधिकार से वंचित कर दिया जाय। केन्द्र सभी मामलों में शक्तिशाली हो।

३· किसी भी स्तर के कलीसियाई सभा का मुख्य (Chairman) कलीसिया के कर्मचारी या पाद्री को न रखा जाय।

४· कोई भी व्यक्ति कलीसिया के किसी भी उपसमितियों में एक से अधिक समितियों का सदस्य या अधिकारी न चुना जाय।

५· कलीसियाई सेवा अधिनियम (Service, Rule) निश्चित कर दिया जाना चाहिये, जिसमें पाद्रियों तथा प्रचारकों को भी शामिल करना चाहिये।

६· कलीसिया शासन में आम सदस्यओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिये जिसमें योग्य, विश्वासी एंव कलीसियाई सेवा में विशेष अभिरुचि रखते हैं उन्हें ही कलीसिया के किसी भी सभा का सदस्य चुना जाना चाहिये।

उक्त व्यवस्था के कारण प्रत्येक क्षेत्र का निरीक्षण उचित रुप से तथा सीधा नियंत्रण सम्भव हो सकेगा। कर्मचारी या पाद्रियों को प्रशासन में सीधा हाथ होने पर आर्थिक मामलों के कारण बदनामी तथा अविश्वास का

Gossner Mission

शिकार हो जाने की अधिक सम्भावना है, साथ ही उनका व्यक्तिगत अभिरुचि तथा स्वार्थभावना की वृद्धि हो सकती है।

अंत में मेरा यह भी सुझाव है कि हर क्षेत्र की आय मंडली और आम सदस्याओं की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाना चाहिये। साथ ही साथ अंचलों का काम तत्परता और विश्वास योग्य होने के लिये अंचल सभा को चुस्त बनाया जाय, जिसके कार्मों का निरीक्षण केन्द्र सभा के द्वारा हो। शक्तिशाली केन्द्र को समस्त कलोसिया के उन्नति-अवन्नति के लिये पूर्ण रुप से जिम्मेवार होना चाहिये।

इस तरह की व्यवस्था से ईकाई या मंडली का क्रमश: सम्बन्ध केन्द्र के साथ हो सकेगा तथा प्रत्येक क्षेत्र की स्थिति का ज्ञान केन्द्र को भी प्राप्त हो सकता है तथा विशेष परिस्थिति में केन्द्र सुझाव दे कर आत्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक विकास का मार्ग प्रदर्शित कर सकता है।

"जीवन के नीर"

क्यों बरसते नयनों से नीर,
चल, साथी जीवन के तीर?

प्रभु यीशु है एक सहारा,
चल कर तो देख प्यारा-न्यारा!
बैठे स्वर्ग में वही गिनेंगे,
सुख-दु:ख के सब पीर।
चल, साथी जीवन के तीर?

क्यों कम्पते पग डगमग तेरे,
अन्तर की पीड़ा क्यों घेरे!
बरस रहे नयनों से आँसू,
क्यों तजते हो धीर!
चल, साथी जीवन के तीर?

पुछ रहा मन व्याकुल हो कर,
है क्या उस पार क्षितिज में।
वहां कौन है मित्र तुम्हारा,
जिसकी होती तुम को पीर?

क्यों बरसते नयनों से नीर,
चल साथी जीवन के तीर?

बी० एस० टुटी "रंगीला"

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

रक्तदान

मंगल सोय 'अनमोल'

बारह बजने में बारह मिनट शेष थे। रोश्नी ने बेसब्री से अपनी घड़ी देखी— सेकिन्ड की पतली सूई कांप रही थी। ठीक उन धड़कनों की भांति जो रोश्नी के हृदय में तूफान बनकर यूं उमड़ रही थीं मानो चन्द क्षणों के बाद शांत हो जाने को बेताब हों।

'गुड फ्राइडे' का गिर्जा आराधना चल रहा था। अभी उपदेश हो रहा था। हमारे गुनाहों के निमित्त यीशु ख्रीष्ट का रक्तदान और उपेक्षित सलीब पर उसके अनोखे प्रायश्चित को लेकर। पाद्री के उपदेश देने का ढंग रोचक और प्रभावपूर्ण था। हर किसी के माथे पर दुःख और सहानुभूति की परछाइंयां स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थीं। लेकिन रोश्नी·····! वह अपने रंजन की जुदाई के गम में डूबी जा रही थी। उसे आशा थी कि आज के गिर्जे में रंजन अवश्य हो उपस्थित रहेगा। अपनी उड़ती निगाहों से रोश्नी ने पूरा गिर्जा घर छान डाला — रंजन कहीं भी न था। वह देखती रही—देखती रही, इतना तक कि गिर्जे की छुट्टी हो गई। लेकिन रंजन को नहीं आना था और नहीं आया।

भीड़ के साथ रोशनी भी गिर्जा घर से निकल पड़ी। माथे पर बह आये पसीनों को उसने अपनी साड़ी के छोर से पोंछ डाला और चुपचाप आगे बढ़ने लगी। बहुत सारे लोग अब अपने-अपने घरों की ओर रवाना हो रहे थे। सबके मुख पर बदहवासी छाई हुई थी। आज का गिर्जा आना रोश्नी को व्यर्थ-सी लगी। चाहती तो घर पर पड़ी रहकर आराम कर सकती थी, क्योंकि दो तीन दिनों से उसका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था। आज भी तो कै हो गई थी।·····चिलचिलाती धूप और वातावरण की सनसनाती गर्म हवा के स्पर्श होते ही उसे एकाएक प्यास की अनुभूति हुई। चलते-चलते वह पक्के सड़क पर आ गई थी। वह किसी होटल में जाकर प्यास बुझा सकती थी, मगर शायद रंजन से ही मुलाकात करने की प्यास कुछ तीव्र थी, वह तेजी से अकेली बढ़ चली। तप्त सड़क ने उसे कुछ तकलीफ दी तो दौड़ती मोटर-कारों पर बैठे इंसानों के भाग्य पर उसे थोड़ी-सी ईर्ष्या हुई। काश! कि पंछियों की भांति उसके पर होते·····। दुकानों और गलियों को पार कर जब वह रंजन के डेरे पर पहुंची तो उसकी निराशा की सीमा न रही? द्वार पर ताला पड़ा था। न जाने कहां गया हुआ था उसका रंजन। उल्टे कदम अभी वह मुड़ने ही वाली थी कि एक रिक्शा आकर वहाँ रुक गया। साँवली किंतु सुन्दर चेहरे वाली एक जवान महिला अपनी बच्ची के साथ उसपर सवार थी। रिक्शेवाले ने उनके सामानों को उतार कर रंजन के घर के दरवाजे के समीप रख दिया। दोनों रिक्शे से उतर गईं और रिक्शेवाले को विदा करके रंजन के घर की ओर बढ़ने लगीं। रोश्नी अपनी आश्चर्य से फटी निगाहों से उन्हें घूर रही थी। मन ही मन कल्पना में खो रही थी कि शायद रंजन की कोई बहन हो, रिश्तेदार हो या कोई जान-पहचान। अचानक जब उस अजनबी ने वहां खड़ी रोश्नी को देखा तो रोश्नी उसकी तीखी-दृष्टियों का सामना नहीं कर सकी। शर्म से उसने अपनी आंखे नीची कर लीं, किंतु दूसरे ही क्षण वह घबरा-सी गई। उस महिला के बढ़े हुये हाथ को देख कर रोश्नी ने भी यीशुसहाय के लिये अपना दहिना हाथ बढ़ा दिया।

यीशुसहाय के बाद रोश्नी ने हंसते हुये पूछा—

"तो बताइये ठीक तो हैं न?"

"जी·····किसी तरह। मेरा मतलब यह कि गर्मी से थोड़ी परेशानी हो रही थी।" उस महिला ने हंसकर जवाब दिया।

"कहां से आ रही हैं आप दोनों?" रोश्नी ने फिर पूछा।

"बानो से·····।"

"तो रंजन के गांव के हैं?" रोश्नी को उत्सुकता हुई।

"जी, कहां गये है अभी·· ...?"

घरबन्धु, मई १९७४

Gossner Mission

"न जाने कहां ?" फिर रोश्नी ने बच्ची को उठाकर अपने सीने से लगा लिया। बच्ची भी प्यार से रोश्नी को देखने लगी। उसके सुन्दर गालों को छूकर रोश्नी ने फिर कहा, "बड़ी प्यारी बच्ची है.....क्या नाम है इसका ?"

'लकी.....लेकिन सिर्फ नाम की लकी।" लकी की माँ ने कहा।

"कैसे.....?"

"सोचिये ! उस बार जब आई, उस समय भी बाप का घर में पता नहीं था। आज भी घर पर यह ताला.....।"

एकाएक रोश्नी के चेहरे का रंग फीका पड़ गया। आश्चर्य से वह प्रश्न कर बैठी, "तो क्या लकी रंजन की बेटी है !"

"हां उसकी बदनसीब बेटी !"

रोश्नी को यूं अनुभव हुआ मानो किसी विद्युत-तरंग ने उसे छू दिया हो। आवाक-सी खड़ी वह लकी को देखने लगी जो और भी रोश्नी से चिपटती जा रही थी। उसकी माँ भी उसे यूं होते देख आश्चर्य में डूबी जा रही थी।

तो क्या रंजन शादी-शुदा है ? एक बच्ची का बाप भी.....?.....तो क्यों उसने उससे शादी का झूठा वायदा दिया था—"रोश्नी ! तुम मुझपर विश्वास करो। कुछ ही दिनों में हम शादी कर लेंगे।" —क्यों धोखा दिया ? क्यों.....? क्यों आखिर क्यों ?..... क्षण भर में रोश्नी के दिमाग में अनेकों प्रश्न बवंडर बनकर चक्कर काटने लगे। क्या रंजन का प्यार सचमुच धोखा था.....बनावटी मलयसमीर का मात्र एक सुखद झोंका भर ? जिसके बहाव को प्यार समझकर रोश्नी अपनी अमूल्य यौवन-रूपी पतंग को रंजन की जिंदगी के धागे के सहारे मीठे अरमानों के आसमान पर ले जाना चाहकर बदनाम कर गई। उसे अपनी भूल का एहसास होने लगा। सच्चाई उसकी आंखों के सामने थी वह उसे इंकार न कर सकी। वह पतंग अब अपने आप गिर रही थी—गिर चुकी।

माँ बनना निश्चय ही सम्मान की बात है। हर नारी की एक इच्छा होती है कि वह कभी माँ बने। लेकिन रोश्नी जिस मासूम की माँ बनने वाली थी—क्या भावी समाज उसे अपना सकेगा ?.....क्या उसको आदर दे सकेगा ? क्या स्वयं रोश्नी उसकी जिंदगी को रोश्नी दिखा सकेगी ? न उसने एक अजनबी पर इतना विश्वास किया होता और न आज इतना धोखा खाती। वह रंजन के बच्चे की माँ बनने वाली थी जिसे वह रंजन से कहने आई थी। लेकिन रंजन इतना दगाबाज निकलेगा, उसने कभी सपनों में भी न सोचा था। अब वह क्या करे ?

(शेष अगले अंक में)

सूचना

गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज —प्रवेश परीक्षा—

दिन :— शनिवार। तिथि २६ अप्रील।

स्थान :— खूँटी अथवा खूँटीटोली।

समय :— ६ - ८ बैबल ज्ञान।

८:३० — १०:३० भाषा ज्ञान।

१:३० — ३:३० साधारण ज्ञान।

३:४५ — ५:४५ इन्टरव्यू।

उम्मीदवार गण अपना कागज एवं कलम लावें। अपनी सुविधा के अनुसार खूँटी अथवा खूँटीटोली आवें।

" प्राचार्य "

Gossner Mission

धन्यवाद, आप का चन्दा, (३१वीं मार्च १९७४ तक) मिला

1. Rev. Matias Bhengra
2. Mr. Ruben Barla
3. ,, Augustus Toppo
4. ,, Masihdas Sanga
5. ,, L. Kujur
6. Rev. C S. Lakra for 8
7. Mr. Z. Hans
8. Mr. I. Minz
9. ,, N. Minz
10. Rev. Obed Toppo for 8
11. Miss Helen Bhengra
12. Mr. B. E. Lugun
13. ,, Peter Hurad
14. Rev. C. B Aind
15. Mr. Nehemia Mundu
16. ,, Abinash Tiru
17. ,, S. K. Tete
18. ,, Nirmal Mundu
19. ,, Johan Champi
20. ,, J. Bodra II
21. Rev. S. Burh for 9
    a) Cat. A. Horo
    b) ,, L. Toppo
    c) ,, Matias Hatipota
    d) ,, The Baru
    e) ,, Z. Kerketta
    f) ,, P. Topno
    g) ,, Elias Barla
22. Cat. Heran Kerketta
23. ,, Eliazar Minz
24. ,, Patras Dungdung
25. ,, Dhanmasih Dang
26. ,, Puranprasad Marki
27. Rev. J. Kullu for 22
28. ,, Patras Hemrom
29. Cat Pyara Ekka
30. ,, Stiphan Kerketta
31. Mr. Suleman Bhengra (Tr. OA)
32. Rev. J. Suleman Soy
33. Mrs. A. K Lugun
34. Rev. N. M. Surin
35. Cat. Daud Tete
36. Mrs. Paulina Surin
37. Rev P. M. Ekka
38. ,, S. Barla
39. ,, H. Tutti
40. Mr. R. K. Kujur
41. ,, Samuel Punoria
42. Rev. N. Bor
43. Mr. Earnest David Arohan
44. ,, M. K. Pechal
45. Rev. H. M. Bage for 10
46. ,, Samuel Toppo
47. Mr. Immanuel Tigga
48. ,, Premprasad Tirkey
49. Rev. Matias Bhengra
59. Shri Enem Purti
51. Mr. Paulus Purti
52. ,, Andrias Khess
53. ,, Masihdas Lakra
54. ,, Rawel Lakra
55. Mrs. Telani Soy
56. Mr. M. Indwar for 100
57. ,, Patras D Kandulna
58. Rev. B. Minz
59. Cat. Nainsukh Kujur
60. Shri Junul Lugun
61. Prachin Stiphan Horo
62. Rev. P. Hemrom
63. Shri Theophil Lakra
64. Miss Jidan Burh
65. Mr. B. F. Tirkey—Ranchi
66. ,, P. C. Horo—Patna
67. Rev. M. P. Jojo—Kahupani
68. Mr. J. Horo—Kiriburu
69. ,, B. D. Dhan— ,,
70. ,, Moses Khakha—Bisrampur
71. ,, Rejan Horo—Kaseradih

Edited and Published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४ रांची, बिहार—४ वर्ष ९६७४, संख्या नं.—५

Gossner Mission

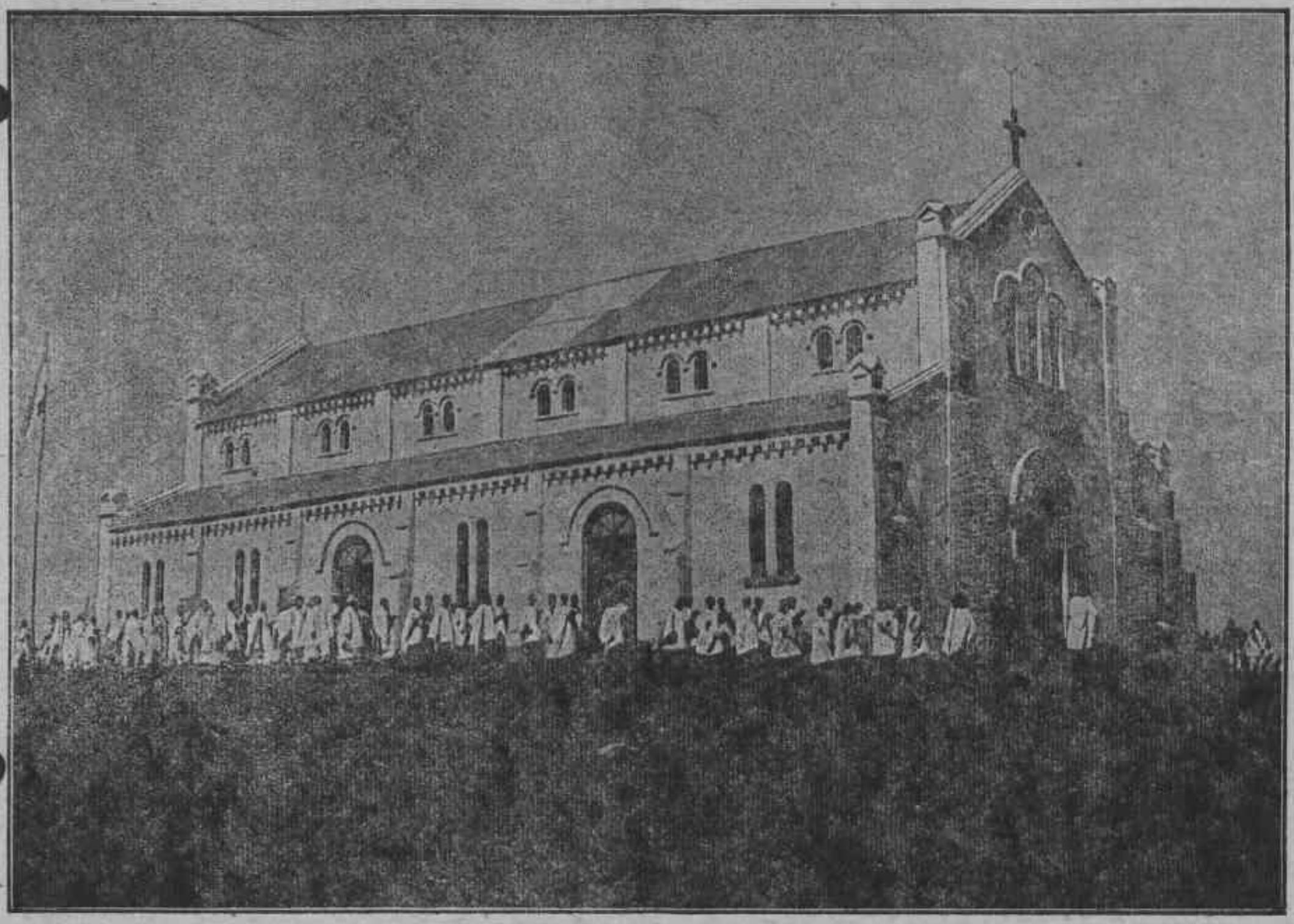
EINGEGANGEN
- 5. JUNI 1974
Erledigt .....

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ आर॰ एन॰सी॰ ४

वार्षिक मूल्य ५ रु०

वर्ष — ६४ रांची, अप्रेल १९७४ संख्या नं० — ४



आओ सब पापी लोग
हुए जो नरक योग्य
आओ निडर। गीत ५७

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
चिन्ता मुक्त कैसे हों	—	—	८
शोक समाचार	—	—	९
कासा	—	—	१०
कलीसियाई समाचार	—	—	१०
विविध समाचार	—	—	१३
सूचना	—	—	१४
अभिलाषा	—	—	१५
आराधनालय के द्वार पर	—	—	१६
धन्यवाद आप का चन्दा मिला	—	—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य पांच रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता० तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इसमें बांयी ओर 1½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १०-ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवत: ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छपे जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत: डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"परहित कार्य ?"

परहित कार्य के विभिन्न रूप हो सकते हैं और साधन भी अनेक सम्भव हैं। इस माह का पथप्रदर्शक पद हमें ऐसे परहित कार्य की ओर दिखलाता है जिसको परमेश्वर ने मसीह यीशु में हमारे लिये - सारी मानव जाति के लिये सम्पन्न कर दिया है; हमें अब उसको सिर्फ ग्रहण करना और अपने जीवन के लिये लागू होने देना ही है (रोमी ४:२५)। बचन को पढ़ने से ऐसा लगता है कि यह परहित कार्य सैद्धान्तिक रूप में आत्मिक दीखता है, पर गौर करने पर साफ दीखता है कि इसमें मनुष्य का पूर्ण जोवन सम्बन्धित है। यीशु मसीह के पकड़ाये जाने (घात किये जाकर मर जाने) एवं जिलाये जाने से मनुष्य का अस्तित्व परमेश्वर और अपने पड़ोसी के साथ एकदम भिन्न हो जाता है और पूर्ण जीवन ही बदल जाता है।

जैसे बीते कालों में वैसे ही बर्तमान काल में भी लोग परहित कार्य के लिये अनेकों कार्य किये हैं; अनाथालय, सेवाश्रम, दवाखाना, विशेष साहाय्य कार्य, आदि जो व्यक्तिगत या संस्था के रूप में किये जाते हैं अगिनित है; कभी ऐसा भी हुआ है कि लोगों ने परहित कार्य के निमित अपने को भी बलिदान कर दिया है; ऐसे परहित कार्य लेकिन समय, जगह और सेवा करने और पानेवाले सीमित ही हैं। सम्भवत: उपरोक्त परहित सेवा-कार्यों का लक्ष्य शारीरिक छुटकारा या सहायता ही नहीं वरन आत्मिक भी क्यों न हों पर वे फिर भी सीमित ही हैं।

हमारा प्रभु यीशु इस दुनियां में रहते उसने सेवा कार्य में अपना हाथ और साथ तो दिया ही, लेकिन उसने सब मनुष्यों के निमित सदा काल के लिये भी ऐसा कार्य सम्पन्न कर दिया जिससे सब समय और सब जगह के सब मनुष्यों के लिये सिद्ध हो गया। यह क्रुश के मार्ग को अपनाने से और उसको पराकाष्ठा में मृतकों में से जिलाये जाने से प्रत्यक्ष कर दिया गया। "वह पकड़वाया गया"—यह निज अपराध या दुष्कर्म के कारण नहीं, परन्तु हमारे अपराधों के कारण! इसी मार्ग में वह हमारे अपराधों की मुआफी के लिये वह क्रूश पर घात किया जाता है। यदि पकड़ाया जाकर घात किया जाना ही घटना का अन्तिम चरण होता, तब तो मनुष्य के इतिहास में और ही रूप आता, पर परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के ऐसे परहित कार्य को स्वीकार किया और उसकी सिद्धता में उसको मृतकों में से जिला उठाया। इसी जिलाये जाने का महत्व क्षणिक व इहलोकी केवल नहीं पर वह युगान्तकालीन है।

मसीही विश्वासी का सम्पूर्ण अस्तित्व प्रभु यीशु के एसे महान् परहित कार्य पर आधारित है अत: मसीही का जीवन में परहित कार्य केन्द्रित है। मसीही भाई व बहन ऐसे कार्य करें जिससे दूसरे को लाभ पहुंचे, ताकि दूसरे लोगों के अपराध भी क्षमा किये जायं, दूसरे लोग भी धर्मी ठहरने के मार्ग में आवें। हम मसीही लोग बहुधा मसीह यीशु के ऐसे महान् कार्य को सीमित कर देते हैं जब कि हम "हमारे" को सिर्फ अपने ही लोगों तक सीमित रख देते हैं; "हमारे" की बात में सिर्फ अपनी जाति, संस्कृति, भाषादि को ही समझते हैं! हम अपने व्यक्ति या कलीसिया या किसी अपने संस्थान के परहित कार्य को विश्लेषण कर सकते हैं। हमने कौन सा ऐसा कार्य में, सेवा संस्थान में योग दान या अंशदान दिया है जिससे लोगों के अपराध क्षमा हो जायं और धर्मी ठहराये जायं! क्या हमारी चिन्ता और अगुआई, हमारे मनन और कर्म ऐसे नहीं दीखते हैं और ऐसे नहीं हैं, कि बहुत से अनजाने और अज्ञान लोग अपराध कर्म की ओर चलाये जाते हैं, धार्मिकता की ओर बढ़ने के बदले अधर्म काम के लिये बढ़ावा पाते हैं? इस माह हम प्रभु यीशु के दु:ख भोग और जी उठने का मनन करते हैं हमारा लक्ष्य होवे कि हम इसके द्वारा परहित कार्य के लिये तैयार हो सकें और उस बढ़ने के लिये सामर्थ भी पावें।

(सं. स.)।

Gossner Mission

उपदेश को तैयारी

मार्टिन टेटे

पलमारुम (खजूर की डालियाँ)

फिलिप्पी २:५-११

पावल प्रेरित कलीसिया में एकता और प्रेम के लिये प्रार्थना करता है। कलीसिया की एकता के लिए एक ही प्रेम, एक हो चित, एक मन और एक ही मनसा आवश्यक है। (इफि ४:१-६) सब मसीही यीशु में एक हैं (रोमि ६:३-५) इसलिये उनके बीच संगति है। (यूहन्ना १७: २२-२३) परमेश्वर को केवल एक कलीसिया है।

मसीही एकता के लिये आवश्यक बातें

१ मसीहियों का स्वभाव मसोह के स्वभाव के समान हो (५) यीशु में शान्ति और सहभागिता है। यीशु के स्वभाव के विषय (६-८) में वर्णन किया गया है।

२ मसीह के समान मसोही दीन दास होवें (७+८) कलीसिया में एकता के लिए दीन दासों की आवश्यकता है। दीन दास आज्ञाकारी होते हैं।

३ मसीहियों को दूसरों के हित के लिये चिन्ता करनी है। स्वार्थ त्याग दिया जाय (४). यीशु ने हमारी हित के लिये अपने आप को बलिदान कर दिया। हम भी दूसरों की हित के लिये अपने आप को अर्पण कर देवें।

४ मसीही एक दूसरे को अपने से अच्छा समझें (३). झूठी बड़ाई से परे रहें। यीशु हमें बचाने के लिए परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा (६+७) हम भी एकता के लिये एक दूसरे को अपने से अच्छा समझे।

हमारा केवल एक ही प्रभु यीशु है। उसी के नाम में हम घुटना झुकाते हैं। वही एक प्रभु यीशु हमें एकता के लिये आदेश देता है।

- प्रभुभोज स्थापन पर्व -

१ कुरि ११:२०-३२

कुरिन्थ मण्डली में प्रभुभोज का दूरुपयोग किया जाता था। मण्डली में धनी और दरिद्र दोनों प्रकार के लोग थे। उनके बीच प्रभु भोज के अवसर पर प्रेम भोज खाने की प्रथा भी थी। अत: वे भोजन ले जाया करते थे। धनी लोग भी प्रीति भोज खाते थे परन्तु दरिद्र लोग भूखे रह जाते थे। इसलिये उनके बीच में वर्ग विचार के कारण वे प्रभु भोज के महत्व को भूलने लगे थे। अत. पावल ने उन्हें आदेश दिया कि घर में ही अपना खाना खा लेवें।

क प्रभुभोज क्या है ?

१ प्रभु भोज में योशु अपनी देह और लोहू हमें देता है। वह रोटी और दाखरस में हमें अपनी देह और लोहू देता है। प्रभु भोज प्रभु का भोज है। यह भोज हमारे लिए ठहराया गया है। (२३-२६)

२ प्रभु भोज एक गवाही भी है। प्रभु भोज में प्रमाणित है कि यीशु जिस देह को क्रूश पर बलिदान किया उसी को प्रभुभोज में विश्वासियों को देता है। विश्वासी लोग आत्मिक रीति से प्रभु की देह और लोहू को ग्रहण करते हैं। जब जब हम प्रभुभोज में भागी होते हैं तब तब उसकी मृत्यु की गवाही देते हैं।

अभी कलीसिया का समय है। हम विश्वास से चलते हैं। जब वह प्रगट होगा तब हमारे लिये प्रभुभोज की आवश्यकता नहीं होगी। हम प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करेंगे और स्वर्गीय मन्ना की आवश्यकता नहीं होगी।

ख- प्रभु भोज के लिये तैयारी (१७-३४)

१ तैयारी अत्यन्त आवश्यक है। चूँकि अनरीति से खाने वाला दण्डित होगा (२७-२९)

२ तैयारी किस प्रकार किया जाय ?

घरबन्धु, अप्रेल १९७४

Gossner Mission

क मनुष्य अपने आपको परखे (२८)। अपने लिये प्रभु भोज की आवश्यकता को देखें और अपनी दशा को पहचानें। वे विश्वास करें कि प्रभु भोज में यीशु की देह और लोहू दिया जाता है। वह अपने पापों के लिए पश्चाताप करें और नयी चाल के लिए ईश्वर से सहायता मांगे।

(ख) प्रभु भोज तथा साधारण भोज की भिन्नता को पहचाने (३४)। जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे से पीते हो तो प्रभु के आने तक उसकी मृत्यु की घोषणा करते हो। (२६)

भला शुक्रवार

प्रकाशित वाक्य ५:६-१०

यूहन्ना यीशु ख्रिस्त को स्वर्ग में देखता है। वह वद्ध किया हुआ "मेमना" ही भला शुक्रवार का संदेश है।

वद्ध किया हुआ मेमना

१ वह खड़ा है :— (६) उसके चारों ओर चार प्राणियाँ और चौबिस धर्म वृद्ध है। सिंहासन उसके सामने है।

सिंहासन परमेश्वर के अधिकार की ओर संकेत करता है। वह सारी सृष्टि का कर्त्ता है। चौबिस धर्म वृद्ध, बारह प्रेरित इसराएल के बारव गोत्रों की ओर संकेत करते हैं। सब मिलकर कलोसिया की ओर संकेत करते हैं। (जकर्याह १:१८) यीशु सामर्थी राजा है। उसने बलिदान के द्वारा लोगों को बचाया। सात आत्मा उसके सर्व ज्ञानी होने की ओर संकेत करते हैं। (जकर्याह ४:१०)

२ वह पुस्तक लेता है (७) पुस्तक लेने का अर्थ है कि ईश्वर से अधिकार प्राप्त करता है। वह न्याय की पुस्तक को खोलने का अधिकार प्राप्त करता है। पुस्तक में ईश्वर की इच्छा है जिससे यीशु पूरा करने वाला है।

३ मेमनें की महिमा के लिए नया गीत गाया जाता है। गीत का विषय— "परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है — लोगों को परमेश्वर के लिये राजा और याजक बनाया। (९+१०)

क्रूश की मृत्यु के द्वारा यीशु ख्रिस्त ने महिमा को प्राप्त किया है। वह आराधना और महिमा का केन्द्र बन गया है। उसने अपने आप को हमारे लिये दिया है। हम उनको क्या देने के लिये तैयार हैं।

पुनरूथान (प्रभु का जी उठना)

१ कुरि ५:६-८

आज का सुसमाचार है— निश्चय प्रभु जी उठा है और जीता है। क्रूश में उसने हमारे पापों का प्रायश्चित किया है। उसने हमारी दुष्टता के खमीर को कब्र में गाड़ दिया है। उसने हमें सचमूच में नया बना दिया। (रोमि ६:४) जीवित प्रभु का आदेश है कि अनुशासन आवश्यक है।

"कलीसिया में अनुशासन"

१ अनुशासन का अधिकार :— (३-४)। कलीसिया को दिया गया है। अधिकार यीशु के नाम में कलीसिया को दिया गया है। क्रिया ५ के अनुसार पवित्रात्मा आप ही शासन करता है। परन्तु पवित्रों की संगति (कलीसिया को अधिकार दिया गया है। पवित्रात्मा आप ही कलीसिया के द्वारा शासन करता है। चूंकि मसीह कलोसिया की देह है। (मत्ती १८:१८-२०)

२ अनुशासन की रीति :— (५) शासन बहुत ही कठोर जंचता है। परन्तु पवित्रात्मा का शासन भी तो कठोर है (क्रिया ५) इसी प्रकार ईश्वर का शासन भी कठोर है (यहोशु ७) —"ऐसे व्यक्ति को शैतान के हाथ में सौंप दो कि उसका शरीर नष्ट हो (६)।

३ अनुशासन का अभिप्राय : — (५-८) — अनुशासन का दो मतलब है। :— (क) पापी नरक से बचाया जाय। (ख) मण्डली सड़ाहट से बचाया जाय। पापी नरक से बचाया जाय— अर्थात उसकी आत्मा पुनरूत्थान के दिन जी उठे (५) :— २ कुरि. २:५-१० के अनुसार कड़ा शासन व्यर्थ नहीं है। शासन के द्वारा पश्चाताप उत्पन्न किया जाता है और पश्चातापी फिर ग्रहण किया जाता है।

Gossner Mission

"थोड़ा सा खमीर सारे गूंथे हुए आटे को खमीर बना देता है (७)"। अनुशासन के द्वारा न केवल पापी बचाया जाता है परन्तु सारी मण्डली सड़ाहट से बचायी जाती है बैबल में खमीर का संकेत बार बार बुराई–सड़ाहट या पाप की ओर है। इसलिये त्योहार में अखमीरी रोटी खाने की ओर आदेश है।

"हमारी कलीसिया में मण्डली निकाल प्रेम का कार्य है। पलटा लेने का नहीं। मंडली निकाल के द्वारा मण्डली पापी को बचाती है और सड़ाहट को अपने से दूर करती है। यही जीवित प्रभु का आदेश है।

क्वासीमोदोगेनेती (नये जन्मे बालकों की नाई)

१ यूहन्ना ५: ४-१२

यीशु परमेश्वर का पुत्र है। इस बचन पर विश्वास करने वाला संसार पर जय प्राप्त करता है और परमेश्वर के सन्तानों से प्रेम रखता है।

"यीशु परमेश्वर का पुत्र है"

१ पृथ्वी के तीन साक्षी :—

(क) आत्मा साक्षी देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि आत्मा सत्य है। (मत्ती ३:१७) — परमेश्वर का आत्मा कपोत की नाई यीशु पर उत्तरा।

(ख) पानी साक्षी देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यीशु ने यर्दन में बपतिस्मा लिया और अपने आप को मसीह और जगत का उद्धारकर्त्ता बतलाया।

(ग) लोहू साक्षी देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। मार्टिन लूथर कहते हैं कि जल और लोहू बपतिस्मा और प्रभुभोज की ओर संकेत करते हैं। हम लोग यीशु की मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं। प्रभुभोज की रोटी और दाखरस में उसके देह और लोहू को प्राप्त करते हैं। प्रभुभोज के द्वारा भी यीशु की साक्षी दी जाती है।

२ तीन स्वर्गीय साक्षी :—

पिता-बचन-और पवित्रात्मा साक्षी देते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

पिता की गवाही—यह मेरा प्रिय पुत्र है (मत्ती ३:१७)

बचन की गवाही:—

आदि में बचन था इत्यादि (यूहन्ना १) पवित्रात्मा की गवाही : वह कपोत की नाई यीशु पर उतरा (मत्ती ३:१७

यीशु परमेश्वर का पुत्र है। इसकी साक्षी में हमारे जीवन की निश्चयता दी गयी है। हम उस पर विश्वास करें

मिसेगीकोरदियाशोमनी

(प्रभु की दया भ०स० २३)

मसीही जीवन के लिये प्रभु यीशु आप ही आदर्श है। इस बचन में वह सेवकों के लिये आदर्श ठहरता है। हम लोग इस पृथ्वी पर किसी न किसी का सेवक हैं। (नौकर दास हैं)। अतः हमारे लिये प्रभु योशु आदर्श है।

ख्रिस्त हमारा आदर्श है

१· यीशु ने पाप नहीं किया :— वह निष्पापी था। उसने किसी के विरूद्ध पाप नहीं किया (२२) उसने छल कपट नहीं किया। (भजन ३७:३० नीति १०:११, ३१:२६; मलाकी २:६; रोमी १५:६; प्रकाशित १४:५;) धर्मी जन छल से दूर रहता है।

२ प्रभु पलटा नहीं लिया (२) गाली सुन कर गाली नहीं देता था। (यशायाह ५३:७; मत्ती ११:२६; २६:५२; २ कुरि १०:१)

३. दुःख में भी धीरज धरता था (२३) (१२थि•१:४; इब्रानी ६:१५; याकू ५:११; प्रकाशित १: ; २:२; १४:१२)

४. हमारे पापों को उठा लिया (२४) (इब्रानी ९ २८; १५: ३५) उसने हमारा भार उठाया। हम भी एक दूसरे का भार उठावें।

मसीह हमारा चरवाहा है। हम उसके चिन्ह पर चलें और धार्मिकता का जीवन बितावें।

—:०:—

Gossner Mission

समाचार

अप्रील १९७४ में अधोलिखित विद्यार्थीगण प्रशिक्षण समाप्त करते हैं। कलीसियाओं से निवेदन है कि उनको सेवा स्थान के विषय अगोत्तर ही निर्णय लेवें :—

गोस्नर कलीसिया के विद्यार्थी

१· सुशील कुमार होरो (द· पू· अ·) २· वसन्त विनोद नाग (उ· प· अ·) ३. याकूब सोरेंग (म. अ.) ४. जोन मिंज (द. पू. अ.) ५. सुड़ा सागेन इलियस तोपनो (द. पू. अ.) ६. सुलेमान लुगुन (द. पू. अ.) ७. समसोन कन्डुलना (द. पू. अ) ८. अधीन कन्डुलना (द. पू. अ·) ९. पैकस खेस (उ. प. अ) १०. बेलस बाड़ा (उ प. अ.) ११. आनन्द मसीह मिंज (उ. प. अ.) १२. प्रभुदान बुढ़ (ओ· अ·) १३. जोलेन तोपनो (द.पू. अ)

मध्य प्रदेश लुथेरन कलीसिया के विद्यार्थी

१. विजय प्रसाद मेय्युज २. सुधीर कुमार घोष

३. करीम युसुफ बर्नाबास

उत्तरी भारत की कलीसिया का विद्यार्थी

१. नेलसन सनातन मुर्मु।

(प्राचार्य, गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज, रांची)

सूचना

जिन विद्यार्थियों ने L. Th. परीक्षा में ४५ प्रतिशत नम्बर लाया है। वे B. Th. की परीक्षा दे सकते हैं। L. Th. के पश्चात B. Th. का कोर्स केवल एक वर्ष का है।

प्राचार्य

गोस्नर थियोलोजिकल कॉलेज

सूचना

कागज एवं छपाई की महंगी को मद्दे नजर रखते हुए घरबन्धु के सम्पादकीय-मंडल को विवश होकर सूचना देना पड़ रहा है कि घरबन्धु के सभी इश्तिहार एवं सूचना अब से विज्ञापन समझे जायेंगे। विज्ञापन शुल्क ऐसा होगा; आवरण (कभर) ३ रा या ४ था पूर्ण पन्ना २५ रू०; आधा या उससे कम १२ रू० प्रति छपाई; अन्दर पन्ने पूर्ण २० रू० आधा या कम १०)रू० प्रति छपाई। अधिक बार छापने में रियायत है। सभी विज्ञापन अगोतर अदायगी पर ही छापे जायेंगे। (स० स०)।

आवश्यक सूचना

पाठकों को मालूम हो है, कि घरबन्धु अंक कुछ देरी से मिलने लगे हैं। यह हमारे वश से बाहर की बात हो गयी है। जिस प्रकार देश में मंहँगी और चीजों का अकाल बढ़तो में ही है, वैसा ही कागज की मंहगी और अकाल भी है, अत: हमें विवश होकर घरबन्धु का वार्षिक मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है। पहली मार्च १९७४ से वार्षिक मूल्य ५ रू०, एक प्रति माह ४५ पैसे; १०-१९ प्रति एक पता में मंगाने पर ४·७५ पैसे और २०-३० प्रति एक पता पर मंगाने से ४.५० पैसे एक प्रति सालाना के दर से लिया जायगा। ग्राहकों से आशा है कि आगे भी 'घरबन्धु' हमारी एकलाही मासिक पत्रिका को चलाने के लिये सहायता व योगदान देंगे।

घरबन्धु, अप्रेल १९७४

Gossner Mission

चिन्ता मुक्त कैसे हों ?

Basant Kumar Surin
D U. Mission Boys' Hostel, H.Bagh

आज के वर्त्तमान युग में शायद ही ऐसा कोई मनुष्य होगा जिसके साथ किसी प्रकार की चिन्ता न जूड़ी हो। किसी न किसी प्रकार की चिन्ता सभों के साथ लगी ही रहती है। सभों को हरेक तरह की चिन्ता हो सकती है। चिन्ता की किस्मों का उल्लेख करना जरुरी यहाँ नहीं है। केवल चिन्ता शब्द' ही पर्याप्त होगी।

प्रश्न है।- चिन्ता मुक्त कैसे हों ? हम मसीही लोग इसके लिए बाइबल से सबसे अधिक सहारा प्राप्त करते हैं। एक पतरस ५-७ में हम पाते हैं-"और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है"। हम सदैव अपने अभावों के संबंध में ही सोचा करते हैं। अपनी नियामतों के बारे में बहुत कम सोचते हैं। अभावों को निरन्तर सोचते रहने से एक तरह की हीन भावना उप्रजती है। और यह भावना इतनी खराब बीमारी फैलाती है, जितनी की शायद संसार की लड़ाइयों और बीमारियों ने इतना दुःख नहीं फैलायी होगी। हमें अपने वरदानों को याद रखना चाहिए और कठिनाइयों को भुला देना चाहिए। आज हमारे पास जो कुछ है, उसके लिए ईश्वर को दिल से धन्यवाद दें। जिन बातों के लिए हम कृतज्ञ हैं उन्ही के बारे में सोंचे तथा उपलब्ध ऐश्वर्य तथा वरदान के लिए भगवान की स्तुति करें। व्यस्त रहना चिन्ता निवारण का सबसे सस्ता उपाय है। हम अपने जीवन में प्राय:उसी बात से क्षुब्ध हुआ करते हैं जिसे हम पसंद नहीं करते हैं। अत: हमें अवगण्ना करने योग्य तुच्छ बातों पर हमें क्षुब्ध नहीं होना चाहिए। हमें अपनी चिन्ताओं पर इल्लाना छोड़कर चिन्ताओं का कोई औचित्य जानने का प्रयत्न करें तो कदाचित् १००% में से ९९% चिन्ताएं अपने आप मिट जायगी। और मन में बिचारों की जिस घटना के घटने की हमें चिंता है उसकी सम्भावनायें कहाँ तक है। चिन्ताओं से जूझने के लिए परिस्थितियों को जैसी है वैसी ही स्वीकार कर लें और अपने को उनके अनुकूल ढाल लें, नहीं तो अगर हम विद्रोह का रूख अख्तियार करेंगे तो या अपनी जिंदगी बर्बाद कर लेंगे अथवा स्नायुरोग के शिकार हो जायेंगे।" होनी को स्वीकार करना दुर्भाग्य के परिणामों पर विजय पाने के लिए पहला कदम है।" हमें असंभव की कामना नहीं करनी चाहिए और बिगड़ी बातों पर आंसू नहीं बहानी चाहिए। प्रभुयीशु ने होनी(अर्थात मृत्यु) को फाँसी होकर सरल भाव से सह लिया। जब कभी बेकार बातों को लेकर जीवन नष्ट करने की खब्त सवार हो जाय तो मन ही मन हमें यह प्रश्न करनी चाहिए:-

(१) जिस बात से मैं चिन्तित हूँ उससे मुझे क्या हानि होगी।

(२) इस बात के लिए "हानि- सीमा" कहाँ तक निर्धारित किया जाय या कब भुला दिया जाय।

हम प्राय: पिछली बातों को सोच-सोच कर व्यर्थ में चिन्तित हुआ करते हैं। इससे चिन्ता-मुक्त होने के लिए पराभव के धक्के को झेलें और भूमिसात् कभी न हों। इस संदर्भ में संस्कृत की श्लोक स्मरणीय है- " बीती ताहि बिसारिये आगे की सुध लेय " । यदि हम अनुचित आलोचना से चिन्तित हो जाने के आदि हों तो हमें यह सब बातें याद रखनी चाहिए:-(१) जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति मृत कुत्ते को लात नहीं मारता, इसी तरह अनुचित आलोचना परोक्ष रूप में हमारी प्रशंसा ही है। (२) उपेक्षा कर भरसक उत्तम कार्य करें। (३) हमें अपनी भूलों का लेखा रहना चाहिए और अपनी आलोचना स्वयं करनी चाहिए।

आज के वर्तमान युग में वित्तीय चिन्ता एक बड़ी चिन्ता है। आगर यहाँ लिखे कुछ बातों पर गौर करें तो कुछ हद तक यह चिन्ता मिट सकती है। :—(१) खर्च जैसे सम्बन्धित सभी तथ्यों को हिसाब रखें (२) ऐसा बजट बनायें जो वास्तव में हमारी आवश्यकताओं के साँचे में

Gossner Mission

डल जाए। (३ विवेक से खर्च करना सीखे।
(४) अपनी आय को लेकर सिरदर्द मत बढ़ायें। (यहाँ हम चाहते हैं कि ठेरों चीजें खरीदें' और यह हो नहीं पाता, जिससे मुसीबत में पड़ जाते हैं। वस्तुतः पहले से उनका सुख कम हो जाता है क्योंकि हमें आय की बढ़ती का रोग लग जाता है। (५) यदि कभी हमें उधार लेना ही पड़ जाय तो भी अपनी साख कायम रखें। (६) आपत्त कालीन खर्चे की व्यवस्था कर अपनी सुरक्षा करें।
(७) बच्चों को रुपये पैसों का आदर करना सिखायें।
(८) कभी जुआ न खेलें। (९) यदि हम अपनी वित्तीय अवस्था न सुधार सकें तो स्वयं अपने पर कृपा करके, जो बदल नहीं सकती, उसके लिए रोष न करें। हमें आज की परिधि में रहना सीखना चाहिए। कल की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए। मेरा यह कहना नहीं चिंता ही न कीजिए, काल पर विचार अवश्य कीजिए, उस पर मनन कीजिए, योजनाएँ बनाइये, तैयारी कीजिए, किन्तु उसके लिए चिन्तित मत हों।

चिन्ता एक आदत है। इस आदत को त्यागने के लिए अपनी समस्या को ठीक-ठीक समझ लें। दूसरा समस्या का कारण ज्ञात करें। तीसरा समस्या सुलझाने के लिए शीघ्र ही कोई सक्रिय कदम उठायें। अगर किसी भी तरह से चिंता दूर न हो तो हमें प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना करने से भागवान हमारे अभावों की पूर्ति कर देता है और हम सबल एवं स्वस्थ हो उठते हैं। भक्ति से ईश्वर का स्मरण करके हम अपने शरीर एवं आत्मा का उद्धार करते हैं। चाहे मनुष्य क्षणभर ही प्रार्थना क्यों न करे उसे शुभ परिणाम मिले बिना नहीं रहता। हम अपने का कभी अकेला न महसूस करें। बइबल का यह पद स्मरण रखें- 'जिसने मुझे इस दुनिया में भेजा है वह मेरे साथ है, उस ईश्वर ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है। बइबल की इसी प्रेरणा दायिनी शब्दों ने न्यू- ब्रान्सविक, थियोलोजिकल सेमिनरी के प्रधान, डा॰ जोसेफ आर॰ सीजू की जीवन धारा ही बदल डाली।

प्रभु यीशु मसीह ने प्रवचन (पढ़े मत्ती ६:२५-३४) अपने अनुयायियों को चिन्ता से दूर रहने का उपाय बतलाते हुए दिया था। अगर हम उक्त पदों को ध्यान पूर्वक पढ़े तो हममें चिंता' भय और क्लेश के स्थान पर साहस, आशा तथा निष्ठा के भाव जाग्रत हो उठेंगे। यदि आप हम चिन्ता से दूर रहना चाहते हैं तो आज से रोज नई जिंदगी का श्री गणेश करें, आज की परिधि में रहें और भविष्य की चिन्ता छोड़ दें। अपने को प्रभु के चरणों में सौंप दें और प्रार्थना करें- "हे प्रभु, तू जो करेगा सो ही होगा"।

शोक समाचार

पाद्री ख्रिस्तोचित गुड़िया की धर्म पत्नी श्रीमती कृपा गुड़िया करीब ८० वर्ष की उम्र में बुढ़ापे के कारण ता॰ १६-९-७३ को शांति से प्रभु में सो गई। वह अपने अन्तिम दिन को निकट जानकर प्रभु भोज के लिये लालसित थी, तथा ता॰ १०-९-७३ को प्रभु भोज दी गई वह प्रभु की संगति प्राप्त की।

वह एक पाद्री की पत्नि होकर अपने पति के साथ, करीमट्टी, राजगांगपुर, गोविन्दपुर, डाड़ी गुडु तपकारा, चुरदा:, तुजूर, मरचा, और कोटबो आदि स्थानों में मंडली की सेवा की। जहाँ कहीं भी गई बहनों का समाज की संगठन की और अगुवाई की कोटबो ही से पाद्री ख्रिस्तोचित गुड़िया २० माई १९५० ई० में अपने बच्चों के साथ छोड़कर सदा के लिये चल बसे। उसके बाद वह अपने बच्चों के साथ रहती थी। वह अधिक समय गोविन्दपुर में ही बितायी। परन्तु जहाँ भी थी गिरजा आराधना में निश्चय ही उपस्थित रहती थी। जोभी उसके आँख कान आदि जवाब दे चुके थे।

जे० बागे
राऊरकेला

Gossner Mission

कासा (CASA)

(क्रिश्चियन औगजिलियरी फोर सोशल एकसन)
की आर्थिक सहायता।

घरबन्धु पाठकों या कलीशिया के अन्य सदस्यों को विदीत होगा कि १९७३ से कासा ने लूथेरान कलीशिया को छोटानागपुर क्षेत्र में रिलीफ या सहायता देने का योजना किया है। कुछ लोगों को यह सहायता मिल भी चुको है। कासा ने ६करोड़ रुपैया की सहायता देने का स्वीकृति दी है। इस रकम को सिंचाई तथा अन्न उत्पादन के योजनाओं पर खर्च करना है जैसे कूवां तालाव और बांध। योजना के द्वारा दो काम हो सकते हैं अर्थात १ ला कि कूवा, तालाव और बांधने के काम से गरीव लोगों को मजदूरी मिलेगी जिसे हम "काम के लिए भोजन" कहेंगे। दूसरा कि जो व्यक्ति इन योजनाओं का कार्य संचालन करेंगे उनके लिए कृषि विकास का एक साधन मिल जाता है। सिंचाई के द्वारा धान, गेहूं और शाक सब्जी अधिक मात्रा में उत्पादन किये जा सकते हैं और यह काम सालों भर चल सकता है। आज हम वर्षा के भरोसे केवल एक ही फसल उपजा रहे हैं परन्तु सिंचाई का प्रबन्ध होने पर साल भर उत्पादन कर सकते हैं। कई स्थानों में कई लोगों ने जिनको ऐसा साधन प्राप्त है यह काम आरम्भ भी कर दिया है।

कलीशिया के अन्दर यदि यह भारी रकम का वितरण किया जायगा तो बहुत से आदमी इससे लाभ उठावेंगे और अन्न की उत्पादन में काफी वृद्धि होगी। चूंकि हमारी कलीशिया गरीब किसानों की आमदनी से चलायी जा रही है इसी से कलीशिया भी गरीब है। हमारे पास कलीशिया दान देने के लिए आमदनी ही नहीं है। एक-एक व्यक्ति की जितनी आमदनी होगी उतनी ही उसकी देने की शक्ति भी बढ़ जायगी। "गरीबी हटाओ" का जो नारा है वह केवल नारा भर ही रहेगा। यदि उत्पादन में बढ़ती न लायी जायगी तो गरीबी कभी हटने वाली नहीं। उदाहरण स्वरूप अमेरिका को ही लीजिए। वहां एक-एक किसान इतना धनी है कि अपनी खर्च से कई गुणो उसकी बचत हो जाती है जो देश के काम में आती हैं। इस प्रकार वह देश संसार में धनी देश हो गया है। इसी तरह हमारी कलीशिया भी तभी धनी होगी जब कि उसके सदस्य धनी होंगे।

यदि कासा के द्वारा हमारी कलीशिया को छोटा-नागपुर क्षेत्र के लिए छः करोड़ रुपैया मिल जाता है तो हमारे कृषक भाई भी खाद्यान्न उपजाने में पीछे नहीं रहेंगे। कलीशिया को आत्मपालित बनाने में यह एक साधन ही होगा। योजनाओं का संचालन कराने के लिए कलीशिया ने एक केन्द्रीय रिलीफ कमिटी बनाई है जिसके द्वारा यह रकम प्राप्त किया जाता है। यदि रिलीफ कमिटी सुसमय पर योजना कार्य कर्त्ताओं को रकम दे और योजना कार्य-कर्त्ता भी तन मन से कार्य करें तो यह कासा की सहायता हमारी आर्थिक स्थिति को सुधारने का एक महान जरिया या साधन हो जायगा और होना ही चाहिए।

ए. पी. बरला।

कलीसियाई समाचार

राँची : तारीख १५ से २४ फरवरी तक का एक प्रचार सम्मेलन का प्रबन्ध संत पौल गिरजे के मैदान में किया गया था। इसमें प्रोटेस्टान्ट चर्च के सभी मण्डलियों ने भाग लिया था। विशेष कर यहां के अंगलिकन, लूथेरान, वपतिस्त और यहोवा मिशन के लोग भाग लिये थे। इस सम्मेलन में प्रचार करने के लिये दो विशेष

Gossner Mission

वक्ता आये हुए थे। एक दखिन भारत के अगस्तीन सालिन्स और दूसरा मेथोडिस्ट चर्च बनारस के रोड्रिक रोबर्ट। दोनों वक्ता निपुण व्यक्ति थे और बाईबल के बचन को समझाने में कोई कसर नहीं रखते थे। प्रचार का काम सन्ध्या ६ बजे से ८ बजे प्रतिदिन होता था। प्रतिदिन सम्मेलन की जमघट ३ से ५ हजार लोगों की होती थी। सम्मेलन के अन्त में यह महसूस हुआ कि बहुत से लोगों में नया जीवन आ गया। बहुत से लोग अपने पुराने पापों से मन फिराये अर्थात् मसीहियों के लिए यह बहुत ही लाभदायक सम्मेलन रहा। यद्यपि मैदान में यह सम्मेलन चलता था तौभी ऐसा मालूम होता था कि वह किसी गिर्जा घर के अन्दर हो रहा हो। भारी भीड़ होते हुए भी शांति थी और किसी प्रकार का शोर गूल नहीं होता था। लोग एकाग्रचित होकर उन दोनों वक्ताओं की बातें सुनते थे। उनका सभी उपदेश शिक्षाप्रद केवल नहीं पर लोगों के भावनाओं को बदल डालने की शक्ति रखते थे।

प्रचार के सिलसिले में प्रचारकों ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि अब के लोगों में विश्वास की घटी दिनोदिन बढ़ती जा रही है। लोग नाम मात्र के क्रिस्तान रह गये हैं। सच्ची राह (मसीह) को भूल कर लौकिक सुख विलास की ओर अग्रसर हो रहे हैं। पुराने जमाने में जब चर्च स्थापित हुए तो केवल विश्वासी लोगों से ही। सताहटों के होते हुए भी मसीह पर उनका विश्वास अटल था। मण्डली के विरोधी उस समय अधिक थे परन्तु मण्डली दिनो-दिन बढ़ती ही गई। आज मण्डलियों की वह हालत नहीं है। कलीशियाओं में शांति नहीं है वरन लड़ाई झगड़े, इर्ष्या, डाह, मतवालापन और व्यविचार दिन दूनी रात चौगुणी बढ़ रहे है। लोगों में प्रेम नहीं है पर उनमें एक दूसरे के लिये जलन है। पद और पैसे के लिए एक दूसरे से इर्ष्या करते, मन मलीन हो जाता और बेइमान हो जाते हैं। मसीह पर विश्वास नाम मात्र का है या बिलकुल ही नहीं है। पुराने जमाने में कोई धार्मिक डाक्टर या सेमिनरी पास पाद्री या शिक्षित धर्मगुरू नहीं थे परन्तु लोग सच्चे, इमानदार और खिस्त विश्वासी थे। आज जितना ही शिक्षित व्यक्ति कलीशियाओं में पैदा हो रहे हैं और लोग ज्ञान में बढ़ते जा रहें हैं उतना ही कलीसिया में बुराई, पाप और कमजोरियां हो रहे हैं। इसी आधार पर प्रचारकों ने कहा कि गैरमसीहियों को मसीही शिक्षा देने से अधिक मसीहियों में ही सुधार लाना आवश्यक हो गया है। कलीसिया ठीक रहे और कलीशिया के लोग ठीक रहें तो गैरमसीही आप ही प्रकाशित हो जांएगे और मसीह के अनुयायी बनेंगे। ईश्वर का बचन कहता है परमेश्वर प्रेम है परन्तु हम मसीही लोगों ने ही प्रेम को ठुकरा दिया।

हमारी गोस्सनर कलीशिया की हालत क्यों बिगड़ी है? यहां प्रेम की कमी है हमलोग स्वार्थी हैं। पद और धन का लालच हममें है इसी कारण शांति दूर हट गई है। (ए० पी० बरला)

रांची: फादर गोस्सनर के दो सौवाँ बर्षगाँठ के उत्सव विभिन्न मंडलियों में मनाया जा रहा ऐसे आनन्दोत्सव के लिए पूर्वी जर्मनी से जो अतिथि आनेवाले थे, वे फरवरी माह के पहले सप्ताह में अचानक आ गये, पाद्री हेलमुट ओर्फाल, पूर्वी जर्मनी गोस्सनर मिशन कुराटोरियम के सभापति तथा पाद्री ब्रुनो शोत्सटेड, डाइरेक्टर गोस्सनर मिशन, पूर्वी जर्मनी, इन दोनों को रांची पहुंचने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। वे मास्को, जपान होते हुए आये, थाईलैंड में तो उन्हें हिरासत में रख दिया गया था।

एक साम्यवादी देश से तो पाद्री सम्भव नहीं वे भेदिये समझे गये। वे कलकत्ता के बदले दिल्ली भेज दिये गये जहां से उन्होंने टेक्सी भाड़े में लिया और रांची तक करीब १७०० कि॰ मी॰ तय कर गोस्सनर कलीसिया के भाई बहनों से मुलाकात करने की साध पूरी की। पास्टर ओर्फाल ३ रे फरवरी को रांची में उपदेश देने के बाद दिल्ली की ओर चल दिये जहां से वे स्वदेश लौटे। पास्टर शोत्स्टेट हमारी कलीसिया की विभिन्न मंडलियों में गये जिनमें खुटीटोली, बधिमा, कांके तथा जमशेदपुर के कार्यक्रम के विशेष थे। उन्होंने रांची में भी विभिन्न कार्यक्रमों में, जो उनके लिए विशेष कर ठहराये गये थे, भाग लिया। थेओलोजिकल कॉलेज में उन्होंने "गोस्सनर अपने जमाने में — गोस्सनर हमारे जमाने में" विषय पर एक

Gossner Mission

रोचक भाषण दिया। राँची में रहते हुए वे "अर्बन आयन्ड इन्डस्ट्रीयल मिशन (यू. आई· एम.) के निमित विशेष रुचि व्यक्त किया और एसे काम में रूचि रखने वालों से मुलाकात भी किई। ४ फरवरी को उन्होंने अंचल अध्यक्षों की बैठकी में भाग लिया और अपनी ओर से तत्परता जाहिर किया, कि पूर्वी जर्मनी के गोस्सनर मिशन के साथ गोस्सनर कलोसिया के लिये साथ में काम करने की सम्भावना है। उन्होंने अपनी ओर से एक आध्यात्मिक शिक्षक भेजने की सम्भावना पर भी प्रकाश डाला। अंचल अध्यक्षों ने भी ऐसी कोशिशों में मिलकर काम करने का संकल्प किया। हमारे मेहमान यहाँ से दुर्गापुर कलकता नागपुर होते हुए जाने के लिये यहाँ से विदा लिये। पास्टर शोल्स्टेट के रहते ही गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर पास्टर एम. जेबेर्ग भी पहुंचे। यह उनका तीन महीने के अन्दर ही दूसरा आना है। अंचल अध्यक्षों के निवेदन पर कि वे आकर कलीसिया की बर्तमान विकट परिस्थिति में सहायता करें, इतने थोड़े दिनों बाद फिर आ गये। डाइरेक्टर जेबेर्ग आकर हमारे आन्तरिक मामलों में दखल देना नहीं चाहते हैं पर हमें सहायता पहुँचाना चाहते हैं, अतः उनसे अधिक से अधिक लोग मिल कर अपनी सुझाव भी पेश करें। (खकपस)।

टकरमा/पोगोलोया : बाड़ीबिरिंगा पेरिश पोगोलोया मंडली ने अपने परिश्रम और अनेकों के सहयोग व सहायता से एक सुन्दर गिर्जे घर का निर्माण किया है; इसका आरम्भ २९.३·१९६९ को किया और लगभग ३५ हजार रुपैये का नगद खर्च हुआ, साथ ही विभिन्न समूहों ने अपने श्रमदान का बहुमोल अनुदान दिया, इसमें स्थानीय मंडली के भाई-बहनों के अलावे टकरमा इलाका युवा-संघ ने विशेष पाट अदा किया है। इस नव-निर्माणित गिर्जा घर का संस्कार १७-२-१९७४ को बड़े धूमधाम से कार्यवाहक प्रमुख-अध्यक्ष डा. सी. के. पाल सिंह के द्वारा सम्पन्न हुआ।

रांची : अंचल अध्यक्षों के फैसलानुसार इसी माह में "चर्च कोर्ट ऑफ कन्स्टीच्युशन" की बैठकी भी हुई और संविधान के विविध विवादग्रस्त विषयों पर प्रकाश डाला आशा की जाती है कि ऐसे फैसलों से हमारी गोस्सनर कलीसिया की वर्तमान परिस्थिति को सुलझाने में सहायता मिलेगी।

घरबन्धु के पाठकों को मालूम है कि श्री फूलचन्द पन्ना ने अपने और दो जनों के साथ रांची मुन्सफ के कचहरी में "निषेध- आज्ञा" का मामला दायर किया है। मामला अभी तक चल ही रहा है, अब तक कई तारीख हो चुके हैं, अगला तारीख १४ वीं मार्च है! "कार्य निषेध- आज्ञा" से कलोसिया के धार्मों में भारी बाधा तो है ही लेकिन कलीसिया के जीवन के लिये अवर्णनीय हानि पहुंचायी गयी है, आर्थिक कठिनाई एवं असुविधायें तो हैं ही लेकिन कलीसिया के आत्मिक वे आर्दश जीवन का जो चित्र था उसमें भारी कालिख पोत दी गयी है! जगत के सामने कलीसिया ठट्ठा और मजाक का बिषय हो गया है! यदि कोई इसमें किसी एक व्यक्ति विशेष या दल विशेष ही को बाधा पहुंचाने या इज्जत करने की बात समझी गयी है तो वह गलत है! इसमें तो पूरे मसीही जगत की बेइज्जती है, इसमें कलीसिया की इज्जत, या संविधान या धन की रक्षा क्या होगी, यह तो इस मामले के द्वारा परायों के हाथ बेच दिया गया है। अगले अंक में आप को इस के विषय और ही अधिक जानकारियां दी जाएंगी।

कलीसिया की वर्त्तमान परिस्थिति को मद्दे नजर में रखते हुए ४ थी फरवरी को अंचल अध्यक्षों ने यह संकल्प किया है कि मार्च माह में सभी अंचल सम्मितियों की बैठकी रांची ही में बुलायी जाय। ये बैठकियां मार्च १४-१६ के लिये निश्चित की गयी हैं। पहले तो उन अंचल सम्मितियों की बैठकियां है, जिन्होंने ओक्टोबर २७-३०, १९७३ के, एस. एस. सम्मिति के फैसले को अपने कोरोबोरेटिभ-भोट में 'अस्वीकारत्मक मत' दिया है। इन सम्मितियों के मत-अनुकल ही अगला कदम लिया जाएगा! आशा की जाती है कि बातें कलोसिया के जीवन में स्थायो शासन, अनुशासन, एवं स्थायी शान्ति और बढ़ती के लिये ही होगी। इसी ओर प्रत्येक सम्मिति सदस्य की कोशिश भी होनी चाहिए। कुछ ऐसे तत्व भी उभर आ सकते हैं जो इन सारी कोशिशों के प्रतिकुल है। इस आनेवाले समय की बैठकियों के लिये एक जोखिम भी है यदि ये सम्मितियां,

Gossner Mission

जो दरअसल अभी के एकल ही संगठित उच्चतम् सभा है, कलीसिया के लिये रचनात्मक सुलझाव पेश नहीं कर पाते हैं तो कलीसिया पांच या छः टुकड़ों ही में नहीं, पर कई टुकड़ों में विभाजित होने के खतरा में है। अतः स्थिति के सुलझाव के लिये भावावेश या स्वार्थता की भावनाओं से अलग मसीह की कलीसिया को सामने रख कर ही विचार विमर्श कर समस्याओं को हल करने में हमारी कलीसिया एकता में रखी जा सकती है। (खकपस)

चक्रधरपुर : चक्रधरपुर पेरिश के स्थानीय मंडली ने अपने २० वर्ष के अथक परिश्रम तथा अनेकों के सुन्दर सहयोग व सहायता से एक सुन्दर पक्के गिर्जा घर का निर्माण किया है। इस गिर्जा घर के संस्कार की घोषणा घरबन्धु में पहले ही किया जा चुका था! अफशोष की बात थी कि पास्टर एच्छ वरूता संस्कार के लिये आने में असमर्थ रहे। बहुत आगा-पीछा करते हुए मंडली भाई-बहनों ने निर्धारित तिथि में ही कार्यवाहक प्रमुख अध्यक्ष द्वारा संस्कार सम्पन्न करने की निश्चयता कर निमंत्रण वितरण किया। ऐसी कठिनाई में गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर पास्टर एम. जेवेर्ग ने साथ दिया और पवित्रालय का संस्कार २४-२ ७४ को सम्पन्न हो गया। (खकपस)

विविध समाचार

● स्वीडेन के बस्ताद नगर में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। यह सम्मेलन २९ जनवरी से २ फरवरी तक था। इसमें चीन देश के ईसाइयों के विषय बातचीत हुई जहाँ साम्यवादियों का राज्य है। इस सम्मेलन में प्रोटेस्टान्ट और रोमन कथोलिकों ने चीन में होनेवाली ईसाईयों की स्थिति का अध्ययन किया। साम्यवादी देशों में धर्म के विरुद्ध क्या-क्या रुकावट होता हैं इसका तर्क वितर्क किया गया।

● कोरेया दो भागों में बाटा गया है। उत्तर कोरेया जहाँ साम्यवादियों का राज्य है और दक्खिन कोरेया जिसमें प्रजातन्त्र सरकार है। कहा जाता है कि उत्तर कोरेया से एक लड़का साम्यवादियों के डर से अपनी माँ से छुट्टी लेकर दक्खिन कोरेया भाग आया वह ईसाई लड़का था। यहां आकर उसे कोई काम नहीं मिला पर सड़क के किनारे लोगों का जूता पालिस करने लगा। उसके पास एक छोटी सी थैली थी। दिनभर की कमाई का दसवां हिस्सा वह उसी थैली में डालता था और एतवार को उस थैली को गिरजा में दान कर देता था। एक दिन एक पाद्री ने उसे उसके विषय में पूछा तो अपना सारा बयान बताया उसने। पाद्री उस लड़के की धार्मिकता पर खुश होकर उसे आशीश दिया। इसी तरह उस लड़के का जीवन बीता और आज वह संसार के सबसे धनी व्यक्ति जो लोहे का कारोबार करते हैं उनमे से वह भी एक है। ईश्वर पर जो विश्वास लाता है उसे वह प्यार करता है।

● जेनेवा के लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन ने इन साल ६४ व्यक्तियों को छात्रवृति दी है। अब यह संस्था एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के उम्मेदवारों पर विशेष ध्यान दिया है। यूरोप के १३ उत्तरी अमेरिका के २४ छात्रों में से १३ विद्यार्थी अफ्रीका में ५ एशिया में और ३ लेटिन अमेरिका में अध्ययन करेंगे। स्कोलार्शिप प्रोग्राम के लिए करीब २२ लाख रु० बजेट में है।

● लाहोर में आजकल संसार के सारे मुसलमानों की एस सभा हो रही है। सभा आरम्भ होने के पहले पाकिस्तान को बंगला देश को मान्यता देने के लिए बाध्य किया गया और पाकिस्तान ने उसे मान्यता दे दी। इसलामिक सभा ने २३ ता: रात को यह फैसला किया है कि इसराएली लोग यीरुशलीम नगर को खाली कर दें। इसराएल अब इस फैसला के विषय क्या मत देता है उसे हमें देखना है।

● उत्तर प्रदेश और उड़ीसा में वोट का बुखार चढ़ा हुआ है। उड़ीसा में जोरों से वोट चल रहा है। मधुबानी

Gossner Mission

में जहां बिहार के मुख्य मंत्री अबदुल गफूर खड़े हैं बड़ी तादादों में वोट हो रहा है। नागालैन्ड में युनाइटेड डिमोक्रेटिक फ्रोन्ट ने सब से अधिक सीट जीत लिया है। चुनाव के सिलसिले में बिहार में भी दो स्थानों में चुनाव हुई। मधुबनी में बिहार के मुख्य मंत्री श्री अबदुल गफूर ने तेइस हजार वोट से अपने प्रतिद्वन्दी को हराया। यह विधान सभा की चुनाव थी। खूंटी कन्स्टीचुवेन्सी से लोक सभा के लिए छुनाव हुई जिसमें झारखन्ड प्रेसीडेन्ट श्री एन० ई० होरो ने अपने प्रतिद्वन्दी जनसंघ से खड़ा श्री करिया मुन्डा को २४६ वोटों से हराया है इस प्रकार श्री होरो ने अपने पुराने सीट को कायम रखा।

● जेनेवा का खबर है कि अफ्रीका के तनजानिया में लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन की छठवी सभा १९७७ में होगी जिसमें एल डब्लू एफ के ८८ सदस्य कलीशियायें भाग लेंगी। यह १९७७ की सभा एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के लिए पहला मौका है।

● ओसलो (नोरवे) का खबर है कि "जन शांति पुरस्कार" फरवरी १० को वितरण किया गया जिसमें करीब १८ लाख रुपैया का इनाम ब्रजील के ओलिन्दा और रेसीफ के एक रोमन कथोलिक आर्चविशप हेल्दर कमारा को दिया गया। इसके अलावे लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन के सिफारिश पर जर्मनी ने आर्चविशप हेल्दर को ७ लाख ७५ हजार रु० का रकम दिया। विशप हेल्दर ने इस भारी रकम को पाकर एलान किया कि यह रकम ब्रजील के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र में बांटा जायगा जहां कि भूखमरी है।

* वशिंगटन का खवर है कि लूथेरानों के द्वारा जो सहायता उगन्डा से निकाले गये एशियाई शरणार्थियों को दी गई थी उसमें से $\frac{1}{6}$ हिस्सा शरणार्थियों ने वापस कर दिया है। ये शरणार्थी संयुक्त राज्य अमेरिका में बसा दिये गये हैं जिनकी संख्या ५२३ है।

● हमवर्ग (जर्मनी) से पाद्री ओइजेन बकमान्न जो रूस देश के सइवेरिया में अनेको वर्ष बिताये यह समाचार दिये हैं कि यद्यपि सोवियत रूस में लूथेरानों की कोई मन्डली या गिरजा नहीं है तौभी वहां लूथेरानों का आराधना चल रहा है। वपतिस्मा ओर दूसरी २ विधियां भी चल रही हैं।

● जर्दन की कलीशिया जहां १३०० सदस्य हैं और यीरुशलीम में स्थित है लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन का सदस्य बन गई है। अब एल० डब्ल्यू० एफ० में ८९ कलीशियायें हो गये जहां ५ करोड़ ४५ लाख सदस्य हैं।

सूचना

बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय, राँची में १९७४-१९७६ के लिए प्रशिक्षणार्थियों को बहाली के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। उम्मीदवार की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिए। स्थान रहने पर मैट्रिक फेल उम्मीदवार भी लिए जाएँगे। आवेदन पत्र दाखिल करने की अन्तिम तिथि १५ जून १९७४ है।

प्रधानाध्यापिका
बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय
राँची।

Gossner Mission

अभिलाषा

ख्रिस्त सबन पुर्ती
जमशेदपुर

दुर का मैं राही अन जाने राहों के
दीखता कहीं न मन्जिल प्यार के
बढ़ता हूँ सिर्फ लिये आश जीवन के
देखता हूँ उस सलीब को जो है यीशु के।

फिर पुकारता हूँ मैं इस जग में
बन कर राही अत ज्ञान डगर में
चाहता हूँ किसी को मिला दूँ प्रभु में
चाह है प्रभु का बन जाऊँ, दूत मैं इस जहाँन में।

था विष का प्याला मेरे लिये
पर लिया वह अपने लिये
बचाया मुझको तुझको पिता के लिये
किया काम वह जग उद्धार के लिये।

आओ बने काबिल उस प्यार के
धो डालें मैल उस खून से दिल के
जो बहा क्रुश पर यीशु के
लाया हमें मोल वह, सामने स्वर्गीय पिता के।

है यह धुन्ध अपने सीने में
पा कर प्यार रहूँगा उसके दिल में
देगा मुझे वह जगह स्वर्ग में
नितनित गाऊँगा गीत मैं, स्तुति के उस जहाँन में।

पत्रकारिता (समाचार लेखक--जरनालिज्म) का प्रशिक्षण।

कलीशिया के आम जनता को सूचित किया जाता है कि नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल की ओर से समाचार लेखक या जरनालिज्म प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया गया है। यह प्रशिक्षण राँची में जी. ई. एल. चर्च कम्पौन्ड मेन रोड स्थित "गुड बुक्स" में १३ मई से ८ जून तक होगा। भोजन और रहने का प्रबन्ध रहेगा। मुफ्त भोजन के अलावा प्रति व्यक्ति को प्रति सप्ताह १०) रू० पाकेट मनी दिया जायगा। इसमें लड़का और लड़की दोनों भाग ले सकते हैं। विशेष बात यह है कि प्रत्येक आवेदक अपनी मातृ भाषा अर्थात् सन्ताली, हो, खड़िया, मुन्डारी या उरांव (कुड़ुख) अच्छी तरह जानने वाला हो। आवेदन पत्र में इलाका चेयरमैन का सिफारिश अवश्य होना चाहिए। आवेदन पत्र में निम्न-लिखित बातें आवश्यक हैं :—

१ आवेदक का पूरा नाम और पता। २ आवेदक का उम्र। ३ मातृ भाषाका ज्ञान।
४ शैक्षिक यौग्यता (क्वालिफिकेशन) ५ प्रमाण पत्र (टेस्टीमोनियल) में यह सिफा रिश रहे कि आवेदक किसी खास उपरोक्त जनजातीय भाषा का अच्छा जानकारी रखता है। ६ यदि आवेदक अपनी भाषा में कभी किसी समाचार पत्र में अपना लेख प्रकाशित किया हो अथवा कोई पुस्तक लिखा हो तो उसकी चर्चा आवेदन पत्र में रहना चाहिए।

आवेदन पत्र के॰ एस॰ एस॰ ऑफिस जी॰ ई॰ एल. चर्च, राँची में २९ मार्च १९७४ तक अवश्य पहुंचना चाहिए।

(ह०—पाद्री डा० सी के० पी० सिंह)
जी० ई० एल० चर्च, राँची।

Gossner Mission

"आराधनालय के द्वार पर"

डी० पी० इफ्राईम 'बेबस'
गो० थियो० कॉलेज राँची।

चौराहे के पास खड़ा युवक, मौन अवस्थायुक्त, अपनी पुतलियों को इधर उधर टकटकी लगाकार, शहर के लोगों की हलचल निराशता के आवरण में लिप्त देख रहा था। पहिरावे से देहाती और बिखरे बालों तथा बढ़ी हुई दाढ़ी का संकेत समझने वाला समझ सकता था कि उसे शहर आये चार-पांच दिन अवश्य हो गये थे।

लगभग एक घंटे से वह चौराहे पर आने-जाने वाले रिक्शों को ध्यान पूर्वक देखता। उसी बीच उसने जाने कितने कितने रिक्शों में सवारी बोझा देखा और जाने कितनों को खाली आते जाते देखा। उसके सोच-विचार रिक्शे के पहियों के साथ प्ररिक्रमा करते हुए आगे बढ़ने लगे, और वह·····वहीं की वहीं।

आज भी उसका न कोई सहारा, न कोई ठिकाना है, और जब गाँव छोड़ रहा था, वहां पर भी उसे अपनी छाया में रखने वाला कोई नहीं था। मां बचपन ही में प्रभु को प्यारी हो गई, बाप के मरने से उसकी छत्र छाया नाम की कोई वस्तु नहीं रह गई। गांव में उसकी अपनी कोई सम्पत्ति नहीं थी। पिता क्रिस्तान होते हुए भी, नाना प्रकार की मद्य-वस्तुओं से ग्रसित थे। उनके मरने से कर्ज-दारों ने अपना हिसाब साफ कर लिया। जमीन की एक टुकड़ी और मिट्टी का बना घर अब उसका अपना न रहा। सब कुछ तो संसार के सत्य का आवरण ओढ़े और आदर्शता का जामा पहने मानवों ने दानव का वेश धारण कर सत्य को असत्य घोषणा कर नवयुवक को धन-सम्पत्ति से नंगा कर दिया। नवयुवक अपने समाज के पुतलों से विरोध नहीं कर पाया। अंत में उसने क्रिस्तानों के अगुवों के सामने हाथ पसारा। वहां पिता का कलंक पुत्र को सहना पड़ा, वहां पिता के अपराधों और बुरी आदतों की बदौलत अगुवों के शब्दों ने उस पुत्र के हृदय को छलनी कर दिया उससे कुछ कहते न बना। उसे संगठित समाज का परिचय मिल रहा था। वह रोकर, भी रो न सका, धर्म की शिक्षा देने वाले अगुवे को धिक्कार न सका। चुपचाप निराश, बेसहारा' बेबसी से लिप्त अपने शरीर को शहर की ओर ढकेलता गया और आज वह शहर में अर्थ हीन हो इधर उधर चक्कर लगा रहा है

आज उसकी ऐसी परिस्थिति ने उसे ईश्वर को धिक्कारने में मजबूर कर दिया शहर में होते हुए भी, मजबूरी की दुनियाँ में यह वही ग्रामीण क्रिस्तान है, जिसे ग्राम के पड़ोसी सागर के नाम से पुकारते थे। वही सागर मजबूरी से घिरा हाथ पैर मार रहा, है पर इतने बड़े शहर में उसे कोई काम नहीं मिला। चार-पांच दिन का भूखा सागर अपनी जीवन गाड़ी चुल्लू भर पानी पी-पी कर खींच रहा है। चलते चलते अचानक ही उसे चक्कर आ गया और वह चौराहे से बीस कदम की दूरी पर रिक्शा- स्टैण्ड के सामने गिर पड़ा। मूर्छा के विलीन होते ही उसने अपने आप को रिक्शे की गद्दी पर अर्ध-लेटा पाया। उसे अपने आप में कमजोरी महसूस हुई। अचानक उसका ध्यान सामने खड़े बूढ़े पर गया। जिसके चेहरे में अनगिनत झुर्रियां, सर के बाल अध-पके, दाढ़ी सफेद पर इनेगिने काले बालों ने सागर को अपने पिता से तुलना करने में मजबूर कर दिया। आखों से आखें मिली, उसकी जवां आखें मासूमियत से भर गई, हृदय पितृत्व-प्रेम की वेदना से त्राही-त्राही होने लगा। मन की दशा आखों ने धारण कर ली। बूढ़ा रिक्शा चालक उसकी आखों में आंसू देख, उसका पितृत्व उमड़ पड़ा, उसने सागर से सांत्वना भरे शब्दों में पूछा। — बेटा तुम्हारा घर कहां है? सागर एक टकटक उसे देखता रहा फिर अपने को न सम्भाल सका और बिलख पड़ा अपने घुटनों में सिर को टिकाये।

एक नवीन ग्रामीण युवक को देख बूढ़े को दशा समझते देर न लगी। उसने सागर के प्रति उदार- भावना प्रदर्शित

Gossner Mission

की। फिर उसे लेकर अपने किराये की झोपड़ी में उसे खाने और आराम करने की सुविधायें प्रदान की।

सागर को इतने बड़े शहर में, कीड़े-मकोड़ों के सदृश्य मनुष्यों की दुर्गति देख काफी दुख हुआ। इससे अधिक उसे अधिकांश बेकार जवानों के लिये हुआ जो नौकरी के लिए मारे-मारे फिरते हैं। जीवन सग्राम करने के लिए ग्रामीण सागर जो कभी अपने खेतों में हल की मूठ पकड़ सरलता से जोतता था। आज इसे रिक्शे के अग्रभाग की मूठ पकड़ने में काफी कठिनाई से जूझना पड़ रहा है सुदृढ़ शरीर दिन भर खेत में काम करके भी मनोरंजन के लिए गांव की भजन टोली में भाग लेता था, पर अब वह दिन भर के रिक्शा चलाने में बुरी तरह थक जाता है।

समय अपने में ही परिक्रमा करते हुए, धीरे-धीरे, टकटक आगे खसकने लगा। सागर सब कुछ भूल चुका है। अब तो वह शहरी हो गया है। सब अब उसका नित्य का काम यही कि सवारी मिली तो चला वरना रिक्शे के अड्डे में जाकर इकड़म-तिकड़म की बातों में मजा लेना। कभी मन करता तो दो-चार रिक्शा-चालकों के साथ ताश की गिड्डी फेंटते रहता। फिर भी उसने बूढ़े को हमेशा अपनी कमाई से खिलाया, उसे आराम से दिन गुजारने के लिये एक किराये के मकान में रख छोड़ा, जहाँ वह रात्रि को बूढ़े के द्वारा बनाया भोजन खाकर सोता। दिन गुजरते उसके मौजों में। रिक्शा खींच कर अपना और बूढ़े का भरण-पोषण किया करता। वह इतना भी भूल गया, कि वह एक क्रिस्तान है। रविवार को आराधना में सम्मिलित होना है आदि बातें।

लगभग दो बरस बीत चुके। किराये के रिक्शे को खींच रहा सागर काफी अभ्यस्त हो चुका था। रोजी-रोटी करते हुए भी बचत में आठ बारह आने प्रति-दिन बूढ़े के हाथ में रख दिया करता था। प्रति-दिन की तरह आज भी वह रात्रि के ११ बजे घर लौटा। रिक्शे को घर के किनारे में लगा कर खड़ा कर दिया एवं रिक्शे से गद्दी और कुछ छोटे मोटे सामानों को निकाल प्रति-दिन की भाँति सागर घर में घुस गया। परन्तु आज तो बूढ़ा भी जाग रहा था, यह देख उसे आश्चर्य हुआ। अपने हृदय की बात को वह जबान पर लाना ही चाहता था कि बूढ़े ने स्वयं कहा :— सागर तुम्हें आश्चर्य होगा कि मैं जाग रहा हूँ। मुझे तुमसे कुछ खास बातें करनी है।

सागर अपने सामान को यथा स्थान रखते हुए बूढ़े के बिछौने पर बैठ गया और कहने लगा— बाबा! ऐसी कौन सी बात है आप आराम से सोते और सब कुछ सुबह ही कहते तो अच्छा था। इतनी रात गये आपको जागने की तकलीफ नहीं करना था। खैर क्या बात है कहिए?

बूढ़े ने कहा :— ऐसे नहीं हाथ धो कर आओ खाना भी खाओ और मेरी बात भी सुनो।

भूखा सागर हाथ धोने बाहर चला गया तब तक बूढ़े ने थाली परोस दिया। सागर खाने में जुट पड़ा। बूढ़े ने कहना आरम्भ किया :— सुनो सागर ईश्वर का शुक्र है कि उसने हमें नागपुर जैसे बड़े शहर में रिक्सा खींचने दिया अगर रांची जैसे शहर में होते तो कभी कभी हमें पावरोटी और चाय तक नसीब नहीं होती। तुम जानते हो कि किराये के रिक्शे को चलाने में हमारी कोई बढ़ती नहीं हो सकती। हम जितना कमाते हैं, उससे किराया रिक्शे को दुरूस्त रखना आदि बातों में भी हमें फालतू पैसा देना पड़ता है और यह सब ठीक नहीं है।

सागर — बाबा! आज आपको क्या हो गया है बड़ी लम्बी बात कर रहे हो। आपकी इतनी लम्बी भूमिका बाँधने का तात्पर्य क्या है? जो कुछ आप कह रहे हैं वह तो प्रत्येक रिक्शा वाला जानता है कि यह सब तो होता ही है। कभी लेना ही लेना तो कभी देना ही देना। हम स्वतंत्र मजदूर हैं। लोगों की सेवा करके ही कमाई करते हैं, अगर कुछ न किया तो भूखे! संसार भर के रोजगारों में यही रोजगार ऐसा है जिसमें स्वतंत्र मजदूर गाढ़े पसीने की कमाई ही खाता है।

बूढ़ा :— बेटा सागर आज मैं इसी गाढ़े पसीने की कमाई हो में तो नया परिवर्तन करना चाहता हूं। मतलब यह कि पूरी की पूरी रोटी हमारे ही हाथ लगे।

सागर :— यह कैसे हो सकता कि पूरी मजदूरी हमारे हाथ लगे?

Gossner Mission

सागर तुम रिक्शा चलाना जानते हो मगर तुम में जो बुद्धि है, बेटा—वो अभी घास चरने गई है इसलिये तुम आराम करो और मैं भी।— बूढ़ा) सागर हाथ धोते हुए:— बाबा आप कहना क्या चाहते थे, वो तो कम से कम मुझ मुर्ख से बक डालिए।

बूढ़ा— कल तुम इस किराये के रिक्शे को लौटा आना, फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या करोगे।

सागर— परन्तु बाबा यह कैसे हो सकता है, कि रिक्शा लौटा दूं और फिर सड़कों में मारा-मारा फिरूं ?

बूढ़ा— अगर तुम्हारे मन में मेरे लिए जरा सी भी जगह है तो लौटा आना।

सागर— बाबा ! आपकी यही मरजी है, तो मैं सुबह लौटा आऊँगा। परन्तु आप सब कुछ करना, मैं कुछ नहीं जानता।

निराश, चिंतायुक्त सागर बिछौने पर आकर लेट गया। काफी समय इसी बात पर सोचने विचारने में लगा, कि बाबा मेरे पिता के सदृश्य हैं, वे मेरे लिए बुरा नहीं पर भला ही सोचेंगे।

दूसरे दिन हताश सागर रिक्शे को लौटा कर आ रहा था कि रास्ते में उसका हमजोली मित्र शम्मू उसे अचम्भे से देखता हुआ बोला :— सागर क्या बात है, आज अपना उड़न-खटोला नहीं लाये ? क्या छुट्टी मनाने का इरादा है ? सागर— नहीं यार बस जरा ऐसा ही काम पड़ गया है, इसलिए आज छुट्टी ही है।

मकान पहुंचते-पहुंचते सागर काफी सोच विचार में उलझा हुआ मकान में प्रवेश करने लगा। रसोई से उसे घी की खुशबू मिलने लगी सोचा, जरूर आज बाबा मुझे अच्छा नास्ता कराने वाले हैं। इसी बीच बूढ़ा बाबा पसीने से लथ-पथ सागर के समीप आया, उसे संकेत से बैठने के लिए कहा। उदास सागर जमीन पर पावों को मोड़ के बैठ गया। तभी बाबा ने उसे अलमोनिय की तश्तरी में ताजा बना हुआ हलवा दिया।

कृत्रिम मुस्कुराहट लाते हुए सागर पूछ बैठा :— बाबा आज ये मीठा किस खुशी में ?

बूढ़ा:— आज मैं परीक्षा में पास हो गया हूँ, इसलिए।

सागर:— बाबा आप मुझ से मजाक कर रहे हैं, सच बताइए न क्या बात है।

बूढ़ा:— बेटा सागर जब से तुम मुझे मिले हो, बस संसार का सबसे बड़ा सुख मिल गया। तुमने मेरी अवस्था पर दया की। मैं तुम्हारा कुछ भी तो नहीं हूँ, फिर भी तुमने मुझे अपना सब कुछ समझ लिया, बस मुझे इससे बढ़ कर क्या चाहिए। तुम मुझे खर्च चलाने के लिए पैसा दिया करते थे। मुझसे हिसाब मांगने की बात तुम्हारे मन में कभी नहीं आई। फिर भी मेरे मन में कई अरमानों ने जन्म लिया परन्तु उनमें से मैंने आज एक ही को पूरा कर पाया हूँ। चलो तुम्हारा हृदय हलका कर दूं।

बूढ़े ने सागर का हाथ पकड़कर उसे बाहर खींच ले गया। घर के किनारे गली में वहां एक रिक्शा खड़ा था पर उसके ऊपर एक बड़ी चादर डली हुई थी। बूढ़े ने ज्योंहि चादर हटाया त्योंहि सूर्य के प्रकाश जगमगाता रिक्सा सागर की आखों को चका-चौंध कर दिया बूढ़े ने कहा बेटा यह तुम्हारा अपना रिक्सा है। यही तुम्हारी ३ वर्ष की बचत है। अब तुम स्वयं मालिक और चालक दोनों हो। सागर बूढ़े से लिपट अश्रु-धारा बहाने लगा। आज उसे सहानुभूति देने वाले पिता से प्रगढ़ प्रेम हो गया।

दिन प्रतिदिन सागर नये रिक्शे के साथ ही साथ नया ब्यक्ति भी बन गया। अब तो रिक्सा ही उसका धर्म, प्राण और ईश्वर हो गया। दिन भर रिक्सा खिचता, शाम को उसकी सफाई करता और फिर कभी-कभी बूढ़े बाबा के साथ घूमने जाया करता। अब उसके दिन चैन से गुजरने लगे।

दो साल तक उसके नित्यक्रम में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। एक दिन सुबह आठ बजे प्रतिदिन की भांति वह अपना रिक्शा, मोटर स्टैंड की ओर ले जा रहा था परन्तु रास्ते में एक सुसज्जित नवयौवना के संकेत पर उसने रिक्सा रोका। युवति रिक्शे पर चढ़ गई।

Gossner Mission

सागर उसके निर्देशन अनुसार शहर के बड़े गिर्जे के अहाते में रूका। युवति किराया दे कर गिरजे में चली गई। गिरजे को मधुर संगीत लहरी ने सागर को वहीं पर जकड़ रखा। यंत्र चलित उसके पांव गिरजे की ओर बढ़ने लगे।

रिक्सा की सुध भूल कर सागर के मस्तिष्क में अतीत की कल्पना स्वप्निल रूप धारण करने लगी उसके मन ने धिक्कारा, उसका अन्तः करण कहने लगा— "मैं क्रिस्त न हूँ मैं क्रिस्त न हूँ"। तभी वेदी के पास दो खूब सूरत बालक आ गये। उन्होंने कोमल, मधुर आवाज में गीत कर— अरूण परमन' के लोक प्रिय गीत को गाना आरम्भ किया—

द्वार पर खड़ा सागर को उस गीत का एक एक शब्द कचोट रहा था—

राहे सलीब को छोड़ कर,
कहां को बढ़ चले हो तुम,
क्यों छोड़ दिया मसीह को,
साये में जिसके पले हो तुम।
मन में क्यों अनास्था है,
ईश्वर के प्रेम के प्रति,
अपने वात्सल के द्वारा,
देता जो तुमको नित नई गति,
मृगतृष्णा के पीछे क्यू
दौड़ते चले हो तुम ॥

वक्त को यूं न खोईये
मसोह से मुख न मोड़िये
वह प्यार से पुकार रहा
मन के द्वार खोलिए,
विलासिता की ओर क्यूं
बहके बहके चले हो तुम ॥

सागर के नेत्रों से अश्रु धारा फूट पड़ी, उसे नहीं मालुम कि वह कितना अपराधी है। आज उसने अपने सारे आंसुओं से पश्चाताप करने की ठान ली। द्वार पर बेसुध खड़ा हुआ वेदी की ओर एक टक क्रूश को देखता रहा। अबतक में उसके आंसुओं का बांध फूट पड़ा था। उसके आंसू नीर के हीरे, ओस को बूदों की तरह मिलकर उसके गालों पर बहते गये। उसकी आंखों में मानों सदियों से एक नीर के सागर का निर्माण किया गया हो। पर आज सब बहते बहते खाली हो गये सागर के नीर।

सूचना –

सन् १९७४ में थियोलोजिकल कॉलेज में विद्यार्थी लिये जा रहे हैं। नया सत्र जुलाई १९७४ से आरम्भ होता है। उम्मीदवार की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिये। प्रवेश परीक्षा २७ अप्रील १९७४ दिनांक शनिवार को होगी। प्रवेश परीक्षा (Entrance Test) के लिये दो केन्द्र खुंटी और खुंटीटोली (Simdega). हैं। उम्मीदवार किन्हीं एक केन्द्र में परीक्षा दे सकते हैं। परीक्षा २७ अप्रील १९७४ को भोर ६:३० बजें से शाम ५:३० बजे तक होगी। इसलिये उम्मीदवारगण २६ अप्रील १९७४ शाम को ही किसी एक परीक्षा केन्द्र में पहुँच जावें। जिन्होंने Application Form नहीं लिया है उन्हें केन्द्र में ही १) (एक रूपैया) देने पर Application Form दिया जायगा। लिखित परीक्षा के उपरान्त उसी दिन इन्टरवीयू भी होगा। अधिक जानकारी के लिये प्राचार्य महोदय से लिखा पढ़ी करें।

Gossner Mission

धन्यवाद, आप का चन्दा, (२८ फरवरी १९७४ तक) मिला

1 Mr. C. M. Horo
2 Mr. Philip Minz
3 Rev. Yakub Lakra
4 Mr. C. R. Tirkey
5 Cat. Chain Sanga
6 Rev.C. S. Lakra for 21
7 Mr. B. K. Hemrom
8 Mr. A. M. Guria
9 Mr. Johan Surin
10 Mr. Sosan Kandulna
11 Cat. Samuel Ekka
12 Mr. P. S. Mundu
13 Mr. Johan Dang
14 Mr. D. I. Horo
15 Rev. W. Khalkho for 60
16 Mr. R. Horo
17 Mr. D, Tirkey
18 Mr. Israel Kandulna
19 Mr. Abraham Kandulna
20 Shri Paul Bage 3,
21 Rev. Philip Hemrom
22 Rev. Sursen Kerketta
23 Cat. Dhankunwar Ekka
24 Cat. Anand Kindo
25 Mr. Elias Topno
26 Miss Nakhisiri Narsari
27 Mr. Salan Barla
28 Mr. Bilokan Kindo
29 Mr. E. Hemrom
30 Mr. S. Tete
31 Mr. C. B. Lakra
32 Mr. M. M. Horo
33 No. 13931381 Sep. K. Kandulna
34 Mr. Gabriel Dhan
35 Rev. Junas Surin for 4,
36 Mr. Abraham Guria
37 Mr. Iswaridas Ekka
38 Mr. H. K. Khess
39 Mr. Christ Anjor Ekka
40 Mr. Christ Niroj Bara
41 Mr. Christ Immanuel Khalko
42 Mr. Christ Martin Tete
43 Mr. Bardan Ekka
44 Cat. Aijub Kerketta
45 Mr. Komal Kindo
46 Mr. Nuas Mundu
47 Mr. M. P. Kongari
48 Mr. P. S. Barjo
49 Mr. Benjamin Lakra
50 Mr. D. P. D. Kujur
51 Rev. P. W. Lakra for 6
52 Gossner Theol. College for 5
53 Mr. A. Sanga
54 Capt. C. H. M. Champi
55 Rev. S. Dungdung
56 Mr A. L. Roy
57 Mr. P. S. Kujur
58 Shri. Dular Kerketta
59 Rev. Santosh Surin
60 Rev. Samuel Surin
61 Cat. Herbedan Kongari
62 Rev. Johan Dang
63 Mr. Mansukh Toppo
64 Mr. P. S. Lugun
65 Mrs. Ch Dalit Kushum Horo
66 Mr. William Khess
67 Mr. Maskalyan Mundu for 3
68 Cat. Philip Topno
69 Mr. Mangal Kunwar Topno
70 Mrs. Tara Lakra
71 Mr. Hiralal Lakra
72 Mrs. Dulari Tirkey For 3
73 Mr. Taldas Minz
74 Mr. B. B. Minz

Edited and Published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं. आर. एन. सी. ४
वर्ष—१४ राँची, ● अ ● १९७४, संख्या न.—४

Gossner Mission

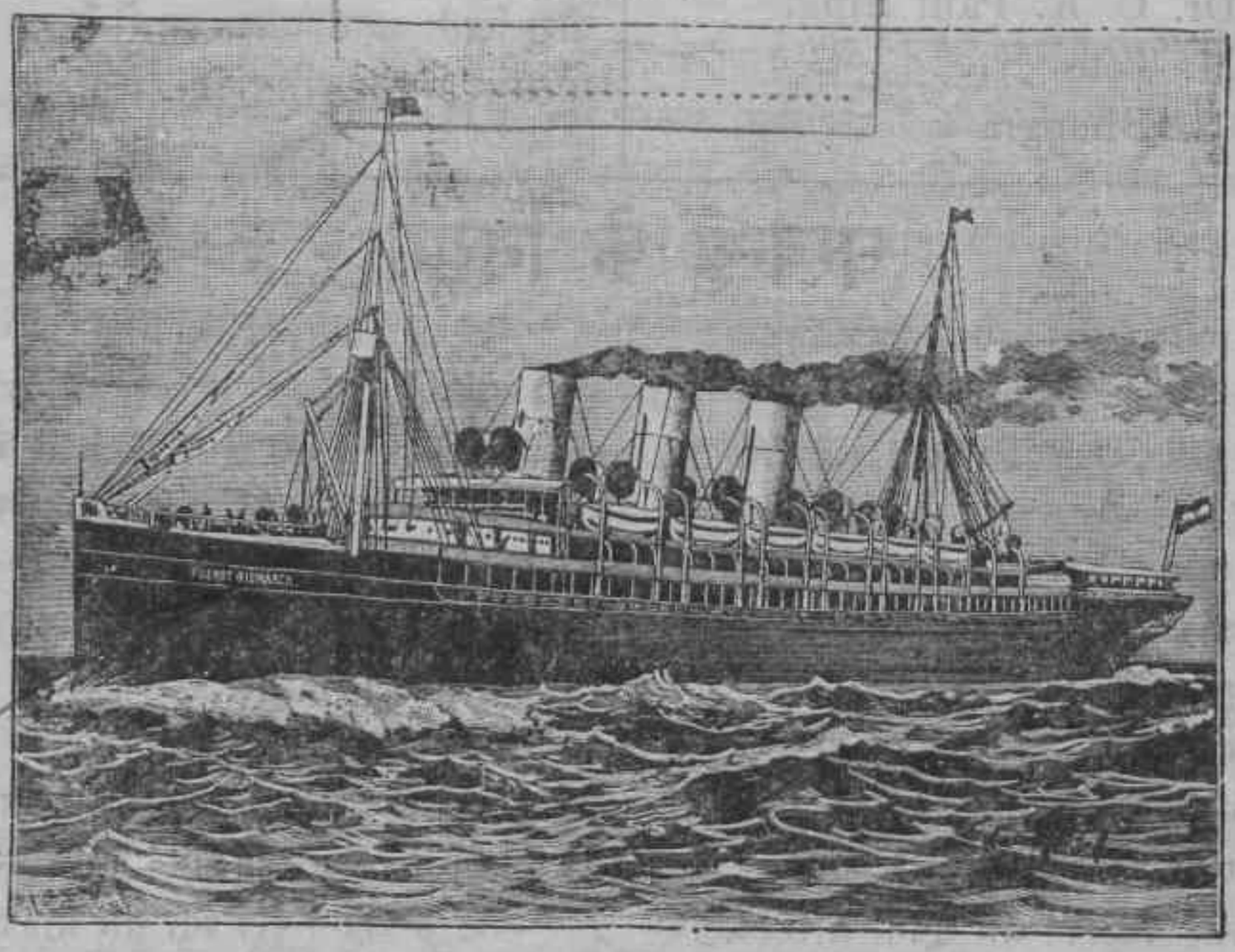
घनबन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ पी॰ टी॰ १५

वार्षिक मूल्य ४ रु॰

वर्ष — ६४ रांची, फरवरी १९७४ संख्या नं॰ — २

EINGEGANGEN
29. APR. 1974



auch das ist
bedeutsam!

तुम जा के सब देशों के लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता, पुत्र और
पवित्रात्मा के नाम से बप्तिस्मा दो। मत्ती २८:१९।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
'न्योता'	—	—	६
कलीसियाई समाचार	—	—	७
शोक समाचार	—	—	१०
गोस्सनर कलीसिया की सोचनीय आर्थिक दशा		—	११
जी० ई० एल० चर्च चक्रधरपुर में		—	१२
ठोकर	—	—	१४
धन्यवाद आप का चन्दा मिला		—	१७
यीशु ख्रिस्त जगत के आरम्भ से है		—	१८
गोस्सनर बैबल बुनियादी ...		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये है।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

एकान्त शान्ति

कोई भी भला व्यक्ति शान्ति के बदले अशान्ति नहीं चाहेगा। चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो मनुष्य शांति ही चाहता है, पर स्वार्थी मनुष्य के लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता है; स्वार्थी तो बराबर चहता है कि अशांति या हुलड़ कुछ भी हो मुख्य लक्ष्य रखता है कि उसको लाभ हो। लेकिन मनुष्य इहलोकी शांति की ही नहीं सोचता है, वह मृत्यु के बाद भी एकान्त शांति की खोज में रहता है, इस माह का पथ प्रर्दशक पद देखें (भ. स· ४.८)।

जो व्यक्ति भक्त और पड़ोसी प्रेमी है और परमेश्वर तथा पड़ोसी की संगति में रहता है वही जीवन के अन्तिम लक्ष्य में भी "एकान्त शांति" की आशा कर सकता है। जो यहोवा की संगति में रहता है उसको अनन्त शांति की निश्चयता है, वह मृत्यु से भी नहीं डरता है और मृत्यु को शांति से लेट जाना और सो जाना कह सकता है।

अनेकों लोग हैं जो परलोक की तो नहीं पर इसी लोक की शांति की खोज में रहते हैं, पर वे न केवल पड़ोसी से दूर या पड़ोसी के विरूद्ध ही रहते हैं, पर ईश्वर के विरूद्ध भी रहते हैं और वैसे ही कार्य भी करते हैं। हमारी गोस्सनर को वर्त्तमान परिस्थिति इसी का फल है कि लोग पड़ोसी और ईश्वर दोनों को किनारे कर कलीसिया में इह-लोकी शांति की स्थापना की धून में हैं, पर सब से पहले तो आवश्यक है कि ऐसी शांति के खोजी या शांति के स्थापक, शांति के बड़े स्थापक मसीह को नहीं भूल जाते हैं और उनको भी सामने रखते हैं जिसके लिये परमेश्वर ने मसीह में शांति स्थापित कर दी है।

मसीही को तो इहलोकी शांति को ही नहीं सोचना चाहिए इसके साथ ही साथ "एकान्त शांति" मृत्यु के बाद की शांति की ओर लक्ष्य रखना चाहिए। परन्तु आवश्यक है, कि मसीही परमेश्वर के साथ कि शांति को इसी वक्त मजबुत रखे— उसकी संगति में रहें—मसीह की संगति में रहे, जो क्रूश घटना तक जाती है और वह पड़ोसी में प्रतिविम्बित होती है। जो कोई कहता है: मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ पर अपने भाई से वैर रखता है, वह झूठा है! "एकांत शांति" के लिये ईश्वर-प्रेम और पड़ोसी प्रेम की नितान्त आवश्यक है।

जब एकान्त शांति के लिये ऐसी बात है तब तो अभी इहलोकी शांति, कलीसिया में शांति के लिये तो परमेश्वर व पड़ोसी के साथ संगति व मिलाप और ही आवश्यक हो जाता है। जिस देह के अंग प्रत्यंग आपस ही में लड़ते हैं, वह कैसी मूर्खता होगी जब हम कहें कि उस देह में शांति है, और वह क्योंकर एक बड़ी शांति की आशा कर सकता है। अत: आवश्यक है कि "एकान्त शांति" के साथ ही साथ मसीही जन परमेश्वर की संगति में बढ़े और पड़ोसी संगति भी न भूल जावे। (स· स.)।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

इपिफानियस के पीछे ४था एतवार

रोमी १२ : १६–२१

हमारी आपसी संगति मसीह यीशु के कारण पवित्र है। इसलिये दैनिक जीवन में हम आपस की संगति के लिये निम्नांकित नियमों पर ध्यान दें।

"आपस की संगति के लिये नियम"

१. सताने वालों के लिये प्रार्थना करना (१४) :— यीशु सतानेवालों के लिये प्रार्थना किया। हम भी सतानेवालों के लिये प्रार्थना करें। अपने बैरियों को तुच्छ न करे परन्तु प्रेम से उनको जीत लेवें। (क्रिया ७:६०)

२ आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करें (१५): यीशु काना नगर के भोज में उपस्थित था। उसने वहाँ आनन्द करने वालों के साथ आनन्द किया। वह रोने वालों के साथ भी रोया। लाजर के कब्र के पास उसने आँसु बहाया।

३ आपस में एक सा मन रखें:—(१६): एकता में बल है। एकता के लिये सभों का एक सा मन होता है। एक मन के अभाव में एकता संभव नहीं है। कलीसियाई जीवन एक मन के विना असंभव है। क्रियात्मक कार्य के लिये एक मन की आवश्यकता है। जब कलीसिया में एक विचार का अभाव होता है तब लड़ाइयाँ होती हैं और भलाई के कार्य नहीं होने पाते हैं।

४ हक घमण्ड त्याग देवें:— हम परमेश्वर के हैं। परमेश्वर आप ही बल, बुद्धि, धन आदि देता है। इस लिये बल, बुद्धि एवं धन के कारण घमण्डी न हो जावें। गोलियथ अपने बल पर घमंड करता था। इस कारण वह नष्ट हो गया।

५ जो बातें सब लोगों के निकट भली है उनकी चिन्ता करें (१७) :— कभी कभी इस विषय पर हम चूकते हैं। हम यह प्रयास करें कि सभों की भलाई हो। यीशु सभों की भलाई चाहता है। हम भी इस विषय में यीशु का मन रखें।

६ सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखें (१८) यीशु हमें मेल मिलाप के लिये बुलाया है। हम किसी को तुच्छ न करें।

७ पलटा न लेना:— पलटा लेना ईश्वर का काम है। न्याय करना भी ईश्वर का काम है। यीशु पलटा नहीं लेता था पर सब लोगों को क्षमा देता था।

आपस की संगति के लिये उपरोक्त सात नियम आवश्यक हैं। हम ध्यान देवें।

सेप्तुआगेसिमे (७० वां दिन)

१ कुरिन्थ ९ : २४ १–५

पावल प्रेरित उपदेश देते हैं कि निर्बलों के कारण अपने अधिकारों का बलिदान आवश्यक है। मसीही जीवन में हमारा शरीर हमें धोखा दे सकता है। इस लिये सब प्रकार सयंम आवश्यक है।

"मसीही जीवन में सयंम की आवश्यकता"

क- मुकुट के लियेः— (२ तिः ४:८; याकूब १:१८, १ पतरस ५:४; प्रकाशित वाक्य ३:११; ४:१०) संयम के बिना मुकुट पाना कठिन है।

ख. सफल मसीही जीवन के लिये संयम की आवश्यकता है:— (नीति १६:३२; क्रिया २४: २५; प्रकाशि· ६:१२; याकूब ३:२; यिर्म. ३५:६; दानियेल १:८)।

ग· ईश्वर की इच्छा के अनुसार संयम की आवश्यकता है :— (मत्ती ५:२९; रोमि ६:६; १३:४; गलाति ५:१६; कुलु· ३:५; १ पतरस २:११; ४:२)

घ. असंयमी लोगों से ईश्वर अप्रसन्न होताहै:— (१०:५) हम अपने विश्वास को दैनिक व्यवहारिक

Gossner Mission

जीवन में प्रगट करें प्रचारक अपने प्रचार के अनुसार जीवन व्यतीत करें।

सेक्सागेसिमें (६० वां दिन)

२ कुरिन्थ ११ : १६–१२ : ६

पावल प्रेरित अपने प्रेरित होने के अधिकार के विषय लोगों को समझाता है। उसके इस प्रकार की बातचीत में हमारे लिये बड़ी शिक्षा है। हम मनन करें कि वह इस सम्बन्ध में क्या कहता है।

"पावल की प्रेरिताई प्रगट है"

क· यीशु के लिये दुःख उठाने में (१६-३१) वह यीशु मसीह के लिये दुःख उठाता है। यीशु के लिये दुःख उठाने के लिये ईश्वर यीशु उसको शक्ति देता था। देखो वह किस प्रकार दुःख उठाता है (३२ + ३३)।

ख. यीशु का दर्शन देखने में (१२ : १-१०) उसने अपने जीवन में यीशु का दर्शन देखा था। दर्शन में उसको पारादीश दिखाया गया था।

ग. विपत्तियों का मूल्य समझने में पावल विपत्तियों के द्वारा नम्र बनाया गया। उसने यह अनुभव किया कि ईश्वर मनुष्य की निर्बलता में सामर्थ प्रगट करता है। अतः वह निर्बलता में बल का अनुभव करता है।

पावल के समान हम भी मसीह के लिये निर्बलताओं, निन्दाओं, दरिद्रता, उपद्रओं तथा संकटों में प्रसन्न रहें। क्योंकि ईश्वर की सामर्थ को देखने के लिये निर्बल होने की आवश्यकता है।

एस्तोमिहो (मेरे लिये हो)

१ कुरि० १३ : १–१३

इस उपदेश में पावल प्रेरित "प्रेम" को सब से बड़ा मानते हैं। प्रेम सब प्रकार के बरदानों का अविभावक है। प्रेम ही बरदानों के सदुपयोग में सहायक है। कुरिनथुस के लोग बरदानों का दुरुपयोग करते थे। इसलिये पावल को साफ-साफ कहना पड़ा कि बरदानों का व्यवहार प्रेम के साथ करो।

"प्रेम सब से बड़ा है"

क, प्रेम की विशेषता : (१–३)।

प्रेम रहित मनुष्य कैसा होता है?

१. वह ठनठनाता पीतल तथा झनझनाती झांझ के समान है।

२· वह कुछ भी नहीं है (२)

३· वह कुछ भी लाभ का नहीं है (३)

ख. प्रेम का स्वभाव (४–७)

१· प्रेमी जन क्या नहीं करता है :—डाह, अपनी बड़ाई, फूलता नहीं, अनरीति चलना, अपनी भलाई, झुंझलाना, कुकर्म से आनन्दित।

२. प्रेमी जन क्या करता है :—धीरज धरता है। कृपालु होता है। प्रतीति करता है। आशा रखता है। इत्यादि।

ग. प्रेम की श्रेष्टता (८–१३)।

१· प्रेम नहीं टलता है—जब कि भविष्यद्वाणियां, भाषा ज्ञान आदि बरदान समाप्त हो जाते हैं।

२· प्रेम सब से बड़ा है :—हमारा जीवन रूपी घर आशा, विश्वास, धीरज इत्यादि से बनाया जाता है। परन्तु हमारे जीवन का मूलाधार प्रेम है।

हम ईश्वर से प्रेम की सेवाकाई की आशा रखें। क्योंकि अनन्त जीवन की तैय्यारी का मार्ग यही है।

Gossner Mission

न्योता— युहन्ना २:१-११

(बेन्जामीन तोपनो — रौरकेला – १)

जन्म पर्व का त्योहार हमने मना लिया। नये साल १९७४, पर भी अपना कदम रख लिया। अब हमारा ब्यस्त रहना तो शादी भोज, लोटापानी, बड़ाकाकुटुम्बाइत और नये युवक-युवतियों का 'जीवन साथी" चुनने और ढूढ़ने में पूरे दो महिने (जनवरी-फरवरी) ब्यस्त रहेंगे। सचमुच, अब मौसम ही आ गया जिसे हम "शादी-विवाह" का मौसम कहें तो अत्युक्ति न होगी। हमारे मसीह समाज में पर्व त्योहारों के अलावे ब्याह-शादी ही एक ऐसा अवसर है जिसमें हम अक्सर "बेहद" खुशी और आनन्द का अनुभव करते हैं। जन्म पर्व-या-नये साल के दिन तो सारे विश्व में एक "ठहराया" हुआ समय होने के नाते चौबीस-पच्चीस दिसम्बर या पहली जनवरी न जाने मेरे जैसे लोगों को बढ़िया से आनन्द मनाने का मौका न मिला हो। शादी बिवाह के "पुकार" हर मण्डली में सुनाई पड़ती है और इस तरह एक गांव में अगर तीन-चार जोड़ों का बिवाह है तो प्रत्येक जोड़ों का ब्याह, तारीक, भोज बारात आदि लगातार भिन्न-भिन्न सप्ताह में ठहराई जाती है जिससे पूरे गांव वालों को पूरे दो महिने आनन्द मनाने का मौका आता है तो लीजिये दिल खोलके मौज कीजिये। भजन होड़ की तो बात ही छोड़िये, जहाँ डाक्टरेट किये हुए जवान सिर और हांथ पर रुमाल बान्धे एक गांव के दूसरे गांव वालों से कैसी जबरजस्त भिड़न्त में 'भजन होड़" का हार-जीत पाते हैं। वास्तव में हमारे जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से जन्म, शादी और मृत्यु का स्थान निश्चय ही उल्लेखनीय है। शादी का समारोह शुरू से लेकर अंत तक काफी मार्मिक होता है। आरम्भ से ही देखिये "लोटापानी" जिससे आप पूर्णरूप से परिचित हैं, दुल्हा-दुल्हिन के बीच लोटों में पानी का अदल-बदल के समय आप सुनेंगे → दे नुनी पानी-२.....। इसके उपरान्त "बड़का कुटुम्बाइत" होता है जिसमें हमारे आदिवासी प्रथा के अनुसार दुल्हिन के लिये दाम चुकाना पड़ता है। इसके बाद आखरी सीढ़ी है "विवाह"। "गिरजा में" विवाह का स्थान होने के पश्चात् दूल्हे की तरफ से एक बिशाल बारात पार्टी—बच्चे से लेकर युवक-युवती–बूढ़ों और बुढ़ियाओं का एक बिचित्र दल रंगीन रूप धारण कर दुल्हिन के घर अपने सम्पूर्ण गाजा-बाजा के साथ पहुँचती है। "अहा—जलती हुई मशाल बूढ़ों के हांथ में; खेंवचा में चूड़ा और थरिया-लोटों में पानी बुढ़ियों के सिर पर और युवक-युवतियों क भजन होड़ नाच" मानो किसी कुश्ती के अखाड़े में। दोनों पार्टी की मुठभेड़ बड़ा ही रोमांचकारी रूप धारण कर लेती है। बिशेष कर देहाती आदीबासियों को ही यह भाग्य प्राप्त होता है क्योंकि अब हमारे मसीह आदिबासी भी दो दल के दिखाई पड़ते हैं एक है "शहरी" आदिबासी मसीही और दूसरे हैं—"देहाती" जैसे—राऊरकेला और जड़ाकुदर तथा करीमटी या राँची! प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शादी एक नयी मोड़ है। यह जीवन का एक ऐसा अंग है जिसकी विशेषता "बिवाहित लोग" ही अधिक समझ सकते हैं। बिवाह के बाद दुल्हा-दुल्हिन एक नई दिशा की ओर बढ़ते हैं जो उनके जीवन का एक विशेष परिवर्तन है। हमारा 'प्रभु-यीशु-मसीह दुल्हा है जिसकी दुल्हिन कलीसिया है, और कलीसिया प्रभु की देह है। "यीशु" स्वर्ग जाने के पहिले अपने चेलों से कहा था कि मुझे तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने की अति आवश्यकता है जहाँ मैं तुम्हें लेने के लिये फिर आऊंगा (मत्ती २५:१-२३)। यीशु ने कहा मेरे पिता के घर में बहुत जगह है जहाँ मैं रहूँ वहीं तुम भी रहो (यूहन्ना १४:१-३)। वह अपने पूरे दल के साथ हमको लेने आवेगा जिसकी "जय ध्वनि से सूर्य्य-चाँद -तारे गिरेंगे, पृथ्वी गल जायगी, मुर्दे जी उठेंगे, लंगड़े उछलेंगे, अन्धे देखेंगे, गूंगे बोलेंगे, बहिरे सुनेंगे। इस तरह जिदों और मुर्दों का एक बड़ी भारी "भीड़" प्रभु को आते देखेंगे (प्रा· वाक्य: १:७,मत्ती २४:३१)। पावल प्रेरित के कथानुसार न आंख ने देखा है, न कान ने सुना है, न हमारी जीभ से बर्णन हो सकती है, ऐसा

Gossner Mission

आनन्द "यीशु" अपने प्यारों के लिये तैयार किया है। यह खुश खबरी उन्हीं के लिये लागू है जिन्होंने "पवित्र बापतिस्मा और वेदी का सक्रामेन्ट में भागी होकर पवित्रों की संगत में रह कर विश्वास में रहते तथा जीवन बिताते हैं। आईये–अपने बच्चों को "सन्डे स्कूल" में इकट्ठे करके परिवार सहित "काना नगर" के नेवता में हाजिर होवें और विवाह का वस्त्र पहिनें (मत्ती २२:१-१४.)। अब हम अपने दुल्हे को साक्षीबाणी गीत २३६, गाते हुए ग्रहण करें। "न्योता मुबारक हो।"

●

कलीसियाई समाचार

पा. एच॰ लुगुन देवगढ़

बामड़ा—: विलम्बित समाचार गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी, मधुपूर में ८-९ नोवेम्बर ७३ की इलाका स्तर पर बड़े धुमधाम के साथ मिशन पर्व्व मनाया गया। इस पर्व्व में ५०० से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। विशेष रोक-टोक के कारण से अंचल के बाहर के निमंत्रित् पाहून नहीं आ सके। ता० ८ शाम सात बजे पाद्री टुटी की अगुवाई में मिशन पर्व्व का उदघाटन किया गया। १२ बजे रात तक भजन होड़ का प्रोग्राम रहा जिसमें भिन्न भिन्न मंडलियों के टीमों ने साहर्ष भाग लिया।

ता० ९ सुबह ९ बजे पाहुनों के स्वागत के साथ ही पर्व्व प्रोसेसन आरंभ हुआ और मिशन पर्व्व आराधना के साथ अन्त हुआ। अंचल अध्यक्ष के जोशिले उपदेश के द्वारा सभा का जागृति मिली। मिशन पर्व्व चंदा जमा किया गया। उपासना के बाद आधा घन्टा का समय नाच होड़ में बिता। भिन्न भिन्न दल अपने अपने स्थान में अपने ढंग से नाच दिखाये।

मिशन पर्व्व सभा के मूल वक्ता, अंचल अध्यक्ष, अध्यक्षीन, गोदरापाड़ा आर॰ सी. चर्च के ब्रदर और स्थानीय रंमिया टीकरा गांव के गोटिया साहब थे। उपरोक्त सज्जनों ने अपने विषय को सभा के सामने ऐसा सुन्दर रुप में रखा कि सब कोई दो बजे दिन-दिन तक ध्यान से सुनते रहें खाना खाने के तुरन्त बाद फिर सभा बैठी इसी समय इनाम दिया गया। लौटरी भी इसी वक्त खुला। मिशन पर्व्व के आनन्द को बढ़ाने लिये शाम को देवगढ़ मंडली की ओर से (नुवा जीवोनो) 'नया जीवन' पर एक सुन्दर नाटक (ओपेरा) पेश किया गया। इसके द्वारा कोई डेढ़ हजार लोगों के बीच गवाही का काम हुआ।

मिशन पर्व्व की सफलता का एक मात्र कारण इलाका चेयरमेन का प्रयत्न एवं स्थानीय भाई-बहनों का सहयोग रहा।

रांची : कलीसिया की वर्त्तमान परिस्थिति के दृष्टि-कोण से रांची में अंचल अध्यक्षों की बैठकी हुई। असम-अंचल-अध्यक्ष के न आने से किसी प्रकार का निर्णय लेना कठीन हो गया। अतः ५वीं जनवरी १९७४ को फिर बैठने का बिचार किया गया और इसी आशय की चिट्ठी उपस्थित चार अध्यक्षों ने लिखी।

गोस्सनर साहब का दो सौवां जन्म वर्ष गाँठ के उत्सव पर पश्चिमी जर्मनी से डा. फॉन श्तीगलीत्स १२ वां दिसम्बर को आये। जहाज के उड़ान में गड़बड़ी के कारण उन्हें काफी तकलीफ हुई। उनके साथ रांची माता मंडली ने राजवृद्धि गिर्जा भी की। १४ वीं दिसम्बर को बड़े धूमधाम से गोस्सनर साहब का जन्म दिवस मनाया गया। सबेरे श्तीगलीत्स साहब ने आराधना में "जकई" के बर्णन के बचन से उपदेश दिया और गोस्सनर साहब की जीवनी से उसके विश्वास एवं काम की झांकी दी।

Gossner Mission

गोस्सनर हाई स्कूल ने पहली बेला अपने यहाँ एक रोचक कार्य-क्रम रखा था। दूसरी बेला एक रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण कार्य-क्रम गोस्सनर मिडिल स्कूल के मैदान में रखा गया था। रांची के सभी संस्थाओं को मनोरंजन के कार्य-क्रम देने का कार्य-क्रम था, संस्थाओं ने अपने ढंग से विषय दिया, नाच, गान एवं अन्य मनबहलाव के कार्य क्रम थे। मुख्य अतिथि डा. फॉन श्तीगलीत्स ने भी अपने संक्षिप्त, पर शिक्षापूर्ण भाषण से सब का मन आनन्दित किया।

इस वर्ष रांची में जन्म-पर्वोत्सव से आनन्द में कुछ उदासीनता और शंका की लहर दीखने सी लगी थी। लोग इस अफवाह के शिकार थे, कि इस बार कलीसिया की बिगड़ी परिस्थिति के कारण रंग में कुछ भंग होगा। बहुतों के लिये प्रश्न था "क्या पुण्य रात को गिर्जा होगी?" पुण्य रात की गिर्जा आनन्द और हृदयोल्लास से बीती, उसी प्रकार २५ वीं दिसम्बर की आराधना भी ठीक ही गुजरी। यों तो केन्द्रीय संस्था और सुदूर मिशन क्षेत्रों के कर्मचारियों को काफी तकलीफ हुई, क्योंकि कुछ "कानूनियों" ने बैंक में रोक टोक कर रूपया निकालने के लिये अड़चने डाल दी, इससे उन "कानून धुरंधरों" को और न ही कलीसिया को ही कोई लाभ हुआ, उन हजारों के लिये पर्व के दिन ही तैयारी में आर्थिक कठिनाईयां हो गयीं जिन्हें बैंक ठप करने से नोवेम्बर-दिसम्बर १९७३ का तनख्वाह नहीं मिला। अभी भी वही परिस्थिति है; बैंक में अड़चन डाल कर रूपैया न निकालने देने की खुशियां मना रहे हैं; पर जिन हजारों लोगों को रूपैया न मिलने से तकलीफें हो रही हैं उसकी थोड़े ही लोग सोचने चाहते हैं।

रांची-बर्लिन: गोस्सनर मिशन बर्लिन ने खबर दी, कि पूर्वी बर्लिन के अतिथि जो गोस्सनर-दिवस महोत्सव के उपलक्ष में आने वाले हैं वे देर कर आयेंगे, पर अभी समाचार है कि उन्हें भारतीय प्रवेश-पत्र मिलने में विलम्ब है, अत: वे और ही देर कर आयेंगे। अत: उनके साथ जो कार्य-क्रम बने हैं अभी स्थगित व रद्द किये जा रहे हैं। उनके आने पर ही फिर कार्य-क्रम बनाया जायगा।

गोविंदपुर-रांची : दिसम्बर माह १९७३ में गोस्सनर बैवल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र के अन्तिम वर्षीय प्रशिक्षणार्थियों/थिनियों का दीक्षान्त समारोह गोविन्दपुर में हुआ। प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले छात्र-छात्राओं के स्थान फिर लिये जाने की फैसला है, पर कलीसिया के केन्द्रीय खजानों के बैंक में रोकटोक किये जाने से अनिश्चयताएं आ गयी हैं पर ऐसा दीख रहा है, कि यह समस्या शीघ्र ही समाप्त हो जायगी।

रांची : कलीसिया की वर्त्तमान बिगड़ी परिस्थिति अनेकों को दुविधा एवं अनिश्चयता में डाल दी है, अनेक जगहों में परिस्थिति को सुधारने के लिये कोशिश है, पर कुछ धर्म तथा कलीसिया विरोधी तत्व भी कार्यरत हैं कि कलीसिया की परिस्थिति और बिगड़ती जाय और उनकी स्वर्थता में कोई धका न लगे। बिगड़ती परिस्थिति से कितने ही लोग बेजा फायदा उठाने चाह रहे हैं और इसी लिये परिस्थिति को और भी बिगाड़ने चाहते हैं। अत: ऐसे संगठनों या दलों से अलग रहना ही कलीसिया के लिये हित कर है। रांची की महिला समिति ने कलीसिया की स्थिति में सुधार के लिये प्रार्थना- अभियान चलाया है, उत्तम होगा कि गोस्सनर कलीसिया के मसीही भाई-बहन ऐसे प्रार्थना अभियान में योग-दान देते हुए पुरी गोस्सनर कलीसिया की बढ़ती एवं मजबूती के लिये प्रार्थना जारी रखे।

समाचार देश-विदेश

जोहानेस वुर्ग : डा. बेयर्स नाउडे क्रिश्चियन इन्स्टीच्यूट के निर्देशक को दोषी ठहराकर ७२ डोलर (लगभग ५४० रु.) का जूर्माना या एक महीने का जेल की सजा दी गयी क्योंकि उन्होंने श्लेबुश कमीशन के आगे कैफियत देने से इनकार किया। उनके दो अन्य संगी कर्मचारियों पर भी यही दोषारोपण है कि वे साम्यवादी तत्व के प्रचारक हैं। श्रीमती इलोना क्लाइन श्मीत ने तो जूर्माना के बदले जेल जाना ही पसंद किया। जब वह स्वेच्छा से

Gossner Mission

जेल के द्वार पर आयी तो कहा गया कि किसी अनजान श्वेत ने उनका जूर्माना अदा कर दिया है। सरकार की ऐसी दमन नीति से पूरे लुथरन जगत में हलचल मच गई है और दोषारोपण एवं सजा का रद्द करने की मांग पेश की है।

जकार्त्ता : इन्डोनेशिया इन्स्टीच्युट ने एक २८ पन्ने का दस्तावेज तैयार किया है जिसमें राष्ट्रीय एकता विषयक तथ्य पेश किये गये हैं, कि इन्डोनेशिया में किस प्रकार राष्ट्रीय एकता विभिन्न स्वदेशीय एवं अस्वदेशीय लोगों के बीच सम्भव है। यह राष्ट्रीय मसीही संघ के बजरिये प्राप्य भी है।

सन्त लुइस : (यू. एस. ए·) मिसुरी लुथरनों के बीच डा· तीत्जेन पर सिनोड ने जो कारवाई की है, वह अब भी विभिन्न प्रकार के उलझनों में है। अब सेमनरी के प्रबन्धक सभा भी इस मामले में उलझ गयी है। कुशिक्षा की विरोधता में विभिन्न कदम लिये जा रहे हैं। अतिथि शिक्षकों के समय में भी रोक लग रहा है।

आरुशा (तानजानिया) : तानजानिया की कलीसियाओं ने यह संकल्प किया है कि धर्म-शिक्षा को मद्दे नजर रखते हुए आध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिये उच्चतर-प्रशिक्षण की मांग की है अतः बी. डी· स्तर तक उठाने का विचार किया है इसके आर्थिक उपाय में विशेष कर स्वदेशी साधन अपनाये जायेंगे।

अश्मारा (इथिओपिया)/ जेनेवा : विभिन्न कलीसियाओं की सम्मिलित प्रयास से इथिओपिया में शिक्षा प्रगति पर है। "सुसमाचार की ध्वनि" नामक अभियान से लगभग ३५०००० व्यक्तियों को शिक्षा ग्रहण करने के लिये जागृत किया गया है। इस अभियान में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक तक शिक्षा पहुंचाने का बीड़ा उठाया है। इसमें अदीसअबीबा का रेडियो प्रोग्राम ने भी अपना अच्छा पाठ अदा किया है।

न्युयोर्क : नामिबिया (दक्षिण पश्चिम अफ्रीका) के महिला संगठन ने यू· एन· ओ. के सुरक्षा परिषद की ओर आवाज उठायी है कि : "हमारी आवाज सुनें, क्योंकि आप हमारे मुसा हैं।" महिलाओं की ओर से श्रीमती साजमेना ने इस आशय का पत्र यू एन· ओ· के आदरनीय सदस्यों" के नाम लिखा है। खत में नामिबिया की दुःखद परिस्थिति की ओर सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया है, खत में मानो देश का नग्न चित्र ही उतार डाला।

जेनेवा : चीली देश के लूथरन विशप हेलमुट फ्रेन्स ने पश्चमी यूरोप के देशों से अपील की है, कि वे चीली में आये शरणार्थियों को अपने देश में जगह देवें।

हेलजींकी : फोनलैंड के लुथरन कलीसिया ने अपने यहां चीली के शरणार्थियों को जगह देने के लिये तैयार है। यह उपरोक्त विशप फ्रेन्स को अपील का सही प्रत्युत्तर है। (एल· डब्ल्यु· एफ. इनफोर्मेशन के सौजन्य से : डा· सिंह)।

नागपुर : कासा ने अपनी साहाय्य नीति द्वारा राजस्थान एवं पंजाब के बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में लोगों को विभिन्न रूप में सहायता की खाने पीने की बस्तुओं के अतिरिक्त कपड़े एवं दवा आदि का भी प्रबन्ध किया और विशेषकर पुनर्निवास का इन्तजाम किया।

मद्रास : १९७१ की जनगणना दर्शाती है कि देश में ७० प्रतिशत लोग निरक्षर हैं, जौभी मसीहियों के बीच साक्षरों की संख्या अधिक लगती है फिर भी प्रकाशन गृह एवं पुस्तकालयों से पता चलता है कि लोग पुस्तक पढ़ने की ओर कम ही अभिरूचि रखते हैं; अतः मद्रास के "मसीही साहित्य संस्था" (सी. एल. एस·) ने यह अभियान चलाया है कि मंडलियों में अध्ययन कार्य रहे और मंडली इसको कर्त्तव्य समझे।

कालीम्पोंग : स्कोटिश मिशनरियों द्वारा स्थापित कालीम्पोंग का कोढ़ी अस्पताल १ला अगस्त १९७३ को बाकायदे सरकार को दे दिया गया। आर्थिक कठिनाइयों के कारण अस्पताल घाटा में था, सरकार भी उचित अनुदान नहीं देने पायी अतः यह विवशता में किया गया।

कालीकट /त्रिवेन्द्रम : रोमन कैथोलिक कलीसिया ने अढ़ाई लाख रुपये के लागत का आवास पचास गरीबों के लिये निर्माण किया है। एक प्राथमिक विद्यालय भी इस नव आवास क्षेत्र में है, यह कालीकट के लिये विशेषता रखता है कि प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मकानों

Gossner Mission

की कुंजियां अपने हाथों वितरण कीं। श्रीमती गांधी ने कहा कि वह इतनी दूर इसी लिये आयीं क्योंकि वह कलीसिया के ऐसे कामों के लिये अभिरुचि रखती है। आशा की जाती है ऐसे शुभ कार्य आगे भी किये जायेंगे।

चण्डीगढ़ : रेभ· डा. गुरुबचन सिंह, जो बहुत दिनों से मसीही आवाज के सम्पादक थे चान्दीगढ़ डिओसीज के विशप चुन लिये गये हैं। यह सी. एन· आई. का डिओसीज है, ईश्वर उनके इस नये पद से लोगों की सेवा और अपनी महिमा होने देवे। (एन· सी· सी. रिभिऊ के सौजन्य से)।

●

—:)(:—

शोक समाचार

बोंगराम पेरिस के शिवनाथपुर मंण्डलो से हेड पंच श्री हरून किड़ो को ईश्वर पिता ने ता: २५-१०-७३ ई० दिन के ३बजे झड़ा बिमारी से मृत्यु द्वारा सनातन बिश्राम में अपने पास बुला लिया। ४५ बर्ष की उम्र में।

हरून किड़ो शिवनाथपुर मंडली निवासी पाद्री जे· किड़ो टकरमा के नीज भाई थे। जो मंडली में हेड पंच और पेरिस मेम्बर थे। जो मंडली चलाने और अगुवाई करने में काफी जोसीले थे। गिरजा बिन्ती तथा धार्मिक कार्यों में आगे पाये जाते थे और अपने परिवार को भी आगे ही रखने का प्रयास करते थे। वे इस इलाका के खड़िया सभा के भी उप सभा पति थे। इन्होंने सामाजिक क्षेत्र में भी अच्छा कार्य किये है। अपने ग्राम पंचायत के भी मेम्बर हो कर गांव की अच्छाई के लिये सोचते थे। सभी क्षेत्रों में इन्होंने आदर्श दिया, ये इमानदार, सरल स्वभाव तथा विश्वस्त जन थे।

२४ ओक्टोबर रात से झाड़ा और हुलकी होना शुरू हुआ कुछ ही देर में मुह बन्द हो गया। गांव एंव परिवार वालों ने बहुत दौड़– धुप किया पर कुछ नहीं बना २५ ओक्टोबर ३ बजे वे प्रभु में सो गये। वे अपने पीछे धर्म पत्नि और पांच पुत्रियों को छोड़ गये। मृतक देह २६ ओक्टोबर ३ बजे शिवनाथपुर कब्र में प्रचारक तिमोथीयस डुंग डुग के द्वारा पुनरूथान के आशा के साथ मीटी दिया गया।

पाठकों से अनुरोध है कि शोकित परिवार एंव मंडली के लिये प्रार्थना करें।

प्रचारक तिमोथीयस डुंग डुंग
शिवनाथपुर मंडली
२-११-७३

सूचना

गोस्सनर थिओलोजिकल कॉलेज में १९७४ साल में विद्यार्थी लिये जावेंगे। प्रवेश परीक्षा अप्रील माह में होगी। इस विषय की जानकारी के निमित्त प्राचार्य महोदय से लिखा पढ़ी करें।

मार्टिन टेटे
प्राचार्य
गोसनर थिओलोजिकल कॉलेज
रांची, बिहार

Gossner Mission

गोस्सनर कलीसिया की सोचनीय आर्थिक दशा।

श्री टी॰ जे॰ बरला, हटिया

इस विषय पर अब तक एक ही महानुभव ने अपना विचार व्यक्त किया है। यों इस विषय को कई दिनों पहले ही सलाना बजट के रूप में दर्शाया गया है कि यह कलीसिया आर्थिक दृष्टिकोण से किस ओर बढ़ रही है। सभों ने उक्त बजेट को अवश्य ही देखा, पर हल्की तौर से, इसलिये उसके समाधान के निमित्त अन्य कोई सुझाव नहीं पेश किये गये हैं। इस से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कलीशिया के इस सोचनीय ही नहीं पर दयनीय दशा के लिये किसी के मन में किसी तरह का जलन पैदा नहीं हो पाया। शायद वे इसी पर सन्तोष करते है कि "ईश्वर जो कुछ करता है भला ही के लिये करता है।" पर यह उनकी भारी भूल है। यह उसी तरह है जैसे किसी को पचास या सौ एकड़ जमीन दे दी जाय, पर वह उस पर यथोचित मिहनत न करके फल प्राप्ति के लिये सिर्फ ईश्वर पर आधारित हो। यह देखा जाता है कि घाटा दिन प्रति दिन बढ़ते हुए करीब एक लाख तक पहुँच गया है। उन महानुभव का कहना शत प्रतिशत सही है कि इस घाटा को पूरा करना कठिन ही नहीं पर असम्भव ही गया है। अतः समाधान का कोई उपाय निकालना ही है। यदि उनके सुझाव में कठिनाई हो तो नीचे दिया हुआ सुझाव के कार्य्यान्वित करने से भी हल हो सकता है। वह इस तरह है:-

कलीसिया के हाथ पूरे क्षेत्र में अब तक भी बहुत ही जायदाद है। अतः उनको बेच दिया जावे। (हम मत्ती १६:२६ को याद करें)। ऐसा करने से करोड़ों रूपैया सिर्फ राँची ही से मिल सकते हैं जब कि राँची में जमीन का दाम हजारों रूपैया प्रति कठा है। अगर इसमें किसी तरह की हिचकिचाहट हो कि मण्डली या कलीसिया के भाई-बहनों से इसका विरोध होगा तो दूसरा सहज उपाय भी है जिसमें किसी को गन्ध भी नहीं मिल पायगा और वह है पूरे जमीन को ही "लीज" में दे दिया जाय जैसा राँची, चक्रधरपुर, चाईबासा आदि के कुछ भाग को दिया जा चुका है। वे सज्जन धन्यबाद के पात्र हैं जिन्होंने इस शुभ कार्य्य का शुभारम्भ भी कर दिया है। सिर्फ उपासनालय लीज पर न दिया जावे या दिये जाने पर भाड़ा देकर उपासना के लिये काम आवे। या उसको पैसा कमाने के योग्य किया जा सकता है याने उस चलचित्र दिखाने के घर में परिवर्तित किया जावे अथवा नाट्यशाला बना दिया जाय। जिस दिन उपासना होगी कोई पुरोहित उसकी शुद्धि कर देवे तदुपरान्त उपासना के काम आवे। उसी तरह मिशन क्षेत्र में जहाँ कहीं भी जायदाद हो; कर दिया जावे तो कलीसिया की आर्थिक दशा चमक उठेगी। कलीसिया में फिलहाल जितनी भी समस्याएँ चल रही हैं वे सरकार के सुपुर्द कर दी जाँय तो उनका भी बला टल जाय। इनसे दूसरा फायदा यह भी होगा कि भविष्य में फिर कभी कलीसिया विभाजित नहीं होगी। कुछ दिनों पहले गोस्सनर कलीशिया में "जोन" और "प्रदेश" आदि होने के कारणों में कलीसिया की जायदाद होना भी एक है। अतः न रहेगी बाँस न बजेगी बाँसुली। मसीह यीशु ने भी अपने शिष्यों को यह आज्ञा दिया था कि मार्ग के लिये कुछ न लेना। ऐसी परिस्थिति आने पर आपसी प्रेम भी बढ़ जायगा क्योंकि सब एक ही स्तर में रहेंगे इसलिये कोई किसी को काट खाने की भी कोशिश नहीं करेगा। कोई जैसा अपने देखता है, वैसा ही दूसरे को देखेगा। सराँश यह कि हर कोई धर्म्म शास्त्र के अनुसार अक्षरशः अपने जीवन को बना सकता है। इस तरह जो आशीष परमेश्वर के डरवैयों के लिये रखी गयी है हर एक पायगा तथा कलीसिया लह लहा उठेगी। कलीसिया की आर्थिक दशा में सुधार आने से आत्मिक दशा भी सुधर जायगी क्योंकि कहा गया है—धनः धर्मो ततः सुखम।

Gossner Mission

जी· ई· एल· चर्च चक्रधरपुर में,

"नव निर्मित गिर्जा घर"

(श्री गुस्ताब् लुगुन, "मंडली प्रेसीडेन्ट)"



चक्रधरपुर पेरिश की स्थापना करीब १८९४ ई· में हुई, पर खेद की बात है कि पेरिश के हेड-क्वाटर में कोई गिर्जा घर नहीं था।

बहुत दिनों तक पादरी बंगला के पश्चिम भाग में गिर्जा-आराधना होती थी। इसके बाद होस्टेल को गिर्जा घर बनाया गया जिसमें आज तक गिर्जा चल रहा है पर अब आनन्द का विषय है कि २९-११-१९५३ ई· में रेभ· दोरेफा हेमरोम के समय जिस गिर्जा घर का ने उस समय के जोइन्ट मिशन बोर्ड के सेक्रेटेरी-खजाँची पास्टर हेलमुथ बरुता के हाथों द्वारा ईश्वर आराधना के संग त्रिएक परमेश्वर के नाम पर डाला गया था उस समय की परि-स्थिति एवं रकम की कमी के कारण निर्माण कार्य बन्द कर देना पड़ा।

ईश्वर की असीम कृपा से चक्रधरपुर मंडली के भाई-बहनों ने उसी नेव पर गिर्जा घर बनाने का निश्चय किया एवं इस काम के लिये पूरी पेरिश भी सहर्ष तैयार हो गई।

ता: १-१-७२ को नये साल के गिर्जा आराधना के तुरन्त बाद रेभ· जीवन डुंगडुंग की अगुवाई में ईश्वर आराधना के संग फिर से उसी नेव को खोदने का कार्य आरम्भ हुआ।

ता: ८-३-७२ बुधवार को साढ़े चार फीट गहरे नेव पर रेभ. इतमोन गुड़िया जे· एम. बी· सुपरवाइजर चाईबासा के द्वारा "मास कंक्रीट" का काम ईश्वर आराधना के संग आरम्भ हुआ। स्थानीय भाई-बहनों या नन्हें मुन्नों का उत्साह एवं श्रमदान सराहनीय है। रोमन कथोलिक कलीशा का सहयोग भी स्मरणीय है। इलाका तथा अंचल ने भी शक्ति भर अपना योगदान दिया है। इस प्रकार काम धीरे-धीरे बढ़ता ही गया, किन्तु तेरह १३ फीट दिवाल के उठ जाने के पश्चात् रकम की कमी के कारण काम रोक देना पड़ा, चूँकि ऊपर छत के लिये भारी रकम की आवश्यकता थी और कहीं से रकम प्रबन्ध करने का कुछ उपाय नहीं सूझ पड़ा।

Gossner Mission

ऐसी अवस्था में चक्रधरपुर मंडली तथा पेरिश एक हो करके बुनियाद डालने वाले पास्टर बरुता "जर्मनी" के पास पत्र लिखने का निश्चय किये एवं पत्र भेज दिया गया। पत्र पाते साथ पास्टर बरुता, चक्रधरपुर नये गिर्जा घर लिये कठिन प्रयास से रकम का प्रबन्ध किये तथा "क्यूरोटोरियम" के मध्य से भारी रकम की मंजूरी कराये, जिसके बदौलत, सोलह माह के पश्चात् ता: २२· ११. ७३ को दक्षिण पूर्व अचंल के अध्यक्ष रेभ· निकोदिम भुईयाँ के कर-कमलों द्वारा ईश्वर आराधना के पश्चात् तेरह फीट ऊँची दिवाल पर पुन: कार्यारम्भ हुआ एवं १-१२-७२ को माननीय सामुएल होरो जिला वाणिज्य अधीक्षक चाईबासा द्वारा ईश्वर आराधना के साथ बेदी-छत की ढलाई का कार्य सम्पन्न हुआ।

ईश्वर को धन्यवाद होवे कि उस अधूरे गिर्जा घर का निर्माण कार्य आज पूर्ण हो गया है और जिसका पवित्र संस्कार को तिथि भी २४-२-१९७४ को पास्टर हेलमुथ बरुता "जर्मनी" के हाथों द्वारा करना निश्चित हो गया है। इस तरह, स्वर्गीय पी. डी· कन्डुलना, जो उस समय प्रोपार्टी बोर्ड के सेक्रेटेरी एवं मेनेजर थे, और जिन्होंने इस गिर्जा घर का प्रारूप दिया उसी प्रारूप को श्री· "गोवर्धन बेलजी" ने जो चक्रधरपुर में गृह निर्माण कला के महान् अनुभावी हैं, अपना बहुमूल्य समय देकर सही रूप दिया है।

ईश्वर करे कि इस गिर्जा घर के द्वारा इर्द-गिर्द के अंधकार में वास करने हरों में भी सच्ची ज्योति का प्रकाश चमकने पावे, अत: घरबन्धु के पाठकों से अनुरोध है कि इस शुभ दिन में ईश्वर के ऐसे पवित्र एवं भले काम में सहायता के निमित ईश्वर को धन्यवाद देना तथा प्रार्थना करना न भूलें।

आवश्यक सूचना

अपने स्तीफा एवं के० एस० एस० समिति (२७–३० ओक्टोबर १९७३) के आधार रेभ० जे० तोपनो ६-११-१९७३ से प्रमुख अध्यक्ष नहीं हैं, फिर भी इस पत्रिका के सम्पादक एवं प्रकाशक में उन्हीं का नाम है। उन्होंने जैसे कुछेक और कार्यभार नहीं दिया है, इस सम्बन्धी भार भी लिखित रूप में कार्यवाहक प्रमुख को नहीं दिया है अत: व्यावहारिक कठिनाई के कारण ही नाम बदलने के लिये उचित कदम नहीं उठाया जा सका है। यहां कानूनन या गैर कानूनन की बात नहीं है; आवश्यक है कि रेभ० तोपनो लिखित देवें कि वे प्रमुख न रहने से घरबन्धु के सम्पादक और प्रकाशक नहीं हैं। एसोसीएट एडीटर के द्वारा ही पूर्ववत् घरबन्धु सम्बन्धी सभी कार्य सम्भाले जा रहे हैं।

एसोसीएट एडीटर, घरबन्धु

Gossner Mission

ठोकर

"ठोकरों के कारण संसार पर हाय ! ठोकरों का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है।" मत्ती १८:७

"भैया··· !"

"क्या ?"

"बताओ न, दसवीं आज्ञा कैसी है ?"

"मैं क्या जानूं, जाओ मां से पूछ लो।" बोखला कर मैंने कहा, क्योंकि मैं स्कूल की किताबों के अध्ययन में लीन था और शान्ति थी कि तंग किये जा रही थी। एक से अनोखे प्रश्न पूछ रही थी। लैम्प के उजाले में मैंने उसे देखा, मेरे उत्तर से वह सहम गई। उसी समय रसोई घर से मां ने पुकारा— "बेटा मनोहर ! तुम ही बता दो शांति को। तुम ही तो बड़े हो, नहीं बताओगे तो फिर कहां से सिख पायेगी ?"

पांच साल की छोटी-सी शान्ति मां को सुनकर मचल पड़ी। इसके पूर्व कि वह रसोई की ओर भाग खड़ी होती मैंने लपक कर उसे पकड़ लिया। उसकी नन्हीं बाहों को अपने हाथ में लेकर उसे गोद पर ला बैठाया और बड़े प्यार से पूछा, "हां, तो बताओ क्या पूछ रही थी ?"

"कुछ भी तो नहीं, पूछती हूं तो बिगड़ते हो।" वह रूठने का अभिनय कर रही थी। मैंने मनाते हुए कहा, "लेकिन अब वैसे नहीं कहूंगा। बताओ तो सही, आज सन्डे-स्कूल में क्या-क्या सीखा ?"

"मुझसे दसवीं आज्ञा पूछी गयी।"

"तो तुमने क्या कहा ?"

'नहीं कह सकी, क्योंकि कुछ भी मालूम नहीं था।" कहकर शान्ति ने अपना माथा टेबल के किनारे से टिका लिया। उसके कटे हुए छोटे-छोटे बालों पर हाथ फेरते हुए "मैंने फिर पूछा, "क्या, आज तक किसी ने नहीं बताया कि दसवीं आज्ञा क्या है ? "तनिक सोचकर शांति ने कहा, "नहीं।"

कुर्सी पर बैठे हुए मैं सोचने लगा— कितनी भोली है, शान्ति ! उम्र ही उसकी कितनी है कि ऐसी बातें उसकी समझ में आयें। आये दिन उसके खेलने-खाने और मौज ही के तो हैं। जब बड़ी होगी तो स्वयं सब कुछ जान लेगी। मैं भी तो कभी शांति ही की तरह छोटा, अबोध और नासमझ था। बड़ा होकर जब पढ़-लिख गया, सब अपने आप आ गया। सबसे बड़ी चीज शिक्षा है, जिसके द्वारा मनुष्य सब तरह की उन्नति कर सकता है।

किन्तु, दूसरे ही क्षण विचार बदल गये। जब मैं छोटा था तो घर पर मैं अकेला था। कोई होता तो पूछता। मां अकेली घर के कार्यों में व्यस्त रहती थी। आज से बारह साल पहले की वह घटना मेरे मस्तिष्क पर उभर आयी जब मैं केवल चार ही वर्षों का था। न जाने क्यों एक दिन मेरी मां से बिगड़ कर पिता जी घर से कहीं बाहर निकल पड़े। रात्रि का समय था जब वे निकले थे। सुबह हुई फिर शाम ढली, यूं ही महीने बीतने लगे, पर कहां वे घर आते। वे तो भारतीय-सेना में भर्ती हो चुके थे।

उफ ! उन्हें जरा भी मेरी परवाह नहीं हुई। मुझे याद है, मां कितनी रोयी थी ! कितनों ने मां को भला-बुरा कहा। दो महीने बाद मेरठ से पिताजी की चिट्ठी आयी। पढ़कर मां को सांत्वना हुई। ईश्वर को याद करके मां ने ही धीरज से घर का काम सम्हाला। तब से आज तक खेती-बारी का काम भी नौकरों द्वारा बढ़िया ढंग से होता आ रहा है। समय पर हम दोनों भाई-बहन के पढ़ाई के लिए पिता जी की ओर से रुपये पहुंच जाते हैं। प्रतिवर्ष अक्सर बड़े दिन की छुट्टी में वे घर आ ही रहते हैं।

आज घर पिता जी की कमी में भी काफी खुशहाल है। शांति को कभी भी पिता की कमी नहीं महसूस करने देता हूं। एक मैं ही हूं जो शिक्षा के जो भी मार्ग शांति को दर्शा सकता हूं। उसकी हर प्रकार की उन्नति

Gossner Mission

का जिम्मेदार मैं हूं, क्योंकि मैं ही तो उसका एकमात्र बड़ा भाई हूं। हां, सचमुच ही दस आज्ञाओं को भी बता देना जरूरी है। आज तो वह सिर्फ दसवीं आज्ञा ही पूछ रही है। मैंने बताने का फैसला करते हुए कहा, "बोलो मेरे पीछे-पीछे ..... दसवीं आज्ञा ..... अपने पड़ोसी के घर और उसके परिवार का लालच मत कर।"

शांति की तीव्र बुद्धि का मैं कायल होकर रह गया। उसके नन्हें-से मस्तिष्क ने मेरे एक ही बार के बताये को कंठाग्र कर लिया। मैंने पूछा —

"अब आ गया।"

"हां, भैया ! अब कभी नहीं भूल सकती।"

"अच्छा, बताओ तो कि पड़ोसी किसे कहोगी !"

"मुकुट, फुलमनी और... आशा जो हमारे घर के नजदीक रहते हैं। ठीक है न भैया ! कि वे हमारे पड़ोसी हैं ?" और शान्ति हंसने लगी।

"हां, बिल्कुल ठीक। अब जाओ भी मां के पास। बड़ी होकर फिर जानोगी कि दुनिया के सभी लोग हमारे पड़ोसी हैं।"

शान्ति चली गई। अब तक खाना भी तैयार हो चुका था। खाने के पहले छोटी सी पारिवारिक प्रार्थना जो प्रतिरात हमारे घर में होती है की गयी।

खाने के बाद जब दुनिया सो जाने की तैयारी करती, मैं नियमानुसार पढ़ने के लिए फिर से बैठता हूं। हररात करीब बारह बजे सोने की आदत है। अकेला कमरा है, दरवाजा बन्द करके आज भी पढ़ रहा था। कुछ देर बाद दरवाजे के उस पार पांवों की आहट-सी सुनाई पड़ी। शायद कोई आया हुआ था। मैंने अन्दाज लगाया—इस समय रात को, शलीम के सिवाय और कौन हो सकता है ! दरवाजे के पास आकर मैं चुपचाप खड़ा हो गया। बाहर से धीमी-सी आवाज आयी—"यार, मनोहर ! खोलो तो दरवाजा।" आवाज मैंने पहचान ली। सचमुच, मेरा अनुमान सही निकला। दरवाजा खोलकर मैंने कहा, शलीम तुम, और इतनी रात को !"

हां अगर मेरा आना तुम्हें बुरा लगा, तो लौट सकता हूं," कहकर वह लौटने लगा।

मैंने उसका पीछा किया और पूछा, "नाराज होने की क्या बात है ? बोलो की काम से आना हुआ...।"

"लेकिन तुम तो पढ़ रहे हो, साथ क्या दोगे ? बुरा न मानो तो एक बात कहूं... क्या ऐसा संभव नहीं कि आज की यह स्टडी टाल दो... !"

"अरे तो साफ-साफ कहो न ! क्या कोई सुन लेगा ! सब तो सो चुके।"

'शालीपुर में आज ड्रामा है। चलो, तुम्हें ही लेने आया था"

सुनकर मैं असमंजस में पड़ गया। सोचने लगा जाऊं भी या इन्कार कर दूं। परीक्षा ..... परीक्षा की तैयारी के लिए तो काफी समय है। आखिर दोस्त के प्रस्ताव को ठुकराने का मनोबल मुझमें न हुआ। बिना आना-कानी किये मैं चलने को तैयार हुआ। कमरे में आकर मैंने अपना टार्च लिया और दरवाजा बन्द करके निकल पड़ा। सर्दी कोई विशेष नहीं थी इसलिए साधारण पहिरावे के अलावा कुछ भी नहीं लिया। अब अंधेरी-रात में हम दोनों जाने लगे। टॉर्च के जलते-बुझते प्रकाश में चलते, उस कच्ची सड़क पर आ गये जहां से हम शालीपुर आते-जाते हैं। शालीपुर हमारे गांव प्रतापपुर से करीब डेढ़ मील के फासले पर है।

गप्पे लड़ाते हम आगे चले ही जा रहे थे कि थोड़ी ही देर में हमारी मुलाकात अपने ही गांव के तीन दोस्तों से हुई। टॉर्च के उजाले में मैंने उन्हें पहचाना—राजू, अजय और बिरजु थे जो सब के सब गैरमसीही थे। उत्सकता से मैंने पूछा,"लौट क्यों रहे हो भाई ?"

राजू ने जो उनमें बड़ा था, कहा, "जाओ, तुम दोनों, हमें तो देखते-सुनते नींद सताने लगी। अब लौट रहे हैं।"

"क्यों, आज का यह ड्रामा कैसा रहा ?" शलीम ने तब कहा, "सुनकर ही जाना चाहिये।"

राजू ने तब और कहा, "बस मत पूछो ! इतना बढ़िया नाटक ! देखोगे तो दिल मचल जायेगा...!"

अब हम आगे बढ़ने ही वाले थे कि राजू हंसने लगा और अजय जो उन सबमें सीधा-साधा था बोला, "बेकार

Gossner Mission

का वहां जाना है, देखकर तो हम आ रहे हैं। लौट चलो, वहां कुछ भी नहीं हो रहा है।"

"क्या, सचमुच!" मैंने आश्चर्य से पूछा। "हां, एकदम सोलह आने सच! राजू ने जो कहा सब झूठ है।" अजय की बातों पर विश्वास करने हम भी हारे हुए खिलाड़ी के समान उनके साथ लौटने लगे। पांव उठाना दुश्वार लग रहा था, मगर क्या करें? दोस्ती ऐसी चीज है जिसे निभानी ही पड़ती है। मैं सोचता आ रहा था—कितना अच्छा होता, यदि घर पर ही होता...सो गया होता या पढ़ता रहता। पढ़ने की बात तो खैर! मैट्रिक सेन्ट-अप् हुये कुछ ही दिन तो हुये हैं। बोर्ड परीक्षा के लिये अभी पांच महीनों से भी अधिक समय है। तैयारी के लिए इतना काफी है।

एकाएक मेरा दहिना पांव रास्ते के एक पत्थर से ठोकर खा गया! तिलमिला कर दो कदम आगे बढ़ा और लँगड़ाने लगा। क्रोध में आ कर मैंने उस पत्थर को उखाड़ कर फेंक दिया। खुदा जानें, यदि इस मरदूद के भी प्राण होते तो कौन सी दुर्गति कर डालता? बड़े अंगूठे से रक्त निकल रहा था। इतनी अभ्यस्त राह पर ठोकर खाना असावधानी या तो चलने नहीं जानने का प्रतीक है।

चलते-चलते हम अपने गांव में पहुंच गये। इक्के-दुक्के घर पार होने लगे। अचानक कुछ दूर अंधेरे में कोई चीज भागती मालूम हुई। एक विचित्र-सी आवाज सुनाई पड़ी—

"फड़, फड़... फड़ फाड़फड़..."

उसी ओर मैंने टार्च की रोशनी फेंकी। दूर पर दो जलते-से अंगारे दिखाई दिये। मामला मेरी समझ में आयी-वनबिलाव किसी की मुर्गी लिये जा रहा था। एक बार तब शलीम ने शोर मचायी— "वनबिलाव...।" किन्तु; अंधेरे में आवाज गुंज कर रह गयी।

जिस ओर वनबिलाव भाग रहा था, मैं उसी ओर दौड़ पड़ा। कुछ दूर दौड़ने के पश्चात एक मृत मुर्गी पाने में सफल हुआ जिसका सिर खून में सना हुआ था। बिजेता की भांति दोस्तों के पास आकर मुर्गी को मैंने यूं प्रस्तुत किया मानो कोई भारी लड़ाई लड़कर आ रहा हूं। देखकर राजू ने कहा, "वकई! काफी बड़ा मुर्गी है।"

हम सबने फैसला कर लिया कि किसी को बताये बिना इसे रात-भर में समाप्त कर देना चाहिये। गांव के समीप के स्कूल घर पर तब हमने आग जलायी। न जाने कहां से राजू ने एक कड़ाही उठा लाया। शलीम चाकू से मुर्गी को काटने लगा।

सहसा मुझे क्या सूझी और उठ खड़ा हुआ। दौड़ कर पड़ोस के एक घर पर चला। जब लौटा तो मेरे हाथों में एक और मुर्गा था। आकर तब मैंने कहा, "कितना अच्छा होता! अगर सबके हिस्से का एक-एक मुर्गी होता।"

"ठहरो, छोड़ो चिंता, बाकी तीन मुर्गों का मैं जिम्मेवार हूँ।" राजू ने आवेश में कहा और बिरजु और अजय को लेकर वह चला।

शलीम के साथ हमदोनों बच गये। हंसी आ रही थी इस खूबसूरत गुनाह के लिये, किन्तु अपना काम किये जा रहे थे। ऊपर अनंत शून्य पर मैंने निगाह उठायी—सर पर सितारों-भरा आकाश था। पूर्व दिशा से चन्द्रमा का दुकड़ा पेड़ों की ओट में छिपकर हमें घूर रहा था। मैंने सोचा लोगों की आंखों से भले ही छिप जायें, किन्तु ईश्वर से छिपकर भागना कठिन हो नहीं, वरन असम्भव है। दूसरों को उपदेश देना सहज है, किन्तु शैतान के माया-बंधनों को तोड़ना भी क्या इतना ही सहज है? मेरी आंखों के आगे शान्ति की भोली सूरत लहरा गयी, मानो पूछ रही हो—"बताओ, भैया! क्या दसवीं आज्ञा कुछ ऐसी ही है?"

मैं बिचारों के जाल में उलझता जा रहा था। खैर, जो कुछ भी होगा देखा जायेगा। मैंने अपना मन कठोर कर लिया। इतना सोचकर संतोष किया कि इतनी छोटी-मोटी गलतियां तो आये दिन होती रहती हैं।

कुछ देर बाद राजू का दल आया। सबके हाथ में एक-एक मुर्गा था। सबके पंख नोचे हुये-से थे। तेल, मशाला, नमक-मिर्च, सब आ गया था। रात काफी बीत चुकी थी। बातों ही बातों सारा-कुछ सम्पन्न होकर हम अपने घर चले।

Gossner Mission

घर आते ही बिस्तरे पर मैं निढाल हो गया। नींद से जब आंखें खुली तो देखा, सूरज काफी चढ़ चुका था। उठते ही मां ने मुझे बताया, "किस मनहूस ने रात तीन हमारे मुर्गों को चुरा लिया !"

सुनते ही मुझे लगा जैसे किसी ने नुकीली बर्छी मेरे सीने में उतार दी हो। कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था कि राते वाले तीन मुर्गे हमारे ही थे। राजू के काले-कारनामों पर अफसोस हो रहा था, लेकिन किसे कहूं ? श्रीगणेश भी तो मैंने ही किया था। अपने विवेक से बनाये रास्ते पर आखिर मैं ही ठोकर खा रहा था।

प्रेषक—मंगल सोय 'अनमोल'
जी. ई. एल. चर्च बोंगराम,
पी. ओ. बोंगराम, रांची।

मंगल सोय 'अनमोल'
बोंगराम

धन्यबाद, आप का चन्दा, (३१ दिसम्बर १९७३ तक) मिला

[Gharbandhu Subscriber List (Dec.73 Collections).]

1 Mr C'K. Khalkho
2 Shri Bisram Kujur
3 Rev. Obed Toppo for 10
4 Mr: A. Horo
5 Mrs. F.Barla
6 Mr. K. Kongari
7 Mr. P. Kongari
8 Cat. Johan Lakra
9 Mrs. P. Minz
10 Mrs, Martha Hemrom
11 Mr. L. M. Sandil
12 Mr. N. Toppo
13 Mr. Francis Kispota
14 Rev. N. Kullu
15 Mr. Julius Kongari
16 Mr. B. Lugun
17 Mr. Birson Ji
18 Hav. Prabhusahay Topno
19 Miss Babalen Kerketta
20 Cat. C. B. Barla
21 Mr, Paulus Purti for 3
22 Rev. Abraham Minz for 4
22 Mr. J. B. Areya for 2
24 Mr. M. Ekka for 17
25 Mr. Patras Kerketta.
26 Suleman Kindo
27 Mr. Junas Ekka
28 Shri Nirdosh Kujur
29 Hav. Jiwan Topno
30 Cat. Nirmal Beck
31 Mr. Paulus Surin for 20
32 Mr. C. H. Guria
33 Mr. Pritammasih Dang
34 Mr. Mansidh Kandulna for 4
35 Mr. Sharan Topno
36 „ A. Lugun
37 Cat Mansidh Bading
38 Mr. Jusaph Barla for 2
39 Sep. Abraham Kispota for 2
40 Mr. Anandmasih Topno
41 Cand Pius Topno
42 Rev. Shem Lakra for 12
43 Cate. Prabhusahay Kandir
44 Cand Namjan Kandulna
45 Mr. Johan Kerketta
46 Shri Daud Kandulna
47 Shri Johan Topno for 10 copies
48 Shri J. P. Ekka
49 Dr. Anandmasih Guria
50 Mr. Adam Kujur

Gossner Mission

यीशु ख्रिस्त जगत के आरम्भ से है

आसीम बेलस बड़ा
जी॰ टी. एच॰ कॉलेज, रांची

"आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।" यूहन्ना १:१

वचन का अर्थ है 'शब्द' जो नया संस्करण में स्पष्ट रूप से मिलता है 'शब्द' का यूनानी में लोगोस (logos) है। यही शब्द देहधारण किया यूहन्ना १:१४, अर्थात जो वचन देह धारण किया वह आप यीशु ख्रिस्त है। और यही यीशु ख्रिस्त स्वयं परमेश्वर है अर्थात परमेश्वर का पूर्ण प्रकाशन यीशु ख्रिस्त में है। क्योंकि प्रभु यीशु कहता है कि "मैं और पिता एक हैं" यू॰ १०:३०। इस प्रकार से यह निश्चयता मिलती है कि ख्रिस्त सृष्टि के आरम्भ ही से है। इसकी स्पष्टीकरण के लिये हम विभिन्न प्रकार से देख सकते हैं।

आदि में जब सृष्टि की रचना की गई इसमें 'शब्द' ही का विशेष स्थान है। सारी सृष्टि, सिवाय मनुष्य 'शब्द' के द्वारा ही सृजी गई। वह शब्द परमेश्वर था, अतः परमेश्वर, यीशु में प्रकाशन है। सृष्टि करने वाला शब्द "हो" उत्पत्ति १:३;६ है। इसी शब्द से सृष्टि की रचना हुई। यह हमें धर्मशास्त्र स्पष्ट बतलाता है। इस शब्द में सृष्टि करने की पूर्ण शक्ति रही। इसी शब्द या बचन को यूहन्ना प्रेरित ने अपनी पुस्तक में जिक्र करता है। वही शक्तिशाली शब्द या लॉगस देहधारण किया अर्थात वह लॉगस ख्रिस्त है यू॰ १:१;१४।

निर्गामन ३:१४ के अनुसार परमेश्वर का नाम "मैं जो हूँ सो हूँ" बतलाया जाता है। काई विद्वान निर्गा॰ ३:१२ के अनुसार परमेश्वर का नाम "मैं हूँ" बतलाते हैं। जो कुछ भी हो लेकिन दोनों का अर्थ या भाव एक ही है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान है अतः उसका नाम "मैं हूँ" यह संकेत करता है कि उसके सिवाय और कोई शक्तिशाली नहीं। ज्ञात होगा कि यही नाम "मैं हूँ" नये नियम में भी कई बार प्रयोग में आया है। विशेष कर यूहन्ना अपनी पुस्तक में स्पष्ट रूप से प्रकाश किया है। यह "मैं हूँ" यूहन्ना अपने लिए प्रयोग नहीं करता है परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने स्वंय अपने लिए कई बार स्वतः मुख से उच्चारण किया है यू॰ ७:३४,३६; ८:१६। यीशु अपने विषय अपने चेलों को बतलाता है कि "मैं वही हूँ" यू॰ १३:१३। लोग पूछते हैं कि तू कौन है? यीशु उत्तर में कहता "मैं वही हूँ जो आरम्भ से कहता आया हूँ" यू॰ ८:२५। इतना केवल नहीं परन्तु यीशु ख्रिस्त दृढ़ता के साथ कहता है कि "मैं तुम से सच सच कहता हूँ; कि पहले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ "मैं हूँ" यू॰ ८;५८। इस प्रकार से यीशु ख्रिस्त यह नाम अपने लिये प्रयोग में लाता है। अतः यीशु ख्रिस्त इब्राहीम के पहले अर्थात आदि से ही था। परन्तु अज्ञात रूप में अपने को प्रगट करता था। अब धीरे धीरे स्पष्ट रूप में अपने को प्रगट करने की ओर बढ़ता है।

यहुदी इस्राइलियों का यह विश्वास था कि 'निर्दोष मेम्ने' के खून से पाप क्षमा या छुटकारा प्राप्त होती है। मिश्र की दासत्व से छुटकारा पाने की घटना में मेम्ने के लोहू मुख्य स्थान रखते हैं निर्गा॰ १२:४-५। नये नियम में 'मेम्ना' शब्द ख्रिस्त के लिये प्रयोग किया जाता है, कि "देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" यू॰ १:२९-३६। और "यह वही है जो श्रेष्ट और पहला था" यू॰ १:३०। प्रका॰ वाक्य॰ ७:१०-१७ में "श्रेष्ठ मेम्ना" कहा गया है। अतः हमें यह निश्चयता मिलती है कि यीशु ख्रिस्त आरम्भ में मेम्ने के रूप में प्रगट था।

Gossner Mission

मिश्र की दासत्व से छुटकारा पाने के पश्चात इस्राएली यात्रा करते हैं। यात्रा के समय समुद्र में भी स्थल-मार्ग के रूप में ख्रिस्त प्रगट होता है निर्गा० १४:२७। क्योंकि ख्रिस्त आप ही 'जीवन का मार्ग' है यू १४:६। इस्राइलियों के उस यात्रा के बाद एक नया जीवन मिला अर्थात दूध और मधु टपकने वाली जगह (कनान) का आनन्द प्राप्त किया। जो ख्रिस्त पर विश्वास करता और उस मार्ग पर चलता है वह स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करता है। यही जीवन देने वाला 'मार्ग' इस्राइलियों की यात्रा में मार्ग बना था।

जब इस्राएली यात्रा कर रहे थे तब रात की अन्धकार में उन्हें प्रकाश मिलता रहा निर्गा० ४०:३८। वह प्रकाश और आज कौन था? यीशु मसीह स्वंय कहता है कि "जगत की ज्योति मैं हूँ जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा" यू० ८:१२। यीशु ख्रिस्त 'ज्योति' है और यही ज्योति जगत में आने वाली थी यू० १:५-७। वह आने वाली थी वह 'ज्योति' जगत में आ गई जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह अन्धकार में न चलेगा यू० १२:४६। जो ज्योति जगत में आयी वह प्रारम्भ में इस्राइलियों की यात्रा में रात के समय प्रकाश और आग के खम्भे के रूप में था।

यात्रा में पेट भरना आवश्यक है अत: सामर्थहीन होने की सम्भावना रहती है। इस्राएली पूरी यात्रा भर 'मन्ना' से पेट भरते थे। वही उनका भोजन था निर्गा० १६:१४, ३१—आगे। 'मन्ना' रोटी का प्रतिरूप था। निर्गा० १६:३१। इसी से इस्राइलियों का जीवन निर्वाह हुआ। "जीवन की रोटी मैं हूँ" यू० ६:४८ अर्थात जीवन देने वाली रोटी यीशु ख्रिस्त अपने को बोध करता है। वह संसार की बनायी हुई नहीं वरन स्वर्ग से उतरी हुई रोटी है यू० ६:५१। यीशु ख्रिस्त वही रोटी बनकर इस्राइलियों को जीवन देने के लिए 'मन्ना' के रूप में उनके सामने उपस्थित था।

खाने के लिए रोटी बनकर स्वंय उपस्थित था। इसके साथ ही साथ वह उन्हें 'मांस' भी दिया। आकाश से बटेरों का भरमार (झुण्ड) रात के समय बैठ जाता था और वे पकड़ कर खाए निर्गा० १६:१३। अत: उन्हें रोटी के साथ मांस भी मिला। यू० ६:५३; ५६ के अनुसार यीशु ख्रिस्त अपने मांस खिलाने का दावा करता है। अत: स्वंय 'मांस' के रूप में पेश आता है। जो इसे खाता है वह उसके साथ दृढ़ बना रहता है। यही ख्रिस्त उन दिनों में बटेर के रूप में उपस्थित था।

खाने-पीने के साथ-साथ पानी (जल) की निहायत जरुरी होती है। यीशु ख्रिस्त कहता है "जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दुंगा, वह फिर अनन्त काल तक प्यासा न होगा वरन जो जल मैं उसे दंगा वह उसमें सोता बन कर उमड़ता रहेगा यू० ४:१४। यीशु ख्रिस्त जीवन का जल देने हारा है। वे ही यह जीवन जल प्राप्त कर सकते हैं जो उस पर विश्वास करते हैं। इस्राइलियों को जब पानी की आवश्यकता पड़ी तब वे झगड़ने लगे। तब मूसा प्रार्थना किया और परमेश्वर वहां उपस्थित हुआ तथा चट्टान से सोता उमड़ पड़ी निर्गा० १७:६; गिनती २०:८, ११। इस तरह सब इस्राएली तथा उनके मवेशी पानी पिया। वह परमेश्वर जो मूसा की प्रार्थना को सुनकर उपस्थित हुआ वह परमेश्वर ख्रिस्त के रूप में देह धारण किया।

पानी चट्टान से निकला और उस चट्टान पर यहोवा खड़ा था निर्गा० १७:६। यहां पर हम परमेश्वर की उपस्थिति चट्टान पर पाते हैं। प्रेरितक्रिया ४:११ में चट्टान का जिक्र किया गया है जो यीशु ख्रिस्त की ओर संकेत करता है। इसके कारण के लिए हम पाते १ पतरस २:६-८। इसमें भी यीशु ख्रिस्त को 'चट्टान' कहा गया है। यही चट्टान प्रारम्भ से है जहां पिता परमेश्वर उपस्थित था। इसी चट्टान से पानी का सोता फूट निकला, जिससे इस्राइलियों का जीवन प्यासा से बच गया। नये नियम में यह वही चट्टान

Gossner Mission

हो सकता है जो प्रभु यीशु है। जिसके पंजर एवं हाथ पैर से लोहू का सोता फूट निकला जिससे सारे जगत के लोगों का प्राण बचाए गये।

पापी लोगों के प्राण बचाने के लिए प्रभु यीशु को क्रूश पर चढ़ना पड़ा। यह पहले ही कह दी गई थी कि क्रूश मृत्यु को सहना ही पड़ेगी। प्रभु यीशु अपनी समय की पूर्णता में क्रूश पर चढ़ कर ऊंचा किया गया। तथा बहुतों ने उसकी मृत्यु पर इमान लाया कि इसी मृत्यु के द्वारा मुक्ति या उद्धार प्राप्ति है। वह निश्चय पाप से और मृत्यु से बच जाता है। इसी प्रकार इस्राइलियों के जीवन में एक दृश्य देखने को मिलता है। जब इस्राएली यात्रा करते वक्त जंगल के बीच में कुढ़कुढ़ाने के कारण दण्ड स्वरूप में उन्हें सांप काटा। सब डरने लगे तब मूसा ईश्वरीय आज्ञानुसार पीतल का सांप बना कर एक खम्भे पर लटकाया। जिन्होंने विश्वास से देखा वे बच गये और जो नहीं देखा वे मर गये। यह दृश्य स्पष्ट रूप से खृष्ट की क्रूश मृत्यु की ओर संकेत करता है, गिनती २१:८- आगे। जैसे पहले कहा जा चुका है उसके क्रूश मृत्यु से लोगों के प्राण बचाए गये।

मूसा परमेश्वर का चुना हुआ जन था। वह एक अच्छा चरवाहा और अगुवा था। और इस्राइलियों की अगुवाई की। यीशु मसीह अपने को "अच्छा चरवाहा मैं हूँ" कहता है यू. १०:११। यीशु जीवन भर लोगों की अगुवाई अच्छे मार्ग पर किया। ख्रिस्त अच्छा और सच्चा चरवाहा था उस समय मूसा के रूप में प्रगट था।

उपर के वर्णन से यह निश्चयता मिलती है कि ख्रिस्त सृष्टि के आरम्भ से विराजमान था जो 'शब्द के रूप में था। इसके पश्चात इस्राइलियों के जीवन में यही ख्रिस्त विभिन्न प्रकार के रुप में अपने को उनके बीच में प्रगट किया पर यह धुंधला था। यही ख्रिस्त नये-नियम में स्पष्ट रुप में आने को प्रगट करता है। वह ख्रिस्त जो 'शब्द' था और सारी सृष्टि की रचना किया तथा समय की पूर्णता में देह धारण किया। वह देह-धारी योशु ख्रिस्त आदि में था और अब है तथा युगानायुग रहेगा भी।

गोस्सनर बैबल बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र की वर्त्तमान परिस्थिति।

उक्त परिशिक्षण केन्द्र, छोटानागपुर एवं आसमस्थ एवंजेलिकल लूथेरान कलीशा की बहुत पुरानी संस्था है। यहाँ कलीशा के काम तथा सुसमाचार प्रचार के लिए भाई एवं बहन, जवान एवं युवतियाँ तैयार की जाती हैं। १९७० साल पूर्व यह संस्था प्रचार, ट्रेनिंग स्कूल तथा तबीता बैबल स्कूल के नाम से जाना जाता था।

कलीशा की आर्थिक परिस्थिति बुरी होने के बौजूद भी कलीशा ने इसे अब तक जिन्दा रखा है। इसमें दो पाद्री तथा दो बैबल प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षिकाएँ काम कर रही हैं।

छात्र तथा छात्राओं की कुल संख्या ३४ है। इनमें २१ भाई तथा १३ युवतियाँ हैं। विद्यार्थीगण गोस्सनर कलीशा के पाँचों अंचलों से आए हैं। ये बिहार, उड़िसा, मध्य प्रदेश और आसाम से हैं। गोस्सनर कलीशा को छोड़ नोर्दन लुथेरान चर्च से भी एक युवति प्रशिक्षण पा रही है। प्रधानाध्यापक की जन्ती में प्रशिक्षण केन्द्र को चलाने के लिये स्थाई पुँजी नहीं है अगर है तो मांगनी तथा कागजों का सुन्दर योजना। यही कारण है कि यह तुफान भारी समुद्र में चलते हुए नाव के समान कभी कभी हो जाती है। खास कर इस वर्ष १९७३ में मंहगाई का इस पर बुरा असर पड़ा है। यहाँ का कुल खर्च ४०) चालीस रूपैया प्रति मह एक व्यक्ति का है। इसमें मेश खर्च सिर्फ तीस रुपैया रखा हुआ है जिससे पर्याप्त भोजन खिलाने का प्रयत्न किया जाता है।
बाकी १०) दस रुपैया पुस्तक अनुदान. जेब पैसा, इलाज खर्च आदि के लिए है। यदि महंगाई जारी रही तो इतने पैसे से चलाना मुश्किल है। वर्त्तमान में इसे चलाने का कोई हिम्मत अगर है तो इसके पक्के ईंटों से घेरे हुए दो बगान तथा स्थानीय इलाका से दिए हुए साझे का खेत। इनके द्वारा साग-सब्जी, दाल, नस्ता के चीजें, भोजन के लिए अन्नाज प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

शिक्षक वृन्दों को ठीक ठीक जानकारी नहीं है कि इस संस्था में तैयार लोगों से कलीशा वा देश को लाभ होता है वा नहीं ? हमें इस संस्था की उन्नति के लिए त्रुटियों का दर्शाया जाना आवश्यक है। भेजने हारों से हमारी अपील है कि वे यहाँ पढ़ने के लिए ऐसे छात्र एवं छात्राओं को भेजें जिनका मन कलीशा के काम के लिए बहुत झुकाव है।

रजिस्टर्ड नं. पी. ८ वर्ष १९७४, संख्या नं.—२ मार्च—१९ राँची, फरवरी

Edited and Published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

धर्मबन्धु

रजिस्टर्ड न० पी० टी० १५

वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६४ रांची, मार्च १९७४ संख्या न० — ३

EINGEGANGEN
29. APR. 1974
Erledigt

मत डर !



यदि तुम धर्म के कारण दुःख भी उठाओ तो धन्य हो। भय न खाओ और न घबराओ।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Pramukh Adhyaksh
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
हे आदम तू कहां है	—	—	७
आवश्यक सूचना	—	—	६
कलीसियाई समाचार	—	—	६
विश्रामवार का दिन	—	—	१४
अमर वाणी	—	—	१५
सत्य और न्याय	—	—	१७
हे प्रभु मुझे बुद्धि दे	—	—	१६
धन्यवाद आप का चन्दा मिला	—	—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवत: ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत: डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

'सहनशीलता'

सहनशीलता अनेक गुणों में से एक गुण नहीं समझा जाना चाहिए। सहनशीलता मसीही विश्वास के अन्तर्गत जीवन का मूल है। यीशु मसीह के सहनशील जीवन से विश्वासी जीवन की राह पाते हैं। मसीह यीशु के दुःख सहने, सताये जाने, क्रूश पर घात किये जाने से पापियों के लिये विश्वासियों के लिये जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है; मार्च माह के पथ प्रदर्शक पद इसी ओर संकेत करता है। "वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला" (यशा: ५३ : ७)।

इस वचन के सारे प्रसंग को जब हम धर्मशास्त्र पर अध्ययन करते हैं, तब यह साफ दीखता है कि वह सताया जाने वाला और दुःख सहने वाला परमेश्वर का दास, हमारा मसीह है यशा: ५२ : १३ ५३ : १२ तक विशेष कर पढ़ें! दुःख उठाने वाला मसीह 'हमारे लिये' दुःख उठाता और घात किये जाने तक मौन रहता है, और मुंह नहीं खोलता है! इस महा-उपवास काल में भी हम ऐसा मनन करते हुए पाते हैं।

यीशु मसीह हमारे लिये सब कुछ सहा—वह अन्याय भी सह लिया, क्योंकि इसी के द्वारा वह पूरी मानव जाति का उद्धार करने का आदेश पाया था—उद्धार का यही मार्ग था: इसी मार्ग में विश्वासियों के लिये उद्धार है। सहनशीलता का मार्ग!

इस युग में अन्याय की पराकाष्ठा को देख कर मसीही लोग भी सहनशीलता के मार्ग को त्याग कर बदला लेने या विरोध करने को ही भला सोचते हैं। कितने तो सहनशीलता को कायरता का निम्न रूप सोचते हैं। परन्तु सहनशीलता तो मसीही आचरण का रूप ही नहीं जीवन-मार्ग है, जिसको मसीह यीशु ने हमारे लिये दे दिया है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि इस मार्ग पर चलते हुए दूसरों को दर्शा दें, कि सताने वाले भी समझ जांय, कि हमारा मार्ग क्या है। यीशु मसीह ने ऐसा ही कर दिया।

आज हमारे सामने ऐसी परिस्थिति आ गयी है कि मनुष्य अन्याय की कौन कहे न्याय की बात भी सहने को तैयार नहीं है। अन्याय के विरूद्ध आवाज केवल नहीं हिंसात्मक कार्य भी किये जाते हैं—वह भी नियमित रूप से निश्चित किया जाता है, लेकिन इसमें भी आज आश्चर्य की बात नहीं है, कि लोग अपने पर पड़े न्याय-फल का भी जी जान, जरूरत से अधिक विरोध करने का प्रयत्न करते हैं। मसीहियों के बीच भी वही हाल है—ये भी मसीही आचरण के विरुद्ध ही नहीं, मसीही जीवन-मार्ग में निन्दा की भी चिन्ता न करते हुए अपने पर पड़े न्याय-फल का विरोध करते हैं—बरन अनुचित ढंग से करते हैं।

इस महोपवास काल में जब हम अपने जीवन मार्ग का मनन करते हुए 'हमारे लिये' मसीह का सताया जाना एवं घात किया जाना को जीवन का आदर्श समझते हैं, तब हमारे लिये यह भी आवश्यक है कि हम यह भी विचार करें कि हमारी सहनशीलता का क्या भविष्य है, क्या इस युग में सहनशीलता बचने सकते हैं? क्या मसीही हो कर न्याय भी नहीं सह सकते? क्या इसमें हमारे विश्वास ही ध्वंस नहीं हो गये कि हम न्याय भी सहने को तैयार नहीं हैं! (स० स०)।

घरबन्धु, मार्च १९७४

Gossner Mission

उपदेश को तैय्यारी

मार्टिन टेटे

इनवोकावित (उसने मुझे पुकारा

२ कुरि० ६ : १—१०

पावल प्रेरित सुसमाचार का सेवक था। सेवक होने के कारण वह परमेश्वर का सहकर्मी भी। वह अपने जीवन के अनुभव से ईश्वर के सेवक के गुणों पर प्रकाश डालता है।

"परमेश्वर के विश्वस्त सेवक के लक्षण"

१ सेवक अपने को ईश्वर का सहकर्मी मानता है:—ईश्वर के नाम में लोगों से बिन्ती करता है। वह लोगों से बिन्ती करता है कि "अनुग्रह को व्यर्थ होने न दो।"

२ सेवक लोगों को ईश्वर के लिये चलाता है—(व्यवस्था विवरण ३० : १५; यहोशु २४ : १५; रूत १ : १५; १ राजा १८ : २१; मत्ती २७ : १७; मरकुस १० : २१; यूहन्ना ६ : ६७)।

३ सेवक अपनी सेवा में निष्कलंक होने की चेष्टा करता है :—(फिलि० २ : १५; ३ : ६; कुलु० १ : २२; थि० ३ : १३; ५ : २३; १ तिमो० ३ : २; तीतूस १ : ६; २ पतरस ३ : १४)।

४ सेवक दुःख उठाने के लिये तैयार रहता है:—(क्रिया ५ : ४१; रोमि० ८ : १७; इब्रानि ११ : २५; याकूब ५ : १०; १ पतरस ५ : १०; २ : २०)।

पावल का उपदेश हमारे लिये पथदर्शक है। हम उसके समान जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करें।

रेमिनिसजेरे (स्मरण कर)

१ थिस्स० ४ : १—७

पावल प्रेरित व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में शुद्ध रहने के लिये व्यवहारिक उपदेश देता है। उसके व्यवहारिक उपदेश में हमारे लिये कई शिक्षाएं हैं।

—व्यवहारिक उपदेश—

१ योग्य चाल में बढ़ो: रोमि ६ : ४; २ कुरि ५ : ७; गला ५ : १७; इफि ४ : १; ५ : २; १ यूहन्ना १ : ७; २ : ६।

२ ईश्वर को प्रसन्न रखने में बढ़ो:—नीति १६ : १७; मत्ती ३ : १७; यूहन्ना ८ : २६; १ थि २ : ४; ४ : १; इब्रानि ११ ५; १३ : १६।

३ पवित्र बनो :—व्याभिचार से बचे रहो। (क्रिया ५ : २०; १ थि ५ २२; १ पतरस २ : ११) अपने शरीर को पवित्र रखना और उसका आदर करना सीखो। शरीर को भोग विलास का साधन न समझो।

४ अपने भाई को न ठगो :—(लैव्य १६ : १३; नीति १८ : ८; २१ : ६; २२ : १६; यिर्म २२ : १३; २७ : १४; यहेज २२ : १३; याकूब ५ : ४)।

व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में हम पवित्र रहें। क्योंकि इसी अभिप्राय से ईश्वर ने हमें बुलाया है।

ओकुली (मेरी आंखे)

इफि० ५ ; १—६

मसीही चाल के विषय पावल प्रेरित ४ : ७ ५ : २१ में उपदेश देता है। ५ : १—६ में वे प्रेम में चलने और ज्योति की सन्तान की नाई चलने के लिये आदेश देते हैं।

"मसीही चाल चलो"

१ प्रेम में चलो (५ : १ + २) मसीही जीवन के लिये प्रेम आवश्यक है। प्रेम के बिना मसीही

Gossner Mission

जीवन शुद्ध नहीं हो सकता है। सात ऐसे पाप हैं जो प्रेम में चलने से रोकते हैं।

१...कड़वाहट :—(कटुता) घृणा एवं क्षमा नहीं करने का मन।

२...कोप (क्रोध) :—मिजाज खो बैठना अथवा चिढ़ जाना।

३ गुस्सा :—दूसरों के प्रति डाह या जलन।

४...विवाद :—घृणापूर्ण विवाद।

५...चुगली :—दूसरों के विषय झूठी बात फैलाना।

द्वेष ...इर्षा।

२ ज्योति की संतान की नाईं चलो (३—९) ज्योति का संकेत पवित्रता की ओर है। पापी लोग न केवल अंधकार में हैं परन्तु वे अंधकार की सन्तान हैं। पावल निम्नांकित पापों को छोड़ने कहता है।

१...व्यभिचार तथा अशुद्धता।

२...लोभ अथवा लालच।

३...निर्लज्जता तथा मूढ़ता की बात चीत तथा ठट्ठा :—ऐसी बातें जिससे लज्जा उत्पन्न होते हैं।

४...मूर्ति पूजा :...प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष मूर्ति पूजा।

मसीही जीवन में हम परखें कि प्रभु को क्या भाता है। प्रभु यीशु को जो कुछ भाता है हम वही करें।

लेतारे (आनन्द कर)

गलाति ४ : २१—३१

मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है। सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो (५ : १) पावल प्रेरित इस वचन को पुराने नियम से समझाता है।

"स्वतंत्र एवं दास"

१ स्वतंत्र कौन है ?

क. उद्धार के लिये यीशु पर विश्वास करने वाला स्वतंत्र है। वह ईश्वर का संतान भी है।

ख. प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा हुआ स्वतंत्र है (२३+२६), उत्पति २१ : १—८)। पवित्रात्मा की सहायता से नया जन्म होता है। (यूहन्ना १ : १८; यूहन्ना ३ : ३—५; तीतूस ३ : ५)।

२ दास कौन है ?

क. व्यवस्था पर भरोसा करने वाला दास है। वह पुत्र नहीं है।

ख. शारीरिक रीति से जन्मा हुआ पुत्र दास है। (उत्पति १६) वह उद्धार के लिये अपने कार्य्यों पर भरोसा करता है (लूका १८ : १२; रोमि ६ : ३२; १० : ३; गलाति ३ : १०)।

संकेत :—पुराने नियम से

क.	दो स्त्रियां	दो पुत्र
	हाजिरा	इश्माएल
	सारै	इसाहक
ख.	दो बाचाएं	दो अनुभूति
	व्यवस्था	अनुग्रह
	दासत्व	स्वतंत्रता

ग. (१) हजिरा—इश्माएल व्यवस्था दासत्व

(२) सारै—इसहाक अनुग्रह स्वतत्रता

यह तो एक उदाहरण है। समय की पूर्णता में ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। नारी से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन हुआ ताकि व्यवस्था के अधीन लोगों को छुड़ा ले। हमें उसने छुड़ाया है। हम पुत्र हैं और यीशु मसीह में स्वतंत्र किये गये हैं।

युदिका (न्याय कर)

इब्रानि ९ : ११—१५

इस बचन के प्रवेशन के लिये हम ९ : १—१० को ध्यान से पढ़े। पद १ - ५ में बतलाया गया है कि तम्बु क्या था। पद ६—७ में कहा जाता है कि तम्बु में क्या किया जाता था। पद ८—१० में उपर्युक्त बातों के कारण पर प्रकाश डाला गया है

Gossner Mission

(निर्ग- ४० : १८—३०) उपदेश वचन (११—१५) में वह यीशु के बलिदान के फल अथवा महत्व के विषय बतलाता है।

"यीशु के बलिदान का महत्व"

१ लोगों के लिये अनन्त छुटकारा प्राप्त किया (६—१२) उसने महायाजक होकर बकरों का लोहू नहीं परन्तु अपना ही लोहू चढ़ाया और मनुष्य को विनाश से बचाया।

२ लोगों के लिये परमेश्वर की उपस्थिति का प्रवन्ध किया। (१२, ७ : २७) पुरोहित का काम है कि वह लोगों को ईश्वर की उपस्थिति में लावे। यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा लोगों के निमित सदा काल के लिये ईश्वर की उपस्थिति का प्रवन्ध किया।

३ बलिदान के द्वारा लोगों के विवेक की शुद्धिकरण का प्रबन्ध किया (१४) बकरों और बैलों का लोहू तो शरीर की शुद्धता के लिये था। परन्तु यीशु का लोहू मनुष्य को सम्पूर्ण रीति से शुद्ध करता है और ईश्वर की सेवा के लिये तैयार करता है। सम्पूर्ण रीति से युद्ध किया हुआ मनुष्य ईश्वर की उपस्थिति में उसकी सेवा करता है। (६ : २२; १० :२२)।

४ बलिदान के द्वारा नई वाचा का मध्यस्थ हो गया (१५) मध्यस्थ होने के कारण वह अनन्त मीरास की निश्चयता दे सकता है।

यीशु के बलिदान में हमारे और ईश्वर के बीच मिलाप है। क्योंकि उसने पापों को ढांप लिया है और हमें सिद्ध किया है। देखो ११ : १३, ३६—४७; १२ : २३; मत्ती २७ : ५१—५३; रोमि ३ : २३।

सूचना

१९७४ साल में गोस्सनर थियोलोजिकल कालेज में विद्यार्थी लिये जावेंगे। उम्मीदवार की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिये। प्रवेशन परीक्षा अप्रील माह में खुंटी तथा खुटीटोली (सिमडेगा) में होगी। विद्यार्थियों को ५०) (पचास) रूपैये की क्षात्रवृति दी जाती है। कालेज से Application Form शीघ्र मंगा लें। Application Form का दाम केवल १) (एक रूपैया) है। अधिक जानकारी के लिये प्राचार्य महोदय से लिखा पढ़ी करें।

सूचना

कागज एवं छपाई की मंहगी को मद्दे नजर रखते हुए घरबन्धु के सम्पादकीय मंडल को विवश होकर यह सूचना देना पड़ रहा है कि घरबन्धु के सभी इश्तिहार एवं सूचना विज्ञापन समझे जायेंगे। विज्ञापन का शुल्क ऐसा होगा : आवरण (कभर) ३रा या ४था पूर्ण पन्ना २५ रु०; आधा या उससे कम १२ रु० प्रति छपाई; अन्दर पन्ने—पूर्ण २० रुपैया, आधा या कम १० रु० प्रति छपाई। अधिक बार छापने में रियायत होगी। स्मरण रहे सभी हालत में शुल्क अगोतर अदायगी पर ही विज्ञापन छापे जायेंगे। (स० स०)।

Gossner Mission

हे आदम तू कहाँ है ?

उत्पति ३:९

परमेश्वर ने इतनी बड़ी भूमण्डल, सूरज, चाँद और तारेगणों को मात्र बचन ही के द्वारा बनाया। लेकिन हर विवेकशील मसीही को यह सोचने के लिए विवश हो जाना पड़ता है, कि आखिर एक छोटा प्राणी मनुष्य ही को ईश्वर ने अपने हाथों और अपने ही स्वरूप में बड़े प्रेम से क्यों बनाया ? क्या ईश्वर के उस बचन में जिसमें सारी सृष्टि को रचाने की प्रबल शक्ति थी, मनुष्य को बनाते समय शिथिल और कमजोर हो गयी ? नहीं ! कदापि नहीं, तब इसमें कौन सा रहस्य छिपा हुआ है ?

धर्म शास्त्र गवाह है, ईश्वर को एक ऐसे प्राणी की जरूरत थी जिस पर वह अपना सारा प्रेम उण्डेल देना चाहता था। जी भर के उस से प्यार और बातें करे, जिस तरह हम अपने अबोध और नन्हें-मुन्ने बच्चों को गोद में लेकर प्यार और बातें करते हैं। इसी विचार से परमेश्वर ने मनुष्य (आदम) को बड़े प्रेम से अपने हाथों और अपने ही स्वरूप में बनाया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को न केवल अपना जीवन श्वांस देकर अमर बनाया, बल्कि अपूर्व आनन्द और सुखमय जीवन भी दिया। क्योंकि ईश्वर ने उनको पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया था, ताकि पृथ्वी आदम और हव्वा की हर इच्छा को पूरी करे। बात बिलकुल सच भी है, क्योंकि पाप में पड़ने के पहले आदम और हव्वा का जो सुखमय जीवन था वह आज के मनुष्य की कल्पना से बाहर है बृटिश साम्राज्य के शासक जिन के राज्य में कभी सूर्य्यास्त ही नहीं होता था, उनका जीवन भी आदम और हव्वा के सुखमय जीवन के सामने धूल बराबर था।

पर हाय ! मनुष्य का दुर्भाग्य, एक छोटी सी गलती (पाप) ने मनुष्य को उस अधिकार और ईश्वर के सनातन प्रेम से इतना दूर और अलग कर दिया कि मनुष्य की चिल्लाहट परमेश्वर तक नही पहुँच सकती (यशा. १:१५)। क्योंकि मनुष्य परमेश्वर का परम शत्रु बन गया। लेकिन परमेश्वर का सच्चा प्रेम, उसके और मनुष्य के बीच की पाप रूपी खाई को सह न सका और अखिर परमेश्वर ने अपने एक लौते पुत्र यीशु ख्रीष्ट को पापी जगत में भेजा। इसलिए कि उसके पंजर से बहते हुए लोहू के द्वारा उस भयंकर मृत्यु की खाई को समाप्त किया जा सके। क्यों कि जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया (यूहन्ना १:१२)। आज भी हजारों पापी और दुष्ट लोग पश्चाताप कर के यीशु के पवित्र और अनमोल लोहू से अपने सब पाप और मलीनता को धो कर परमेश्वर के सच्चे सन्तान बनने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। ओह ! परमेश्वर के इस महान प्रेम के बदले मनुष्य उसको क्या देगा ?

मनुष्य सदालों परमेश्वर का विरोध करने हारा है, तब उसके पुत्र यीशु ख्रीष्ट का विरोध दुष्टों का समाज क्यों न करेगा ? जब वह जगत में ज्योति. बन कर आया तो उसके अपनों ही ने उसका विरोध किया और आज भी उसके अपने ही लोग उसका बिरोध (अपमान) कर रहे हैं। बाईबल हमें बताता है कि जब यीशु ख्रीष्ट सशरीर इस दुनिया में था तो चेलों के साथ-साथ यहूदा इस्कारियोती भी यीशु का परम भक्त बनने का कोटा ले कर उसी के साथ दिन-रात रहता और उसी के थाली से खाता-पीता भी था। लेकिन यीशु के उस बेचारे परम भक्त यहूदा की नकली भक्ताई का भंडा-फोड़ तो तब हुआ जब थोडे से रुपयों कि लालच में उसने अपने जीवन के कर्ता यीशु ही को चान्दी के तीस टुकड़ों में बेच दिया।

कितनी भयंकर बात है। जिसके पवित्र लोहू से पापी मनुष्य को परमेश्वर के सन्तान बनने का अधिकार प्राप्त होती है, जिसके एक कतरा खून का दाम जगत के सारे मनुष्य जाति मिल कर भी नहीं दे सकते, उसी योशु को

घरबन्धु, मार्च १९७४

Gossner Mission

एक मनुष्य बेच कर इस तरह घृणित काम करे ? लेकिन ओह ! इससे भी भयंकर और घृणित बात यह है कि आज एक नहीं सैकड़ों यहूदा भक्ति का चोला पहन कर यीशु के पवित्र लोहू को जिसे परमेश्वर ने सेंत-मेंत जगत के पापियों के लिए उण्डेल दिया (यशा.५५:१) निर्लजता के साथ बेच रहें हैं। एक नये जन्मे बालक को, इस लिए कि वह पाप में जन्मा, परमेश्वर के निकट आने अर्थात बप्तिस्मा पाने के लिए सिफारिश पत्र खरीदना पड़ता है। एक पश्चातापी पापी मनुष्य को भी पाप से शुद्ध होने (पुनर्ग्रहन) के लिए सिफारिश पत्र के नाम से यीशु के पवित्र लोहू को खरीदना पड़ता है। क्यों कि सिफारिश पत्र के बिना एक पश्चातापी आत्मा के लिए भी आज के यहूदाओं (याजकों) ने स्वर्ग का दरवाजा बन्द कर दिया (मत्ती २३:१३)।

उत्पति ४:१० में हम पढ़ते हैं कि धर्मी हाबिल का लोहू पृथ्वी से परमेश्वर को जो स्वर्ग में था, चिल्ला रहा था और उसकी चिल्लाहट ने परमेश्वर के सिंहासन को हिला दिया, और तब दुष्ट कैन को श्राप देने के लिये परमेश्वर को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरना पड़ा। क्या जीवते परमेश्वर के पुत्र यीशु ख्रिस्त का पवित्र लोहू जिसने गलगथा के बंजर भूमि की प्यास बुझायी, चिल्ला-चिल्ला कर नहीं पुकार रही है ? कि हे मेरे ईश्वर, जिनको मैं ने तेरा सन्तान और याजक भी बनाया, वे ही आज मेरा अपमान और निन्दा मुझे ही बेचकर करते हैं।

आज कौन है जो पवित्र स्थान (वेदी) में इस तरह घृणित काम कर रहा है ? क्यों कर रहा है ? —मत्ती २४:१५। सच बात तो यह है कि आज याजक वर्ग चान्दी के चन्द टुकड़ों को ही, जिसके पीछे शैतान की शक्ति काम कर रही है, कलीशा की शक्ति और साधन मान बैठे हैं। क्योंकि जो शक्ति (पवित्रात्मा) पेन्तिकोष्ट के दिन परमेश्वर की ओर से कलीसिया को मिली थी, उस परम शक्ति को आज के याजक वर्ग शैतान के हाथों गिरवी रख कर पंगु बन गये हैं। उनके उपदेशों में कोई एक आत्मा को जीतने की शक्ति नहीं रह गयी। क्योंकि ऊपर से मिलना बन्द हो गया, इसलिये स्वर्गीय दुल्हिन (कलीशा) की जिन्दी लाश को रटी-रटाई शब्दों (उपदेशों) पर लादकर आगे बढ़ने की असफल चेष्टा कर रहे हैं। क्योंकि जिसपर उन्होंने विश्वास ही नहीं किया, वे उसका नाम क्यों कर लें ? और जिसको नहीं सुनी उसपर क्यों कर विश्वास करें ? और प्रचारक बिना क्यों कर सुनें ? और यदि ये लोग परमेश्वर की ओर से भेजे ही न गये हों, तो क्यों कर प्रचार करेंगे ? (-रोमी १०:१४-१५)।

वैसे आज-कल हर मण्डलियों में बादस्तूर गिर्जा-आराधना होती है, पर सच देखा जाय तो मसीही भाई-बहनों का मन परमेश्वर से बहुत दूर हट गया है, परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु ख्रीष्ट के प्रति उनका प्रेम एकदम लुप्त हो चुका है। हमारी कलीशा की एक मात्र पत्रिका "घरबन्धु" खबर देती है कि आये दिन युवा-युवतियों का सम्मेलन होते रहता है, जमघट भी खूब होती है। पर सच मानिये, यह सब जमघट इसलिये नहीं होती कि उनमें परमेश्वर का प्रेम है, हक्कीकत तो वे अपना मॉडेल दिखाने जाते हैं। मार्के की बात तो यह है कि संचालकगण नाचने-गाने के नाम पर युवा-युवतियों को अपना मॉडेल देखने-दिखाने का सुअवसर दे ही देते हैं। क्योंकि आज के मसीही युवा-युवतियों के पास अन्य जातियों को यीशु का सच्चा नमूना बताने के लिये यही एकमात्र साधन बच रहा।

आज हमारी कलीसिया की, जिसको परमेश्वर ने आमोस ५:२ में कुमारी कन्या कहा है और प्र० वा०-२१:९-११ में मेम्ने की दुल्हिन कहा गया है, जिसकी महिमा और सुन्दरता का वर्णन सुलेमान अपने श्रेष्ठ गीत में करता है, उसकी वह सुन्दरता कहाँ गयी ? किसने उसकी महिमा और सुन्दरता को बिगाड़ा ? — हाय ! उसके अपने ही पहरूओं (याजकों) ने सिंगारने-संवारने के बदले नोच-खसोट कर इतना कुरूप बना दिया है कि "पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता"—प्र०वा० १७:५ बन कर रो रही है, तड़प रही है, सिसक रही है। क्योंकि उसके पहरूओं ने उसको अब मेम्ने की दुल्हिन के योग्य न रहने दिया। उसके सब पहरूवे तो स्वार्थ के ताण्डव-नृत्य में लिप्त हो गये हैं। और परमेश्वर चिल्ला-चिल्लाकर पुकार रहा है—हे आदम (कलीशा) तू कहाँ है ?

हे पहरूओ ! आप लोगों ने कलीसिया के साथ जो कुछ किया, बहुत किया। अब भी समय है, स्वार्थ और

Gossner Mission

आलस्य की नींद से जागिये। क्योंकि जिस पृथ्वी पर आज के मसीही भाई-बहन शाँति की खोज में उलझ गये हैं वह पृथ्वी अब आखिरी कगार पर पहुँच चुकी है। समय से पहले स्वर्गीय दुल्हिन को दुल्हे के ग्रहण योग्य सजाइये। क्योंकि मेम्ने की ज्वालामय आँख -प्र०वा०५. ६, १:१४। पृथ्वी के कोने-कोने में घुम रही है और कोई भी दुष्ट जन उसके ज्वालामय आँख से बच नहीं सकता। अपना असली कर्त्तव्य को पहचानने की कोशिश कीजिये। गद्दी (मिशन कम्पाऊण्ड) से चिपके रहना छोड़कर मंडली-मंडली और गाँव-गाँव जाकर उन थके-मन्दे प्यास से व्याकुल भटकते भेड़ों को जिन्हें ईश्वर ने आप को सौंप दिया है -हिजकीयेल ३३:७-८+यूहन्ना २१:१५-१८। हरी घास (जीवित-बचन) और मिट्ठा जल (मसीही प्रेम) से सेवा कीजिये। क्योंकि आप लोग इसी के लिये बुलाये भी गये हैं, ना कि मीटिंग-सम्मेलनों में भाग लेकर समय बर्बाद करने के लिये। यदि मीटिंग-सम्मेलनों में भाग लेकर कलीसिया के भाई-बहिनों को स्वर्ग ले जाने के चक्कर में हैं तो यह आप लोगों के लिये बहुत बड़ा धोखा होगा। सच्चाई को स्वार्थ की परत से पोत कर छिपाने की कोशिश न कीई जाय, क्योंकि सच्चाई को शैतान की कोई भी शक्ति नहीं छिपा सकती (पढ़िये-यशा० १:२१-२३)।

श्री जुनुल लुगुन
लंजीबेरना मंडली।

आवश्यक सूचना

पाठकों को मालूम ही है कि घरबन्धु अंक कुछ देरी से मिलने लगे हैं। यह हमारे वश से बाहर की बात हो गयी है। जिस प्रकार देश में मंहगी और चीजों का अकाल बढ़ती में ही है, वैसा ही कागज की मंहगी और अकाल है, अतः हमें विवश होकर घरबन्धु का वार्षिक मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है। आगामी १ली मार्च १९७४ से वार्षिक मुल्य ५ रु० एक प्रति माह ४५ पैसे; १०—१९ प्रति एक पता पर मंगाने से ४·७५ पैसे और २०—३० प्रति एक पता पर मंगाने से ४·५० पैसे एक प्रति सालाना के दर से लिया जायगा। हमारे ग्राहकों से आशा की जाती है कि आगे भी 'घरबन्धु' एकलाही हमारी मासिक पत्रिका को चलाने के लिये सहायता और योगदान देंगे।

कलोसियाई-समाचार

रांची : पूर्वी बर्लिन से जो दो मेहमान पाद्री ब्रुनो शोत्सटेड और पाद्री हेलमुट ओर्फील हमारे बीच फादर गोस्सनर का २०० वाँ वर्ष गाँठ उत्सव मनाने के लिये आने वाले थे विभिन्न प्रकार की रुकावटों के कारण नहीं आ सके; जनवरी माह के पहले सप्ताह तक उनके आने की आशा रखी ही जा रही थी पर वे न आये। यों तो फरवरी माह तक भी आने की बात है, पर अभी तक कोई और समाचार नहीं मिला; उनके न आने से विभिन्न स्थानों में जो असुविधायें और निराशायें हुई उनके लिये क्षमा याचना है।

जमशेदपुर : फादर गोस्सनर की २०० वीं जयन्ती की तैयारी पहले ही से थी, पर दो मेहमानों के आगमन से तैयारी में सरगर्मी आयी; २री जनवरी दिन निश्चित था; सभों में जोश व उमंग दीखते थे— जमशेदपुर के

Gossner Mission

मसीही भाई बहनों ने न्यु-सीता राम डेरा में उत्सव मनाने का निश्चय किया! कार्यक्रम की भी अच्छी तैयारी थी, अन्तिम क्षण तक विश्वास था कि पूर्वी जर्मनी के अतिथि आ ही जायेंगे, पर रंग में भंग सा हो गया। रांची से सिर्फ डा. सिंह जी फिलहाल कार्यवाहक प्रमुख मनोनीत किये गये हैं; आये। फिर तो उन्हीं की उपस्थिति में सारा कार्यक्रम सम्पन्न किये गये, विभिन्न भाषणों के साथ संगीत–भजन की झड़ी लगी थी; उस महान व्यक्ति के विश्वास व कार्य के स्मरणार्थ दान भी चढ़ाये गये जो मुसमाचार प्रचार कार्य के निमित डाइरेक्टर के हाथ तुरन्त सुपुर्द कर दिये गये। (खकपस)।

चाईबासा : यहां भी फादर गोस्सनर के वर्षगाँठ एवं अतिथियों के स्वागत के लिये तैयारी थी, पर मेहमानों की अनुपस्थिति में निराशा ही नजर आ रही थी। दिन के कार्यक्रम के लिये अनेक मसीही भाई-बहनों पूरे दिन की छुट्टी ले रखी थी, वहां अगुओं ने दिन भर का समय निकाल ही रखा था; जमशेदपुर की भांति यहां भी नगाड़ों के साथ स्वागत की तैयारी की थी! अतः अपनी सभी रस्म अदायगी के साथ वहां का कार्यक्रम भी चलाया गया - गीत भजन के साथ ही साथ फादर गोस्सनर की जीवनी के आधार शिक्षा प्रद प्रवचन सुनाये गये। यहां भी दान चढ़ा कर फादर गोस्सनर के काम को जारी रखने की इच्छा प्रगट प्रदर्शित की गयी।

नकटी रास्ते पर ही एक मिशन-मंडली है, वहां भी पूर्वी जर्मनी के अतिथियों के साथ कार्यक्रम था। समय से पूर्व ही पहुंच कर मंडली के भाई बहनों से भेंट करने की निश्चयता से ठीक ही समय में पहुँचे! क्षेत्र के कर्मचारियों सहित नये मसीही भाई-बहन इकट्ठे आ गये थे; पर अगुओं में घबराहट हो गयी जब उन्होंने किसी गोरे को न देखा! जब उन्हें सही बात मालूम हो गयी तो दुःखित हुए कि हमारे अतिथि नहीं आ सके! मंडली के साथ फादर गोस्सनर के जन्म गांठ की स्मृति में कार्यक्रम रखा गया; इस लिये कि चाईबासा से एक दल ही आ गया था, अतः प्रोग्राम में कोई घाटा न रहा।

खुंटी/जिलिंगकेला : इधर कार्यक्रम के पहले ही भनक लग गयी कि पूर्वी जर्मनी के मेहमान नहीं आ रहे हैं, अतः कुछ शिथिलता आ ही गयी, पर जब यहां बताया गया कि कुछ अन्य जर्मन मेहमान सहित अंचल अध्यक्ष एवं कार्यवाहक प्रमुख आ रहे हैं, तब तैयारी में फिर उमंग आ, गया, यों तो जिलिंगकेला ऐसा स्थान है जहां आवागमन की कोई खास सुविधा नहीं है, फिर भी लोगों के जोश को देख कर कार्यक्रम को पूरी करने की निश्चयता ही थी! बाजार का दिन होते हुए भी काफी लोग इकट्ठे थे— अब तो विशेष कर फादर गोस्सनर की जयन्ती के लिये ही-नाच गान एवं अनेक प्रवचनों से कार्यक्रम को सफल बनाया गया यहां भी दान उठाये गये, पर सुपुर्द नहीं हुआ। यह दिन एक साक्षी का दिन रहा, जवान-युवतियों के दल ने न केवल स्वागत का ही प्रोग्राम रखा था, पर वे विदाई के लिये भी सोच रखा था। वे लगभग पांच किलो मोटर तक नाचते हुए पहुंचा आये—अर्थात बाजार की जगह तक! (खकपस)।

रांची : ५ वीं जनवरी को अंचल अध्यक्षों के साथ एक बैठकी का आयोजन था, जिसमें कलीसिया की वर्तमान स्थिति के विषय विचार विमर्श होना था, पर असाम अंचल के अध्यक्ष के न आने से कोई ठोस कदम नहीं लिये जा सके; उपस्थित अध्यक्षों ने असाम अंचल अध्यक्ष से सहयोग के निमित अर्जी की ताकि कुछ विशेष विषयों पर उचित विचार हो सके; इसमें मिशन डाइरेक्टर पास्टर एम. जेबेर्ग की चिट्ठी तथा अन्य अनिवार्य विषय! ऐसी बैठकी आगामी ४ थी फरवरी को होने वाली है।

खुटीटोली : फादर गोस्सनर के जन्मगांठ उत्सव एवं अतिथियों के साथ ७ वीं जनवरी को यहां कार्यक्रम था; तैयारी में सभी व्यस्त थे और कार्यक्रम का भी अच्छा उपक्रम था, पर यहां भी गोरे मेहमानों का अनुपस्थिति ने सभों को निराशा कर दिया। रांची से, डा. सिंह और डा. मिज आये थे; दूसरी बेला का कार्यक्रम था, पर इस वक्त भी उमंग व जोश की घटी थी, फिर भी रस्म आदायगी सा कार्यक्रम तो करना ही था, पीछे यह भी पता चला कि पूरे अंचल के २० वीं जनवरी को फादर गोस्सनर जन्म दिवस मानने की निश्चित तिथि है। अनेक भाषणों के साथ दान भी लिया गया

Gossner Mission

और उस पुज्य धर्म पिता का स्मरण किया गया; यह दान भी तुरन्त डाइरेक्टर के हाथों सुपुर्द किया गया।

हेथाकोटा / रांची : यहां भी फादर गोस्सनर के २०० वां बर्ष गांठ के उपलक्ष में तथा पूर्वी जर्मनी के अतिथियों के स्वागत में कार्यक्रम ठहराया गया था। पूर्वी जर्मनी के मेहमानों के बदले रांची से अन्य मेहमान थे; साथ में पाद्री वुल्फ (पश्चमी बर्लिन, पास्टर हेकर अपने स्वसुर के साथ तथा ओ. एम. के भाई मार्टिन भी थे। रविवारीय आराधना के पश्चात् विशेष कार्यक्रम ठहराये गये थे; कार्य-वहक प्रमुख के सभापतित्व में पास्टर वुल्फ मुख्य अतिथि ने फादर गोस्सनर के तीन सन्तानों को चर्चा की :

(१) बेतुल्हम मंडली : जहां फादर गोस्सनर पाद्री होकर काम किये और मंडली के सदस्यों को समकालीन परिस्थिति में कार्य करने की अगुआई की और सदस्यों ने वैसा करने को कोशिश की। इसी मंडली में पास्टर वुल्फ अभी पाद्री हैं।

(२) एलीजाबेथ अस्पताल एवं सेविकाएं-सदन: फादर ने अनाथों बच्चों, निस्सहायों एवं रोगियों की सेवा व सहायता के लिये इसका जन्म दिया - उसकी स्थापना की वह आज भी अनेकों की सेवा में तत्पर पर है।

(३) गोस्सनर एवंजेलिकल कलीसिया: यह फादर गोस्सनर की छोटी बेटी है,अत: प्यारी भी है, अवश्य है कि यह भी फादर गोस्सनर के कामों को जारी रखे। साथ ही यह आवश्यक है, कि तीनों सन्तानों के बीच सम्बन्ध भी रहे। अन्याय अतिथियों ने भी इस विशेष दिवस के लिये अपने अपने सम्बाद दिये। अन्त में गोस्सनर साहब के कामों को जारी करने के लिये विशेष दान लिये गये जो डाइरेक्टर के हाथों उसी दिन सुपुर्द कर दिये गये (ख क.प.स)।

विविध समाचार के अन्तर्गत

धन्यवाद

लुथेरान कलीशा के भाई-बहनों को हम-मध्य-अंन्चल खुटी टोली के अन्तर्गत बोम्बोल केरा मण्डली के भाई-बहनों की ओर से मसीह में नमस्कार करते हैं। हमने अपनी मन्डली में एक नया गिज घिर निर्माणार्थ सहायता के नाम पर एक लोटरी का आयोजन किया था उसमें आप सभों ने लोटरी टिकट लेकर योगदान दिया एवं उक्त आयोजन को भी सफल बनाने में सहायता की। इस कार्य के हेतु हम अपनी मण्डली की ओर से सभी भाई-बहनों को जिन्होंने इस कार्य में सहर्ष हाथ बटाया— हार्दिक धन्यबाद देते हैं।

लक्की कूपन टिकट निकासी का तारीख निश्चित समय (१५-८-७३) से बढ़ाकर १५-१-७४ दिन मंगलवार को रखा गया था लक्की कूपन टिकट लेने पर निम्नलिखित व्यक्तियों ने इनाम पाया—

१.	साइकिल-	नाम	श्रीमती प्यारी डुंगडुंग सिमडेगा घोचो टोली, टिकट न०-२९०६।
२.	हाथ घड़ी	,,	युवासंघ बोम्बोलकेरा टिकट न० ४६७०।
३.	पेट्रोमेक्स	,,	४२० सुन्दर पुर सिमडेगा टिकट न० २१५०।
४	टेबल घड़ी	,,	सलोमी तोपनो बोम्बोलकेरा टिकट न० १६८५।
५	लेदर सूटकेश	,,	आश्रिता टोपनो मा० बि० जोक-बहार टि० न० १०१६७।
६	साड़ी	,,	सुरसेन कन्डुलना कपलस दफाई (विरमित्रापुर) टि० नि० १८२००।
७	थार्मसफ्लास्क	,,	युवासंघ समाज केरेया मण्डली टि० न० १६९७१
८	होकी लाठी	,,	मनसिद्ध बुढ़ राईटोली बोम्बेलकेरा टि० न०-४१०६।
९	धोती	,,	जी०ई०एल० चर्च बोम्बोलकेरा टि० न० १६६५१
१०	वेग		दाउद हसदा: घटतरी टि० न० १५५८२
११	लेडीज छाता	,,	कुंवार तोपनो लोम्बोई टि० न० ८२६१

Gossner Mission

१२ लालटेन	,,	सुसानी सुरिन कपलास (बिरमित्रापुर टि०न०	१८२७५
१३ गंजी	,,	जयवन्ती कन्डुलना ईटाम टि०न०	८१८४
१४ टावल	,,	सोमा माँझी बोम्बोलकेरा टि०न०	१७३२
१५ पेन	,,	अश्विता तोपनो बोम्बोलकेरा टि०न०	१६७६

रांची: गत वर्षों की तरह इसबार भी कथित "रांची धर्मप्रदेश" ने अपना वार्षिक दिवस मनाया, चहल- पहल की कोशिश थी, उनके इने गिने सदस्य दूर- दूर से आये थे, यहां तककि असामसे भी कुछ प्रतिनिधि आये थे, प्रोसेशन रंगीला बनाया गया, पर चलने वालों की संख्या अपेक्षित थोड़ी रही! इस बार भी एक जन का पुरोहिताई के लिये एक जन का पदाभिषेक कर गोस्सनर कलीसिया के संगठन से फिर एक कदमदूर हो गये!

कहा जाता है कि इस बार कथित रांची धर्मप्रदेश की जयन्तीके साथ ही साथ चुनाव भोज उत्सव भी हुआ और इतना आनन्द मनाया गया कि एक जन बेचारा नाचते-बजाते गिर गया और बीमार होते होते संसार से बिदा हो ले लिया।

लोगों का यह कहना है कि कथित धर्म प्रदेश में तों अब जान न रहती, उड़िसा के धर्म प्रदेश सदस्य करीब खतम ही हो गये, परन्तु गोस्सनर कलीसिया की बर्तमान परिस्थिति में कुछ मन चले और स्वार्थी मसीहियों ने उससे साठ गांठ कर कथित अनियमित / असंविधानी "धर्म प्रदेश" में क्षणिक चहल- पहल दे रखी है। अन्ततोगत्वा तो वही होगा जैसे अनेकों अनियमित और असंविधानी तत्वों का भाग्य भूत काल में हो गया है। यह तो एक विडम्बना है, कि फिलहाल गैरकानूनी दल ही कानून- रक्षक काडोंग मारता है और अपनी साध मिटाने वाले ऐसों की ही पीठ ठोकते और वाह वाही कर संविधान पर अटल रहने काविश्वास करते हैं. इसकी सचाई की साक्षी तो भविष्य ही देगा।

राँची, ३१ वीं जनवरी को गोस्सनर महाविद्यालय ने अपना 'महाविद्यालय –दिवस' मनाया, :दिवस समारोह में पहली बेला खेलकूद भी आयोजन किया गया था। दूसरी बेला कॉलेज या कह बेथेसदा माध्यमिक कन्या पाठशाला के प्रांगण में विशेष कार्य क्रम था, जिसमें रांची विश्वविद्यालय के उप कुलपति मुख्य अतिथि हो कर आये हुए थे। परितोषिक वितरण के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम भी थे। कार्यक्रम की पराकाष्ठा में मुख्य अतिथि श्रध्देय उपकुलपति श्री आर० एस० मंडल शुभ कामना युक्त प्रबचन रहे। उन्होंने दो वर्षीय शिशु गोस्सनर महाविद्यालय की सफलता की प्रशंसा करते हुए भविष्य के लिये शुभ कामना व्यक्त की। (खकपस)।

गोस्सनर कलीशिया में के० एस० एस० के टूट जाने से कलीशिया को महान क्षति उठानी पड़ी है। उसी दिन से के० एस० एस० पर कुछ लूथेरान सदस्यों ने ही न्यायालय की आज्ञा से काम पर रोक (इन्जंक्सन) लगा दी। दोनों बैंकों ने कलीशिया का पैसा देना बन्द कर दिया है। इसका फल यही हुआ कि के० एस० एस० के कर्मचारी, थेओलोजिकल कालेज कर्मचारी तथा विद्यार्थी, प्रचारक ट्रेनिंग के प्रशिणार्थी, तथा रांची कमिटी ऑन प्रोपर्टीज़ के कर्मचारियों को तलब तनखाह मिलना बन्द हो गया है। नोवेम्बर महीने से ही यह कर्रवाई हुई है। सब से अधिक खेद की बात है कि धर्मप्रचार विभाग के पाद्री प्रचारकों तथा पेनशन पानेवाले वृद्ध पाद्रियों का पैसा भी बन्द है। कहावत है कि किसी का पेट काटना अमनुष्यता (इनहयुमेनिटी) है परन्तु यहां तो सैकड़ों का पेट काटा जा रहा है। के० एस० एस० बन्द होने से पूरी कलीशिया का काम में ही मुरका (डिसलोकेशन) आ गई है। पैसा लाखों है पर कलीशिया के कर्मचारी भूखों मर रहे हैं। इसी को कहते हैं कि कूवां पास रहते कोई प्यास से मरता है। समस्या जटिल जरूर है परन्तु इसका समाधान करना जटिल नहीं है यदि स्वार्थपरायण सज्जन इसे पहचान लें। इस मामला से किसी खास व्यक्ति की हानि नहीं पर पूरी कलीशिया की हानि हो रही है और यह धार्मिक नहीं दीख पड़ता है। इस समस्या का किसी भी तरह हल होना अति आवश्यक है। धर्म के मैदान में ऐसा काम नहीं शोभता है जहां प्रेम और दया का प्रचार किया जाता है। यदि यही स्थिति कुछ दिनों तक और रही तो कलीशिया की क्या गति होगी इसे समझना कठिन हो जायगी। गोस्सनर कलीशिया के हरएक सदस्य का यह वाध्य कर्त्तव्य है कि इस समस्या का तत्काल ही हल हो जाना चाहिए। इसीमें कलीशिया का उद्धार है तथा बेड़ा पार है (ए. पी. बरला)।

—□—

Gossner Mission

विविध समाचार देश-विदेश

१ अमेरिका में आज कल "वाटरगेट का मामला" जोरों से चल रहा है। वाटरगेट कहने से सर्वसाधारण को समझ में नहीं आता। यह वही मामला है जिसमें प्रेसिडेन्ट निक्सन प्रेसिडेन्ट चुने गये। इस चुनाव में निक्सन पक्ष के मतदाताओं ने वाटरगेट नामक स्थान में नजायज तरीका अपनाया था। उसी पर विपक्षी दलों ने प्रेसिडेन्ट निक्सन के चुनाव पर ईलजाम लगाया है जिसका अभी जांच पड़ताल कानूनी ढंग से अदालत में हाकिमों के द्वारा हो रहा है। इसी मामला का आज सारे संसार में चर्चा है और अमेरिकन लोग प्रेसिडेन्ट निक्सन का आखरी नतीजा का इन्तजार कर रहे हैं।

२ डाक्टर रोबर्ट जे० मर्शल "लूथेरान" नामक महवारी मैगजिन में लिखते हैं कि जिस प्रकार १५५० सालों में मैक कार्थी मामला का अदालतों में सुनवाई और जांच हो रहा था वैसा ही आज कल वाटरगेट का मामला हो रहा है। इससे अमेरिकन जनता को भविष्य में ऐसा न करने का सबक सीखना है।

३ डा० मर्शल यह भी विचार प्रकट करते हैं कि अभी हम उस जमाने से प्रवेश कर रहे हैं जब कि हमें फिर से धर्म की आवश्यकता महसूस होगी।

४ दखिन अफ्रीका के पिटरमरिशवर्ग नगर के डा० मनस बुथेलसी को वहां की सरकार ने धर्म विषय के मामलों में मनाही कर दी थी लेकिन अन्तरराष्ट्रीय प्रोटेस्टों के कारण उनको धर्म विषय पर रोक उठा दी गई। परन्तु उन्हें सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षणिक सभाओं में भाग लेने में मनाही है। वे स्वीडेन चर्च से सम्बन्ध रखते हैं इसलिए उनकी मनाही के विरुद्ध स्वीडेन के अर्चविशप डा० ओलॉफ सुन्दवी ने प्रतिवाद किया है। डा० बुथेलसी लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन के शिक्षा विभाग के सदस्य हैं। रोमन कथोलिक अर्चविशप डेनिस ई० हरले भी इस प्रतिबन्ध के बिरुद्ध प्रतिवाद किया है। कलीशियाई लोगों को छोड़कर बिरोधी राजनैतिक दलों ने भी प्रतिबन्ध पर प्रतिवाद किया है। डा० बुथेलसी का फोटो अर्जी करने पर मिल सकता है।

५ पेरिश में हुई आजाद अन्तरराष्ट्रीय क्षमादान संस्था में इस बात की चर्चा की गई कि संसार की ५० प्रतिशत सरकारें अब तक बन्दियों पर अत्याचार करती हैं। क्षमादान जांच से मालूम हुआ कि कम से कम ६४ सरकारें प्रजातन्त्र तथा तानाशाही शारीरिक तथा मानसिक अत्याचारों का उपयोग करती है। इस संस्था के सभापति मैकबेड ने कहा कि अभी जितना न्याय का उल्लंघन किया जा रहा है उतना पहले कभी नहीं हुआ था। कैदियों पर सताहट अधिकतर सैन्य विभागों में की जाती हैं। अमेरिका के एटोरनी जेनेरल रामजे क्लार्क ने प्रस्ताव किया है कि एक संसार अपराधी अदालत कायम किया जाय जो ऐसी सताहटों पर निगरानी रखे। लुथेरान वर्ल्ड फेडरेशन के एक कार्यकरिणी सदस्य के कथनानुसार।

६ भारतवर्ष, न्यूगिनी और आस्ट्रेलिया में थेओलोजिकल शिक्षा का विकास नजर आ रहा है। वे उपरोक्त देशों के लूथेरान कलीसियाओं में भ्रमण कर जेनेवा वापस आये हैं। डा० म्यूला नेगी हाल ही में भ्रमण किये थे और वे हमारी गोस्सनर चर्च भी आये थे। थेओलोजिकल शिक्षा के विषय उन्होंने लूथेरान, बपतिस्त, मेथोडिस्ट और सेमिनरियों से सलाह विमर्श किये थे।

७ फिनलैन्ड की लूथेरान कलीशिया में १९७४ से रद्दोबदल हो गई है। उनमें सब से बड़ी बदलाहट तो यह हुई कि पहले वहां की सिनोद सभा हर पाचवें वर्ष में बैठती थी। अब यह सिनद सभा वर्ष में दो बार बैठेगी। इस सभा में ९६ सदस्य अर्थात ६४ लेमैन और ३२ पाद्री बैठेंगे। सिनोद में ८ बिशप भी रहेंगे और सभापति आर्च बिशप मरत्ती सिमोजोकि रहेंगे। सभा में यह प्रस्ताव डाला गया कि महिला भी पाद्री होवे पर यह प्रस्ताव पास नहीं हुआ। यद्यपि प्रस्ताव पास नहीं हुआ तौभी वहां गुप्त रूप से महिलाएं प्रचार का काम करती हैं।

८ चीन में धर्म के विषय बातचीत करने के लिए २० प्रोटेस्टान्ट और रोमन कथोलिक विशेषज्ञ लोग स्वीडेन के बस्ताद नगर में २८ जनवरी से २ फरवरी तक बैठेंगे। यह कार्यक्रम लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन के स्टडी विभाग और रोमन कथोलिक मिशन रिसर्च संस्था के द्वारा किया जायगा।

९ ब्राजील में १९१०-७० बीच लूथेरानों की चौगुना वृधि हुई है। ९ करोड़ जनता में अब ३० लाख से अधिक लूथेरान हो गये हैं।

[शेष पृष्ठ १७ पर]

Gossner Mission

"विश्रामवार का दिन"

सोमवार बीता, मंगल बीता,
पहुँचा फिर रविवार।
सोचा था जाऊँगा गिर्जा,
पर भूल गया उस बार।
उठा बहुत सवेरे आज फिर,
झटपट हुआ तैयार।
बीच चौक के पास पहुँच कर,
देखा रूकी एक सुन्दर कार।
पहचाना तो बहुत पुराना,
मिल गया दोस्त यार।
कहा दोस्त ने बहुत दिनों के
बाद मिले इस बार।
चलो कहीं चाय पानी कर लें,
फिर करेंगे बात।
थोड़ी देर बातें करके,
चलेंगे पिकचर यार।
लगी है टाकिज वसन्त पे,
"कहीं आर कहीं पार"
इसी तरह तो घूम फिर कर,
बीता दिया रविवार।

"ऐ मनुज तू कब समझ पायेगा,
इस दिन का मूल,
क्या तू विश्रामवार को हरदम
यूँ ही जायेगा भूल ?"

मिस नेली शिलवन्ती
न्यू सीता राम डेरा
जमशेदपुर

Gossner Mission

'अमर-वाणी'

[संग्रहकर्ता-सुदर्शन डांग]

गोस्सनर आध्यात्मिक महाविद्यालय
राँची।

(अ) संकट से घबराने वाले जीवन में कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकते।
(कारनेगी)॥

(आ) मनुष्य की सफलता केवल लगन में निहित है। बाकी तो सब आडम्बर है।
(हेनरी फोर्ड)॥

(इ) परिश्रम की सदा विजय होती है।
(नागेश्वर पन्तुल)।

(उ) संकट मनुष्य की सफता की सीढ़ी है।
(ताता जमशेद जी नौशरजी ताता)॥

(ऊ) साहस पर विश्वास कर अंधेरे में चलाया हुआ तीर निशाने पर अवश्य बैठता है।
(जार्ज एफ जानसन)॥

(ए) मस्तिष्क के द्वार हमेशा खुला रखो सफलता दौड़ कर चली आवेगी।
(श्री जार्ज वीस्टस ह ऊस)॥

पश्चाताप

नीले आकाश में हल्के-हल्के बादल छाये थे और प्रकृति भी अपने हरे भरे रंगों से सुसज्जित हो नये बहार में प्रवेश कर चुके थे और प्रकृति के सौंदर्य से मौसम सुहावना लग रहा था। जाड़े का शुरूआत हो रहा था हर जीव, जन्तु हर प्राणी और पेड़ पौधे भी उल्लास और मगन हो पूरे वातावरण को मनोरम बना रखा था।

लेकिन ..... आशा को जो अपने जीवन से निराश हो अपने अंतिम घड़ी के एक-एक पलकों को गिन रही थी। हाँ वही आशा जो जीवन के पहले चरण में बड़ी अभिमानी और धन के कारण उसका इस संसार में बड़ी इज्जत और मान मर्यादा होता था। प्रभु की दया से वह एक खुस्त विश्वासी और धर्मी हो दूसरे चरण में प्रवेश किई, उसके बाद उसका संसार में इज्जत नहीं मिल रहा था लोग उसे दुतकार रहे थे। लेकिन वह प्रभु यीशु के जीवनी से परिचित हो, उसने पापों के प्रति घृणा और द्वेश होने लगा।

हाँ मैं उसी आशा के विषय कह रहा हूँ जो अपने बेटे को डाकू बना कर फांसी पर चढ़वायी। लेकिन उसके बाद ही उसकी आत्मिक आँखे खुली और सच्चे पश्चताप का आँसु बहा रही थी।

शिमोन — मिस्टर पिटर आप को कैसे और कब से आशा के विषय मालूम हुआ।

पिटर — मिस्टर शिमोन, बहुत पहले से ही मैं उसे जानता हूँ। जब मेरे पिता का ट्रान्सफर कानपुर से इन्दाऊर हुआ, मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ता था उस समय आशा भी पांचवीं कक्षा में ही पढ़ती थी; लेकिन मैं उससे बात कभी नहीं किया था कारण वह एक अमीर घर की बेटी थी और वह बड़ी लाड़ प्यार से पली थी उसे स्कूल में भी वह जौभी कि पढ़ने में कमजोर थी पास कर दिया जाता था और वह बी. ए॰ तक पढ़ पायी। लेकिन मैं मैट्रिक ही पढ़ पाया और नौकरी कर अपने मां बाप का मदद करने लगा। प्रभु की दया से हम भी खुशी थे और

घरबन्धु, मार्च १९७४

Gossner Mission

आखिर मेरी शादी भी एक वकील साहब की बेटी से हो गयी आप तो खुद देख रहे हैं कि मेरे दो लड़के और एक लड़की भी अब जवान हो गये। शिमोन.....तो आशा बी॰ ए॰ पढ़ कर क्या कर रही थी ? पिटर..... हाँ ! तो आशा बी॰ ए॰ जब कर रही थी उस समय एक गैर मसीही लड़के से प्रेम करने लगी और उसके लिए अपना सब कुछ उसे दे दिया लेकिन उस लड़के ने उसे अपनाने से इन्कार कर दिया। और आशा निराश हो गयी लेकिन करती क्या ! अब उसे समाज में जगह ही नहीं रहा वह एक बच्चे की माँ बनने वाली थी और वह अपने को छुपा नहीं सकी। उसके पिता ने उसे इन्कार नहीं किया उसे अपनी बेटी ही कहा और घर से नहीं निकाल दिया। कुछ दिनों में आशा को एक बेटा हुआ और वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। आश्चर्य की बात है कि अमीर लोगों का हर हालत में इज्जत होती है। आखिर आशा का पिता भी कुछ दिनों में इस संसार से विदा हो गये। आशा अपने बेटे के साथ अपना जीवन बिता रही थी। उसे अपने पिता के धन ने जिन्दगी गुजारा का सब कुछ मिला था दोनों मां-बेटा हंसी खुशी से जी रहे थे। कमल जो आशा का बेटा था वह इतना अवारा हो गया कि मुहल्ले वाले कोई भी पसन्द नहीं करता था आशा ने कमल को आजाद छोड़ दिया था उसे कभी भी दुःख देना नहीं चाहती थी। इस कारण कमल दुनियां के हर गन्दे कामों से दूर नहीं रहा वह चोर डाकू और अवारा हो गया इस प्रकार उसको हर प्रकार का ट्रेनिंग करवा चुकी। अपने बेटे को धर्म क्या है उसका परिचित नहीं करवायी। क्या अच्छा क्या बुरा कमल को कुछ मालुम नहीं था कब तक मुहल्ले और गांव-गांव के लोग चुप रहते। एक दिन कमल को पुलिस पकड़ लिया और अदालत में दाखिल कर फांसी का सजा भी सुनाई दिया और आशा अपने बेटे का सजा सुनने से छाती पीट-पीट कर रोने लगी और अपने बेटे कमल के लिए अदालत में गिड़गिड़ा कर कहने लगी वकील साहब मुझे सजा दीजिए मेरा कसूर है मैंने ही उसे चोर डाकू बनाया मेरे बेटे को छोड़ दो, मुझे फांसी दो, मुझे फांसी दो, और वह पगलों की तरह हो गयी।

फिर फांसी देने के पहले मां बेटे को कुछ क्षण मिलने को कहा गया आशा अपने बेटे से लिपट गयी और बोली मेरे बेटे कमल मुझे छोड़ जा रहे हो। कमल ने अपनी माता आशा से कहा माँ मैं आखरी समय जब मैं इस दुनिया से विदा हो रहा हूँ, कह रहा हूँ कि यह सजा आप ने ही मुझे दिया कारण आपने मुझे कभी अच्छा या बुरा का सबक नहीं सिखलाया और मैं इस दुनियां से जा रहा हूँ माँ अब आप अपना जीवन को एक आदर और नेक होके जीवन बिताना मुझे तो अब पश्चाताप करने का भी मौका नहीं है मेरी माँ मैं जा रहा हूँ तुम को कौन सम्भालेगा। और इसी समय मिलने का समय समाप्त हो चुका और कमल को फांसी दिया गया। आशा वहीं पर बेहोश हो गिर पड़ी उसे होस्पिटल में रखा गया और उसको मिशन के मसीही पास्टर और मसीही भाई बहनों ने उसको सन्तवना दिया जिससे उसे शान्ति मिली। आशा अब वह आशा नहीं है जो पहले थी उसका पूरा चरित्र ही बदल गया वह अपने समूचे धन दौलत गरीबों को बाँट दिया और प्रभु यीशु का बलिदान को जो क्रूस पर हम पापियों के लिए बहाया था अपना सब कुछ जो अपने जीवन में पाप किये थे यीशु के सामने मान लिई और पश्चाताप कर अपने बेटे का मौत का प्रायश्चित करने लगी। पास्टर ने आशा को समझाया बहन आशा प्रभु सभी पापियों के पाप को क्षमा करता जब कोई अपने पापों को मान लेता है। अब तुमको आत्मिक आंखे मिली है तुम ज्योति में आ गयी अब प्रभु यीशु मसीह को अपना सारा जीवन दे दो वह तुम को अनन्त जीवन देगा और आशा उसी दिन से अपने जीवन से ऊब कर प्रभु से क्षमा मांगती और कहती मुझे अब अपने बेटे से मिला मैं पापिन हूँ मैंने उसे फांसी दिया और इस प्रकार आशा को नया जीवन प्राप्त हुआ। शिमोन .....मिस्टर पिटर मुझे तो आशा के प्रति दया आती है वह बेचारी बेटे के कारण ही अपने जीवन को प्रभु यीशु के पास ला सकी जौभी कि वह मसीही लड़की थी। पिटर ..... हां मिस्टर शिमोन, वे कभी चर्च नहीं जाते थे वे नाम के मसीही थे। शिमोन.....तो आप आशा के पास से ही आ रहे थे ! पिटर...हां मैं तथा पास्टर साहब और दो तीन मसीही उसके घर प्रार्थना करने गये थे और लौट रहा था कि आप से मुलाकात हो गयी। शिमोन... सच प्रभु यीशु ही हम पापियों का उद्धार कर्त्ता है।

श्रीमती ग्रेस तिर्की
सरगुजा म॰ प्र.

घरबन्धु, मार्च १९७४

Gossner Mission

सत्य और न्याय की मांग

एक दिन परमेश्वर घूमने के लिये निकला उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक आदमी चादर ओढ़ कर सोया हुआ है, उसने चादर हटाकर देखा तो वह शैतान है। उसने पूछा अरे शैतान आज तुम अपना ड्यूटी पर नहीं गये ? लोगों को बहकाने नहीं गये ? शैतान ने कहा—हे प्रभु अब मैं किस को बहकाने जाऊँ, सब आदमी तो शैतान बन गये है। इसलिये मैं आराम कर रहा हूं। चूँकि आपस में वे ही मेरा ड्यूटी को कर रहे हैं। मसीह में प्रिय कलीशा के सदस्यगण ईश्वर ने जब सृष्टि का काम पुरा किया, तब उसने देखा, और कहा कि सब कुछ अच्छा है। परन्तु हमारे आदि माता-पिता के पाप में गिरने से परिस्थिति बदल जाती है, अर्थात हम पापी हो जाते हैं, और ईश्वर से अलग हो जाते हैं। फिर भी ईश्वर के प्रेम का प्रमाण यह है कि उसने यीशु को जगत में इसलिए भेजा कि जो उसपर बिश्वास करके पापों की क्षमा चाहता है। प्रभु उनका जीवन को नया बना देता है। मैं इस संसार में सब मनुष्यों से अधिक छोटा और पापी हूं। क्योंकि मैं पाप में जन्मा हूं, और मैंने पाप किया है। परन्तु प्रतिज्ञा के अनुसार मैं ने यीशु पर विश्वास किया और पापों के लिए क्षमा मांगा है। ईश्वर ने अब मेरा जीवन को नया बना दिया है। इसलिए अब मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि अब ईश्वर का आत्मा मुझमें होकर बोलता है। सुनो ईश्वर का बचन यों कहता है, मैंने स्वयं अपने पवित्र किये हुओं को आज्ञा दी है, मैंने अपने क्रोध के लिए अपने बीरों को बुलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न हैं (यशा० १३ : ३)। इस लेख के प्रारम्भ में हम पाते हैं कि ईश्वर शैतान से सवाल करते हैं, हे शैतान आज तुम अपना ड्यूटी में क्यों नहीं गये ? तब शैतान तुरन्त जबाब देता है, हे प्रभु अब मैं किसको बहकाने जाऊँ। क्योंकि सब आदमी तो शैतान बन गये हैं, वे आप ही मेरा ड्यूटी को कर रहे हैं। अब गोस्सनर कलीशा के सब छोटे-बड़ों को ध्यान देने की बात है कि हम किस प्रकार शैतान का ड्यूटी को पूरा कर रहे हैं। कलीशा के प्रत्येक मंडली, पेरिस, इलाका, अंचल में अब आत्मिक जागृति की अत्यन्त आवश्यकता है। आत्मिक जागृति के लिए पहला आवश्यक कदम उठाना कलीशा के चुने हुए पादरी, प्रचारक, प्रचारिका आदि का काम है। चूँकि वे ही कलीशा के आत्मिक अगुवे हैं। उनका सचा कर्त्तव्य है :—

(१) वे अपने चाल-व्यवहार, बोली-बचन, अतिथि सत्कार आदि में लोगों के लिए आदर्श बने।

(२) उपदेश देने के पहले वे आप ही उपदेश बनने का प्रयास करें।

(३) आत्मिक जागृति लाने का पूर्ण प्रयास अपने क्षेत्र में करें।

(४) कलीशा के शासन सम्बन्धी बिन्दुओं पर उचित कार्रवाई करें।

(५) भेद-भाव न रखें चूंकि आत्मा उरांव, मुन्डा, खड़िया के लिए या अन्य के लिये अलग-अलग नहीं है।

(६) कलीशा के अगुवे अपने झुण्ड के लिए ठोकर का कारण न बने। चूँकि बचन कहता है कि जो छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है, उसके लिए यह भला होता कि चक्की का पाट इसके गले में लटकाया जाता और वह अथाह समुद्र में डाल दिया जाता (लूक १७ : २)।

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

१० खुंटी लोक सभा कन्सटीचुवेन्सी में २३ फरवरी को चुनाव ठहरायी गयी है। झारखण्ड पार्टी से श्री. निरल होरो खड़े हैं और कांग्रेस से किर्तीवास मुन्डा। अन्य पार्टियों के उम्मेदवार भी होंगे।

११ और साल की तरह १९७४ में भी २६ जनवरी को आजाद दिवस शांतिपूर्वक मनाया गया। आजादी का हमे खुशी तो है परन्तु देश में महंगी ने हमे तबाह कर दिया है। इस महंगी से पार पाने का रास्ता खाज निकालने पर ही हम आजाद होंगे।

---

(७) कलीशा के अगुवे अपना काम ईमानदारी से पुरा करें। यीशु ने हमें इसलिए बुलाया है कि हम उसका अनुकरण करें। यदि हम यीशु पर बिश्वास नहीं करते हैं, और उसका अनुकरण नहीं करते हैं तो हमको यीशु के बिषय उपदेश करने का अधिकार नहीं है, चूँकि परमेश्वर सस्ता नहीं है—वह पवित्र, प्रेम और सर्वशक्तिमान है। मैं आदरणीय प्रो० पी० सी० होरो का पूर्ण समर्थक हूं, वे कलीशा के लिए एक महान और आदर्श व्यक्ति हैं, क्योंकि पहले वे खुद ही हजारीबाग इलाका को उपदेश बनाए, उसके बाद लेख को कलीशा के सामने रखे हैं। क्या ही सुन्दर होता यदि हम भी प्रो० होरो के समान पहले आप ही उपदेश बनते, और लेख या सुझाव को कलीशा के सामने रखते, चूँकि उपदेश

Gossner Mission

सुनने वालों का ध्यान उपदेशक के व्यवहार, बोली-वचन पर अधिक रहता है। कलीशा के अगुवों को सम्बोधित करने का मेरा खास तात्पर्य यही है कि मैं ने स्वय' ही देखा है और सुना है कुछ स्थानों में अगुवों का काम बिलकुल ही कलीशा को उजाड़ने के सिवा और कुछ नहीं है।

ईश्वर ने अदन वारी में आदम हवा को इसलिए रखा कि वे बारी का उत्तम फल खांए और उसकी रक्षा करें। परन्तु उन्होंने ईश्वर की आज्ञा को कुछ नहीं समझा, फल हुआ कि वे वारी से निकाल दिये गये। उसी प्रकार हम मसीही लोग भी गोस्सनर कलीशा में रोपे गये हैं। और कलीशा की देख-भाल के लिए ईश्वर ने हमारे अगुवों को नियुक्त किया है ताकि वे कलीशा रुपी बगान की उचित देख-भाल करें और उसी का उत्तम फल खांए। ईश्वर ने हमें ज्योति में बुलाया है जैसा हम भजन में गाते हैं मसीही जीवन सुगन्धित जीवन सारे जगत को सुगन्धित करता, उसी प्रकार हम जीवन बिताने का प्रयास करें ताकि सचमुच में हमारे द्वारा जगत सुगन्धित हो जाय।

सत्य और न्याय का अनुकरण हमें करना चाहिए। इसके बिना आत्मिक जागृति संभव नहीं है। नियमानुसार कलीशा का संचालन आवश्यक है। स्वार्थ के लिए कलीशा का धन उपयोग में नहीं लाना चाहिए। ईश्वर ने मुझे और आप को तथा सारे जगत के लोगों को अपनी संगति में बुलाया है। उसीने मुझे लिखने की प्रेरणा दिया है। क्योंकि मैं अपने को इस योग्य नहीं समझता हूं। अतः यदि कोई इस लेख को झूठा साबित करने का प्रयत्न करेगा, ईश्वर आप ही उसका न्याय करेगा। वह यों कहता है, देख मैं शीघ्र आने वाला हूं और हरएक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है। प्रकाशित वाक्य २२ : १२।

शान्तिदाता प्रभु जो था, और जो है, और जो आने वाला है। हमें शक्ति और सामर्थ देवे कि हम कलीशा में जागृति ला सकें।

C. R. Horo
(*Teacher*)

Statement About Ownership And The Particulars

FORM IV

[SEE RULE—8]

1	Place of Publication	...	G. E L. Church, Ranchi
2	Period of its Publication	...	Monthly
3	Printer's Name	...	Shri Bhusan Khess
	Nationality	...	I N D I A N
	Address	...	G. E. L. Church Press Ranchi, Bihar
4	Publisher's Name	...	Rev. J. Topno *
	Nationality	...	I N D I A N
	Address	...	G. E. L. Church, Ranchi
5	Editor's Name	...	Rev. J, Topno
	Nationality	...	I N D I A N
	Address	...	G. E. L. Church, Ranchi
6	Name and address of individuals who own the news papers etc.		×

I, Rev. Dr. C. K. Paul Singh, hereby declare that particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- C. K. Paul Singh
Associate Editor
for the Publisher
G. E. L. Church Gharbandhu.

Date, February 1, 1974

Edited and Published by Rev. J. Topno, Pramukh Adhyaksh for and on behalf of the G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road Ranchi/Bihar

* टिप्पणी—गतांक के सूचनानुसार रेभ जे० तोपनो प्रमुख न रहने पर घरबन्धु के सम्पादक और प्रकाशक भी न रहे परन्तु व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण अब तक नाम नहीं बदला गया अतः यहां फॉर्म में उन्हीं का नाम है। नाम बदल जाने पर यह फॉर्म फिर यहां प्रकाशित होगा।

Gossner Mission

। हे प्रभु मुझे बुद्धि दे ।

[*Basant Kumar Surin*
D. U. Mission Boys' Hostel, H. Bagh]

हे प्रभु, मुझे बुद्धि दे कि मैं जिन बातों को,
बदल न सकूँ उन्हें स्वीकार कर लूँ,
मुझे साहस दे कि हो सके तो स्थिति को बदल दूँ
मुझे शांति और स्थिरता दे जिससे स्वास्थय का मार्ग देख सकूँ
मुझे प्रेम-भाव से परिपूर्ण कर कि मैं दुश्मनों को भी प्यार कर सकूँ ॥

हे प्रभु, मुझे अपनी शान्ति का उपकरण बना
ताकि मैं घृणा के बदले प्रेम
उपकार के बदले क्षमा,
नैराश्य के बदले आशा,
अंधकार के बदले प्रकाश तथा
उदासी के बदले उल्लास के भाव प्रकट कर सकूँ ॥

हे प्रभु, मुझे वरदान दे कि मैं —
अपने धैर्य की परवाह न कर दूसरों को धैर्य दे सकूँ,
अपने को समझाने की परवाह न कर दूसरों को समझा सकूँ,
दूसरों का प्रिय बनने की लालसा न रख कर, उनको प्यार दे सकूँ,
हे प्रभु, मुझे बुद्धि दे कि मैं भला बुरा पहचान सकूँ ॥



Gossner Mission

धन्यवाद, आप का चन्दा, (३१ जनवरी १९७४ तक) मिला

1 Shri C. B. Horo
2 Mr. Dhanmasih Tete FD.
3 Shri Paul Surin for 20 copies
4 Mr: C. R. Hemrom
5 „ B. Horo
6 „ G. Lugun
7 Rev. J. M. Bhuinya
8 Shri Suleman Kerketta
9 Shri Bilkan Kerketta
10 Dr. M. M. Mundu LRS.
11 Rev. S. Barjo for 6 copies
12 „ C. J. Tirkey
13 Mr. K. M. Tiru
14 „ Santosh Barla
15 „ Nehemiah Barla
16 „ Dharmdas Topno
17 „ Patras Bage
18 „ Advent Kindo
19 „ Jusaph Mundri
20 „ Abraham Soy
21 „ Benjamin Tirkey
22 „ Patras Sanga
23 „ Halan Bhengra
24 Mate Jiwanmasih Burh
25 Mr. R. K. Rejan Topno
26 „ Daud Kandulna
27 „ Christoshukh Bhengra
28 Cat. Y. Topno
29 Shri M. Lugun
30 „ S. Kandulna
31 „ N. Bage
32 Cat. Sugan Lugun
33 Mr. M. R. Dungdung
34 „ Komal Minz
35 „ Philip Kongari
36 „ Isaiah Khakha
37 „ Asaph Topno
38 „ Lut Niranjan Tiga
39 Mr. Stiphan Dungdung
40 „ Karel Kerketta
41 „ Bisram Ekka
42 „ Lolas Tirkey
43 Rev. A Lakra
44 Mr. B. K. Lakra
45 „ Immanuel Minz
46 „ P. Herenz
47 Cat. P. S. Topno
48 Mr. Christanand Dungdung
49 „ Suleman Hemrom
50 „ Jaimasih Sanga
51 „ Simon Tutti
52 „ Bijay Kumar Toppo
53 „ Immanuel Lugun
54 „ Rejan Horo
55 „ A, Kandulna
56 „ C. D. Topno
57 „ Jusaph Hasda
58 Rev. W. Khalkho for 50 copies
59 Mr. Suleman Kerketta
60 Cat. Silas Kullu
61 Mr. Prabhudayal Guria
62 „ Jaimasih Surin
63 Dr. Nuas Kerketta
64 Rev. Zachariah Tirkey
65 Mr. Patras Kandulna
66 „ J. M. Purti
67 „ Lucas Hassa
68 „ Johan Surin
69 Rev. P. U. Kujur II for 11
70 Mr. P. Herenz
71 „ J. Barla
72 „ Jusaph Bodra
73 Cat. S. Dungdung for 2 copies
74 Mr. Anukaran Aind
75 „ Isahak Minz
76 „ Madam Mohan Mishra

रजिस्टर्ड नं. बी. ३१४ रांची, मार्च १९७४, संख्या ३

Edited and Published by Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G.E.L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

बन्धु

रजिस्टर्ड नं॰ पी॰ टी॰ १५

वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६४ | रांची, जनवरी १९७४ | संख्या नं० — १

EVANGELISCHE ANSTALT
29. APR. 1974
Erlangen



सो यदि पुत्र तुम्हे स्वतंत्र करेगा,
तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

यूहन्ना ८:३६

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	—	३
उपदेश की तैयारी	रेभ टेटे	—	४
कलीसियाई समाचार	—	—	६
समाचार देश विदेश	—	—	११
आवश्यकता	—	—	१२
Pastors' Conf	—	—	१२
नयादिन-नयाजीवन	—	—	१३
तुम्हारे पुण्य जन्म दिन में	—	—	१३
प्रार्थना	—	—	१४
अपनी बहन	—	—	१६
आप का चन्दा मिला	—	—	१६
जन्म की वह रात	—	—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये है।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिऐट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"तू पीढ़ी से पीढ़ी तक.....धाम बना है"

इस घरबन्धु अंक के साथ हम एक नया साल में प्रवेश पाते हैं, जब हम १९७३ साल की घटनाओं का विशलेषण करते हैं तो आनन्द, आशा एवं विश्वास की झलक दीखती है, परन्तु साथ ही ऐसी अनेक परिस्थितियाँ भी आयीं जिसके कारण हम दुखित एवं संशंकित भी हो उठे हैं; अधीरता और अविश्वास के शिकार हो गये हैं, परन्तु यह परमेश्वर की आशीष है कि इन सबके बावजूद भी हम नये साल में पदार्पण करते हैं। जब हम १९७४ साल की ओर ताकते हैं तो हमारी अनेकों आशाओं के बावजूद भी अनिश्चयता ही दृष्टि होती है : व्यक्तिगत, पारिवारिक संस्थायी, कलीसियाई, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक आदि अनेकों अनिश्चयता है, इन सभी क्षेत्रों में घोर रद्दोबदल होने की सम्भावनाएं हैं, अनेकों की अपनी योजनाएं हैं पर इन उपरोक्त परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रह सकते हैं। हमारी कलीसिया में अपनी बीहड़ व विकट परिस्थिति आ गयी है। इस परिस्थिति की गहराई को लोग अपने ही तरह से समझने लगे है : कोई इसको जातीयता की विषमता समझते हैं, तो दूसरे हैं, जो इसको व्यक्तिगत मुनाफे का दांव पेच मानते हैं अन्य हैं जो कहते हैं, कि यहां अभी अन्धकार एवं ज्योति की लड़ाई है। कुछ भी हो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हों, पर यह साफ दीखता है कि कलीसिया को परिस्थिति को बिगाड़ने वाले तो 'मसीही कहाने वाले" ही लोग हैं- यही परिस्थिति की विषमता पाराकाष्ठा है। मसीही को मसीही कचहरी में घसीट रहा है, मसीही को मसीही अपमान कर रहा है। पौलुस प्रेरित ने ऐसे कार्य की घोर निन्दा कही है; इसमें कलीसिया एवं मसीहियों की न केवल निन्दा ही है पर घोर मूर्खता भी है। (१कुरि,६:१-११), इसका परिणाम युगान्त कालीन है —परमेश्वर के राज्य का वारिस न होना। आज भी मसीहियों के लिए कचहरी जाना गौरव की बात हो गयी है, मानो हम भविष्य को अपने ही हाथों निश्चित करना चाहते हैं। पर क्या हम ऐसा कर सकते हैं ? भविष्य तो १९७४ तक ही सीमित है और न आने वाले सौ या हजार वर्ष ही भविष्य है भविष्य तो युगान्त में ही निश्चित है जब मसीह न्याय के लिए आयेगा और विश्वासियों को 'राज्य का वारिस' घोषित करेगा। हम उस भविष्य को कचहरी में या दो चार की सामूहिक बुद्धि या बल से निश्चित नहीं कर सकते हैं और न किसी एक 'कार्य रोको' से परमेश्वर की योजना में फेर फार ला सकते हैं।

हमारे भविष्य को सिद्ध और निश्चित करने वाला वही है, जो पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारा धाम बना है (भ. स. ९०:१)। जिस यहोवा की रक्षा में हम १९७३ साल गुजार दिये हैं, वही हमारी रक्षा १९७४ में भी करेगा और हमारा धाम ठहरेगा, चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही बीहड़ और बिकट क्यों न हो ! हमारी ओर से यही कोशिश और उपाय होवे कि हम उसी पर भरोसा रखने वाले मसीही विश्वासी होवें तथा उसी की रक्षा एवं अगुवाई में ऐसा काम करें, कि हमारा धाम और शरण स्थान वही रहे और हम ऐसे कामों व बिचारों से परे रहे जो युगान्त में- न्याय के दिन हमारे लिये फंदे का कारण बने ! हमारी योजनाएं व विचार हमारी उस उज्वल आशा में कालीख न लगायें और हमारी जीवन-ज्योति को सदा के लिये न मसल डालें। अत: आने वाली हमारी परिस्थितियों में हम न घबरायें और न मुहकी खायें, परन्तु परमेश्वर की शरण स्थान में रह कर उसी के शरणार्थी सदा बनें रहने के निमित अपने और दूसरों के लिये सदा प्रार्थना करते रहें।

नया साल आशीषमय एवं सफल होवे। (स०स०)।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

नया साल

गलाति ३ : २३–२६

पुराना साल व्यतीत हो गया है। हम नये साल में प्रवेश कर चुके हैं। वचन के अनुसार इस नये साल में हमारा अगुवा कौन होगा ? व्यवस्था, विश्वास अथवा सुसमाचार ? हम क्रमशः इस विषय पर विचार करेंगे।

व्यवस्था,—विश्वास—सुसमाचार

क. व्यवस्थाः— हमारी शिक्षिका थी। उसकी अधीनता में हमारी रखवाली होती थी। व्यवस्था रूपी दर्पण में हम अपने पापों को देख सकते थे। व्यवस्था सुसमाचार के लिये मार्ग तैयार करती थी। व्यवस्था दृश्य वस्तुओं की प्रतिज्ञा देती है—जैसे कनान देश, राज्य इत्यादि। इसकी प्रतिज्ञा तो यीशु (सुसमाचार) के आगमन की प्रतिज्ञा की ओर संकेत थी। दृश्य प्रतिज्ञा का अभिप्राय था कि लोग विश्वास में प्रतिज्ञा के वंश के देखें। ईश्वर अपने लोगों को अपने अनुग्रह का प्रमाण देवे और लोगों के विश्वास को परखे और स्थिर करे। यीशु के जन्म में सब प्रतिज्ञाएं केन्द्रीत हुई। नये साल में हमें चौकस रखने के लिये व्यवस्था की आवश्यकता है

ख. विश्वासः—विश्वास करने के द्वारा हम परमेश्वर के सन्तान होते हैं (२६) विश्वास से हम धर्मी ठहराये जाते हैं। (यूहन्ना १:१२, रोमी ५:१) नये साल में ईश्वर के संग रहने के लिये विश्वास की आवश्यकता है।

ग. सुसमाचारः—यीशु आप ही सुसमाचार है। बपतिस्मा के द्वारा हमने उसे पहिन लिया है। अतः हम सब मसीह यीशु में एक हैं।

नया साल हमारे लिये मुबारक है क्योंकि हमारे बीच यीशु है और हम उसके नाम में एकता रखते हैं।

इपिफानियस पर्व

१ यूहन्ना ३ : १–६

इपिफानियस का अर्थ प्रगट या प्रकाशित होना है। यीशु प्रगट हुआ और हमें परमेश्वर का सन्तान बनाया। इसलिये हम यीशु को स्मरण करें। चूंकि यीशु में ही मसीही जीवन का प्राधिकार और संभावना है।

'स्मरण करो"

१. यीशु में मसीही जीवन का प्राधिकार (हक) है—यीशु के कारण परमेश्वर ने हम से प्रेम रखा है। इस लिये हम परमेश्वर के सन्तान हैं। पिता हम से प्रेम रखता है।

२. यीशु में मसीही जीवन की संभावनाएं हैं:— यीशु को प्रगट होने पर हम यीशु के समान होवेंगे और उसको देखेंगे। (मत्ती ५ : ८)।

३. यीशु में शुद्ध (पवित्र) रहने का आदेश हैः—चूंकि हम जानते हैंः—

क. कि पाप क्या है ?—पाप तो व्यवस्था का भंजन है (४) पाप तो अपनी इच्छा पूरी करता है। पाप तो ईश्वर को नही परन्तु अपनी आज्ञा पालन करता है।

ख. पाप क्या करता है ?:—पाप तो यीशु के कार्य्यों का विरोध करता है। यीशु जगत के पाप को हर ले जाता है। (यूहन्ना १ : २६)।

ग. पाप कैसे आता है ? यीशु की आज्ञा भंजन से हम में पाप आता है। यीशु के संग नहीं रहने से हम पाप करते हैं।

ङ. पाप कहां से आता है ? पाप तो शैतान की ओर से आता है। (८)

Gossner Mission

च. पाप पर विजय कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? यीशु के द्वारा पाप से विजय प्राप्त कर सकते हैं। यीशु ने आप ही पाप और बुराई को हमारे लिये जीत लिया है (मत्ती १२ : २५-२६, लूका १०:१८, कुलु २:१४, १ पतरस ३:२२; यूहन्ना १२:३१) यीशु का विजय हमारी विजय है।

यीशु प्रगट हुआ ताकि हम मसीही होवें — मसीही जीवन व्यतीत करें और शुद्ध रह सकें।

इपिफानियस के उपरान्त १ला एतवार

रोमी १२ : १-५

ईश्वर हमारे लिये सब कुछ कर दिया है। इसलिये हम अपने शरीर को ईश्वर की सेवा के लिये बलिदान कर देवें। जीवन बलिदान ही मसीही कर्त्तव्य है।

"मसीही कर्त्तव्य"

१· जीवन अर्पण:—ईश्वर की सेवा के लिये अपने जीवन को अर्पण कर देवें (मत्ती १६:२५; रोमि १४:२१; १ कुरि १०: २४; फिलि २:४)।

२. संसार के सदृश्य नहीं बनना (२) हमारा व्यवहार बदल जावे। (कुलु ३:१०) परमेश्वर के सामने हम भला होवें। अर्थात् उसी की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करें।

३. सेवा के भिन्न-भिन्न बरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाना :-(५ – ६) क्योंकि मसीही एक दूसरे के अंग हैं (१ कुरि १२:४–१३; १४–२२) बरदानों का सदुपयोग करें।

जीवन अर्पण से हमारा मन बदलता है और हम ईश्वर की सेवा कर सकते हैं।

इपिफानियस के उपरान्त २रा एतवार

रोमि १२:६—१६

पावल प्रेरित रोमि १२–१६ में व्यवहार दर्पण के विषय उपदेश देते हैं। १२–१३ अध्याय में तीन प्रकार के कर्त्तव्य बतलाये गये हैं। १ ला धार्मिक, २ रा सामाजिक, ३ रा राजनैतिक। १३वें अध्याय में धार्मिक और सामाजिक कर्त्तव्य की चर्चा है।

"मसीही कर्त्तव्य"

१· धार्मिक कर्त्तव्य:—(३–१६) धार्मिक कर्त्तव्य के लिये सात दान हैं।

क· भविष्यवाणी का दान:—विश्वास के परिमाण के अनुसार इस दान को सेवा में लगाना।

ख· सेवा करने का दान:— इस दान को पाने वाले सेवा में लगे रहें।

ग· शिक्षा देने का दान:— शिक्षक सिखाने और सीखने में विश्वस्त हो।

घ· उपदेश का दान:— उपदेशक उपदेश देने में लगा रहे।

ङ. दान देने का दान:— दान देने वाला उदारता से दे।

च. अगुवाई का दान:— अगुवा उत्साह के साथ अगुवाई करें।

छ· दया का दान:— दया करने वाला हर्ष से करे।

२· सामाजिक कर्त्तव्य (१४–१६) : समाज कई प्रकार के लोगों से बना है। समाज में मसीही एवं गैर मसीही, आनन्द करने वाले, रोने वाले अभिमानी इत्यादि हैं। सभों के प्रति मसीहियों के निम्नांकित कर्त्तव्य हैं :—

(क) सतानेवालों को आशीष दो : (निर्गमन २३:५; नीति २५:२१; मत्ती ५:४४; लूका ६:२७+३५; रोमि १२:२०; १ थि ५:१५)।

(ख) रोने वालों के साथ रोओ—सहानुभूति प्रगट करो। इब्रानि १३:३; याकूब १:२७)

(ग) आपस में एक सा मन रखो (१६)

Gossner Mission

(१ कुरि १·१०; २ कुरि १३:११; इफि ४:३; फिलि १:२७; १ पतरस ३:८)।

(घ) भली बातों की चिन्ता करो (१७) (लैव्य १६:३५, + ३६; व्यवस्था २५:१५; नीति ११:१; रोमि १३:८)।

(ङ) मेल मिलाप के साथ रहो :—(१८) (मत्ती ५:६; नीति १२:२०; रोमि १४:१६)।

(च) पलटा न लेना। ईश्वर अपने समय में आपही पलटा लेता है।

मनुष्य को धार्मिक तथा सामाजिक दोनों प्रकार का जीवन व्यतीत करना है। दोनों प्रकार के जीवन में हम ईश्वर की महिमा करें।

इपिफानियस के उपरान्त ३रा एतवार

२रा पतरस १ : १६—२१

इस वचन में यीशु के विषय नबियों तथा पतरस की साक्षी है। पतरस ने प्रभु यीशु की महिमा के विषय साक्षात दर्शन किया था। अतः वह प्रभु के विषय अधिकार सहित बोल सकता है।

"यीशु के विषय पतरस और नबियों की साक्षी"

क. पतरस की साक्षी :—

१ हम ने अपनी आँखों से प्रभु यीशु की महिमा देखी। (क्रिया १:२२; ५:३२; १०:३६; १३:३१; १ पतरस ५:१।

२ हम ने यीशु के विषय स्वर्गीय वाणी सुना। (१७+१८) यह वाणी प्रभु यीशु के रूपान्तर होने के समय सुनाई दिया।

ख. यीशु के विषय नबियों की साक्षी :—

१ भोर का तारा :—"गिन्ती २४ : १७; प्रकाशित २:२८; २२:१६, यीशु आप ही भोर का तारा है।

२· धर्म्म शास्त्र की प्रेरणा :—

धर्म्म शास्त्र यीशु के विषय साक्षी है। धर्म्म शास्त्र को लेखकों ने ईश्वर की प्रेरणा से लिखा (१ पतरस १:११; इब्री १:१; यीशु ने अपने आप को हमारे सामने साक्षी सहित प्रगट किया। इसलिये हम उस पर विश्वास करें। वह शीघ्र आनेवाला है।

कलीसियाई समाचार

राँची: २री नोवेम्बर १९७३ को राँची में बड़े धूमधाम से मिशन पर्व मनाया गया। सवेरे ६½ बजे उपासना का कर्य क्रम थो। इससे पहले कि आराधना आरम्भ होवे मिशन डाइरेक्टर पास्टर जेबर्ग ने स्मरण पत्थल घेरे का संस्कार भी किया। पाठकों को मालूम होवे कि २री नोवेम्बर को चार मिशनरियों इसी स्मरण पत्थल के पास राँची आकर अपना तम्बू ठोंका और अपना कर्य इस भुखंड में फैलाया। इस स्मरण पत्थल की शोभा वरक्षा के निमित राँची महिला सम्मिति ने वजरिये सुश्री अ. मिंज तथा उनके सहयोगिनियों के अथक परिश्रम से घेरा तैयार किया है। यह धन्यवाद का चिन्ह गोस्सनर मिशन के लिये हो उ सके संस्थापक फादर गोस्सनर के लिये है।

मिशन पर्व का दिन फादर गोस्सनर के २०० वाँ वर्ष गाँठ १४ वीं दिसम्बर १९७३ का उद्घाटन दिवस भी था। डाइरेक्टर जेवेर्ग ने उपदेश दिया, यूहन्ना ४:३९–४२, "आज यदि आप गोस्सनर साहब को जन्म दिवस भेंट चढ़ाना चाहते हैं और मिशन पर्व भी मानना चाहते हैं तो कहें आप के कहने से नहीं आप के भेजे हुए मिशनरी के कहने से नहीं पर हम जानते हैं कि वह (यीशु) वास्तव में संसार का ऊद्धार कर्त्ता है"। दूसरी बेला मीना बाजार एवं भजन होड़ आदि कार्य क्रम था। माता समाज की ओर से था पर स्थानीय विभिन्न संस्थाओं

Gossner Mission

ने भाग लिया। उस दिन की आयी आमदनी अब तक ८४८ रूपैया २६ पैसे है जो सुसमाचार प्रचार कार्य के लिये दिया गया है। (खकपस)।

आम्बिकापुर : सुरगुजा: श्री वेडफोर्ड "कीन्डेर नोट हिल्फे" (बालक साहाय कार्य) विभाग के प्रतिनिधि विभिन्न छात्र-छात्रावासों की निरीक्षण निमित अपनी दौरा मध्य प्रदेश से आरम्भ किये और जहां जहां पोस-बच्चों'का छात्र- छात्रावास है वहां गये तथा वहां आवश्यक-ताओं एवं कठिनाईयों की जानकारी ली, उन्होंने हिस्साब किताब का ब्योरा भी देखा। उनका कहना है कि अभी भी कुछ छात्र-छात्रावास के लिये सम्भव है कि ऐसा साहाय कर्य हो सके, अत: आवेदन पत्र शर्त के आधार पर भेजना चाहिए।

रांची : के॰ एस॰ एस॰ समिति २७-३० ओक्टोबर '७३ के फैसलानुसार पादी जे० तोपनो ने प्रमुख अध्यक्ष का कार्य भार डा० सी० के० पाल सिंह को, जो कार्यवाहक प्रमुख अध्यक्ष उसी सम्मिति के द्वारा सर्वसम्मति से मनोनीत किये गये, ६ वीं नोवेम्वर ७३ को सौंप दी। भिन्न भिन्न कोने से कई अड़चनें दिखायी जा रही हैं, बैंक का काम ठप कर दिया गया है अत: आर्थिक व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गयी सी लगती है। कचहरी में "काम रोको" मामला भी दायर किया गया है। परिस्थिति अनिश्चित एवं अन्धकारमय कर दी गयी है पर फिर भी आशा की जाती है कि यदि गोस्सनर कलीसिया के मसीही लोग कलीसिया की बढ़ती एवं उन्नति को तथा उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा की बातों को सामने रखेंगे तो कलीसिया की परिस्थिति अभी भी बच सकती है।

बाहर से आये मेहमान हमें सलाह तो दे सकते हैं पर उन्हें मानना या न मानना गोस्सनर कलीसिया के मसीहियों पर निर्भर करता है। कितने ही हमारे शुभ चिन्तक आये और चले भी गये। फिर भी अनेक मेहमान आने वाले हैं; कुछ तो गोस्सनर- जन्म दिवस के २०० वां वर्ष गांठ मनाने के लिये आ रहे हैं कुछ ऐसे भी होंगे जो हमें हमारी परिस्थिति में सहायता करना चाहेंगे। अभी आवश्यक है कि कलीसिया की परिस्थिति को ठंढ़े दिमाग से समझना बुझना है, जिसमें धार्मिक, आर्थिक प्राशासनिक एवं विभिन्न पहलू से देखना है एक दृष्टिकोण ही से सारी समस्या को सुलझाने की बात करना अधुरी ही बात होगी।

रांची : 'ब्रेड फोर द वर्ल्ड' के प्रतिनिधि रिहनर भी यहां आये और विभिन्न संस्थाओं का निरक्षण किये जहां उन्होंने अपनी उपरोक्त विभाग विशेष धनराशि दी है; चैनपुर खुटी टोली, टी॰ टी॰ सी॰ फुदी, छापा खाना तथा कॉलेज छात्रवास को देखने का उनका विशेष निशान था ताकि वे समझ सकें, कि उनकी दी गयी रकम का व्यवहार कैसे हुआ है।

रांची में और दो मेहमान जेनेवा एल॰ डब्ल्यु॰ एफ॰ के प्रतिनिधि होकर आये थे। वे विशेष कर हमारी कलीसिया की वर्त्तमान परिस्थिति के अध्ययनार्थ आये थे ताकि वे हमारी परिस्थिति में हमें सहायता पहुंचा सके। उनके साथ अंचल के अध्यक्ष तथा सेक्रेटेरी और संविधान प्रारूप बनाने वाली समिति के सदस्य भी १७-१८ वीं नोवेम्बर को रांची में मिले उन्होंने कई नेक सलाहें दीं तथा भविष्य में भी गोस्सनर कलीसिया का साथ देने की आशा दे गये है।

विलम्बित (समाचार) : हर्ष की बात है कि टाटी सिलवे स्थित मसीही भाई बहनों का हृदय मसीह की ओर आकृष्ट किया गया है, तथा काफी सोच विचार कर सर्व सम्मत्ति से एक मसीही मण्डली खड़ा की गयी है जो ता० २३-९-१९७३ से गोस्सनर कलीशान्तर्गत मण्डली के रूप में काम कर रही है। .साप्ताहिक आराधना का काम सुविधानुसार एक मसीही भाई के घर पर किया जाता है। अत: कलीशिया के भाईबहनों से निवेदन है कि इस नये जन्मे मसीही मण्डली की दृढ़ता के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करें ताकि उत्तरोत्तर इसकी वृद्धि हो।

हिजकिएल
टाटीसिलवे (रांची)

कलीसियाई एकता

अन्य स्थानों की नाई बारडीह और अमगाँव पेरिश के मसीही कलीसियाई एकता प्रार्थना सभा का आयोजन

Gossner Mission

दिनांक २४-१-७१ को बड़े समारोह के साथ अमगाँव ख्रिस्त गिर्जा में सम्पन्न हुआ था।

दोनों पारिश के लोग अपनी जगह पर गिर्जा आराधना खतम करने के वाद करीव ११ बजे दिन वारडीह पारिश के पुरोहित रेभ० फादर फिलन एस० जे० अपने सैकडों भाई-बहनों के साथ जी० ई० एल० चर्च अमगाँव पधारे। इतने में जी० ई० एल० चर्च का आराधना खतम हो चुका था।

कथोपकथन के वाद स्थानीय अमगाँव मण्डली के जवान-युवतियों द्वारा शानदार स्वागत किया गया। स्वागत के अवसर पर सुन्दर गीत तथा गाजे-बाजे एवं फूल माला का इन्तिजाम देख कैथोलिक पुरोहित और धर्म बहनें फूले न समाये। तत्पश्चात् उन्हें गिर्जे में लिया गया।

इसके उपरान्त खीस्तीय एकता आराधना लुथरन और कैथोलिक पुरोहितों द्वारा अनुष्ठान किया गया। बीच में लुथरन प्रचारक एन० कुजूर और कैथोलिक प्रचारक एम० बड़ा गीतों से सभों के मन को उल्लसित करते थे। लुथरन पाद्री रेभ० पी० एक्का कलीशियाई एकता पर छोटा भाषण दिये। इसके बाद कैथोलिक पाद्री रेभ० फिलन एस० जे० यूहन्ना १६:१३-१५ पर मन बहलाव उपदेश दिये। टोगों से सात धर्म बहनों के साथ वहाँ के अध्यात्मिक प्रशिक्षण के विद्यार्थी भी इस आन्दोलन में शामिल हुए थे।

यह खीस्तीय एकता आन्दोलन का आनन्द निकटतम किताम ग्राम वासियों से सहा नहीं गया, और वहाँ भी दिनांक ३०-१-७१ को कलीशियाई एकता आन्दोलन सभा का आयोजन किया गया।

वहां भी दोनों कलीशियाई के पुरोहित और प्रचारकों को मसीही भाइयों का आत्म जागृति पर भाषण देने का भार था। कारणवश कैथोलिक प्रचारक एम० बड़ा उपस्थित होने नहीं सके।

सुश्री राएन कुजूर मसीही बहनों में आत्म जागृत पर सुन्दर भाषण दियी। जो बहनों के लिये भारी शिक्षा प्रद रहा। अफसोस कि टोगों की धर्म बहनें वहाँ नहीं आ सकीं। उन्हें भी भाषण का कार्यभार था।

पाद्री पी० एक्का
अमगांव

लाटू सामकोना:—यह मण्डली उत्तरी-पश्चिमी अंचल के आमगाँव पेरिश, चैनपुर इलाका के अन्तर्गत है। पुरखे कहते हैं, जब यहाँ पहले-पहल खृस्तान हुए उस समय चक्करधारी सिंह यहाँ के बड़े जन्मीनदार थे। वह रैयतों से बहुत निर्दयता के साथ काम लेते थे। रैयत बेगारी करने, हल चलाने या कोई काम करने के लिये देर से जाता था तो उसको फौड़ा-डूबा-दाह में, आँख, नाक, मुंह दीखने भर छोड़ कर पूराशरीर को पानी में डूबा कर रखता था जब तक दूसरे काम करने वालों की छुट्टी नहीं होती थी तबतक। उसी समय केमटे में गिर्जा घर चुपके-चुपके रातों-रात बनाया गया।

अब, अभी देवनन्द सिंह की बारी ख्रिस्तानों की संख्या में भी भारी है। १९४४ ई० में केमटे में एक बड़ा और पक्का गिर्जाघर बना जो बेंच से भरी है। इसके समय भी जमीनदारी दबदबा लगी ही थी। रैयत को जंगल से झाटा-झूरी लाना देख नहीं सहते थे और कहते थे—केकल-बाफ-कल-पहाल-लेझालल - झूलूल-आला-झूली-ललाना।

अब आया खृस्तानों का जागना
:—२६ फरवरी से ८ जून ७२ तक एक छोटी है कहानी
:—केमटे मण्डली के लाटू सामकोना के पहले खृस्तान
(१) मुंडरा चारो कुजूर (२) लोयो बेक
(३) बन्धु केरकेट्टा (४) डोयलो बन्धु मिंज
(५) टोकरे तिग्गा थे, जिनके सन्तान, नाती, पोते अभी भी जीवित ईसाई हैं। वहाँ एक छोटी उपासना घर था उसको यहाँ के जवान-युवतियाँ मिल कर बड़ा गिर्जा घर बनाने की योजना बनाया। २६ फरवरी से ८ जून तक में गिर्जा घर तैयार हो गया। यहाँ जवान-युवतियों के कार्य की सफलता प्रकट हुआ।

इस टोले में १६ परिवार होते हैं जो रोज दोपहर-दोपहर को करीब २ घंटा काम कर के गिर्जा घर बनाये।

केमटे गिर्जा घर-रात-रात में बनाया जाता था और सामकोना गिर्जा घर दोपहर-दोपहर को बनाया गया। २६ फरवरी से ८ जून ७२ बीत गया, अब आयी १० जून की बारी, उस दिन सब अपना-अपना घर छोड़ कर, सब हाथ जोड़ कर मनाने चले जलसा। आम गांव के पाद्री पी. एक्का थे हाजिर साथ में और थे मेहमान। जवान-

Gossner Mission

युवती अंडे-बच्चे स्वागत करके ले चले गिर्जा घर। गिर्जा घर त्रिएक परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से लाटू सामकोना लूथेरान गिर्जा उपासना के नाम पर संस्कार हुआ।

गिर्जा घर था भरा खचाखच। आराधना पाद्री पी॰ एक्का के द्वारा सम्पन्न किया गया। गीत भजन से गूँज उठा गिर्जा घर। पाद्री साहब उत्पत्ति २८ : १० - २२; पढ़ कर रोचक उपदेश दिये जिन्होंने ध्यान से सुना समझ गया सामकोना का अर्थ।

लाटू-सामकोना की चौहद्दी :—उत्तर में केमटे, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पूर्व में शंख नदी, पश्चिम में लाटूमौजा और दक्षिण पश्चिम में गोंड़ पहाड़ है। इसी पहाड़ के ऊपर चट्टान में एक गुफा है उसके भीतर पानी है जिसको पीड़ा पानी कहते हैं। इस पानी में हिन्दू भाई-बहन कभी-कभी स्नान करने जाते हैं विशेष कर अगहन पूर्णिमा में।

प्रचारक रेजन लकड़ा
केमटे लुथेरान चर्च

विविध समाचार

१. विदेशी पैसा को हमारे देश में आने से रोकने के लिए केन्द्रीय सभा ने प्रस्ताव किया है। भारत सरकार ने भी लोक सभा में यही फैसला किया है। कुछ विशेष संस्थाओं को छोड़ बाकी कारबारों के लिए विदेशी पैसा बन्द किया जायगा। यह कदम विशेष कर अमेरिका के खुफिया विभाग के कर्रवाइयों को रोकने के लिए किया गया है। अन्ध्रा प्रदेश के चुनाव के समय अमेरिका का पैसा ने ही आतंक फैला दिया था। सरकार का विचार है कि ईसाई मिश्नरी और संस्थाए १९७० में ३३·४३ करोड़ रुपैया और १९७१ में ४७·६६ करोड़ रुपैया विदेश से प्राप्त किये थे। इन सब के चलते ही विदेशी पैसा रोकने के लिए कानूनी कदम उठाया जा रहा है।

२· का०सा० (चर्च औक्जिलियरी फोर सोसल एकशन) की ओर से गरीबों को खिलाने का प्रबन्ध किया गया है। गरीबों को काम में लगाने के लिए यह कूवां बांध और तालाब आदि खोदने के लिए पैसा देतो है। अर्थात काम के लिए खाना यही उसका धेय है। यह संयुक्त अमेरिका और भारत सरकार के समझौते से प्रबन्ध किया गया है। इसका पैसा डब्ल्यू·सी.सी, अमेरिका के मण्डलियों तथा अन्य देशों से भी आता है। इस भलाई के काम के लिए का०सा० भारतीय कलीशियाओं से भी आर्थिक सहायता की आशा करती है।

३. बैबल एतवार ९ दिसम्बर को पड़ता है। इन साल मनीपुरी भाषा में बैबल छपे जाने का समारोह मनाया जायगा। उस एतवार को जो भी चन्दा बटोरा जाय वह भारत के बैबल सोसाइटी २० महात्मा गांधी रोड, बंगालोर ५६०००१ को भेजा जाय।

४. बिहार के विधान सभा में फिर से 'बिहार धार्मिक स्वतंत्रता बिल' पर बात निकलो है। १९६९ में भी ऐसा ही बिल निकला था परन्तु बिहार क्रिश्चियन कौन्सिल, नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल और रोमन कथोलिक चर्च के घोर प्रतिरोध करने पर रद्द कर दिया गया था। इस बार भी ऐसा ही प्रतिरोध करना आवश्यक समझा गया है।

५. ईश्वर के बचन पर ठोस, एकता और साधारण भक्ति लाने के लिए बंगालोर में बैबल शिक्षा सप्ताह का अयोजन किया गया है। इसमें प्रेरितों की क्रिया १ से १४ पर्व तक अध्ययन किया जायगा। बैबल सोसाइटी आफ इन्डिया की यह आशा है कि इस प्रकार के आयोजनों से सम्प्रदायिक रुकावटों को दूर किया जा सकता है।

६· "अपने पड़ोसी को जानो" नामक एक सेमिनार हेनरी मार्टिन इन्स्टीयूट आफ इसलामिक स्टडीज हैदराबाद में हुआ जिसमें अपने पड़ोसी इस्लामियों को जानने के लिए कहा गया। रेभ चिन्नियाह ने इस्लाम के विषय विस्तार-

Gossner Mission